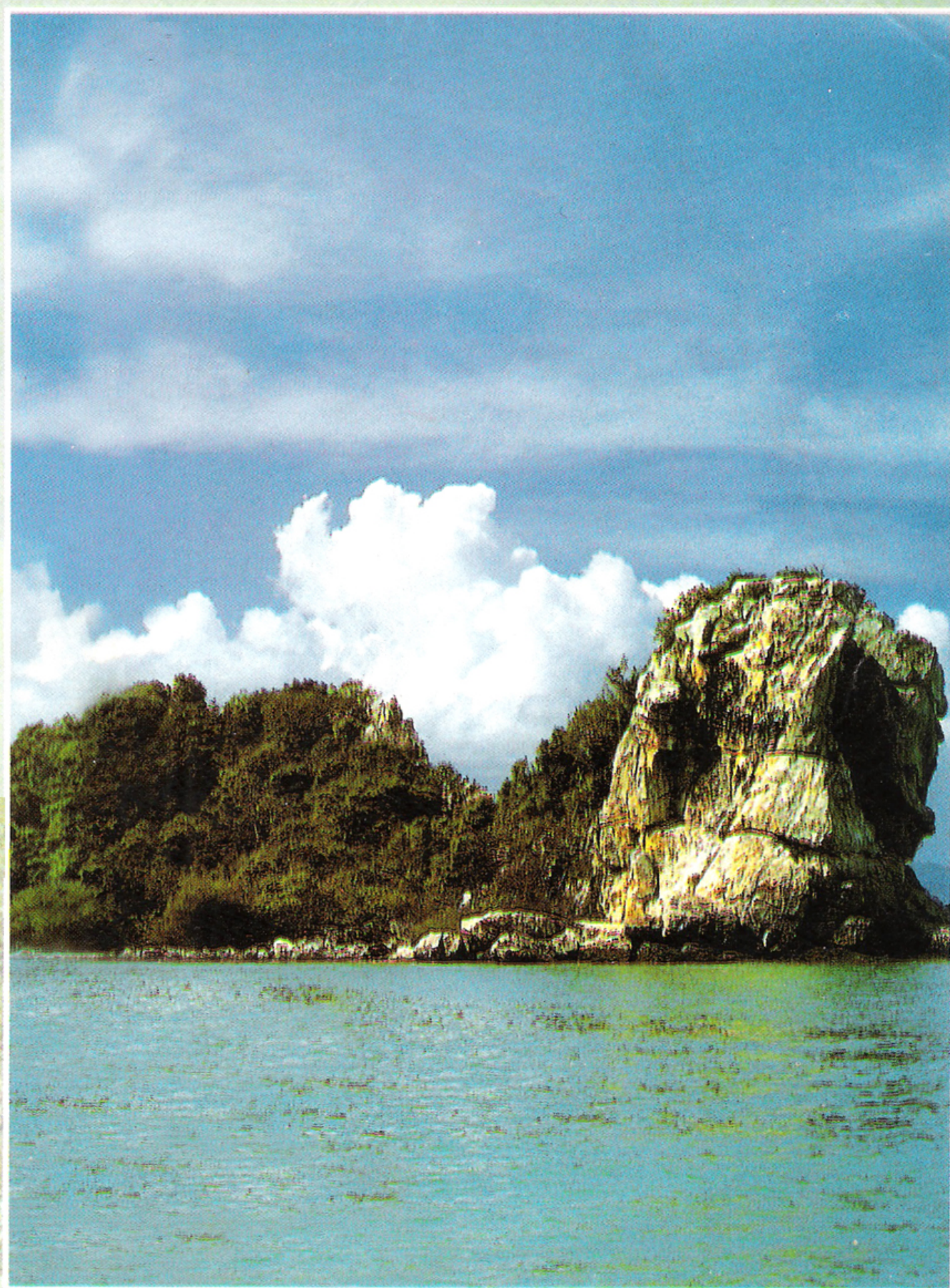


दानिय्येल का अध्ययन

रेव्ह. पी.ए. चाको



फेथ मिनिस्ट्रीस पब्लिकेशन

दानिय्येल का अध्ययन

रेव्ह पी.ए. चाको

द्वारा



रेव्ह पी.ए. चाको
द्वारा
दानिय्येल का अध्ययन

फेथ मिनिस्ट्रीस प्रकाशन

STUDY OF DANIEL (HINDI)

दानियेल का अध्ययन

Author : Rev P.A.Chacko
Faith Ministries India

Website : www.faithministriesindia.webs.com

email : faithministriesindia@gmail.com

Copyright : Binnies P. Chacko

Published by : Rev P.A.Chacko
Binnies P. Chacko (E-version)

Printed by : Yadav Printers, Itarsi.

I Edition : November 2001

E-Version : 2020

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any manner including Photocopy without written permission from Faith Ministries Publication. Permission is not needed for brief quotation embodied in critical articles and reviews.

Printed in India 2001

E-version Published from UK 2020

समर्पण

यह पुस्तक मेरे

गुरुजन

स्व.डॉ.रेव्ह. कुरियन थॉमस

स्व.रेव्ह. सी.के. डेनियल

एवं

लेखक पास्टर वाई. इजेकिएल

को समर्पित है

जिनका मेरे विषयाध्ययन

में अविस्मरणीय योगदान रहा

विषय सूची

लेखक की ओर से	1
परिचय	4
अध्याय 1. दानिय्येल का निर्णय	16
अध्याय 2. दानिय्येल और मूर्ति के स्वप्न की व्याख्या	35
अध्याय 3. दानिय्येल के भाई संकट में, नबुकदनेस्सर राजा और सोने की मूर्ति	55
अध्याय 4. दानिय्येल और वृक्ष के स्वप्न का अर्थ बताना	65
अध्याय 5. दानिय्येल और बाबुल के पतन का संदेश	79
अध्याय 6. दानिय्येल सिंहों की मांद में	93
अध्याय 7. दानिय्येल द्वारा "जन्तुओं का स्वप्न	100
अध्याय 8. मेढ़ा और बकरे का स्वप्न	118
अध्याय 9. दानिय्येल के "सत्तर सप्ताह का दर्शन	127
अध्याय 10. दानिय्येल द्वारा "मसीह का दर्शन	149
अध्याय 11. दानिय्येल द्वारा "विरुद्ध मसीह" का दर्शन	164
अध्याय 12. दानिय्येल द्वारा "अन्तिम समय का दर्शन"	180

रेव्ह पी.ए. चाको

द्वारा

दानिय्येल का अध्ययन

FAITH MINISTRIES
PUBLICATION

लेखक की ओर से

“दानिय्येल का अध्ययन” नाम का यह पुस्तक हिन्दी भाषा में प्रथम पुस्तक है, जो कि महान परमेश्वर के अनुग्रह का एक और प्रमाण है। 1982 से मैं परमेश्वर के वचन का अध्यापन कार्य आरंभ किया। उस समय से अभी तक विभिन्न बाइबल कॉलेज में परमेश्वर के वचन के अनेक विषयों को सिखाता आ रहा हूँ। लेकिन उन विषयों में मेरी विशेष रुचि भविष्यवाणी के विषय में रही। बाइबल के भविष्यवाणी संबन्धी पुस्तकों में दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों को पिछले 15 साल से लगातार पढ़ाता रहा। उन प्रारंभिक दिनों के विद्यार्थी अपने अध्ययनकाल में मुझसे कहते रहे कि इन पुस्तकों की टीका तैयार की जाए तो सेवा के दौरान बाइबल अध्ययन और अध्यापन में हमें आसानी होगी। इस दिशा में प्रयत्न किया गया और प्रकाशितवाक्य की टीका तैयार की गयी और उसका दो भाग प्रकाशित करने में प्रभु ने सहायता की। तीसरा भाग बहुत अधिक चाहने पर भी अब तक प्रकाशित नहीं हो पाया। आर्थिक कठिनाई ही इसका एक मात्र कारण रहा।

इस बीच प्रभु ने मुझे प्रेरणा दी कि पहले दानिय्येल की पुस्तक तैयार करें। कारण यह है कि प्रकाशितवाक्य का अध्ययन दानिय्येल पर आधारित है। प्रकाशितवाक्य का अध्ययन दानिय्येल की पुस्तक के अलावा समझना असंभव है। दानिय्येल की पुस्तक में समय और भविष्य एवं अनन्तकाल तक का ज्ञान दिया गया है। दानिय्येल की सत्तर सप्ताह समय एवं भविष्य को जानने की समय सारणी है। संसार की राजनैतिक गतिविधियां और अन्त में परमेश्वर के कभी अन्त न होने वाले सनातन राज्य की स्थापना, पवित्र लोगों एवं पापियों के पुनरुत्थान, न्याय एवं अनन्तकालीन जीवन की आशा इस पुस्तक में निहित है। सो मैंने उचित जाना कि यह पुस्तक पहले पाठकों के हाथों में पहुँचे और उसके बाद प्रकाशितवाक्य की टीका जो अभी दो भागों में तैयार है, प्रकाशित किया जाए। अनेक वर्षों तक इस पुस्तक को अपने अन्दर रखा रहा। भविष्य संबन्धी सारगर्भित यह दानिय्येल की पुस्तक बहुत दिन तक गर्भावस्था में ही रही।

इस बीच सुसमाचार प्रचार का भ्रमण, बाइबल कॉलेज के अध्यापन

कार्य, आत्मिक यात्रा रेडियो कार्यक्रम में सक्रिय रूप में शामिल होना, इस विलम्ब का कारण है। यह रेडियो एक दैनिक कार्यक्रम होने से दिन रात लिखने एवं रिकार्ड करने में समय लगाना पड़ा। एक व्यस्ततम कार्य जिसने मुझ से अधिक समय की मांग की। इसके अलावा आर्थिक अभाव एक और मुख्य कारण रहा। ये सब इसके पुस्तक रूप में तब्दील होने में बाधा या विलम्ब का कारण रहा। याद रखिये मसीही जगत में अभी भी मसीही साहित्य का अभाव है। किसी ने कहा, **“मसीहियों ने पढ़ना सिखाया परन्तु, साम्यवादियों ने साहित्य पढ़ने को दिये”**। क्या ही दुःख और खेद की बात है। मसीही जगत में सही और आत्मिक साहित्य की अभी भी बड़ी मांग है। मैं आपको भी इस ओर प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप खूब प्रार्थना करें और खूब धन इस ओर लगाएं ताकि स्वर्ग में आपको प्रतिफल की प्राप्ति हो। इस विषय में एक और बात मैं समझाता हूँ और वह यह है कि परमेश्वर के निकट सब कार्यों का एक नियत एवं निर्धारित समय है। सो मैं सोचता हूँ और मानता भी हूँ कि यह समय परमेश्वर की ओर से निश्चित और निर्धारित सही समय है।

इस पुस्तक को लिखित रूप में तैयार करने में अनेक महीना लगा एवं अनेक विद्वानों के पुस्तकों के अध्ययन द्वारा प्राप्त जानकारी इसके सरल लेखन में मदद साबित हुई। उनमें से स्टिवन्स और गॉर्डन लिन्डसे प्रमुख हैं। उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान हेतु मैं उनका आभारी हूँ।

इस पुस्तक के पाण्डुलिपि तैयार करने में प्रिय भाई विनय मसीह एवं भाषा शुद्धि में भाई रोहित नागे ने कठिन परिश्रम किये। इसको पुस्तक रूप में लाने में मेरा बेटा बिन्नीस पी. चाको दिन रात लगातार यत्न किया। परमेश्वर इन सबके श्रम और कठिन परिश्रम का उचित प्रतिफल प्रदान करें।

इस अवसर पर यादव प्रिन्टर्स को मैं बिल्कुल भी भुलाना नहीं चाहता जिन्होंने हमारे आर्थिक अभाव के बावजूद हमारे साथ सहयोग किया और समय पर इस पुस्तक को छापकर देने में साथ दिया। जीवित और सच्चा एवं सृष्टिकर्ता परमेश्वर उनके व्यापार पर बड़ी आशीष प्रदान करने पाए।

इस समय उन सब भाई बहनों का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने अपने

दान द्वारा एवं फेथ मिनिस्ट्रीस बुक क्लब में सदस्यता लेकर इस प्रकाशन कार्य में अपना सहयोग एवं योगदान दिया। परमेश्वर आप सबके अर्थ (Finance) अपनी ऐसी असीम आशीष आने दे कि आपके पास रखने की जगह न रहे ताकि आप प्रभु की सेवा में अपनी आर्थिक आशीषों को और अधिक लगा सके। प्रभु हर्ष से देने वालों से प्रेम रखता है। सो प्रभु इस महान यत्न में साथ देने एवं सहयोग करने के कारण आपको आशीषित करने पाए।

उन अनेक भक्तों एवं मेरे शिष्यों को इस समय स्मरण करता हूँ जो इस शुभ कार्य के लिये निरन्तर प्रार्थना करते रहे। प्रभु ने आपकी प्रार्थना पर कान लगाया है और यह कार्य अब साध्य हुआ है। सो प्रभु आपको भी बहुतायत से आशीष प्रदान करें।

इस पुस्तक में दिये गये सभी सुन्दर और सुस्पष्ट चित्र मेरे प्रिय भाई और मेरे विश्वस्थ शिष्यों में से एक, पास्टर चन्द्रकान्त बी. घोड़के, कल्याण द्वारा तैयार किया गया है। यह शुभ कार्य इस समय सराहनीय है। प्रभु उनकी सेवकाई पर बड़ी आशीष प्रदान करे।

अन्त में इस पुस्तक को उन सब हिन्दी भाषी, समय और भविष्यवाणी को जानने में इच्छुक, प्रभु के वचन के प्रेमी विश्वासी भाई बहनों एवं प्रभु के सेवकों के आत्मिक लाभ हेतु, हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के पावन एवं पवित्र चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

पास्टर पी. ए. चाको
34, न्यू जागृति कॉलोनी
काटोल रोड,
नागपूर

परिचय

पुस्तक का नाम

इस पुस्तक के बहुचर्चित व्यक्ति दानिय्येल होने से उसी के नाम से यह पुस्तक जानी जाती है। बाइबल धर्मशास्त्र में इसी नाम से दाऊद का दूसरा पुत्र (1 इति- 3:1) और एज्रा के समय का एक याजक भी है (एज्रा. 8:2; 10:6; नहे. 10:6)। दानिय्येल शब्द का अर्थ है—“परमेश्वर मेरा न्यायी”।

यहोयाकीम राजा के शासन के चौथे वर्ष में नबूकदनेस्सर द्वारा गुलाम बनाकर बाबुल ले जाए गये राजकीय सन्तान एवं यहूदा गोत्र के जवानों में से एक था दानिय्येल (दानि. 1:3-6)। बन्धुवाई में रहते समय ईश्वरीय भक्ति एवं ज्ञान में वह प्रसिद्ध हुआ; (यहेज. 14:14, 20; 28:3)। उस के ईश्वर पर भरोसा एवं भक्ति के कारण दारा राजा के समय में देश के तीन अध्यक्षों में वह प्रमुख हो गया (दानि. 6:1-3)। यहूदा राष्ट्र 70 साल की बन्धुवाई के पश्चात् यहूदा देश की ओर वापस जाते हुए देखने का भी सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ (दानि. 6:28; एज्रा. 1:1-11)। वृद्धावस्था के कारण यरुशलेम की ओर न लौटते हुए वह बाबुल में ही रहा और वहीं उसकी मृत्यु हुई एवं दफनाया गया। यह जानकारी हमें यहूदी परंपरा से प्राप्त होती है।

इतिहास की पुस्तकें

बाइबल की पुस्तकों में लेखों (Writings) का एक विभाग है। उसमें कुछ इतिहास की पुस्तकें आती हैं जैसा कि एज्रा, नहेम्याह, इतिहास की पुस्तकें और दानिय्येल। इन में से एज्रा, नहेम्याह और 1 और 2 इतिहास, इतिहास की पुस्तकें कहलाती हैं। पर दानिय्येल एक भविष्यवाणीयुक्त इतिहास की पुस्तक है। दूसरे विभाग के भविष्यवाणी की पुस्तकों में शामिल न करते हुए तीसरे भाग में इन्हें शामिल करने का कारण यह था कि इन पुस्तकों के लेखक अंगीकार किये गये भविष्यवक्ता नहीं थे। दानिय्येल एक राज्य का अधिपति और एज्रा एक याजक एवं नहेम्याह एक राज्यपाल था। इतिहास की पुस्तकों के लेखक एज्रा, यहूदी परंपरा के दावे के अनुसार एक याजक था। इस कारण दानिय्येल की पुस्तक बड़े नबियों (Major Prophets) एवं छोटे नबियों (Minor Prophets) के बीच में आती

है परन्तु वह न तो बड़े नबियों में शामिल है न छोटे नबियों में। वह एक भविष्यवाणीयुक्त इतिहास की पुस्तक है।

लेखक

बाबुल में रहने वाले दानिय्येल के द्वारा B.C. 6 वीं शताब्दी में यह पुस्तक लिखे जाने के संबन्ध में यहूदी एवं मसीही परंपरा गवाही देती है। इस गवाही के सत्य होने का प्रमाण निम्नलिखित है:—

1. स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने दानिय्येल की पुस्तक से उल्लेख करते हुए बताया है कि यह दानिय्येल के द्वारा लिखा गया है (मत्ती.24:15; दानि.9:27; 12:11)। दानिय्येल 9:27 और 12:11 के बारे में आलोचना करने वाले दावा करते हैं कि वह मकाबियों के समय में लिखा गया है, परन्तु उन्हीं भागों को यीशु मसीह उल्लेख करते हुए कहते हैं कि वह दानिय्येल ने कहा है।
2. यीशु मसीह की गवाही, इस पुस्तक के स्वयं के दावे के द्वारा भी प्रकट हुई है अर्थात् दानिय्येल यहां प्रथम पुरुष (First Person) में लिखता और यह दावा भी करता है, कि उसको ईश्वरीय दर्शन प्राप्त हुआ था (7:2; 4:6—8,28; 8:1—3,15,18; 9:2—4; 12:5—8)। उन्हें प्राप्त दर्शनों को एक पुस्तक के रूप में लिखे जाने के आदेश प्राप्त होने का वर्णन 12:4 में आया है।

दानिय्येल की संपूर्ण पुस्तक एक ही लेखक की लेखनी है। यदि दानिय्येल को इसका संपूर्ण दर्शन प्राप्त है तो इसका संपूर्ण लेखक भी दानिय्येल स्वयं ही है। यह संपूर्ण पुस्तक की एकता इसके एक लेखक होने का प्रमाण है जो निम्नानुसार है :—

क) इसका प्रथम भाग दूसरे भाग के लिये मार्ग तैयार करता है और द्वितीय भाग प्रथम भाग पर आश्रित है। दूसरे अध्याय में वर्णन किया गया विषय 7, 8 अध्यायों में दोहराया गया है। 7,8 अध्याय दूसरे अध्याय के बिना समझना मुश्किल है। अध्याय 9,10,11,12 के विषय को समझने के लिये दूसरा अध्याय मदद करता है। ये सभी अध्यायों का विषय दूसरे अध्याय पर आश्रित एवं आधारित है। इसके अलावा 2:28; 4:2,7,10 को 7:1,2,15 से मिलाईये।

ख) एक विभाग के विभिन्न भाग एक दूसरे से संबन्धित हैं। उदाहरण के लिये मन्दिर के पात्रों का ले जाया जाना (1:1,2), पांचवें अध्याय के बेलशरसर

राजा के द्वारा तैयार किये गये जेवनार को समझने में रास्ता तैयार करता है। इसके अलावा 3:12 को 2:49; से मिलाईये, 9:21 को 8:15-17 से मिलाईये और 10:12 को 9:23 से मिलाकर अध्ययन कीजिये। इस प्रकार यह पुस्तक पढ़ें तो समझ में आता है कि इसके अलग-अलग भाग एक दूसरे से संबन्ध रखते हैं।

ग) दानिय्येल का स्वभाव संपूर्ण पुस्तक में एक समान दर्शाया गया है। एक ही दानिय्येल पुस्तक के आदि से अन्त तक प्रकट होता है।

घ) पुस्तक के साहित्यिक एकता बाइबल के सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। अनुकूल बोलने वाले विद्वान ही नहीं परन्तु आलोचना करने वाले विद्वान भी इस बात को मानते हैं, जैसा कि एस.आर. ड्राईवर, एच.एच.रोली, फैंफर आदि आलोचना करने वाले भी इस बात को स्वीकार करते हैं।

3. इस भविष्यवाणी की शुद्धता को नये नियम के निम्नलिखित भाग परोक्ष रूप में अंगीकार करते हैं (मत्ती.10:23,16:27-29;19:28;24:30; 25: 31;26:64)।

4. यह पुस्तक बाबुल, फारस आदि साम्राज्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रकट करती है।

दानिय्येल के लेखक होने की बात का विरोध करने वाला पहला व्यक्ति, ईसा सन् तीसरी शताब्दी में जीवित रहे दार्शनिक पोरफिरी (Porphyry) था। मसीहियों के खिलाफ लिखे 'Against the christians' नाम के निबन्ध में उन्होंने दानिय्येल की पुस्तक के बारे में यह मत प्रकट किया है कि यह पुस्तक अन्तियोकुस एप्पियानस के समय में यहूदा में जीवित रहने वाले किसी ने लिखी है। उसका कारण यह था कि यह पुस्तक अन्तियोकुस एप्पियानस के संबंध में ठीक-ठीक वर्णन करता है। इस कारण वह कहते हैं कि दानिय्येल की पुस्तक यह घटित होने के पश्चात् लिखा गया इतिहास है। कोई भी बात या घटना के घटित होने के पहले लिखा जाना, उनके विचार से असंभव सा है। परमेश्वर और उसके दर्शन एवं आध्यात्मिक बातों पर पोरफिरी के विश्वास के अभाव के कारण अमुक प्रकार के विचार के वे गुलाम बन गए, और वह इस प्रकार के निष्कर्ष पर पहुँचे।

पोरफिरि के आलोचनात्मक वक्तव्य के पश्चात् 17,18 शताब्दी में

चन्द लोगों ने दानिय्येल के लेखक होने की बात का विरोध किया। परन्तु पिछली शताब्दी में एल.बेलतोल्ट (L.Beltholt) ने गंभीर रूप से पुस्तक पर आक्रमण किया है। उस के पश्चात् दानिय्येल के लेखक होने की बात का खण्डन किया और यह घोषणा की कि यह पुस्तक B.C.दूसरी शताब्दी में मकाबियों के समय में लिखी गयी है। इस प्रकार की विचारधारा का बहुत से लोगों ने उसके बाद भी विरोध किया है। इस प्रकार दानिय्येल के लेखक होने के विचार का विरोध लोग क्यों कर रहे थे ?

पहली बात- दानिय्येल की पुस्तक 11 अध्याय 36-45 आयतों को छोड़कर येलमी राजवंश के समय के मिस्र और सीरिया के बीच युद्ध और अन्तियोकुस एप्पिपानस के संबन्ध में ठीक-ठीक वर्णन किया जाता है। आठवें अध्याय में भी इस समय का वर्णन मिलता है। इस प्रकार की बातें एक चश्मदीद गवाह ही वर्णन कर सकता है। इस कारण यह घटित होने के पश्चात् ही दानिय्येल की पुस्तक लिखा जाना संभव है। यह उन आलोचना करने वालों का निष्कर्ष है। ईश्वरीय योजना के अन्तर्गत पहले से बातों को प्रकट करने की भविष्यवाणी के कार्य पर इनको विश्वास नहीं था।

दूसरी बात- आलोचकों के विचार के अनुसार इस भविष्यवाणी में ऐतिहासिक त्रुटियां एवं कई विरोधाभास की बातें हैं। यदि वास्तव में यह दानिय्येल के द्वारा लिखा होता तो इस प्रकार की त्रुटियां होने की संभावना नहीं होती। उन लोगों द्वारा दिखाई जाने वाली मुख्य त्रुटियां और उसके उत्तर निम्नानुसार हैं :-

1. दानि-1:1 के यहोयाकीम के शासन के तीसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर यरुशलेम पर चढ़ाई करने का वर्णन, समय के हिसाब से एक बड़ी त्रुटि है। कारण, कि यहोयाकीम के शासन के चौथे वर्ष तक कसदी लोगों ने यरुशलेम पर चढ़ाई नहीं की थी (यिर्म.25:1,9;46:2)। यिर्मयाह-25:1 के अनुसार यह यहोयाकीम के शासन का पहला वर्ष था। यदि दानिय्येल इसका लेखक होता तो इस प्रकार की एक त्रुटि नहीं होती।

इस का उत्तर यह है कि दानिय्येल बाबुल के क्रम के अनुसार और यिर्मयाह फलस्तीन के क्रम के अनुसार वर्ष के हिसाब करने से है। बाबुल की रीति के अनुसार, राजा सिंहासन पर विराजमान होने का वर्ष उनके शासन

का पहला वर्ष नहीं है, बल्कि वह उनके सिंहासन पर विराजमान होने का वर्ष है। उसका अगला साल, प्रथम वर्ष के रूप में गिनते थे। लेकिन फलस्तीन के हिसाब से सिंहासन पर विराजमान होने का वर्ष उन का पहला वर्ष है। इस कारण दानिय्येल के कथनानुसार यहोयाकीम के शासन का तीसरा वर्ष यिर्मयाह के अनुसार चौथा वर्ष ही है। वह निम्नानुसार समझ सकते हैं :-

बाबुल की रीति	—	फलस्तीन की रीति
सिंहासन पर विराजमान होने का वर्ष	—	पहला वर्ष
पहला वर्ष	—	दूसरा वर्ष
दूसरा वर्ष	—	तीसरा वर्ष
तीसरा वर्ष	—	चौथा वर्ष

इस प्रकार दानिय्येल की पुस्तक के तीसरे वर्ष की समस्या समाप्त हो जाती है। इस के अलावा तीसरे वर्ष की सूचना, दानिय्येल की पुस्तक दानिय्येल द्वारा ही लिखे जाने का एक और प्रमाण है। इसका कारण, दानिय्येल की पुस्तक के लेखक को यिर्मयाह की पुस्तक के संबंध में अच्छी जानकारी थी, (दानि.9:2)। इतना ही नहीं कि वह यिर्मयाह नबी की किताब को अच्छी तरह जानता था, बल्कि लेखक ने यिर्मयाह नबी की पुस्तक 25:1 पद भी पढ़ रखा था। क्योंकि इसी अध्याय में बाबुल की बन्धुवाई का भी वर्णन आता है अर्थात् बन्धुवाई 70 वर्ष की होगी (यिर्मयाह.25:11)। जिस प्रकार आलोचना करने वालों के कथनानुसार यदि दानिय्येल की पुस्तक का लेखक B.C.दूसरी शताब्दी का कोई एक अज्ञात व्यक्ति होता, तो यिर्मयाह के चौथे वर्ष के बदले वह तीसरा वर्ष क्यों अंकित करता? (क्योंकि यिर्मयाह के समय का वर्णन दानिय्येल जानता था)। यह गलती वह बाद वाले लेखक से क्यों हुई? एक बात स्पष्ट है कि यह दानिय्येल भविष्यवक्ता के पुस्तक के समय के वर्णन की गलती नहीं बल्कि यह इस बात का प्रमाण है कि यह पुस्तक निःसन्देह दानिय्येल ने स्वयं लिखी है।

2) दानिय्येल 5 अध्याय में बेलशस्सर को “राजा” कहा गया है। वास्तव में बाबुल का अंतिम राजा बेलशस्सर का पिता नेबोनिडस था। यदि ऐसा है तो बेलशस्सर को राजा कहना लेखक की एक गलती नहीं है?

पिछले समय में प्राप्त मिट्टी के लेखों में बेलशस्सर को राजा का बेटा संबोधित किया गया है। लेकिन पिछली शताब्दी के मध्यान्तर समय में बाबुल से प्राप्त मिट्टी के लेखों में यह स्पष्ट लिखा है कि नेबोनिडस, राजा का अधिकार अपने पुत्र बेलशस्सर को सौंपकर अरब की ओर चला गया। नेबोनिडस की अनुपस्थिति में राज्य के शासन का भार बेलशस्सर द्वारा उठाया गया। राजा का आदेश शासन में रहने वाले के नाम से दिया जाता था और शपथ ग्रहण की जाती थी। ये दोनों कार्य नेबोनिडस बेलशस्सर के नाम से किये जाने का प्रमाण इन लेखों में लिखा गया है। सो बेलशस्सर नेबोनिडस के राजप्रतिनिधि (Regent) अर्थात् उन की अनुपस्थिति में शासन करने वाले के रूप में शासक रहा। इस प्रकार शासन के अधिकार में रहने के कारण बेलशस्सर को दानिय्येल द्वारा राजा कहे जाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

3) नेबोनिडस बेलशस्सर का पिता है फिर भी दानि.5रू18 में नबूकदनेस्सर को बेलशस्सर का पिता कहा गया है। लेकिन यह दानिय्येल के द्वारा की गई कोई गलती नहीं है, बल्कि यह यहूदियों द्वारा उपयोग किये जाने वाला एक प्रयोग या एक साधारण सी शैली है। साधारण रूप में दादा को पिता कहने की रीति उनके बीच में प्रचलित थी। इसका अर्थ बाप-दादा या पूर्व पिता है (उदा.मत्ती.1:1)। इसके अलावा नबूकदनेस्सर के पश्चात् एविल मेरोडक के द्वारा बाबुल साम्राज्य पर शासन करने का वर्णन यिर्मयाह द्वारा कहा गया है (यिर्म.52:28-31)। दानिय्येल यिर्मयाह नबी की पुस्तक के बारे में अच्छी तरह जानता था। सो उपरोक्त वर्णन में पिता का अर्थ दादा या पूर्व पिता है।

4) एक और आरोप यह है कि दारा राजा के बारे में जो वर्णन है, वह ऐतिहासिक दृष्टिकोण से गलत है (दानि.5:31-6:28)। क्योंकि इतिहास में या अन्य लेखों में ऐसे एक राजा के बारे में कोई वर्णन नहीं है। कुछ लोग इस राजा को कुस्रु के तीसरे अनुगामी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे कहते हैं, कि इसमें हिस्टास्पस के पुत्र दारा के साथ तुलना करने का प्रयास किया है। पर यह सही व्याख्या नहीं है, क्योंकि यहां बताया गया है कि दारा फारस के राजकीय वंश का है। लेकिन यहां दानिय्येल के द्वारा बताया गया दारा मादी देश का है। यदि ऐसा है, तो यह दारा कौन है? पुरातनकाल के इतिहासकार इस प्रकार के एक राजा के बारे में नहीं बताते हैं। लेकिन बाबुल पर विजय पाने एवं आगे के शासन में कार्य करने वाला व्यक्ति लेखों और इतिहास के

अनुसार राज्यपाल गुबारू है और वही यह दारा है लेकिन इस में कुछ विरोधाभास होने से एच.एच. रौली जैसे आलोचकों ने इस विचार को त्याग दिया है।

लेकिन रौली के विरोधी विचार को पार करने वाले प्रमाण जे.सी. विट्कोम्प ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक **“मादी दारा”** में सूचित किया है। विट्कोम्प ने यह स्पष्ट किया है कि गुबारू बाबुल और नदी के उस पार के देशों पर कुस्रु द्वारा राज्यपाल नियुक्त हुआ था। कुस्रु के चार, छः, सात, आठ आदि वर्षों के लेखों में गुबारू का नाम आता है। विट्कोम्प का वक्तव्य यहाँ उल्लेख करता हूँ — “बेलशस्सर के बाद राजा बने एवं राज्य के ऊपर अधिपति, एवं अध्यक्षों को नियुक्त करने वाला दारा मादी, बाबुल पर और नदी के उस पार राज्यपाल नियुक्त गुबारू होने की बात में कोई शंका नहीं है। दानिय्येल की पुस्तक में दिया गया वर्णन और लेखों और इतिहास का वर्णन इसी व्यक्ति को प्रमाणित करता है”, तो फिर एक और सवाल आता है कि इस व्यक्ति का नाम गुबारू है तो दानिय्येल ने इसको दारा क्यों पुकारा? इसका उत्तर सुप्रसिद्ध पुरातत्व वैज्ञानिक ऑलब्राइट देता है। उनका कहना है कि दारा नाम फारस की भाषा में दारियावहुश है, यह बाद में रोम साम्राज्य में कैसर के समान एक उपनाम बना। फारस की भाषा में दारा शब्द का अर्थ राजा होता था। दारियावहुश का मतलब है राजकीय जन (Royal one)। कुस्रु द्वारा राज्यपाल अथवा राजा नियुक्त किये गये दारा ने किस प्रकार सारी पृथ्वी पर रहने वाले देश-देश और जाति-जाति के सब लोगों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों के पास आदेश भेजे? (दानि-6:25)। यह एक और शंका है, क्योंकि दारा मादी की शासन सीमा नबुकदनेस्सर के अधीन पाये जाने वाले पुराने साम्राज्य थे (एशिया मैनर, उत्तरी सीरिया, मादी अथवा फारस आदि नहीं आता है)। सारी पृथ्वी के लिये यहाँ उपयोग किये गये आरा (ara) जो अरामी शब्द है, उसका इब्रानी शब्द एरेस (eres) है, जिसका अर्थ समान राज्य या देश है। यदि ऐसा है तो यह प्रश्न स्वयं सही हो जाता है। एक और बात बताना आवश्यक है अर्थात् हम्मुरब्बी के समय से बाबुल के राजा स्वयं स्वीकार किया गया एक आधिकारिक नाम था “सारी पृथ्वी का राजा” अर्थात् सब लोगों का राजा। इस कारण दारा राजा वही पुरातन प्रक्रिया को फिर से दोहरा रहा था।

5. दानिय्येल की पुस्तक को भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में शामिल नहीं

करने का कारण यही था, कि भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों के लिखे जाने के बाद यह लिखा गया है।

लेकिन यह विवाद बिलकुल भी सही नहीं है क्योंकि दानिय्येल की पुस्तक को भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों के साथ शामिल करने वाले पूर्वज आदिकाल में थे। उदाहरण के लिये सर्दीस के बिशप मिलेतुस (A.D. 175) के एकलॉगस (Eclogues) में पुराने नियम की पुस्तकों की सूची तैयार करते समय इस प्रकार रखा गया है— “यशायाह, यिर्मयाह, 12 भविष्यवक्ता, दानिय्येल, यहजकेल, एज्रा आदि भविष्यवक्ता”। उनके सुरियानी बाईबल में भी यही क्रम रखा गया है। इसके अलावा कई यूनानी हस्तलेखों में भी दानिय्येल को भविष्यवक्ताओं के साथ रखा गया है।

विवाद के लिये इतना वर्णन किया है पर दानिय्येल को लेखों के विभाग में शामिल करने का मुख्य कारण यह था कि वह एक आधिकारिक नबी नहीं था। आधिकारिक रूप में वह एक राज्य का अध्यक्ष या एक राजनीतिज्ञ (statesman) था। पर दानिय्येल के अन्दर भविष्यवाणी की आत्मा थी। इस कारण उसे नये नियम में भविष्यवक्ता कहा गया है (मत्ती-24:15)। इसी अर्थ में बिलाम को भी भविष्यवक्ता कहा गया है (॥पतरस-2:16)। इन कारणों से लेखों के विभाग में दानिय्येल की पुस्तक शामिल की जाती है। इसलिये लिखने के समय के साथ कोई संबंध नहीं होने का ज्ञान प्राप्त होता है।

6. अपोक्रीफा के उपदेश में (B.C. 175), यशायाह, यिर्मयाह, यहजकेल आदि की सूचना है लेकिन दानिय्येल के संबंध में मौन धारण किया गया है। इस कारण कहते हैं कि उस समय तक दानिय्येल की पुस्तक को लिखा नहीं गया था। लेकिन यह दानिय्येल की पुस्तक उस समय तक नहीं लिखे जाने का एक प्रमाण नहीं है क्योंकि आसा, यहोशापात, मोर्दकै, एज्रा आदि के बारे में भी उपदेशक की पुस्तक में कोई संकेत नहीं है। भविष्यवक्ताओं के झुण्ड में दानिय्येल को शामिल नहीं करने का कारण वह एक आधिकारिक भविष्यवक्ता नहीं होने से था।

7. मसीहा, स्वर्गदूत, पुनरुत्थान, न्याय आदि उन्नतिशील दैवीय शास्त्र विधियों के बारे में इस पुस्तक में वर्णन होने के कारण वह बन्धुवाई के पश्चात्

के समय को दर्शाता है ।

यह विवाद भी सही नहीं है क्योंकि ये सब विषय पुराने नियम के अन्य भागों में भी वर्णन किये गये हैं। मसीहा के संबन्ध में वर्णन उत्पत्ति के आरंभ में ही (3:15) आया है, और पूरे पुराने नियम में यह विचार व्याप्त है। भजन दो में मसीहा शब्द उपयोग किया गया है (2:1,2)। मसीहा का अर्थ है — अभिषिक्त। स्वर्गदूत के संबंध में आदि से अन्त तक वर्णन आता है। पुनरुत्थान का वर्णन पुराने नियम के अन्य भागों में भी पाया जाता है (यशा. 26:19; 53:10; यहेश.37; अय्यूब.19:25; 1राजा.17; 2राजा.4)। लेकिन दानिय्येल में केवल एक ही स्थान पर पुनरुत्थान का वर्णन आता है (दानि.12:2)। न्याय के संबन्ध में भी पुराने नियम के अन्य स्थानों में वर्णन आता है (यशा.42:2-4; योएल 3:9-17; भजन.1:5; 9:7,8; 68:14; 76:9)।

इस प्रकार दानिय्येल की पुस्तक के लेखक दानिय्येल होने के विचार के विपरीत बहुत से विचारों को प्रस्तुत किया है, पर वह उसके लेखक होने की सच्चाई को दुर्बल नहीं करती। अतः दानिय्येल ही इस पुस्तक का लेखक है।

पुस्तक का उद्देश्य

इस पुस्तक का उद्देश्य यह प्रकट करना है कि इस्राएल का परमेश्वर अन्य जातियों के देवी देवताओं से महान है। इस्राएल को दण्ड देने के लिये अन्य जातियों का इस्तेमाल किया है परन्तु वे सब निकाल दिये जायेंगे। अन्तिम समय में, “स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा” (दानि.2रू44)। क्रोध का अन्त परमेश्वर के लोगों के लिये भारी क्लेश के समय के साथ होगा। उस समय मसीहा आयेगा और वह अपना अविनाशी एवं सदा ठहरने वाला राज्य स्थापित करेगा। उस राज्य में यहूदी लोग शामिल किये जायेंगे। संसार के राष्ट्रों के ऊपर परमेश्वर के अधिकार होने का वर्णन दानिय्येल इस पुस्तक द्वारा प्रमाणित करता है।

पुराने नियम में सबसे मुख्य भविष्यवाणी की पुस्तक दानिय्येल की पुस्तक है। नया नियम के मुख्य भविष्यवाणी का विषय अर्थात् विनाश के पुत्र

का प्रकट होना, भारी क्लेश, यीशु मसीह के महिमा में प्रकट होना, पुनरुत्थान, एक हजार साल का राज्य आदि का एक प्रारंभिक वर्णन भी इस पुस्तक में पाया जाता है। बाबुल की बन्धुवाई से आरंभ होने वाला अन्य जातियों का समय (लूका.21रू24), एवं यीशु मसीह का पुनरागमन और मसीहा के राज्य की स्थापना तक के सभी विषयों का वर्णन इस पुस्तक में पाया जाता है।

इस पुस्तक की दो भाषा

दानिय्येल की पुस्तक लिखने के लिये मुख्य रूप में दो भाषा प्रयोग किया गया है। इस पुस्तक के 2:4—7:28 तक अरामी भाषा में और बाकी इब्रानी में लिखा गया है। इस प्रकार दो भाषाओं में यह पुस्तक लिखे जाने के संबंध में बहुत से कारण और मत सामने आये हैं लेकिन उन में से सबसे ज्यादा ग्रहण योग्य एक ही विचार है, वह यह है कि संसार के राष्ट्रों के बारे में वर्णन करने के लिये अरामी भाषा और परमेश्वर के राज्य के बारे में वर्णन करने के लिये इब्रानी भाषा का प्रयोग किया गया है।

पुस्तक का विभाजन

इस पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला भाग इतिहास मात्र है (अध्याय 1—6) और दूसरा भाग भविष्यवाणी है (अध्याय 7.12)। दूसरा भाग पहले भाग पर आधारित है और इसका पहला भाग दूसरे भाग के लिये मार्ग तैयार करता है। इस कारण पहले भाग के अध्ययन के द्वारा ही दूसरे भाग को समझ सकेंगे।

इस्राएली इतिहास

इससे पहले कि हम प्रथम अध्याय में प्रवेश कर इस पुस्तक का अध्ययन आरंभ करें, हमें इस्राएली इतिहास का थोड़ा ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। इस्राएल राष्ट्र का आरंभ इब्राहिम से हुआ है। परमेश्वर ने आदम को बनाया और उस से वाचा बान्धी अर्थात् उसको एक नियम दिया (उत्पत्ति 2:16,17)। जलप्रलय के बाद वाले समय के आरंभ में परमेश्वर ने नूह से एक

वाचा बान्धी या एक और नियम दिया (उत्पत्ति.9:8-17)। सार्वलौकिक स्वभाव के ये दोनों नियम अपने उद्देश्य में विफल हो गये। इस कारण परमेश्वर ने अपने लिये एक अलग जाति तैयार करने का विचार किया। उसके लिये परमेश्वर ने एक मनुष्य को विशेष कर के बुलाया और उसको कुछ आज्ञाएं दी। उस व्यक्ति का नाम था, इब्राहिम। इब्राहिम से इसहाक और इसहाक से याकूब एवं याकूब से 12 गोत्र तैयार हुए। उन्हें संख्या में बढ़ाने के उद्देश्य से मिस्र ले जाया गया। इस्राएल जाति मिस्र देश में 215 साल के निवास के दौरान 25 लाख के रूप में बदल गये और बढ़ गये। 215 साल के पहले जब वे मिस्र की ओर याकूब के नेतृत्व में गये तब वे केवल 70 प्राणी थे (उत्पत्ति. 46:27)। 215 वर्ष पश्चात् जब वे मूसा के नेतृत्व में मिस्र से निकल कर आ रहे थे, तब वे 25 लाख की संख्या में बढ़ गये।

वे यात्रा कर के प्रतिज्ञा के देश में आ गये। वहां पहुँचने के पश्चात् परमेश्वर ने उनके ऊपर न्यायियों को नियुक्त किया ताकि उन पर शासन करें। न्यायियों के दो प्रकार के कार्य थे। एक, शत्रुओं के हाथ से इस्राएलियों को छुड़ाना और दूसरा, इस्राएल पर शासन करके उन का न्याय चुकाना। ओत्निएल से लेकर शिमशोन तक (न्यायि.3:7-16:31) अनेक न्यायियों ने उन पर शासन किया और शामुएल उनका अन्तिम न्यायी और पहला नबी था। परमेश्वर स्वयं न्यायियों के द्वारा उन पर शासन कर रहे थे। तब शामुएल के समय में इस्राएलियों ने अन्य जातियों के समान राजा की मांग करके परमेश्वर का तिरस्कार किया।

परमेश्वर ने उन्हें राजा दिया। इस्राएल का पहला राजा शाऊल था। दूसरा राजा दाऊद और तीसरा राजा दाऊद का बेटा सुलैमान था। सुलैमान के समय में इस्राएल देश में मूर्तिपूजा बढ़ गई। सुलैमान एक ज्ञानी राजा था। वचन में आया है कि न उसके समान कोई ज्ञानी पहले कभी हुआ, न उस के बाद होगा। परन्तु उसने अनेक अन्यजाति स्त्रियों से ब्याह किया और उन स्त्रियों के द्वारा वह मूर्तिपूजा की ओर घसीटा गया। परमेश्वर ने उससे क्रोधित होकर राज्य को दो भागों में विभाजित करने का विचार प्रकट किया। लेकिन परमेश्वर ने कहा यह विभाजन सुलैमान के जीवनकाल में नहीं किया जायेगा। सुलैमान के पुत्र रहोबाम के समय में देश दो भागों में विभाजित हो गया। 10 गोत्र वाला उत्तरी भाग, इस्राएल राज्य के नाम पर और दो गोत्र

वाला दक्षिणी भाग यहूदा राज्य के नाम पर आगे बढ़ने लगा। इस्राएल राज्य का प्रथम राजा यारोबाम था। उसके बाद शासन में आए प्रायः सभी राजा यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध कार्य करने के कारण वह राज्य B.C. 722 में स्वदेश से निकाल दिये गये (यशा.10:5,6) और वे अशूर की बन्धुवाई में पहुँचाए गये। यहूदा राज्य 116 वर्ष और स्वदेश में रहा परन्तु यहूदा राज्य के राजाओं के बलवा और मूर्तिपूजा-रूपी पाप के कारण वह राज्य भी B.C.606 में बाबुल की बन्धुवाई में ले जाए गये। बाबुल का राजा नबुकदनेस्सर द्वारा यरुशलेम पर चढ़ाई की गयी और तीन बार में यहूदियों को बाबुल ले जाया गया। पहला झुण्ड B.C.606 में, दूसरा झुण्ड B.C.598 में और तीसरा झुण्ड B.C.587 में बाबुल की ओर गये। इस प्रकार बन्धुवाई में पाए जाने वाले यहूदा राष्ट्र का वर्णन ही दानिय्येल की पुस्तक का विषय है।

अध्याय 1

दानिय्येल का निर्णय

1:1,2:- 'यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके उसको घेर लिया। तब परमेश्वर ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन के कई पात्रों सहित उसके हाथ में कर दिया और उसने उन पात्रों को शिनार देश में अपने देवता के मन्दिर में ले जाकर, अपने देवता के भण्डार में रख दिया'।

यहूदा राज्य के ऊपर परमेश्वर ने अपने न्याय को आने दिया। यह न्याय उन राजाओं के कारण आया जो यहूदा राज्य के ऊपर शासन किया करते थे। विशेषकर मनश्शे राजा का पाप स्मरण करने योग्य है। जिस समय बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई की तब यहोयाकीम यहूदा देश पर शासन कर रहा था। नबूकदनेस्सर के आगमन का और आक्रमण का कारण उपरोक्त पद में स्पष्ट रूप में लिखा गया है अर्थात् यहोयाकीम राजा ने परमेश्वर के खिलाफ पाप किया (2राजा.23:37)। लेकिन इतना बड़ा न्याय उसके ऊपर आने के लिये वह परमेश्वर के क्रोध का पात्र क्यों बन गया था? यिर्मयाह के पुस्तक में पढ़ने को मिलता है कि उसने परमेश्वर के वचन को जला डाला (यिर्मयाह.36:23)। इस कारण उसके ऊपर आने वाले न्याय के संबंध में परमेश्वर ने पूर्व सूचना दी (यिर्म. 36:30;20:11,18,19)। परमेश्वर के वचन के साथ अयोग्य रूप में व्यवहार करने के कारण मिलने वाले नतीजे के लिये यह राजा यहोयाकीम एक चितौनी है। उस राष्ट्र के पतन के साथ-साथ जो प्रथम बार बन्धुवाई की ओर गए, उन में दानिय्येल और उसके तीन साथी शामिल थे।

जब पहली बार नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई की तो यहोयाकीम राजा को भी जंजीरों से बान्धकर बाबुल ले गये। परन्तु उसे कुछ समय बाद स्वतन्त्र किया गया और उसके शासन का अधिकार उसे पुनः प्रदान किया गया (2इति.36:6)। लेकिन यह आदेश दिया गया कि वह बाबुल के राजा के अधीन रह कर यहूदा के शेष लोगों पर जो यरूशलेम में रह गये थे, शासन करे (1राजा.24:1)। पहले आक्रमण में यहूदा राज्य का पतन एवं नीचा दिखाया जाना और बाबुल के अधीन कर दिये जाने तक ही सीमित रहा। इसे एक आंशिक गुलामी कह सकते हैं। लेकिन इस समय के बाद वे अपने एक स्वयं का शासन और स्वतन्त्र राज्य का आनन्द नहीं उठा सके। इसके अलावा प्रथम आक्रमण से **“अन्य जातियों का समय”** (लूका 21:24), अर्थात् परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर एवं दुनिया के अन्य देशों पर अन्य जातियों का शासन आरंभ हुआ।

परमेश्वर ने इस्राएल को इस कारण एक राष्ट्र के रूप में तैयार किया था कि परमेश्वर इस प्रजा के द्वारा संसार के अन्दर एक ईश्वरीय शासित राष्ट्र (Theocratic Nation) एवं शासन प्रणाली को आरंभ करें। परन्तु यह प्रजा परमेश्वर के मार्ग से भटक गयी और अन्य देवी देवताओं की आराधना करने लगी। परमेश्वर ने कई बार अपने दासों और भविष्यवक्ताओं को अपने लोगों के बीच में समय-समय पर भेजा और उन्हें चिताया, पर वे परमेश्वर के मार्ग से सदा दूर ही रहे। सो परमेश्वर ने संसार का शासन अन्य जातियों के हाथ में सौंप दिया। यह अन्य जातियों का समय एक विशेष एवं लम्बा समय है। यह B.C.606 में नबूकदनेस्सर के समय से आरंभ हुआ और आज भी चल रहा है, और आगे भी चलता रहेगा। यह समय यीशु मसीह आकर संसार में अपना राज्य स्थापित कर के अपना शासन आरंभ करने तक चलता रहेगा (लूका.21:24)। अन्य जातियों का पहला राजा नबूकदनेस्सर और अंतिम राजा विरुद्ध मसीह (Anti Christ) है। मतलब विरुद्ध मसीह के शासन के साथ यह विशेष समय का और शासन का अन्त हो जायेगा।

सो यहोयाकीम को वापस भेज दिया गया और स्वतन्त्र करके शासन करने का फिर से अवसर दिया गया। लेकिन यहोयाकीम ने तीन वर्ष के पश्चात् परमेश्वर की इच्छा के विपरीत बाबुल के राजा की अधीनता को अस्वीकार कर नबूकदनेस्सर के खिलाफ बलवा किया और इस कारण यहूदा

देश में अधिक विनाश आने का कारण बना (2राजा.24:2)। उसके शासन के पाँच सालों में उसने बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को क्रोध दिलाया और यहूदा पर एक भयंकर आक्रमण के लिये उसको बाध्य किया। यह समाचार सुनकर कि नबूकदनेस्सर यहूदा पर आक्रमण करने हेतु क्रोध से भर गया है और एक सशक्त सेना को यहूदा के खिलाफ भेज रहे हैं, यहोयाकीम राजा को दिल का दौरा पड़ गया, और उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई (यिर्मयाह.22:17,19)। इससे पहले कि आक्रमणकारी यहूदा देश में पहुँचे, यहोयाकीम राजा का देहान्त हो गया। तुरन्त यहोयाकीन जो उसका बेटा था, राजा बनकर सिंहासन पर विराजमान हुआ। वह केवल 100 दिन ही शासन कर पाया और बड़ी दुष्टता के साथ शासन किया। जैसा पिता वैसा बेटा। खैर, उसके बलवा करने के स्वभाव के कारण वह दण्डित किया गया। यहोयाकीम राजा, उसका पूरा परिवार, उसकी माता जो रानी थी, और प्रजा में से बहुत लोगों एवं मन्दिर और महल के सारी संपत्ति समेत बाबुल की बन्धुवाई के स्थान में पहुँचा दिये गये (2राजा.24:8-16)। इस प्रक्रिया को या इस आक्रमण को आम तौर से बन्धुवाई कहते हैं (B.C.598)।

उस के पश्चात् लगभग 11 साल बाद यहूदा पर शासन करने वाला राजा, सिदकियाह के समय में परमेश्वर ने फिर से नबूकदनेस्सर को भेजा। उस समय प्रजा का बलवा पूरी तौर से अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया और उसने फिर से यहूदा पर अपना आक्रमण कर दिया। वह अपनी सेना समेत आए और नगर को और मन्दिर को भी जला डाला। इस प्रकार परमेश्वर ने यहूदा राज्य पर अपना न्याय पूरा किया। उस समय यहूदी लोगों को अन्तिम बार बन्दी बना कर बाबुल ले जाया गया (यिर्म.24)। मन्दिर के समस्त बहुमूल्य वस्तुओं को ले जाकर राजा ने अपने देवता के मन्दिर में रख दिया। तब यिर्मयाह नबी और अन्य कुछ लोगों ने बाबुल जाने से इनकार किया और मिस्र की ओर जाना पसन्द किया। मिस्र में पहुँचे परमेश्वर के लोगों के मध्य में भविष्यवाणी की सेवा करते हुए यिर्मयाह नबी ने अपना जीवन निर्वाह किया और वहीं उनका देहान्त हुआ।

पद-1:3-7:- 'तब उस राजा ने अपने खोजों के प्रधान अशपनज को आज्ञा दी कि इस्राएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुरुषों में से ऐसे कई जवानों को ला जो निर्दोष, सुन्दर और ज्ञान में निपुण और विद्वान

और राजमन्दिर में हाजिर रहने के योग्य हों और उन्हें कसदियों के शास्त्र और भाषा की शिक्षा दे। और राजा ने आज्ञा दी कि उसके भोजन और पीने के दाखमधु में से उन्हें प्रतिदिन खाने पीने को दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन पोषण होता रहे तब उसके बाद राजा के सामने हाजिर किये जाएं। उनमें यहूदा की सन्तान से चुने हुए, दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह नाम यहूदी थे। और खोजों के प्रधान ने उनके दूसरे नाम रखे अर्थात् दानिय्येल का नाम उसने बेलतशस्सर, हनन्याह का शद्रक, मीशाएल का मेशक, और अजर्याह का नाम अबेदनगो रखा”।

यहूदा राज्य बाबुल की बन्धुवाई में

यहूदा राज्य तीन बार में बाबुल ले जाया गया जो उन के बन्धुवाई के लिये परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया था। पहला झुण्ड B.C. 606 में ले जाया गया। उस झुण्ड में यहोयाकीम राजा को भी जंजीरों से बन्धा हुआ ले गया जो यहूदा राज्य का 18 वां राजा था। पर बाद में उसे स्वतन्त्र किया गया और वापस स्वदेश भेज दिया। उस देश में शेष रह गये लोगों के ऊपर शासन करने हेतु वह फिर से नियुक्त किया गया। लेकिन उसे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर राजा के आदेश और निर्देश के अनुसार शासन करना था। इस पहले झुण्ड के साथ दानिय्येल और उसके साथी भी बाबुल ले जाए गये थे। दूसरा झुण्ड B.C. 598 में ले जाया गया। इस समय यहोयाकीम राजा और उसका सारा परिवार और उस की माता जो रानी थी, सबको बान्ध कर बाबुल ले जाए गये। B.C. 587 में तीसरे झुण्ड के साथ यहूदा राज्य के अन्तिम राजा सिदकिया और मन्दिर के सब बहुमूल्य वस्तुओं समेत ले जाए गये। यह यहूदा राज्य के 70 साल के बन्धुवाई का आरंभ है।

इस प्रकार यहूदा राज्य पर नबूकदनेस्सर द्वारा आक्रमण करने का मुख्य उद्देश्य यह था कि इस राज्य से योग्य लोगों को ले जाएं ताकि बाबुल शहर का सुन्दर तरीके से निर्माण किया जा सके। बाबुल का राजा अपने नगर को दुनियां का सबसे बड़ा और मशहूर नगर के रूप में बनाना चाहता था। उसके लिये मजदूरी के कार्य करने के लिये साधारण लोगों की भी

आवश्यकता थी, सो यहूदा देश के साधारण लोगों को भी गुलाम बनाकर ले गये। इसके अलावा कई जवानों को भी ले गये जो राज घराने के थे। याद रखिये यह आक्रमण और अधीनता की प्रक्रिया केवल यहूदा राज्य के साथ ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी नबूकदनेस्सर ने किया। उसने अपनी सैन्य शक्ति के द्वारा कई अन्य देशों को भी अपने अधीन कर लिया। वहाँ से भी लोगों को गुलाम के रूप में बांध कर बाबुल लाये गये। उन देशों के भी राज घराने के जवानों को चुन लिया जो सुन्दर और योग्य थे। सब लोगों को इस्तेमाल कर के बाबुल नगर को संसार के अन्दर एक सशक्त साम्राज्य बनाने का उद्देश्य था। उस नगर में एक बड़िया राजमहल बनाया गया। राजा के दरबार में कार्य करने के लिये राजघराने के सुन्दर एवं सुयोग्य नौजवानों को चुन कर बाबुल का ज्ञान और कसदियों की भाषा सिखाने का आदेश दिया गया।

यहां यहूदा के साथ भी वही दुखद घटना घटित हुई। लेकिन याद रखिये यह घटना अचानक एवं अकस्मात् नहीं हुई। परन्तु यह परमेश्वर ने अपने दास भविष्यवक्ताओं के द्वारा पहले से कह दिया था। यह भविष्य का वचन यहूदा का राजा हिजकियाह के समय में हुआ था। उस के शासन के अन्तिम दिनों में वह बीमार होकर मरने वाला था तब उसने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे चंगा कर दिया। इतना ही नहीं उसकी आयु भी 15 साल के लिये बढ़ा दी गई। बाबुल का राजा बरोदकबलदान जो बलदान का पुत्र था, हिजकियाह के रोगी होने और चमत्कारिक चंगाई का समाचार सुनकर उस के पास पत्री और भेंट भेजी। इस समय हिजकियाह राजा ने एक गलती की कि उस पत्री और भेंट लाने वालों का मान रखकर उनको अपने अनमोल पदार्थों का सब भण्डार, सोना, चांदी, सुगंध द्रव्य, उत्तम तेल, अपने हथियारों का पूरा घर और अपने भण्डारों में जो-जो वस्तुएं थीं, सब दिखाई। हिजकियाह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही जो उसने उन्हें न दिखाई हो (2राजा.20:12,13)।

इस के तुरन्त बाद यशायाह नबी हिजकियाह के पास आया और उससे बातें की और परमेश्वर का वचन अर्थात् भविष्यवाणी का वचन उसे सुनाया और वह इस प्रकार है —

“तब यशायाह भविष्यवक्ता ने हिजकियाह राजा के पास जाकर पूछा,

वे मनुष्य क्यां कह गए? और कहां से तेरे पास आए थे? हिजकिय्याह ने कहा, वे तो दूर देश से अर्थात् बाबेल से आए थे। फिर उसने पूछा, तेरे भवन में उन्होंने क्या क्या देखा है। मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो मैंने उन्हें न दिखाई हो। यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, यहोवा का वचन सुन ले ऐसे दिन आने वाले हैं जिनमें जो कुछ तेरे भवन में हैं और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रखा हुआ आज के दिन तक भण्डारों में हैं वह सब बाबेल को उठ जाएगा; यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हैं उनमें से कितनों को वे बन्धुवाई में ले जाएंगे; और वे खोजे बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे” (2राजा.20:14-18)।

“तौभी जब बाबेल के हाकीमों ने उसके पास उसके देश में किये हुए चमत्कार के विषय पूछने को दूत भेजे तब परमेश्वर ने उसको इसलिये छोड़ दिया, कि उसको परखकर उसके मन का सारा भेद जान ले ” (2इति.32:31)।

“उस समय बलदान का पुत्र बरोदकबलदान, जो बाबुल का राजा था, उसने हिजकिय्याह के रोगी होने और फिर चंगे हो जाने की चर्चा सुनकर उसके पास पत्री और भेंट भेजी। इनसे हिजकिय्याह ने प्रसन्न होकर अपने अनमोल पदार्थों का भण्डार और चांदी, सोना, सुगंध द्रव्य, उत्तम तेल, और अपने हथियारों का सब घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं, वे सब उनको दिखलाई। हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु नहीं रह गई जो उसने उन्हें न दिखाई हो। तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, सेनाओं के यहोवा का यह वचन सुन ले: ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिनमें जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ आज के दिन तक तेरे पुरखाओं का रखा हुआ तेरे भंडारों में है, वह सब बाबुल को उठ जायेगा; यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी.....” (यशा.39:1-7)।

परमेश्वर ने अपने दास यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया वचन पूरा किया। जिस समय बाबुल के राजा बरोदकबलदान के लोगों को सारा

भण्डार दिखाया तभी उनके अन्दर उन वस्तुओं को प्राप्त करने का विचार उत्पन्न हुआ पर वह परमेश्वर का समय नहीं था। लेकिन आने वाले आक्रमण के बारे में परमेश्वर ने अपने दास भविष्यवक्ता द्वारा कह सुनाया और वह B.C. 606 में अक्षरसः पूरा भी हुआ। बाबुल का राजा नबुकदनेस्सर के समय में आक्रमण की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। सब कुछ वे लूट कर ले गये और लोगों को भी ले गये। उनमें दानिय्येल और साथी भी शामिल थे।

दानिय्येल बाबुल में

जैसा कि ऊपर लिखा गया है, दानिय्येल पहले निर्वासन में ही बाबुल पहुँच गया था। वहाँ पहुँचने पर वह और उसके तीन अन्य साथी हनन्याह, मीशाएल, अजर्याह तीनों राजघराने के होने के कारण राजा के दरबार में सेवा हेतु नियुक्त किये गये। उन्हें अशपनज नाम खोजों के प्रधान के हवाले कर दिया गया। राजा की ओर से यह आदेश दिया गया कि इस्राएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुरुषों में से कई जवानों को लाएं। उनकी योग्यताएं भी वचन में लिखी गयी है अर्थात् वे निर्दोष होने चाहिए। यह उन की शारीरिक स्थिति की ओर संकेत करता है। मतलब लंगड़ा, लूला, काणा या इस प्रकार की कोई शारीरिक खोट या कमी नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा वे सुन्दर होने चाहिए। यह उन के रूप और व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है। इस के अलावा बुद्धिमान एवं प्रवीण, ज्ञान से परिपूर्ण, विद्वान और राजमन्दिर में हाज़िर रहने योग्य हों। उन्हें कसदियों की भाषा सीखना आवश्यक था।

उनके भोजन की व्यवस्था

राजा ने खोजों के प्रधान को यह आदेश दिया कि उनके भोजन की व्यवस्था राजा के मेज से ही की जाए। राजा जो भोजन करते हैं और दाखमधु पीते हैं, वही उन्हें दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन पोषण करें। तब वे राजा के सामने उपस्थित किए जाएं। यहूदियों में से चुने गये दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह आदि चार जवान इस बात से परेशान हो गये। यहूदी होने के कारण उनके पास एक व्यवस्था थी। मूसा के द्वारा दी गयी व्यवस्था में यह बताया गया है कि परमेश्वर के लोग क्या खाएं और क्या नहीं खाएं (लैव्य.व्य 11:1-47)। वे एक

धर्मसंकट में पड़ गये। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि मूसा और व्यवस्था एक ओर खड़े हैं और दूसरी ओर नबूकदनेस्सर राजा का आदेश लेकर खोजों का प्रधान अशपनज खड़ा है। अब उन्हें क्या करना है? ऐसे समय में स्वाभाविक रूप में जवान लड़के होने से हाँ बोलकर राजा के भोजन ग्रहण करने की परीक्षा में वे पड़ सकते थे।

लेकिन उन जवानों ने राजा के भोजन ग्रहण करने से इनकार किया। वे जाकर खोजों के प्रधान से कहने लगे कि हम राजा का भोजन ग्रहण करके अपने आप को अशुद्ध नहीं करेंगे। चार भाईयों में दानिय्येल ने इस बात का दृढ़ संकल्प कर लिया कि राजा का भोजन नहीं खायेंगे न राजा के मेज पर लाए जाने वाला दाखरस पीयेंगे।

उसके संबंध में लिखा है – **“परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होगा”,** इसलिये उसने खोजों के प्रधान से बिनती की कि उसे अपवित्र न होना पड़े (दानि.1:8)।

यह दानिय्येल की ओर से एक पक्का निर्णय था कि राजा के मेज पर आने वाले भोजन ग्रहण कर के अपने को अशुद्ध नहीं करेगा। जब दानिय्येल ने ऐसा मन में ठान लिया तो परमेश्वर ने भी उसकी मदद की।

लिखा है **“परमेश्वर ने खोजों के प्रधान के मन में दानिय्येल के प्रति कृपा और दया भर दी”** (दानि.1:9)।

जब हम परमेश्वर के लिये और उसके वचन के लिये और परमेश्वर के कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्प करते हैं, तो परमेश्वर भी हम से प्रसन्न हो जाता है और हमारे लिये अजीब तरीके से मार्ग खोलता है।

दानिय्येल के निर्णय को सुनकर खोजों का प्रधान भयभीत हो गया। उसने कहा, **“और खोजों के प्रधान ने दानिय्येल से कहा मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूँ, क्योंकि तुम्हारा खाना पीना उसी ने ठहराया है, कहीं ऐसा न हो कि वह तेरा मुँह तेरे संगी जवानों से उतरा हुआ और उदास देखे और तुम मेरा सिर राजा के सामने जोखिम में डालो”** (दानि.1:10)। भोजन की व्यवस्था राजा की ओर से होने के कारण उसका परिवर्तन भी राजा की ओर से होना चाहिए। लेकिन राजा से इस संबंध में बोलने की हिम्मत अशपनज के पास नहीं थी। वह बिलकुल भयभीत है। दानिय्येल को इस संबंध में कोई चिन्ता नहीं है और वह तनिक भी

भयभीत नहीं है। उसको मालूम है कि उनका परमेश्वर उन लोगों की सहायता करेगा।

इस कारण दानिय्येल ने उस मुखिया को आश्वासन दिया और हिम्मत बंधाई। लिखा है, 'तब दानिय्येल ने उस मुखिया से, जिसको खोजों के प्रधान ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अर्जयाह के ऊपर देखभाल करने के लिये नियुक्त किया था, कहा, मैं तेरी बिनती करता हूँ, अपने दासों को दस दिन तक जांच, हमारे खाने के लिये सागपात और पीने के लिये पानी ही दिया जाए। फिर दस दिन के बाद हमारे मुंह और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं, उनके मुंह को देख, और जैसा तुझे दिखाई पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना। उनकी यह बिनती उसने मान ली, और दस दिन तक उनको जांचता रहा। दस दिन के बाद उनके मुंह राजा के भोजन के खाने वाले सब जवानों से अधिक अच्छे और चिकने दिख पड़े। तब वह मुखिया उनका भोजन और उनके पीने के लिये ठहराया हुआ दाखमधु दोनों छुड़ाकर, उनको सागपात देने लगा (दानि.1:11-16)।

परमेश्वर पर अटल विश्वास रखने और परमेश्वर के वचन को मानने वाले एक सच्चे विश्वासी को कभी भी अविश्वासियों के निर्णय के अनुसार बदलने और विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। उसको चाहिये कि अपने अटल और अटूट विश्वास और दृढ़ संकल्प के द्वारा अन्य लोगों को अपने विश्वास की ओर आकर्षित करे। हमारे निर्णय के अनुसार उन्हें कार्य करना है। यह दानिय्येल और उसके भाईयों के सामने एक चुनौती का समय था। ऐसे समय में हमें अवसरवादी नहीं बनना चाहिये। ऐसा नहीं कि चलो बन्धुवाई के देश में प्रभु परमेश्वर ने हमारे लिये क्या अच्छा प्रबन्ध किया है, धन्यवाद करके खाने लग जाएं। उन्हें मालूम था कि यह अन्य जाति राजा है और उनके खाने का कोई नियम नहीं है न ही पीने का नियम। मेज पर जो भी आ जाए वह खा सकते थे। यहूदी मांस-मछली का सेवन कर सकते हैं पर खूर भटे और पागुर करने वाले जानवरों एवं छिलके वाली मछलियां और उड़ने वाले पक्षियों में भी कुछ वे खा सकते थे। यह भी हो सकता है कि वह भोजन वस्तु मूर्तियों के सामने अर्पित किया हुआ हों (1कुरि.8:1-13)। दाखरस भी जो अंगूर का ताज़ा रस जो दाखरस कहलाता है, पी सकते थे।

लेकिन राजा ऐसा करने नहीं देगा। वह उफान लाने वाला दाखरस (Fermented wine) पीते थे जो पीने के पश्चात् कुछ उत्तेजित करता हो। वह यहूदियों के लिये मना है, सो दानिय्येल ने उन चार भाईयों में नेतृत्व करते हुए मन में ठान लिया कि राजा का भोजन खाकर और दाखरस पीकर अपने को अपवित्र नहीं करेंगे।

याद रखिये हमारे शरीर को स्वस्थ एवं तन्दुरुस्त रखने के लिये, क्या खाएं इससे बढ़कर महत्व उस बात में है कि हम कैसे खाते हैं। यदि हम समय पर भोजन करें और भोजन का सम्मान करते हुए खाएं, और भोजन का प्रबन्ध करने वाले परमेश्वर को धन्यवाद करते हुए, परमेश्वर के वचन के आधार पर आनन्द के साथ संतृप्ति के साथ खाएं। वह हमारे शरीर में असर करेगा। वह हमारे शरीर को स्वस्थ, सुन्दर एवं सुडौल बनायेगा। कई लोगों के भोजन का कोई समय नहीं, न कोई नियम है। घर में खाते ही हैं, फिर होटलों में खायेंगे, आवश्यकता से कहीं अधिक खायेंगे और कोई व्यायाम नहीं करेंगे। इस कारण चारों तरफ फैल जाते हैं और बीमार हो जाते हैं और समय से पहले जीवन लीला समाप्त कर लेते हैं। कुछ लोगों के लिये भोजन एक आशीष नहीं बल्कि अभिशाप है। आदम हव्वा ने खाएं और वे मर गये। इस्राएली लोग खाते गये और कुड़कुड़ाते गये और लिखा है कि वे सब मरुस्थल में ढेर हो गये। पहली सदी की कलीसिया की सबसे पहली समस्या भोजन ही तो था (प्रेरित 6:1-10)। भोजन के द्वारा कइयों को आशीष से बढ़कर अभिशाप और परेशानियां प्राप्त होती हैं। कारण कि, उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप और परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं खाया (सभो. 10:16,17)। प्रिय पाठक, आप क्या-क्या खा रहे हैं ? यह मुंह ईश्वर ने इसलिये नहीं बनाया कि आपके सामने आने वाली सब वस्तुओं को, जब भी मिले बिना जांचे परखे, खाएं एवं पीएं और समय से पहले पत्नी को विधवा बना कर और बच्चों को अनाथ छोड़कर अनन्तकाल की ओर चले जाएं।

दानिय्येल और उनके साथियों ने इस संबंध में ठोस निर्णय लिए कि क्या खाएं और क्या पीएं। इस निर्णय से परमेश्वर प्रसन्न हो गया और खोजों के प्रधान के मन में उनके प्रति दया उत्पन्न की। उन लोगों ने बिलकुल साधारण एवं मामूली भोजन ग्रहण करने का निर्णय लिया। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी। साधारण भोजन पर असाधारण आशीष एवं आरोग्यता उन्हें प्राप्त हुई और उनके मुंह चिकने दिखने लगे। अन्य जवानों

की अपेक्षा जिन्होंने राजा का भोजन ग्रहण किया, वे अधिक अच्छे दिखाई दिये। उन्होंने सागपात और पानी धन्यवाद के साथ एवं बड़े आनन्द के साथ खाया। उन्होंने अपने मन में यह कभी नहीं सोचा अरे हम कहां फंस गये, और क्या खाना पड़ रहा है। वे अपने लिये खाने से बढ़ कर परमेश्वर की महिमा के लिये खा रहे थे। सो परमेश्वर ने उन्हें विशेष रूप से आशीषित और आसूदा किया। वे उस भोजन से प्रसन्न थे। उन्होंने अपनी सन्तुष्टि से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा को अधिक महत्व दिया। परमेश्वर के वचन को उन लोगों ने अपने भोजन के विषय में भी महत्व एवं सम्मान दिया। परमेश्वर की विशेष आशीष उनके शरीर में रही। हम मसीहियों को खाने पीने के संबंध में गंभीरतापूर्वक सोचना है।

इस निर्णय में दानिय्येल का नैतिक और धार्मिक स्वभाव प्रकट होता है। दानिय्येल ने उस नये और उन्नतिशील नगर में उच्च स्थान और पदवियां प्राप्त की तो भी उसने अपने पवित्र उद्देश्यों की उपेक्षा नहीं की। उसने अपने लिये और अपने भाईयों के लिये उचित निर्णय लिये। कहा जाता है कि उस समय दानिय्येल केवल 19 साल का था। दानिय्येल का जन्म B.C. 625 का माना जाता है। इस प्रकार एक उचित और ठोस निर्णय लेने के लिये उसे प्रेरणा शक्ति कहां से मिली? यह प्रेरणा उसे उसके देश के इतिहास से ही प्राप्त हुई है। वह यहूदा देश के राजघराने से संबंध रखता था। इस कारण उसका उस देश के उच्च श्रेणी के लोगों के साथ अच्छा और निकट संबंध था। इनमें से प्रथम व्यक्ति योशिय्याह (हिजकिय्याह) राजा ही हो सकता है। यह अन्दाज़ा लगाते हैं कि जब दानिय्येल बाबुल में पहुँचा तो वह 19 साल का था। यह यहोयाकीम राजा के शासन का तीसरा वर्ष था। योशिय्याह राजा के शासन के 15 वे वर्ष में दानिय्येल की जन्मतिथि निश्चित करता है (2इति.34:1)। इसके अलावा दाऊद का जीवन भी दानिय्येल के लिये प्रेरणा का श्रोत रहा है। दाऊद के समान योशिय्याह राजा भी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करने वाला था।

लिखा है, “उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, और जिन मार्गों पर उसका मूल पुरुष दाऊद चलता रहा, उन्हीं पर वह भी चला करता था और उसने न तो दाहिनी ओर मुड़ा, और न बायीं ओर” (2इति.34:2)। आगे लिखा है, “वह अपने मूल पुरुष दाऊद के परमेश्वर

की खोज करने लगा” (2इति.34:3)। जब उसने शासन को अपने हाथ में लिया तो उस सारे देश से मूर्तिपूजा को पूरी तौर से नष्ट कर दिया। लिखा है, “फिर मनश्शे, एप्रैम और शिमौन के वरन नप्ताली तक के नगरों के खण्डहरों में, उसने वेदियों को तोड़ डाला। और अशेरा नाम और खुदी हुई मूर्तों को पीस कर बुकनी कर डाला, और इस्राएल के सारे देश की सूर्य की सब प्रतिमाओं को काटकर यरूशलेम को लौट गया” (2इति.34:6,7)।

इस प्रकार के सुधार कार्य के समय दानिय्येल सयाना और समझदार हो गया और इस धीरता और दिलेरी के कार्य से उसको प्रेरणा मिली होगी। इस शुभ कार्य के पश्चात् योशिय्याह राजा ने मन्दिर की मरम्मत के लिये आदेश दिया (2इति.34:8-13)। उस समय उन्हें परमेश्वर के भवन से यहोवा की व्यवस्था की एक प्रति प्राप्त हुई। उन्होंने उसको पढ़ा और उसके मुताबिक जीवन बिताने का निर्णय लिया और परमेश्वर की आशीषों की प्रतिज्ञा भी प्राप्त की (2इति.34:14-28)। उन्होंने व्यवस्था के वचनों को सुनकर परमेश्वर के सम्मुख वाचा बान्धी कि परमेश्वर के वचनानुसार आगे को जीवन निर्वाह करेंगे (2इति.34:29-33)। जब योशिय्याह ने अपने पहले वर्ष से यह सुधार कार्य आरंभ किया तो उसे नौजवान नबी यिर्मयाह का भी सहयोग प्राप्त हुआ जो भविष्यवक्ता के कार्य के लिये नियुक्त हुआ था (यिर्म. 1:2)। यिर्मयाह नबी का कार्य आन्तरिक सुधार एवं योशिय्याह राजा का कार्य बाहरी सुधार का रहा। यिर्मयाह के प्रयास से लोगों के मुखौटे हटाए गए और उन्हें ईश्वर का सच्चा भक्त बना दिया गया। इन तमाम प्रभावशाली कार्यों ने दानिय्येल के जवान दिल को प्रभावित एवं प्रेरित कर दिया और उसने अच्छे कार्यों के लिये अपने मन को मोड़ लिया। उसने यह दृढ़ संकल्प किया कि मैं मेरे जीवन में अच्छा कार्य ही करूंगा भले वह संघर्षमय परिस्थिति में क्यों न हो।

इस प्रकार अतीत के अनुभव और अच्छे प्रशिक्षण ने दानिय्येल को उस विपरीत और विषम परिस्थिति में, शासकीय एवं सशक्त राजकीय आदेश के बाद भी अपने व्यक्तिगत जीवन में सकारात्मक एवं सशक्त निर्णय के लिये सक्षम बना दिया। उसने अन्य जातीय शक्ति का ही नहीं वरन् मूर्तिपूजा का भी डट कर मुकाबला किया। हालांकि वह राजनैतिक दृष्टिकोण

से बाबुल के अधीन में था परन्तु अपनी नैतिकता एवं आत्मिकता के कारण उसने बाबुल को अपने अधीन कर दिया, अपने पांवों के तले कर दिया। इस निर्णय ने उसको एक चट्टान के समान दृढ़ सतह पर खड़ा किया, जो चट्टान मसीह यीशु स्वयं है (1कुरि.10:4)। उस चट्टान के समान सतह पर परमेश्वर ने दानिय्येल का स्वभाव और भविष्य का निर्माण किया। यह हम मसीहियों के लिये एक आदर्श है कि हम भी हमारे जीवन में निर्णय लेते समय उन भक्तों के जोश और सरगर्मी को ग्रहण करें जिन्होंने अतीत में आत्मिक संघर्ष करके अनन्तकाल के जीवन में प्रवेश किया। तब हमारा भी जीवन एवं भविष्य उज्ज्वल होगा। दानिय्येल ने अपने लिये और अपने साथियों के लिये यह निर्णय लिया कि वे राजा के मेज़ पर आने वाले भोजन को ग्रहण नहीं करेंगे।

उनके नामों में परिवर्तन

दानिय्येल और उनके साथियों के यहूदी नाम जो उनके परमेश्वर के साथ जुड़ा था, बाबुल के राजा के आदेश के अनुसार खोजों के प्रधान ने बदल दिया। दानिय्येल के नाम का अर्थ था “परमेश्वर मेरा न्यायी”। पर उसका नाम बेलतशरस्सर रखा गया जिसका अर्थ है बेल देवता द्वारा सुरक्षित (Protected by Bel)। हनन्याह का शब्द जिसका अर्थ है राजकीय (Royal), मीशाएल का नाम मेशक रखा गया जिस का अर्थ है मेहमान (Guest), और अर्जयाह का अर्बेद्नेगो रखा जिस का अर्थ है नेगो देवता का सेवक (Servant of Nego), लेकिन इस नाम के परिवर्तन को भी दानिय्येल और उसके साथियों ने ग्रहण नहीं किया। जब भी वे एक दूसरे को पुकारते और संबोधित करते थे तो वे अपने यहूदी नाम से ही पुकारते थे (दानि-2:18,19)। हमें देश के अनुसार और परिस्थिति के अनुसार बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है। कहते हैं न — “जैसा देश वैसा भेष”। पर नाम का जहां तक सवाल है, हमें बदलने की आवश्यकता नहीं है। यहां नाम बदलने का विचार यह था कि वे पूरी तौर से यहूदी धर्म एवं रीति विधियों से अलग किया जाएं और बाबुल के रीति रिवाज़ के अनुसार उनका संपूर्ण जीवन हो। लेकिन इस परिवर्तन से उनकी मानसिकता में ज़रा भी परिवर्तन नहीं आया।

दानिय्येल और उसके साथियों के खोजे बनाया जाना

इस बात का दानिय्येल की पुस्तक में वर्णन नहीं है कि वे खोजे बना दिये गये। पर यह एक वास्तविकता है। यह एक भविष्यवाणी की पूर्ति है जो यशायाह नबी द्वारा कही गयी थी। जब राज्य के ऊपर हिजकियाह राजा शासन करता था। अपने शासन के लगभग अन्तिम दिनों में वह बीमारी से अच्छा हुआ तब बाबुल का राजा बरोदकबलदान ने हिजकियाह राजा के लिये पत्री और भेंट भेज दी और यह भी निर्देश दिये होंगे कि राज्य का भेद भी लेकर आए। सो हिजकियाह राजा ने अपना सारा भण्डार उन मनुष्यों को दिखाया। वे सब कुछ देखकर अपने देश की ओर लौट गये। तब यशायाह भविष्यवक्ता ने हिजकियाह राजा (योशिय्याह) के पास आकर पता लगाया कि वे मनुष्य कौन थे। राजा ने उत्तर दिया कि वे बाबेल से आये हुए लोग थे। तब नबी ने राजा को एक भविष्यवाणी का वचन दिया, वह इस प्रकार है कि “ऐसे दिन आने वाले हैं, जिन में जो कुछ तेरे भवन में हैं, और जो कुछ तेरे पुरखों का रखा हुआ आज के दिन तक भण्डारों में है वह सब बाबेल को उठ चला जायेगा; यहोवा यह कहता है, कि कोई वस्तु न बचेगी। और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उनमें से भी कितनों को वे बन्धुवाई में ले जायेंगे; और वे खोजे बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे” (2राजा.20:17,18)। इस वचन के अनुसार दानिय्येल और उनके साथी बाबेल के राजा की विशेष आज्ञा के अनुसार खोजे बना दिये गये। इसके अलावा यशा.39:5-7 पदों को भी पढ़ कर देखिये। ये जवान सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व रखने के कारण राजा के महल में उनके रखेलियों द्वारा आकर्षित होकर उन जवानों के साथ गलत संबंध के डर के मारे ऐसा किया जाना संभव है। कुछ भी हो परमेश्वर का वचन पूरा होना अनिवार्य है। इन जवानों के विवाह एवं पारिवारिक जीवन का कोई जिक्र दानिय्येल की पुस्तक में नहीं आता है। इस प्रकार वे हर तरह से शैतान के द्वारा बदल दिये गये ताकि वे लोग निराश और निष्क्रिय बन जाएं। पर परमेश्वर उनके साथ था। उन्होंने हर परिस्थिति में परमेश्वर को महिमा देने और उसके नाम को ऊंचा करने का प्रयास किया।

पद-17:- “और परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों, और

सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी; और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया”

उन्होंने परमेश्वर और परमेश्वर के वचन के लिये अपने जीवन को समर्पित किया तो परमेश्वर ने उनकी खूब सहायता की। दानिय्येल और उनके साथी हमारे संसारिक जीवन की सफलता के लिये एक अच्छा उदाहरण हैं। हमारा जीवन एक दोमुखी जीवन है। एक सामान्य या नैसर्गिक जीवन एवं दूसरा असामान्य और दैवीय जीवन। इस दोमुखी जीवन को सफल बनाने के लिये हमें स्वर्गीय आशीषें एवं अनुग्रह की बहुत आवश्यकता है। परमेश्वर ने उन चारों जवानों को बुद्धिमानी और प्रवीणता दी (पद-17) यहां परमेश्वर के अनुग्रह का एक झरना जो ऊपर से उन पर आते हुए दिखाई दे रहा है जिससे ऐसी सामर्थ्य प्राप्त की कि एक गलत संसार को सही दिशा दिखाने में सक्षम हुए। यह मानुषिक ज्ञान और बुद्धि से नहीं किया जा सकता था, क्योंकि लिखा है **“परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी”**। उनके ज्ञान और बुद्धि ने नबुदकनेस्सर राजा को और उसके सिंहासन को झंझोड़ दिया। अन्य जवानों से बढ़ कर उन्हें हर प्रकार की आशीषें मिली और उन्होंने उनसे 10 गुणा अधिक ज्ञान प्राप्त किया। इस ज्ञान ने उन शासनकर्ताओं को परमेश्वर की इच्छा पर चलने के लिये सहायता प्रदान की।

इसके अलावा, वहां के 3 साल के अध्ययन के द्वारा प्राप्त होने वाले ज्ञान के अतिरिक्त अपने जीवन में उन असामान्य आत्मिक दानों को भी प्राप्त किया जिससे वह अपने विश्वस्त साथियों से बढ़कर परमेश्वर का प्रतिनिधि (Agent) बना। लिखा है, **“और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया”** (पद-17)। सांसारिक ज्ञान के साथ-साथ वह ईश्वरीय ज्ञान का भी खोजी रहा। आज संसार में बहुत से ज्ञानी और बुद्धिमान हैं, जिन्हें केवल दुनियां का ज्ञान है। भाषा एवं कुछ विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं और यह मनुष्य के दोमुखी जीवन में से एक ही भाग की ही प्राप्ति कर पाते हैं। एक आध्यात्मिक भाग भी मनुष्य में है और वह स्वर्गीय ज्ञान से भरा जाना ज़रूरी है। वह परमेश्वर से संपर्क बिना संपूर्ण नहीं होगा। दानिय्येल को बाबुल के विश्वविद्यालय के विषयों का ज्ञान मिला,

कसदियों की भाषा आ गई। लेकिन इसके अलावा वचन के अनुसार परमेश्वर ने उसे सब प्रकार की बुद्धि और ज्ञान और प्रवीणता प्रदान की। सब प्रकार की बुद्धि और ज्ञान का अर्थ उस ज्ञान से है जो सांसारिक और स्वर्गीय है। उसके अन्तर्गत दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया। सांसारिक ज्ञान के साथ-साथ परमेश्वर से संपर्क कर स्वर्गीय ज्ञान की भी प्राप्ति करें तो व्यक्तिगत जीवन धन्य होगा और जिस देश में आप रहते हैं वह देश भी आपके द्वारा आशीषित और धन्य होगा।

परमेश्वर द्वारा तैयार किया जाना

परमेश्वर ने दानिय्येल और साथियों को राजा के सामने उपस्थित होने के लिये विशेष रूप से तैयार किया। परमेश्वर के वचन में इस संबंध में यूं लिखा है —“तब जितने दिन के बाद नबुकदनेस्सर राजा ने जवानों को भीतर ले आने की आज्ञा दी थी, उतने दिन के बीतने पर खोजों का प्रधान उन्हें उसके सामने ले गया। और राजा उनसे बातचीत करने लगा; और दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह के तुल्य उन सबमें से कोई न ठहरा; इसलिये वे राजा के सम्मुख हाज़िर रहने लगे। और बुद्धि और हर प्रकार की समझ के विषय में जो कुछ राजा उनसे पूछता था उसमें वे राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तन्त्रियों से दस गुणे निपुण ठहरते थे। और दानिय्येल कुसू राजा के पहले वर्ष तक बना रहा” (दानि.1:18-21)।

तीन साल के अध्ययन के पश्चात् जो कसदियों की भाषा और विशेष शिक्षा थी, दानिय्येल और उसके तीन साथी राजा के दरबार में उपस्थित किये गये, ताकि उनका गहन परीक्षण किया जा सके। ये चारों इब्री जवान अन्य सभी प्रशिक्षित जवानों में अव्वल दिखाई दिये। इस कारण दानिय्येल की सेवा राजा के दरबार में बहुत लम्बे समय तक रही। उसने न केवल लम्बे 14 साल तक नबुकदनेस्सर के दरबार में प्रधानमंत्री का पद भार सम्भाला बल्कि बाबुल के अन्य बादशाहों के शासन में भी कार्य किया, यहाँ तक मादी फारसी साम्राज्य में भी बना रहा। जैसा कि पद 21 में लिखा है, “और दानिय्येल कुसू राजा के पहले वर्ष तक बना रहा”।

इस का मतलब यह है कि दानिय्येल यहूदियों के बाबुल की बन्धुवाई के पूरे 70 साल तक आधिकारिक पदवी में बना रहा। यहां तक फारस के राजा कुस्रु के पहले वर्ष तक रहा जिसके समय में यहूदियों को बन्धुवाई से मुक्त कर दी गयी। हो सकता है कि दानिय्येल के राजमहल की सेवा की अन्तिम उपलब्धि यह रही कि उसने कुस्रु राजा के साथ यहूदियों की रिहाई के संबंध में बातचीत की और उन्हें अपने जीते जी स्वतन्त्र होते हुए देखा। इस वार्तालाप और विशेष सौदे के कारण कुस्रु राजा ने यहूदियों की रिहाई का आदेश दिया। निश्चित ही इस बात के संबंध में दानिय्येल ने परमेश्वर द्वारा पहले से भविष्यवक्ताओं के मार्फत प्रकट किये गये वचन से कुस्रु राजा को अवगत कराया होगा। उसने यह बताया कि परमेश्वर ने कुस्रु राजा के संबंध में अपने वचन में क्या अंकित कर रखा है। यह सदियों पूर्व लिखा गया वचन था जिसको दानिय्येल ने राजा के समक्ष प्रकट किया। वह इस प्रकार है, “जो कुस्रु के विषय में कहता है, वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा; यरूशलेम के विषय कहता है, वह बसाई जायेगी और मन्दिर के विषय कि तेरी नींव डाली जायेगी” (यशा-44:28)।

“यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रु के विषय यों कहता है, मैंने उसके दाहिने हाथ को इसलिये थाम लिया है कि उसके सामने जातियों को दबा दूँ और राजाओं की कमर ढीली करूँ। उसके सामने फाटकों को ऐसा खोल दूँ कि वे फाटक बन्द न किये जाएं। मैं तेरे आगे आगे चलूँगा और ऊँची-ऊँची भूमि को चौरस करूँगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूँगा और लोहे के बेड़ों को टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। मैं तुझे को अंधकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूँगा, जिससे तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे नाम लेकर बुलाता है। अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित्त मैंने नाम लेकर तुझे बुलाया है; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैंने तुझे पदवी दी है। मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैं तेरी कमर कसूँगा, जिससे उदयांचल से लेकर अस्तांचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं; मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं है” (यशा.45:1-6)।

इस भविष्यवाणी को यशायाह से निकालकर दानिय्येल ने कुसू राजा को दिखाया। इसके अलावा उसने यिर्मयाह के द्वारा की गयी भविष्यवाणी भी पढ़कर सुनाई है जो यहूदा राज्य के बाबुल की बन्धुवाई से छूटने का निश्चित समय बताती है जो B.C.536 में पूरी हो रही थी। वह कुसू राजा के शासन का प्रथम वर्ष था। यह भविष्यवाणी यिर्मयाह 25:8-14 और 26:10 में दी गयी है। वह इस प्रकार है, “सारी जातियों का वह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियां सत्तर वर्ष तक बाबुल के राजा के अधीन रहेंगी। जब सत्तर वर्ष बीत चुके तब मैं बाबुल के राजा और उस जाति के लोगों और कसदियों के देश के सब निवासियों को अधर्म का दण्ड दूंगा, यहोवा की यह वाणी है; और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूंगा”।

इन भविष्यवाणी के वचनों के निर्देश के अनुसार जो दानिय्येल के द्वारा कुसू राजा को बताया गया तब राजा ने स्वयं उस रिहाई का आदेश दिया। उसके संबंध में लिखा है, “फारस के राजा कुसू के पहले वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा कि जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था, वह पूरा हो। इसलिये उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और इस आशय की चिट्ठियां लिखवाई कि फारस का राजा कुसू कहता है, कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यरूशलेम जो यहूदा में है उसमें मेरा एक भवन बनवा; इसलिये हे उसकी प्रजा के सब लोगों, तुम में से जो कोई चाहे कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ रहे, तो वह वहां खाना हो जाए” (2इति.36:22,23)।

इन तमाम वचनों और भविष्यवाणियों द्वारा दानिय्येल ने अपने जीवन और भविष्य का निर्माण किया। इसके अलावा अपने लोगों की रिहाई का भी उपाय किया। परमेश्वर ने दानिय्येल को सुशिक्षित एवं सुसज्जित किया कि वह अपने लोगों के बन्धुवाई से छुटकारे का भी प्रबन्ध करने में सक्षम हो जाए। अपनी शिक्षा और योग्यता के द्वारा समस्त राजाओं को प्रभावित करता रहा और हर शासनकर्ताओं के समय में जीवित परमेश्वर को ऊँचा करता रहा और अन्त में कुसू राजा को ऐसा प्रभावित किया कि उसे अपने लोगों के

छुटकारे के लिये विवश किया। हम हमारी शिक्षा और योग्यताओं से क्या कर रहे हैं? इस अध्याय में दानिय्येल का ठोस निर्णय और परमेश्वर की सहायता दिखाई दे रही है और यह भी कि यदि परमेश्वर सहायता करेगा तो वह सामयिक नहीं बल्कि लम्बे समय के लिये होगी, जब तक कि लक्ष्य प्राप्ति न हो जाए।

अध्याय—2

दानिय्येल और मूर्ति के स्वप्न की व्याख्या

पद-1:-“अपने राज्य के दूसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिससे उसका मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उसको नींद नहीं आई”

नबूकदनेस्सर राजा ने अपने शासन के दूसरे वर्ष में एक स्वप्न देखा। पहले ही इस पुस्तक की प्रारंभिक बातों के बारे में वर्णन करते हुए समय के बारे में समझाया था। बाबुल में जो प्रथा है वह इस प्रकार है कि जिस वर्ष सिंहासन पर राजा विराजमान होता है वह वर्ष सिंहासन पर बैठने का वर्ष मानते हैं और उस साल को पहला वर्ष नहीं गिनते हैं। उस के दूसरे वर्ष को पहला वर्ष गिनते हैं। तीसरे वर्ष को दूसरा वर्ष गिनते हैं। ऐसा है तो नबूकदनेस्सर का दूसरा वर्ष वास्तव में फलस्तीन देश के हिसाब से तीसरा वर्ष है। मतलब दानिय्येल और उसके साथी अपने प्रशिक्षण के बाद निकल आये और राजा के दरबार में कार्य करना आरंभ कर चुके थे। तो नबूकदनेस्सर के स्वप्न का समय वास्तव में उसके शासन का तीसरा साल ही था।

राजा सिंहासन पर विराजमान होने का समय B.C.605 था। अर्थात् यह दानिय्येल के बन्धुवाई के दूसरे वर्ष में था। इस पद के अन्दर स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि अब तक दानिय्येल अपना प्रशिक्षण समाप्त कर राजा के दरबार की सेवा आरम्भ कर चुका था। यह कभी भी B.C. 603 से पहले नहीं हो सकता था। मतलब नबूकदनेस्सर राजा का स्वप्न उसके तीसरे वर्ष में ही हुआ था।

नबूकदनेस्सर राजा का स्वप्न

इस अध्याय का मुख्य विषय नबूकदनेस्सर का स्वप्न है जो उसने रात को देखा और सुबह तक भूल गया। याद करने की खूब कोशिश की पर उसको याद नहीं आया। इस स्वप्न के समय नबूकदनेस्सर राजा को यह पूरी

तौर से निश्चित हो गया था कि राज्य और सिंहासन उसके अधिकार में आ गया है। इस स्वप्न के समय तक नबूकदनेस्सर ने अपने सैनिक कार्य और लड़ाईयां समाप्त कर दी थी। बहुत से देशों पर उसका अधिकार हो चुका था। उसने मिस्र के राजा, नेको को पराजित किया जिसके बारे में भविष्यवक्ता यहजकेल अपनी पुस्तक में वर्णन करता है “हे मनुष्य की संतान, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सौर को घेरने में अपनी सेना से बड़ा परिश्रम कराया; हर एक का सिर चन्दला हो गया, और हर एक के कन्धों का चमड़ा उड़ा; तो भी उसको सौर से न तो इस परिश्रम की मजदूरी कुछ मिली और न उसकी सेना को” (यहेज-29:18,19)। उसके पश्चात् वह पेलूसी देश पर चढ़ाई कर ही रहा था कि उसे यह सन्देश प्राप्त हुआ कि उसके पिता नबोपोलासर की मृत्यु हो गयी। पिता की मृत्यु से यह निश्चित हो गया था कि सिंहासन का दावेदार वह स्वयं हो गया है। उस समय बाबुल का अधिकार सारे संसार में फैल चुका था अर्थात् बाबुल एक साम्राज्य बन चुका था। उसके मन में यह भी घमण्ड था कि उसने यहूदा राज्य को जीतने से यहोवा परमेश्वर पर भी जीत हासिल कर ली। तब वह अपने मन में सोचने लगा कि उसका भविष्य क्या होगा और यह तमाम जीत हासिल हुई तो उसके राज्य का भविष्य क्या होगा? संसार के सारे देश नबूकदनेस्सर के अधीन में आ गए। इसके संबंध में भविष्यवक्ता यिर्मयाह भी वर्णन करता है “और उनको उनके स्वामियों के लिये यह कहकर आज्ञा देना, कि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अपने-अपने स्वामी से यों कहो कि पृथ्वी को और पृथ्वी पर के मनुष्यों और पशुओं को अपनी बड़ी शक्ति और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मैंने बनाया, और जिस किसी को मैं चाहता हूँ उसी को उन्हें दिया करता हूँ। अब मैंने ये सब देश, अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को आप ही दे दिया है; और मैदान के जीव जन्तुओं को भी मैंने उसे दिया है कि वे उस के अधीन रहें। ये सब जातियां उसके और उसके बाद उस के बेटे और पोते के अधीन उस समय तक रहेगी जब तक उस के भी देश का दिन न आए; तब बहुत सी जातियां और बड़े-बड़े राजा उससे भी अपनी सेवा करवायेंगे। सो जो जाति व राजा बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के अधीन न हों और उसका जुआ अपनी गर्दन पर न ले ले, उस जाति को मैं तलवार, महंगी और मरी का दण्ड उस समय तक देता रहूँगा जब तक उसको

उस के हाथ के द्वारा मिटा न दूं यहोवा की यही वाणी है (यिर्म. 27:4-8)।

सो सारे संसार के राज्यों पर नबूकदनेस्सर का अधिकार हो गया। बाबुल एक साम्राज्य में बदल गया। नबूकदनेस्सर के अलावा अब उस साम्राज्य पर और कोई दावेदार नहीं रहा। तब एक रात अपने सुन्दर मुलायम बिस्तर पर लेटे लेटे सोचने लगा कि मैं सारे संसार का सम्राट बन गया हूँ। मैं बहुत दिन तक शासन करता रहूँगा। मेरे साम्राज्य का अर्थात् बाबुल का कभी अन्त नहीं होगा। ऐसे अपने बिस्तर पर लेटे लेटे सोचता हुआ धीरे-धीरे निद्रा की ओर फिसल गया। अर्ध-निद्रा की हालत में वह एक स्वप्न देखता है और स्वप्न के कारण उसका हृदय व्याकुल हो जाता है। उसकी नींद चली जाती है। वह निद्राविहीन एवं चिन्तामग्न हो उठता।

पद-2-7:-“तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषियों, तन्त्री, टोन्हे और कसदी बुलाए जाएं कि वे राजा को उसका स्वप्न बताएं, सो वे आए और राजा के सामने हाज़िर हुए। तब राजा ने उनसे कहा, मैंने एक स्वप्न देखा और मेरा मन व्याकुल है कि स्वप्न को कैसे समझूं। कसदियों ने, राजा से अरामी भाषा में कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे। अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका फल बतायेंगे। राजा ने कसदियों को उत्तर दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हूँ कि यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे तो तुम टुकड़े टुकड़े किये जाओगे, और तुम्हारे घर फुंकवा दिये जायेंगे। और तुम फल समेत स्वप्न को बता दो तो मुझ से भांति भांति के दान और भारी प्रतिष्ठा पाओगे। इसलिये तुम मुझे फल समेत स्वप्न को बताओ। उन्होंने दूसरी बार कहा, हे राजा स्वप्न तेरे दासों को बताया जाए, और हम उसका फल समझा देंगे”।

दूसरे अध्याय के चौथे पद से लेकर सात अध्याय के अन्त तक अरामी भाषा में लिखा गया है। बाकी पूरी पुस्तक इब्रानी भाषा में लिखी गयी है। बाबुल की बन्धुवाई में 70 साल रहने के कारण, बन्धुवाई के पश्चात् अरामी भाषा यहूदियों की भाषा बन गयी। खैर, इस भाग का मुख्य वर्णन नबूकदनेस्सर राजा का भूला हुआ स्वप्न है। राजा ने स्वप्न देखा और भूल गया। स्वप्न भूल

जाने से वह बहुत परेशान हो गया। उसकी नींद टूट गयी। दूसरे दिन सबेरे राजा ने सारे विद्वानों को दरबार में बुलाया। विद्वानों के सभी विभाग के लोगों को अपने सामने हाज़िर होने की आज्ञा दी। उनमें ज्योतिषी, तन्त्री, टोन्हा करने वाले और कसदी शामिल थे। वे सब बढिया तैयार होकर राजा के दरबार में हाज़िर हो गये। सबने राजा को प्रणाम किया। राजा के दीर्घ जीवन की कामना की।

तब राजा ने कहा कल रात मैंने स्वप्न देखा और वह स्वप्न मेरी स्मरण शक्ति से ओझल हो गया। अब तुम लोग मेरा स्वप्न और उसका फल भी बताएं। राजा ने जो स्वप्न देखा, उससे वह बहुत ही आकर्षित और प्रभावित हो गया। लेकिन इससे पहले कि स्वप्न को याद करें वह बिलकुल उसके दिमाग से मिट गया। खूब कोशिश की कि याद आ जाए। पर याद ही नहीं आया। सो वह रात से ही परेशान रहा। उसकी नींद खराब हो गयी। राजा ने अपने दरबार की सेवा हेतु, विशेष कर इस प्रकार के संकटमय समय में राजा की सहायता के लिये, बहुत से ज्ञानियों को पाल रखा था। तुरन्त उन्हें बुलाया। वे तन्त्री और टोन्हा करने वाले, सब प्रकार के काला जादू जानने वाले, ज्योतिषी लोग जो नक्षत्रों के अध्ययन द्वारा भविष्य बताने का अभिनय करने वाले आदि थे। वे तारों के स्थान एवं ग्रहों का अध्ययन करके भविष्य की बातों को बता सकते थे। जादूगर लोग और ओझा या भूतविद्या करने वाले दावा करते थे कि मरे हुए लोगों से संपर्क करके उनसे बात कर सकते थे। लेकिन कसदी लोग तत्त्वज्ञानी या दार्शनिक थे जो उस समय के भौतिकशास्त्र के अध्ययन करने वाले थे। दानिय्येल और उसके साथी इसी विभाग के थे।

तो राजा ने इन सब लोगों को अपने सामने जमा किया और अपनी समस्या बताई। राजा ने कहा मैंने स्वप्न देखा पर स्वप्न भूल गया। स्वप्न बताना पड़ेगा और उसका अर्थ भी। यह सुनकर विद्वानों के सभी विभाग के लोग बहुत ही भयभीत एवं साहसहीन हो गये। वे लोग स्वप्न सुनने पर उसका फल बताने को तैयार थे। पर जो स्वप्न भूल गया उसे स्मरण कराना बहुत ही मुश्किल काम था। वे राजा से बार-बार विनती करने लगे कि राजा हमें स्वप्न बताएं ताकि हम फल समझा सकें। इससे राजा और भी व्याकुल और परेशान हो गया। आपको मालूम है परेशान व्यक्ति अन्य लोगों को भी

जाने से वह बहुत परेशान हो गया। उसकी नींद टूट गयी। दूसरे दिन सबेरे राजा ने सारे विद्वानों को दरबार में बुलाया। विद्वानों के सभी विभाग के लोगों को अपने सामने हाज़िर होने की आज्ञा दी। उनमें ज्योतिषी, तन्त्री, टोन्हा करने वाले और कसदी शामिल थे। वे सब बढ़िया तैयार होकर राजा के दरबार में हाज़िर हो गये। सबने राजा को प्रणाम किया। राजा के दीर्घ जीवन की कामना की।

तब राजा ने कहा कल रात मैंने स्वप्न देखा और वह स्वप्न मेरी स्मरण शक्ति से ओझल हो गया। अब तुम लोग मेरा स्वप्न और उसका फल भी बताएं। राजा ने जो स्वप्न देखा, उससे वह बहुत ही आकर्षित और प्रभावित हो गया। लेकिन इससे पहले कि स्वप्न को याद करें वह बिलकुल उसके दिमाग से मिट गया। खूब कोशिश की कि याद आ जाए। पर याद ही नहीं आया। सो वह रात से ही परेशान रहा। उसकी नींद खराब हो गयी। राजा ने अपने दरबार की सेवा हेतु, विशेष कर इस प्रकार के संकटमय समय में राजा की सहायता के लिये, बहुत से ज्ञानियों को पाल रखा था। तुरन्त उन्हें बुलाया। वे तन्त्री और टोन्हा करने वाले, सब प्रकार के काला जादू जानने वाले, ज्योतिषी लोग जो नक्षत्रों के अध्ययन द्वारा भविष्य बताने का अभिनय करने वाले आदि थे। वे तारों के स्थान एवं ग्रहों का अध्ययन करके भविष्य की बातों को बता सकते थे। जादूगर लोग और ओझा या भूतविद्या करने वाले दावा करते थे कि मरे हुए लोगों से संपर्क करके उनसे बात कर सकते थे। लेकिन कसदी लोग तत्त्वज्ञानी या दार्शनिक थे जो उस समय के भौतिकशास्त्र के अध्ययन करने वाले थे। दानिय्येल और उसके साथी इसी विभाग के थे।

तो राजा ने इन सब लोगों को अपने सामने जमा किया और अपनी समस्या बताई। राजा ने कहा मैंने स्वप्न देखा पर स्वप्न भूल गया। स्वप्न बताना पड़ेगा और उसका अर्थ भी। यह सुनकर विद्वानों के सभी विभाग के लोग बहुत ही भयभीत एवं साहसहीन हो गये। वे लोग स्वप्न सुनने पर उसका फल बताने को तैयार थे। पर जो स्वप्न भूल गया उसे स्मरण कराना बहुत ही मुश्किल काम था। वे राजा से बार-बार विनती करने लगे कि राजा हमें स्वप्न बताएं ताकि हम फल समझा सकें। इससे राजा और भी व्याकुल और परेशान हो गया। आपको मालूम है परेशान व्यक्ति अन्य लोगों को भी

राजा को यह बता सके। इस पर राजा ने झुंझलाकर, और बहुत ही क्रोधित होकर, बाबुल के सब पण्डितों को नाश करने की आज्ञा दे दी” (पद.8-12) ।

जैसा कि आज कल के हमारे खगोलशास्त्री हैं, वैसे उस समय बाबुल के विद्वान और खगोलशास्त्री भी भविष्य की बात बताने की कला जानते थे। वे कुछ जानकारियों को एकत्रित कर के अन्दाज़ लगाकर अपनी भाषा में किसी न किसी प्रकार से भविष्य में होने वाली घटना को भविष्य कथन के रूप में कहा करते थे। कभी-कभी वह सही भी निकल जाता था। सो विद्वान लोग एवं भावी कहने वाले चाहते थे कि राजा उन्हें स्वप्न बताएं ताकि वे अन्दाज़ लगा कर उसका अर्थ बताएं ताकि राजा को संतुष्ट कर दे। लेकिन राजा इस प्रकार आसानी से धोखे में आने वाला व्यक्ति नहीं था। जब उन्होंने देखा कि विद्वान लोग केवल गपशप कर के समय आगे बढ़ा रहे हैं तो राजा की सहनशीलता, सहनशक्ति और सब्र खत्म हो गया और कहने लगा कि वे सब कपटी और ठगने वाले हैं, क्रोध में और आक्रोश में आकर राजा ने सभी विद्वानों को नाश करने का आदेश दे दिया। दानिय्येल और उसके साथी भी इस विभाग में शामिल होने से वे भी इस विनाश में नाश होने वाले थे। लेकिन वे किसी कारणवश उस समय राजा के सामने उपस्थित न थे। हो सकता है राजा यह इनाम और प्रतिष्ठा गैर यहूदी विद्वानों को देने के विचार में था। राजा का आदेश निकला तब दानिय्येल को यह पता चला और इससे पहले कि दानिय्येल उपाय निकाले, जल्लाद राजा की आज्ञा से विद्वानों को मार डालने के लिए निकल चुके थे।

दानिय्येल और राजा के स्वप्न की समस्या

इस समस्या के बारे में दानिय्येल को पता चला और उसने राजा के सम्मुख जाकर समस्या के समाधान के लिये समय मांगा।

लिखा है, पद.13-16 “सो यह आज्ञा निकली, और पण्डित लोगों का घात होने पर था; और लोग दानिय्येल और उसके संगियों को ढूंढ रहे थे कि वे भी घात किये जाएं। तब दानिय्येल ने, जल्लादों के प्रधान अर्योक से, जो बाबुल के पण्डितों को घात करने के लिये

निकला था, सोच विचार कर और बुद्धिमानी के साथ कहा; और राजा के हाकिम अर्योक से पूछने लगा, यह आज्ञा राजा की ओर से ऐसी उतावली के साथ क्यों निकली? तब अर्योक ने दानिय्येल को इसका भेद बता दिया। दानिय्येल ने भीतर जाकर राजा से बिनती की, कि उसके लिये कोई समय ठहराया जाए, तो वह महाराजा को स्वप्न का फल बता देगा”।

इस आशाहीन अवस्था में उस अन्धकारपूर्ण माहौल का अंत करते हुए दानिय्येल ने राजा को आशा प्रदान की। दानिय्येल ने बातों का पता लगाया। परिस्थिति का जायज़ा लिया। उसको मालूम था कि यह मनुष्य की शक्ति एवं कल्पनाओं से परे कोई अनोखी बात है पर यह परमेश्वर प्रकट कर सकता है। दानिय्येल का भरोसा उसके परमेश्वर के ऊपर था। जो समस्या मानव से असंभव है वह परमेश्वर से संभव है। याद रखिये किसी भी ज़माने में रहने वाले मानव क्यों न हों, उसकी समस्या के समाधान के लिये उसे परमेश्वर के पास जाना होगा। व्यक्तिगत हो या पारिवारिक, सामाजिक हो या सरकार से संबंधित, या कोई भी समस्या क्यों न हो, परमेश्वर के लिये कोई बात असंभव नहीं है। दानिय्येल को मालूम था कि इस समस्या का समाधान कहाँ मिलेगा। आज हम समस्या के बारे में अध्ययन नहीं करते हैं न ही हम इस बात को जानते हैं कि समस्या का समाधान कौन कर सकता है। हम बेवजह परेशान होते और अन्य लोगों को भी परेशान करते रहते हैं।

दानिय्येल और उसके साथी प्रार्थना सभा में

जब समस्या का पता चला तो दानिय्येल अपने घर की ओर चला। समस्या से भागने और फरार होने का विचार नहीं कर रहा है। फिर वह क्या कर रहा है? आगे इस अध्याय में उसका वर्णन है।

पद.17-24:- “तब दानिय्येल ने अपने घर जाकर, अपने संगी हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह को यह हाल बताकर कहा, इस भेद के विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिये यह कहकर प्रार्थना करो, कि बाबुल के और सब पण्डितों के संग, दानिय्येल और उसके संगी भी नाश न किये जाएं। तब वह भेद दानिय्येल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रकट किया गया, परमेश्वर का नाम

युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं। समय और ऋतुओं को वही पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझदारों को समझ भी वही देता है; वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रकट करता है; वह जानता है कि अंधियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है। हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूँ, क्योंकि तूने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है, और जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझ से मांगा था, उसे तूने मुझ पर प्रकट किया है, तूने हमको राजा की बात बताई है तब दानिय्येल ने अर्योक के पास, जिसे राजा ने बाबुल के पण्डितों के नाश करने के लिये ठहराया था, भीतर जाकर कहा, बाबुल के पण्डितों का नाश न कर, मुझे राजा के सम्मुख भीतर ले चल, मैं फल बताऊंगा”।

यह बाबुल के अन्दर जीवित परमेश्वर से की जाने वाली पहली प्रार्थना सभा थी। दानिय्येल ने जाकर अपने संगी भाईयों को इस विनाशकारी समस्या से अवगत कराया और उस रात प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के सम्मुख समस्या को रखने हेतु उन्हें प्रोत्साहित किया। इन चारों जवानों का अपने परमेश्वर के साथ अच्छा संबंध था। याद रखिये दूसरे अध्याय में समस्या का सामना करने से पहले उन लोगों ने अपने परमेश्वर के साथ संबंध जोड़ने वाला एक पहला अध्याय तैयार किया। पहले अध्याय में उन्होंने परमेश्वर के लिये और परमेश्वर के वचन के लिये अपने जीवन को समर्पित कर दिया। कई लोग समस्या के समय परमेश्वर को ढूँढ़ते हैं। लेकिन दानिय्येल ने ऐसा नहीं बल्कि अच्छे समय में, अनुकूल परिस्थिति में परमेश्वर के साथ अच्छा संबंध जोड़ा। परमेश्वर के लिये बड़ा त्याग किया और परमेश्वर के लिये अपने जीवन को समर्पित किया।

अब जब समस्या आ गयी, तब परमेश्वर उनकी सहायता के लिये फुर्ती कर रहा है। शाम के समय जब विनाशकारी समस्या का पता चला तो उसने अपने संगी भाईयों को साथ लेकर प्रार्थना के लिये कमरे में प्रवेश किया। समस्या साधारण नहीं है, मृत्यु और जीवन का सवाल है। बहुत ही बोझ के साथ, एकता के साथ प्रार्थना करना पड़ा। सबसे पहले उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद किया। परमेश्वर के महान कार्यों को स्मरण किया।

उसकी स्तुति और प्रशंसा की। पूर्वजों को याद किया। इसका मतलब यह है कि वे इस बात को अंगीकार कर रहे थे कि परमेश्वर वायदों को पूरा करने वाला वाचा का परमेश्वर है। इस प्रकार परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए उनकी समस्या के लिये प्रार्थना की तो वह भेद परमेश्वर ने दानिय्येल पर प्रकट किया। दानिय्येल अति प्रसन्न हुआ और अपने भाईयों को भी इस बात से अवगत कराया। एक आपातकालीन प्रार्थना सभा और आश्चर्यजनक तरीके से उसका उत्तर प्राप्त किया जाना। इस समस्या के समाधान के लिये परमेश्वर ने देर नहीं की। हमारा परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देने वाला और संकट के समय अति सहज से मिलने वाला सहायक है।

जब प्रार्थना का उत्तर मिला तो दानिय्येल बहुत ही प्रसन्नचित्त हो गया। उसने दूसरे दिन सुबह जल्लादों के प्रधान अर्योक के पास जाकर कहा कि उसे शीघ्र राजा के सम्मुख ले जाए। उसने कहा कि वह राजा के स्वप्न का फल दे सकता है। परमेश्वर पर विश्वास करने वाले और प्रार्थना करने वाले भक्तों के पास दुनियां की समस्याओं का समाधान पाया जाता है। ईश्वररहित लोग समस्या के कारण व्याकुल और विचलित होते हैं तो परमेश्वर के लोगों के अन्दर एक अटूट एवं अद्भुत विश्वास और भरोसा रहता है। उन्हें मालूम है कि जो मनुष्य से असंभव है वह परमेश्वर से संभव है। वे तुरन्त परमेश्वर के सम्मुख पहुँच जाते हैं। परमेश्वर उन्हें तुरन्त उत्तर देकर आनन्दित एवं आसूदा करता है। प्रिय मित्र, क्या आज आपका संबंध परमेश्वर के साथ सही है? यदि संबंध सही नहीं है तो आज आप के लिये मौका है कि अपना संबंध यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर के साथ दुरुस्त करें। काश! कि परमेश्वर आपकी सहायता करें।

दानिय्येल राजा के सम्मुख

परमेश्वर ने इस भेद को दानिय्येल पर प्रकट किया। अर्योक ने दानिय्येल को शीघ्र राजा के सम्मुख पहुँचाया। वहां यूं लिखा है, पद-2:25-30:- “तब अर्योक ने दानिय्येल को राजा के सम्मुख शीघ्र ले जाकर उस से कहा, यहूदी बन्धुओं में से एक पुरुष मुझ को मिला है, जो राजा को स्वप्न का फल बतायेगा। राजा ने दानिय्येल से जिस का नाम बेलतशस्सर भी था, पूछा क्या तुझमें इतनी शक्ति है कि जो

स्वप्न मैंने देखा है, उसे फल समेत मुझे बताएं ? दानिय्येल ने राजा को उत्तर दिया, जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पण्डित, न तंत्री, न ज्योतिषी न दूसरे भावी बताने वाले राजा को बता सकते हैं। परन्तु भेदों का प्रकटकर्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को बताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होने वाला है। तेरा स्वप्न और जो कुछ तूने पलंग पर पड़े हुए देखा, वह यह है; हे राजा, जब तुझको पलंग पर यह विचार हुआ कि भविष्य में क्या क्या होने वाला है, तब भेदों को खोलने वाले ने मुझको बताया कि क्या क्या होने वाला है। मुझ पर यह भेद इस कारण नहीं खोला गया कि मैं और सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान हूं, परन्तु केवल इसी कारण खोला गया है कि स्वप्न का फल राजा को बताया जाए, और तू अपने मन के विचार समझ सके”।

अब दानिय्येल राजा के सेनापति अर्योक के पास गया और कहा कि राजा के सम्मुख उनके स्वप्न का अर्थ बताने के लिये मुझ को ले जाए। रात्रि की प्रार्थना सभा में परमेश्वर ने दानिय्येल पर राजा का स्वप्न और उसका अर्थ भी प्रकट किया। सो दानिय्येल राजा के पास जाने में सक्षम हो गया। जैसे ही दानिय्येल ने यह समाचार राजा के सेनापति अर्योक को बताया तो वह दानिय्येल से भी ज्यादा जल्दी करने लगा। राजा के समस्या का उत्तर प्रदान करने में उसको भी सम्मान प्राप्त होने वाली बात थी। वह जाकर राजा से कहता है “यहूदी बन्धुओं में से एक पुरुष मुझ को मिला है”। अर्योक यह भूल गया कि दानिय्येल इससे पहले राजा के सम्मुख उपस्थित हो चुका है। राजा दानिय्येल से पूछता है, क्या तुझमें इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैंने देखा है, उसे फल समेत मुझे बताएं ? इस का मतलब है, राजा को शंका थी कि दानिय्येल पण्डितों से बढ़कर कुछ कर सकता है। कारण यह था कि इस समस्या में सारे पण्डित और जादू टोन्हा करने वाले पूरी तौर से पराजित हो चुके थे।

लेकिन इस निराशाजनक परिस्थिति में दानिय्येल ने राजा को फिर से भरोसा दिलाया। इस बड़े कार्य में दानिय्येल ने अपने लिये ज़रा भी सम्मान नहीं लिया। दानिय्येल इस अवसर पर यह बात बताने के लिये बिलकुल भी नहीं झिझका कि एक परमेश्वर जीवित है जो यहूदियों का परमेश्वर है और

वह सच्चा है। यह भी बताया कि इस प्रकार की समस्या का केवल वही जीवित परमेश्वर समाधान कर सकता है। यह बुद्धिमानों और पण्डितों का कार्य नहीं है। दानिय्येल ने अपने परमेश्वर को ऊंचा करने में जरा भी विलम्ब नहीं किया।

यहां दानिय्येल राजा के स्वप्न को याद दिलाता है और उसका अर्थ भी बताता है। राजा को बताने लगा कि आप पलंग पर पड़े थे तो आपके मन में यह विचार आया कि सिंहासन और राज्य पर किसी और का दावा नहीं है। पूरा पूरा अधिकार नबूकदनेस्सर राजा के पास आया है, पर अब क्या होगा? साम्राज्य का भविष्य क्या होगा ? इस प्रकार आप भविष्य के बारे में सोच कर पलंग पर लेटे रहे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने राजा को साम्राज्य के भविष्य संबंधी बात स्वप्न द्वारा दिखाई।

दानिय्येल ने राजा को उसका स्वप्न बताया तो उसकी भावना का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल नहीं था। जब स्वप्न का वर्णन किया तो राजा को वह सब दृश्य वैसा ही याद आया जैसा राजा ने स्वप्न में देखा था। दानिय्येल के द्वारा स्वप्न के वर्णन ने राजा को विश्वास दिलाया कि वह स्वप्न का अर्थ भी बता सकता है। इस पर राजा बहुत ही आश्चर्यचकित हुआ। उसको मालूम हुआ कि दानिय्येल एक बड़ा अन्तरदृष्टि वाला और बुद्धिमान मनुष्य है। इतना ही नहीं वह दानिय्येल द्वारा स्वप्न की व्याख्या पर भी विश्वास करने लगा।

राजा को बताया कि उनका स्वप्न एक बड़ी मूर्ति का था जिसका अन्य जाति राज्यों के समय के बारे में एक पूर्वदर्शन है। यह मूर्ति चार धातुओं (Metals) से निर्मित थीं अर्थात् सोना, चांदी, पीतल, लोहा और दोनों पांव एवं अंगुलियां कुछ मिट्टी और कुछ लोहे से बनी थी। फिर भविष्यवक्ता दानिय्येल ने वर्णन कर बताया कि ये चार धातु वाली मूर्ति संसार में उठने वाले चार साम्राज्यों का संकेत है। जो बात दानिय्येल ने राजा को बताई वह बाबुल के विद्वान राजा को बताने की कभी हिम्मत नहीं करेगा। कारण यह था कि इस मूर्ति के फल में वास्तव में नबूकदनेस्सर राजा की पराजय और उसके पश्चात् 3 अन्य निम्न श्रेणी के साम्राज्यों के उदय का वर्णन आता है और निश्चित रूप में यह मूर्ति अन्य जाति शासन की संपूर्ण समय सीमा को

बताती है (लूका.21:24)। मतलब इससे अन्य जाति शासन की समय सीमा में इन चारों साम्राज्यों को एक के बाद एक संसार में प्रकट होना था। उसके पश्चात् एकदम अन्त में परमेश्वर का सार्वलौकिक साम्राज्य की स्थापना इस संसार में होना निश्चित है। वह साम्राज्य अनन्तकाल तक स्थिर रहने वाला है।

इस समय सीमा में इस्राएल और अन्य राष्ट्र इन अन्यजाति साम्राज्यों के अधीन रहेगा। पर अन्यजातियों के समय की समाप्ति पर इस्राएल महान परमेश्वर की अधीनता में आ जायेगा। इसके संबंध में होशे नबी भी अपने पुस्तक में वर्णन करता है, क्योंकि इस्राएली बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना लाठी, और बिना एपोद व गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे। उसके बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूंढने लगेंगे, और अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आयेंगे (होशे.3:4,5)। नबूकदनेस्सर का स्वप्न इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है जो पहले से चित्रित किया गया है। दानिय्येल का अनुवाद जो इस स्वप्न के संबंध में किया गया है, वह धर्मशास्त्र की विश्वसनीयता और ईश्वरीय प्रेरणा का अनोखा एवं अद्वितीय प्रमाण है।

अब हम उस मूर्ति के संबंध में जो चार साम्राज्यों को संकेत करता है, एक के बाद एक नियमित रूप में अध्ययन करें।

बबुल का साम्राज्य (सिर जो सोने का है)

B.C. 606-536

नबुकदनेस्सर ने जिस मूर्ति को स्वप्न में देखा, उसका सिर सोने का था। दानिय्येल ने उसका अनुवाद करके बताया है कि, यह सोने का सिर स्वयं नबुकदनेस्सर राजा है। परमेश्वर ने उसको उस समय के समस्त राष्ट्रों के ऊपर अधिकार दिया था। यह भी कहा गया था कि जब तक वह जीवित रहेगा अर्थात् उस के पागलपन के सात साल को छोड़कर, वह संपूर्ण साम्राज्य पर पूरा अधिकार रखेगा। उसके समस्त अनुगामी हर बात में उससे कम थे। उसका दामाद एविल मेरोडक की अधम एवं अप्रतिष्ठित दो साल के शासन के पश्चात् उसके साले नेरिगलिसार द्वारा उसकी धोखे से हत्या कर दी गयी और उसने सिंहासन अपने अधिकार में कर लिया। चार साल बाद

वह लड़ाई में मारा गया। उसके पश्चात् उसका मूर्ख एवं अशक्त बेटा लेबोरोसोअर्कड ने केवल 9 महीने शासन किया और वह भी मारा गया। उसके पश्चात् नबुकदनेस्सर के एक और दामाद नेबोनिडरा ने सिंहासन हासिल किया। बाबुल का अन्तिम राजा बेलशस्सर था।

दानिय्येल ने राजा को बताया, हे राजा, तू तो महाराजाधिराज है, क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुझको राज्य, सामर्थ, शक्ति और महिमा दी है, और जहां मनुष्य पाए जाते हैं, वहां उसने उन सभी को और मैदान के जीव जन्तु, और आकाश के पक्षी भी तेरे वश में कर दिए हैं; और तुझको उन सबका अधिकारी ठहराया है। यह सोने का सिर तू ही है (दानि.2:37,38)। इन वचनों को बताया तो राजा बहुत खुश हुए। लेकिन दानिय्येल रुका नहीं। वह आगे बोलते हुए कहने लगा, तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझसे छोटा होगा (पद.39)। इस कथन से राजा बहुत दुखी हो गया होगा। कोई भी यह नहीं चाहता कि उनके अलावा कोई उस स्थान में आ जाए। ऐसा विचार रखते हैं कि सिर्फ वही महान रहे। यही कुछ विचार नबुकदनेस्सर का भी हुआ होगा। लेकिन महान परमेश्वर की इच्छा को कौन टाल सकता है।

मादी फारसी साम्राज्य (चांदी का सीना और हाथ)

B.C. 536-330

बाबुल साम्राज्य के अन्तिम समय में बेलशस्सर राजा शासन कर रहा था। उस अन्तिम राजा के समय में बाबुल साम्राज्य से हर प्रकार से कम शक्ति वाला साम्राज्य जो मूर्ति का सीना और हाथों के द्वारा प्रकट किया गया है, संसार में उदय हुआ। मादी और फारसी नाम के द्विसंख्यक (Dual) साम्राज्य ने आकर बाबुल पर आक्रमण किया और बाबुल साम्राज्य को समाप्त किया। पहले शासन का अधिकार मादियों को दिया गया। मादियों का शासन मूर्ति के बाएं हाथ के द्वारा बताया जाता है जो शक्तिहीन है। मूर्ति का दाहिना हाथ जो शक्तिशाली है, वह फारसी शासन का संकेत है। इस राज्य के बारे में दानिय्येल लिखता है कि, “तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा” (पद-39)। लम्बे समय के फारसी राजाओं के शासन के पश्चात् मादी फारसी साम्राज्य समाप्त हुआ और यूनान साम्राज्य का उदय

हुआ।

यूनान साम्राज्य (पीतल का पेट और कमर)

B.C. 330-146

तीसरा साम्राज्य यूनान था जो मूर्ति के पेट और कमर के द्वारा प्रतिनिधित्व करता है। इस साम्राज्य का पहला शासनकर्ता सिकन्दर महान था। अध्याय 8 के दर्शन के अनुसार सिकन्दर महान की मृत्यु के पश्चात् यह साम्राज्य 4 भागों में विभाजित हो गया। धीरे धीरे उनमें से एक एक राज्य शिथिल होते गये और अन्त में यीशु मसीह के प्रथम आगमन के कुछ समय पहले रोमी साम्राज्य स्थापित हो गया।

यही उसके लिये वर्णन आया है “और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जिसमें सारी पृथ्वी आ जायेगी” (पद 39)। इस तीसरे साम्राज्य के बारे में वर्णन आया है कि मूर्ति के पेट और जांघें पीतल की थीं। यहां जांघों के बदले जांघों का भाग याने जांघों का आधा हिस्सा और उसके ऊपर का भाग जो पेट को मिला कर है, वह यूनान साम्राज्य को संकेत करता है।

रोम साम्राज्य (लोहे की जांघ और पैर)

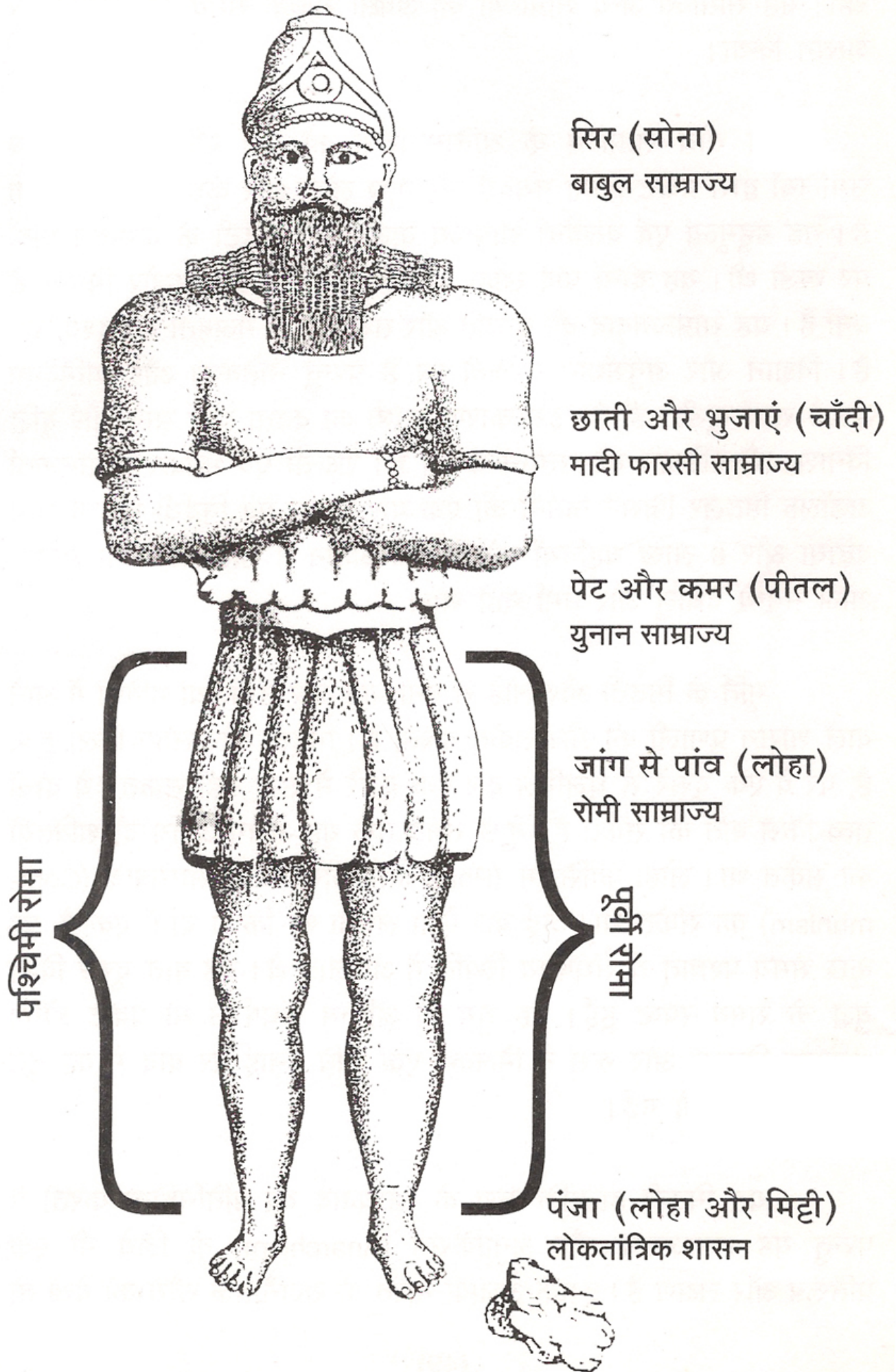
B.C. 146- A.D.476

जांघों का आधा हिस्सा और दोनों पैर लोहे के थे जो चौथा साम्राज्य रोम को संकेत करता है। जिस प्रकार मूर्ति के दोनों पैर लम्बे थे ठीक इसी प्रकार यह साम्राज्य बहुत लम्बे समय तक शासन करता रहा। लेकिन जांघों के नीचे पैर दोनों अलग अलग दिखाई देते हैं ठीक वैसा ही रोमी साम्राज्य A.D.364 में दो भागों में विभाजित हो गया अर्थात् पश्चिमी रोमा और पूर्वी रोमा।

यह साम्राज्य लोहे के भाग के द्वारा प्रतिनिधित्व करता है। इस साम्राज्य की विशेषता यह थी कि वह अपने सामर्थ्य के द्वारा प्रशस्त था। जिस प्रकार लोहा सख्त रहता है तथा सब चीजों को चकनाचूर कर देता है, और सब चीजों को अपनी शक्ति के अधीन कर देता है, ठीक वैसा ही उसके सामना किये गये सबको उसने चकनाचूर कर दिया। यह साम्राज्य चौथी

नबुकदनेस्सर का स्वप्न

साम्राज्यवाद की मूर्ती (दानि. 2 : 31- 45)



परमेश्वर का अनन्तकालीन साम्राज्य

शताब्दी में दो भागों में विभाजित हो गया। जैसा कि मूर्ति के दो पैर अलग अलग दिखाई देते हैं और जैसे पैर दोनों लम्बे हैं वैसे ही रोमी साम्राज्य विभाजित हो गया और उस साम्राज्य का शासनकाल बहुत लम्बे समय तक रहा। यह साम्राज्य अन्य साम्राज्यों की अपेक्षा अधिक समय तक संसार पर शासन किया।

इस चौथे साम्राज्य के अन्तिम दिनों को उस मूर्ति के पांव और उंगलियों द्वारा प्रकट किया गया है जो, कुछ लोहा और कुछ मिट्टी से बना है। यह बहुमूल्य एवं बलवन्त साम्राज्य वाली मूर्ति मिट्टी के कमजोर पांवों पर खड़ी थी। यह दोनों पांव लोहा और मिट्टी के एक कमजोर मिश्रण से बना है। यह साम्राज्यवाद की उन्नति और तरक्की एवं मजबूती का दृश्य नहीं है। विज्ञान और अनुसंधान तरक्की पर है परन्तु नैतिकता और धार्मिकता इसके साथ जुड़ी नहीं है। इस कारण मनुष्य का बढ़ता हुआ ज्ञान और बुद्धि विनाशकारी परिणाम को उत्पन्न करता है। राक्षसी एवं भयंकर शासनकर्ता अडोल्फ हिटलर जिसने जर्मनी को एक पशु समान एवं निर्दयी रूप में आगे बढ़ाया और 6 लाख यहूदियों को गैस के ओवन में डालकर मरवा डाला। आज मनुष्य दयालु और धर्मी नहीं रहा।

मूर्ति के मिट्टी और लोहे से बना पांव और उंगलियां भविष्य में आने वाले शासन प्रणाली की ओर संकेत करता है। मिट्टी और लोहा मिला हुआ है, पर वे एक दूसरे से घुलमिल कर एक दूसरे में समा नहीं सकते। ये दोनों तत्व किस बात का संकेत हैं? कुछ समय तक यह अलग अलग दो शक्तियों का संकेत था। लोहा फासिसम (Phasism) और मिट्टी साम्यवाद (Communism) का संकेत था। कई बार ऐसा लगता था कि ये दोनों एक है, पर कुछ समय पश्चात् ये संघर्षमय स्थिति में आ जाते थे। यह बात दूसरे विश्व युद्ध के समय स्पष्ट हुई। यह युग के अन्तिम संघर्ष में भी प्रकट होंगे। अडोल्फ हिटलर और रूस ने मिलकर एक संधि बनाई पर बाद में वह टूट कर चकनाचूर हो गई।

यह मिट्टी हालांकि रूस के साम्यवाद का प्रतिनिधित्व करती है परन्तु यह समाजवाद और अनार्किसम (Anarchism) के लिये भी एक प्रतिरूप और लक्षण है। इसके अलावा भारत के राजनैतिक रवैये को देखें तो

पता चलता है कि आज के मौजूदा शासन के लिये यह एक ठोस और पुख्ता उदाहरण है। कई दल मिलकर शासन के लिये सरकार बना रहे हैं पर किसी न किसी मुद्दे को लेकर उनमें कुछ समय बाद मतभेद और मनमुटाव हो जाता है और कोई एक मजबूत दल अपना समर्थन वापस ले लेता है। इस मतभेद और मनमुटाव से मानसिक तनाव एवं मनोमालिन्य पैदा होती है। इस कारण शीघ्र ही शासन समाप्त हो जाते हैं। कुछ ही समय में कई प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री बदलने की नौबत आ जाती है और मंत्रिमंडल को बर्खास्त करना पड़ता है। बातचीत के द्वारा फिर एकजुट होते हैं किसी दूसरे दल को समर्थन देते हैं और वह सरकार बनाता है। पर कुछ समय पश्चात् वह भी गिरा दी जाती है। अस्थिर शासन एवं शासनकर्ता आज के प्रजातंत्र का स्वभाव है। यही मिट्टी और लोहे के मिश्रण जैसा शासन है। यह वर्तमानकालीन प्रजातंत्र का एक अच्छा उदाहरण है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों में कुछ इसी प्रकार का शासन चल रहा है।

मूर्ति की 10 उंगलियां अन्तिम समय में फिर से उदय होने वाले रोमी (Revived Rome) साम्राज्य के 10 संयुक्त राजाओं को दर्शाता है। मिट्टी और लोहे के अस्थाई शासन प्रणाली अर्थात् प्रजातंत्र के समय की समाप्ति में रोमी साम्राज्य जो जनसमुदाय रूपी सागर में डूबा पड़ा है, फिर से उदय होगा और उसमें 10 राजा होंगे। इन दस राजाओं के बारे में हम 7 अध्याय में और भी विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

पद-44, 45 :- और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जायेगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा। जैसा हमने देखा कि एक पत्थर किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड़ में से उखड़ा, और उसने लोहे, पीतल, मिट्टी, चांदी और सोने को चूर-चूर किया, इसी रीति से महान परमेश्वर ने राजा को जताया कि इसके बाद क्या क्या होने वाला है। न स्वप्न में और न उसके फल में कुछ सन्देह है।

फिर से उदय होने वाले रोमी साम्राज्य के 10 संयुक्त राजाओं के शासनकाल में विरुद्ध मसीह विश्वशक्ति के रूप में प्रकट होगा। उस समय

10 राजा उसका मुकाबला करेंगे। लेकिन विरुद्ध मसीह अपनी शक्ति के प्रभाव को प्रयोग कर के 10 में से 3 राजाओं को खत्म कर देगा। तब बाकी 7 राजा विरुद्ध मसीह के आगे अपने आप को समर्पित कर देंगे। इस के बाद विरुद्ध, मसीह 8 वां राजा के रूप में उनमें शामिल हो जायेगा। विरुद्ध मसीह शासन का बागडोर अपने हाथ में लेगा। उस समय अर्थात् इन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक, स्थाई और सदा स्थिर रहने वाला राज्य स्थापित करेगा। वह राज्य सर्वदा रहेगा। इतना ही नहीं वह राज्य किसी अन्य जाति को नहीं दिया जायेगा।

यह प्रक्रिया, इन राजाओं के विनाश के पश्चात् की होगी। यह मूर्ति जो साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करती है, उसके पांव पर एक पत्थर आकर मारेगा जो पहाड़ से बिन हाथ के छुए, उखड़ कर आयेगा। यह लोहा मिट्टी, पीतल, चांदी, सोना आदि वस्तुओं से निर्मित इस मूर्ति के पावों पर गिरा और संपूर्ण मूर्ति को चकनाचूर कर दिया। संसार को विश्व शक्ति के रूप में जोड़ने वाले चारों साम्राज्य को सत्यनाश कर दिया। मानवीय शासन अर्थात् मनुष्य के साम्राज्यवाद को इसी के साथ पूरी तौर से नष्ट कर दिया गया। वह पत्थर सारे संसार में फैल गया। यह पत्थर स्वयं प्रभु यीशु मसीह है। उस पत्थर के बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैलने का मतलब (2:35) है, यीशु मसीह का शासन सार्वलौकिक हो जाना। संसार के सब देशों में यीशु मसीह का ही शासन रहेगा। इस के साथ साथ अन्य जातियों का शासन हमेशा के लिये समाप्त हो जायेगा। सारी पृथ्वी पर यीशु मसीह का राज्य एवं शासन होगा।

नबुकदनेस्सर राजा का निर्णय

स्वप्न का अर्थ बताने के पश्चात् दानिय्येल राजा के समक्ष अपने परमेश्वर को ऊंचा करने में नहीं झिझका। वह कहने लगा, “इसी रीति से महान परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इसके बाद क्या क्या होने वाला है। न स्वप्न में और न उसके फल में कुछ संदेह है” (पद.45)। दानिय्येल ने कहा सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने भविष्य की बातें अर्थात् दुनियां की राजनीतिक स्थिति का स्पष्टीकरण इस स्वप्न के द्वारा प्रकट किया है। याने नबुकदनेस्सर के द्वारा संचालित बाबुल साम्राज्य का एक दिन अन्त हो

जायेगा। उसके बाद 3 और साम्राज्य उदय होंगे और उन तीन साम्राज्यों के अन्त में एक प्रजातन्त्र वाला शासन आयेगा। किसी को बहुमत न मिलने के कारण मिलीजुली सरकार बनायेंगे पर एक दूसरे से मिलेंगे नहीं। इसके लिये आज की भारतीय राजनीतिक गतिविधियां एक उदाहरण है। उसके अन्त में फिर से उदय होने वाले रोमी साम्राज्य के 10 संयुक्त राजाओं का शासन होगा। उनके समय में विरुद्ध मसीह अन्य जातियों के अन्तिम शासनकर्ता के रूप में प्रकट होगा। आते ही वह तीन राजाओं को पराजित करके 8 वां राजा के रूप में शासन आगे बढ़ायेगा। उन राजाओं के दिनों में प्रभु यीशु मसीह अपने शासन को संसार में स्थापित करेगा। यह भी दानिय्येल ने समझाया कि यह परमेश्वर की ओर से है, सो स्वप्न में और उसके फल में कोई सन्देह नहीं है।

इतनी बातें स्पष्ट रूप में सुनकर राजा भयभीत हो गया। लिखा है **“इतना सुनकर नबुकदनेस्सर राजा ने मुंह के बल गिरकर दानिय्येल को दण्डवत की, और आज्ञा दी कि उसको भेंट चढ़ाओ, और उसके सामने सुगन्ध वस्तु जलाओ” (2:46)**। राजा ने ये बातें सुनकर जीवित परमेश्वर को दण्डवत करने की बजाय वह दानिय्येल के सामने गिरकर दानिय्येल को दण्डवत कर रहे थे। यह भी कहने लगे कि दानिय्येल के सामने भेंट चढ़ाओ और सुगन्ध वस्तु जलाओ। मनुष्य की पूजा अर्चना करने लगा। कुछ भी हो दानिय्येल का सबके सामने आदर हुआ। परमेश्वर का वचन कहता है, **“क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूंगा” (शमु.2:3)**। यदि मैं और आप अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर का आदर करें तो परमेश्वर हमारा भी आदर सम्मान करेगा।

“फिर राजा ने दानिय्येल से कहा, सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलने वाला है, इसलिये तू यह भेद प्रकट कर पाया” (2:47)। इस घटना से नबुकदनेस्सर राजा को यह समझ में आया कि संसार में एक ही परमेश्वर है। याने इस घटना से नबुकदनेस्सर राजा ने यह मान लिया कि दानिय्येल का परमेश्वर सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलने वाला है। वह इस घटना से निरुत्तर हो गया। पर यह केवल एक दिमागी प्रभाव रहा। खैर राजा ने दानिय्येल का पद बड़ा किया याने उसकी

पदोन्नति की गयी और इतना ही नहीं उसको बड़े बड़े दान और इनाम दिये गये। यह पदोन्नति के प्रमाण के रूप में घोषणा की गयी कि वह बाबुल के सारे प्रान्त पर हाकिम बना रहेगा। एक और बात राजा ने कहा कि वह बाबुल के तमाम पण्डितों के मुख्य प्रधान बने रहेंगे। पण्डितों की अगुवाई करना और उन्हें मार्गदर्शन करना भी दानिय्येल का काम हो गया (2:4-8)।

याद रखिये जब हम हमारी उन विपरीत और संकटमय परिस्थितियों में भी परमेश्वर को महिमा देने की कोशिश करते हैं, तो परमेश्वर हमारी भी फिक्र करता है। इस संसार के जीवन और सेवकाई में रहकर हम जितना ज्यादा परमेश्वर को ऊंचा करेंगे उतना अधिक परमेश्वर हमें भी पदोन्नति एवं ऊंचाई प्रदान करेंगे। इस कारण मेरा आप से निवेदन है कि हमारे जीवन और सेवकाई के द्वारा हम हमारे परमेश्वर को सदा ऊंचा करें, भले ही हम बाबुल की अवस्था में क्यों न पाए जाएं।

साथियों के लिये सिफारिश

एक और महत्वपूर्ण कार्य दानिय्येल ने इस अध्याय में किया और वह उसके अन्तिम पद में लिखा गया है। “तब दानिय्येल के विनती करने से राजा ने शद्रक, मेशक, और अबेदनेगो को बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त कर दिया। परन्तु दानिय्येल आप ही राजा के दरबार में रहा करता था” (2:49)। स्वप्न के अर्थ का प्रकट किया जाना चारों व्यक्तियों की प्रार्थना से हुआ है। प्रार्थना करने के दौरान रहस्य को परमेश्वर ने दानिय्येल पर प्रकट किया, पर इनाम सब लोगों को मिलना चाहिये। प्रार्थना में बड़ी शक्ति है। उन्होंने प्रार्थना की और समस्या का समाधान मिल गया। समस्या का समाधान स्वप्न के अर्थ के रूप में प्रकट हुआ और दानिय्येल ने उसे राजा को बता दिया तो दानिय्येल को प्रतिफल और पदोन्नति मिल गयी। पर दानिय्येल जानता था कि इस बड़े यत्न में उसके सहयोगी शद्रक, मेशक, और अबेदनेगो भी शामिल थे।

लेकिन यह रहस्य राजा को नहीं मालूम था। सो यह दानिय्येल का कर्तव्य था कि राजा के समक्ष अपने उन सहयोगियों को भी प्रस्तुत करें। दानिय्येल इस शुभ कार्य में विमुख नहीं रहा। दानिय्येल के कहने से उन तीनों भाइयों की भी पदोन्नति हो गयी।

कई बार हम परमेश्वर को ऊंचा करते हैं। परमेश्वर को महिमा देते हैं और उस कारण परमेश्वर हमें भी उन्नति की शिखर की ओर ऊंचा उठाता है। पर हम हमारे जीवन में इस बात से वंचित रह जाते हैं, कि हम अपने सहयोगियों को बराबरी पर या समान सम्मान की ओर उठाएं। हम चाहते हैं कि हम ही एकदम ऊपर रहें। लेकिन दानिय्येल इस प्रकार का एक स्वार्थी प्रभु का सेवक नहीं था। यह विचार हमारे मन में कभी न रहे कि हम कार में चलें और हमारे सहयोगी पैदल चलें। क्या आपके अन्दर दानिय्येल की आत्मा है?

अध्याय—3

दानिय्येल के भाई संकट में, नबुकदनेस्सर राजा और सोने की मूर्ति

तीसरे अध्याय का वर्णन दूसरे अध्याय के अन्तिम भागों के वर्णन से बिलकुल भिन्न एवं विपरीत है। दूसरे अध्याय में राजा ने दानिय्येल के परमेश्वर को, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को ईश्वरों का ईश्वर और राजाओं का राजा माना। पर यहां सब कुछ भूल कर राजा कुछ और कर रहा है। एक मूर्ति बनाने और उसकी आराधना करने के लिये लोगों को मजबूर कर रहा है। यह दूसरे अध्याय की घटना के काफी दिन बाद हो सकता है। याने राजा यरुशलेम नगर की ओर फिर से आक्रमण के उद्देश्य से गया और यरुशलेम नगर को पूरी तौर से आग द्वारा भस्म कर दिया। अब यह निश्चित हो गया है कि वह सारे संसार के राज्यों पर सर्वाधिकारी एवं शासनकर्ता बन गया है।

इस प्रकार कई वर्ष बीत गये तो नबुकदनेस्सर राजा का, इस्राएल के परमेश्वर के प्रति जो आदर और सम्मान था वह खत्म हो गया। लेकिन आज भी वह उस मूर्ति का स्वप्न याद कर रहा है जिस के सोने का सिर वह स्वयं है। वह अपने राज्य को विशाल रूप में देख कर जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार के लोग हैं, उन्हें एक एकता में लाने का प्रयास कर रहा है। उसके लिये कोई न कोई एक ऐसा साधन चाहिये जिसके अधीन सबको लाकर खड़ा करे। जैसा कि मुकुट ब्रिटेन के राष्ट्रमण्डल (Common Wealth) का

चिन्ह था। रोमी साम्राज्य के शासन काल में सारे संसार के लोगों के लिये आराधना का विषय कैसर था। वे स्वयं ईश्वर के स्थान को अदा करते थे।

इसी प्रकार नबूकदनेस्सर राजा इस मूर्ति के निर्माण करने के द्वारा उसके साम्राज्य के सब प्रकार के लोगों को एकता के सूत्र में बांधना चाहता है। उसके लिये उसने इस मूर्ति का निर्माण कराया। यह आवश्यक नहीं कि राजा ने जो मूर्ति बनवाई वह पूर्ण रूप से सोने की हो। वह पत्थर काठ या भूसे और मिट्टी के हो सकते हैं जो कि बाहर से सोने से मढ़ा हो। बाहर से देखने में पूरी-पूरी सोने की मूर्ति दिखाई देती थी पर अन्दर से ऐसा होना जरूरी नहीं। जब वह बनकर तैयार हुआ तो उसका रूप देखने में भयानक था। जो कुछ नबूकदनेस्सर ने किया वह सब बहुत ही बड़ी मात्रा में था। जैसा कि झूलेदार बगीचा, बाबुल शहर के बाहर वाली शहरपनाह, जिसकी तुलना किसी भी चीज़ के साथ नहीं की जा सकती थी।

मूर्ति की लम्बाई साठ हाथ (लगभग 90 फुट, स्टैंड के साथ) और उसकी चौड़ाई छः हाथ थी। उसका रूप देखने से ही लोगों को गिरकर दण्डवत् करने की भावना या विचार उत्पन्न हो जाएं। वैसे शुरू से ही मानव अपने से बड़े और डरावनी वस्तुओं की आराधना करते चले आए। सो इस भयंकर रूप को देखकर और राजा के बलपूर्वक एवं क्रूरतम आदेश के कारण लोगों ने मूर्ति के आगे दण्डवत् करने का विचार किया। नबूकदनेस्सर के मन में एक निश्चित भावना है कि उसने दुनियां के सब राष्ट्रों पर विजय प्राप्त कर ली है और उन सब राष्ट्रों के लोगों को गुलाम बनाकर बाबुल में लाया है।

उन सबका अलग-अलग धर्म एवं आराधना की विधि है। पर इस कार्य के द्वारा वह सब लोगों को एक झण्डे के नीचे लाना चाहता है। दूरा नामक मैदान में इस बड़ी आराधना को वह राजनैतिक बना रहा है। दूसरे शब्दों में उसका उद्देश्य एक राजकीय धर्म (State Religion) बनाना था।

लड़ाईयां पूर्ण कर जयवंत स्वदेश लौट आए नबूकदनेस्सर ने इस मूर्ति का निर्माण किया। इसके पीछे एक विशेष बात के होने का विचार है अर्थात् यह उस स्वप्न में देखी गई मूर्ति की यादगारी में बनायी गयी है।

इसके संबंध में दानिय्येल ने कहा, “वह सोने का सिर तू ही है” (2:3)। यह मूर्ति नबुकदनेस्सर राजा का इष्ट देवता मेरोडक की हो सकती है जो लड़ाईयों का प्रभु या देवता कहलाता है। सारे संसार के राष्ट्रों के साथ लड़ाई में पूर्ण विजय पाने की खुशी में अपने इष्ट देवता की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने का विचार भी सही हो सकता है। यह मूर्ति उस अन्तिम समय में विरुद्ध मसीह द्वारा बनवाई जाने वाली मूर्ति की ओर एक संकेत है (प्र.वा.13:14,15)। नबुकदनेस्सर आने वाले विरुद्ध मसीह के लिये एक संकेत या छाया है।

मूर्ति और मूर्तिपूजक

(3:2-7)

नबुकदनेस्सर राजा के द्वारा खड़ी कराई गयी मूर्ति की पूजा के लिये साम्राज्य के सभी अधिकारियों को निमंत्रण दिया गया। अधिपतियों, हाकिमों, गवर्नरों, जजों, खजांचियों, न्यायियों, शास्त्रियों आदि प्रांत-प्रांत के सब अधिकारियों को बुलावा भेजा कि वे उस मूर्त की प्रतिष्ठा में आएँ जो राजा ने खड़ी कराई थी। राजा के निमंत्रण के आधार पर वे सब आराधना के लिये जमा हुए। इस पूजा के प्रारंभ में यह नियम था कि ढिंढोरिये ऊंचे शब्द से पुकार कर कहे, देश-देश और जाति-जाति के लोगों एवं भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले, जब नरसिंगे, बांसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो तो उसी समय गिरकर नबुकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई मूर्ति को दण्डवत करें। इस आदेश का पालन कर मूर्ति के सामने गिरकर दण्डवत न करे तो आग में डाले जाने का भी आदेश दिया गया।

आराधना और इस्राएली जवान

(3:8-23)

सब प्रकार के बाजे बजाए गये और आराधना के लिये आवाहन भी किया गया। लेकिन इस्राएली जवान शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने इस आराधना में शामिल होने से इंकार किया। उन्हें मालूम था कि यह एक मूर्ति मात्र है और उसके सामने गिरकर दण्डवत करना जीवित परमेश्वर का अपमानित करना है। इन जवानों के पास एक लिखित व्यवस्था थी। मूसा के द्वारा सीनै पहाड़ से दी गयी व्यवस्था। उस व्यवस्था में जो 10 आज्ञा है

उसके पहली और दूसरी आज्ञा में ही मूर्ति पूजा का बहिष्कार किये जाने का आदेश है। तो इस बड़ी आराधना में नबुकदनेस्सर एक तरफ खड़े होकर आदेश दे रहा था कि सब लोग गिरकर मूर्ति को दण्डवत करें। लेकिन दूसरी तरफ इन ईश्वर भक्तों ने मानो देखा मूसा उनके सामने खड़ा है और कहता है नहीं, मूर्ति को दण्डवत, कभी नहीं करना। वे एक धर्मसंकट में पड़ गये। यदि गिरकर दण्डवत नहीं किया तो धधकते हुए भट्टे के बीच में डाल दिए जायेंगे। मूसा और व्यवस्था की बात न माने तो परमेश्वर की ओर से दण्ड मिलेगा। उन्होंने अपने मन में दृढ़ संकल्प कर लिया कि भले कुछ भी हो जाए हमें मूर्ति के सामने दण्डवत नहीं करना है।

इतने में कुछ कसदी पुरुषों ने जो कपटी थे, राजा के पास जाकर उन यहूदी जवानों की चुगली खाई। उन्होंने राजा की प्रशंसा की और कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे और, कहा आपने आदेश दिया कि सब प्रकार के बाजे बजाए जाएं और सुनकर सब लोग गिरकर आपके द्वारा खड़ी कराई गई मूर्ति के सामने दण्डवत करें। जो कोई गिरकर दण्डवत न करे उन्हें आग के भट्टे के बीच में डाल दिया जाए। लेकिन शद्रक, मेशक, और अबेदनगो नाम के तीन यहूदी पुरुष जिन्हें तूने बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त किया है, उन पुरुषों ने तेरी आज्ञा की कुछ चिंता नहीं की और वे तेरे देवता की उपासना नहीं कर रहे हैं न उस मूर्ति को दण्डवत कर रहे हैं।

इस आराधना की दो बातें

1. जितने बाजे बजाए जाते हैं और सुन्दर गीत गाए जाते हैं वह सब सही आराधना नहीं है। जिस प्रकार मूर्ति अन्दर से खोखली है ठीक इसी प्रकार इस आराधना में भी कोई सच्चाई नहीं है। केवल एक शोरगुल एवं दिखावा मात्र है। यह शद्रक, मेशक और अबेदनगो अच्छी तरह जानते थे।

2. दूसरी बात आराधना में शामिल होने वाले कुछ लोगों की निगाह इन परमेश्वर के भक्तों के ऊपर है। जब वे लोग दण्डवत नहीं कर रहे थे तो वे जलन और इर्ष्या से भर गये। वे चाहते थे कि किसी न किसी प्रकार वे नाश किये जाएं। बाप रे ! क्या मनोवृत्ति है। आज भी आराधनाओं में लोग शामिल तो होते हैं। पर कितने लोग शुद्ध मन और शुद्ध विवेक के साथ परमेश्वर की

आराधना करते हैं। आराधना कर तो रहे हैं पर आराधना करने वाले अन्य लोगों को आघात पहुंचाने का प्रयास करते रहते हैं। सच्चे परमेश्वर की आराधना सच्चाई और आत्मा से करने वालों को सदा प्रतिकूलताओं और मुखालिफतों का सामना करना पड़ता है। हाबिल ने एक ही आराधना की और मार डाला गया। एलिय्याह के दिनों में भी आराधना के बारे में सवाल आया कि बाल की पूजा करें या जीवित परमेश्वर यहोवा की आराधना करें। जीवित परमेश्वर की आराधना करने वाले एलिय्याह को मृत्यु की चुनौती का सामना करना पड़ा। यहां भी वही बात देखने को मिलती है। राजा को बात मालूम हुई तो वह रोष और जलजलाहट से भर गया। शद्रक, मेशक और अबेदनगो राजा के सामने हाज़िर किये गये। उनका राजा के साथ आमना सामना हुआ। उस समय नबुकदनेस्सर ने उनसे पूछा, हे! शद्रक, मेशक और अबेदनगो तुम लोग जो मेरे देवता को और मेरी खड़ी कराई गई सोने की मूरत को दण्डवत् नहीं करते हो, सो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो? (3:13,14)।

राजा ने उन्हें एक और अवसर मूरत को दण्डवत् के लिये दिया (3:15)। तमाम् प्रकार के बाजे बजाए गए। सारे लोगों ने गिरकर मूर्ति के सामने दण्डवत् किया। पर शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने उस समय भी दण्डवत् नहीं की। तब राजा बहुत ही क्रोधित हो गये और कहा आग 7 गुना बढ़ा दी जाए और शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बांध कर उस धधकते हुए भट्टे के अन्दर डाल दिया जाए (3:19-27)। सो तुरन्त उन तीनों को 7 गुना बढ़ाई गई आग के धधकते हुए भट्टे के अन्दर डाल दिया गया। यह भट्टा एक कमरे के समान बना हुआ था जिसमें एक ही दरवाजा था। यह भट्टा शायद 6,7 फुट गहरा हो सकता है वह भट्टे का दरवाजा बन्द किया जाए तो उसके अन्दर से बचना असंभव था। लेकिन ऊपर महल के दूसरी तीसरी मंजिल से भट्टे की भीतरी हालात देख सकते थे। भट्टे के चारों तरफ की दीवार इतनी ऊंची थी कि उस के अन्दर से कूदकर बचना असंभव था। लेकिन बचाने वाला किसी भी संकटमय परिस्थिति में आकर आपकी सहायता कर सकता और आपको बचा सकता है।

यह सब कुछ जानते हुए भी कि इस परिस्थिति से वे बच नहीं सकते, उन्होंने मूर्ति को दण्डवत् करने से इनकार किया। राजा उन से पूछता

है; “नबुकदनेस्सर ने उनसे पूछा, हे! शद्रक, मेशक, और अबेदनगो, तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूर्त को दण्डवत नहीं करते, सो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो?” (3:14,15)। तो राजा ने उन्हें एक और अवसर देने का विचार किया और कहने लगा कि जब तमाम् प्रकार के बाजे बजाए जाएं और उसी क्षण गिरकर मेरी बनवाई हुई मूर्त को दण्डवत करो, तो बचोगे और यदि तुम दण्डवत न करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाले जायेंगे फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके?

नबुकदनेस्सर राजा पहले से क्रोधित थे और अब वह घमण्ड से भी भर गया। एक महान परमेश्वर, जीवित और चमत्कारिक कार्य करने वाले के बारे में उसको ज्ञान था। कुछ ही समय पहले उसने अपने मुंह से इस बात का अंगीकार किया था कि दानिय्येल का परमेश्वर ही सच्चा परमेश्वर है (2:46,47)। लेकिन उस क्रोध और जलजलाहट में वह शायद यह भूल गया हो। अक्सर मनुष्य परमेश्वर की महानता को भूल जाते हैं। नबुकदनेस्सर पूछता है कि “मेरे हाथ से छुड़ाने वाला कौन देवता है”? इस प्रकार के परिहास और धमकी से जीवित परमेश्वर के सेवक लोग डरे नहीं। उन्होंने राजा को अपनी निडरता का परिचय दिया और कहा कि, “हे! नबुकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। हमारा परमेश्वर, जिस की हम उपासना करते हैं वह हमें उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है। वरन हे! राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। परन्तु यदि नहीं, तो हे! राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई गई सोने की मूर्त को दण्डवत करेंगे” (3:16-18)।

यह क्या दिलेरी भरा प्रत्युत्तर है। किसी ने यूं कहा, “जो परमेश्वर से डरता है, उसको और किसी से डरने की आवश्यकता नहीं”। यह सच बात है यदि आप परमेश्वर से सच्चे दिल से डरने वाले हैं तो आपको किसी भी व्यक्ति से या शक्ति से डरने की आवश्यकता नहीं है। याद रखिये, निर्णय का बड़ा असर है। यदि कोई व्यक्ति किसी भी बात के लिये एक ठोस निर्णय ले ले तो फिर वह व्यक्ति अटल रहेगा। याद रखिये ऐसे ठोस और पक्का निर्णय लेने वालों की सहायता के लिये स्वर्ग को झुका कर परमेश्वर उतर

आता है। इस दिलेरी के उत्तर को सुनकर राजा झुंझला उठा, और उसके चेहरे का रंग शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर बदल गया। और उसने आज्ञा दी कि भट्टे को सात गुणा अधिक धधका दे। फिर अपनी सेना में के कई एक बलवान पुरुषों को उसने आज्ञा दी कि उन्हें बांध कर धधकते हुए भट्टे में डाल दो (3:19-29)।

राजा का उद्देश्य था कि वे किसी भी प्रकार से बच न निकले। बहुत कड़ी सुरक्षा एवं बल प्रयोग के साथ उन्हें बांध कर आग में डलवा दिया। लेकिन उन्हें कोई हानि नहीं पहुंची उन जवानों को उठाने वाले सेना के जवान भट्टे का द्वार खोलते ही उसी से निकली आग की ज्वाला से जल कर मर गये (3:22)। लेकिन आग के अन्दर फेंके गये परमेश्वर के तीनों भक्तों को कोई हानि नहीं हुई। केवल इतना हुआ कि उनको बांधी हुई रस्सी जल गयी। याद रखिये बाबुल की आग बाबुल के लोगों को और बाबुल की रस्सी को ही जला सकती है। परमेश्वर के लोगों को यह आग कुछ नहीं कर सकती है। परमेश्वर ने अपने लोगों की सुरक्षा की प्रतिज्ञा दी है; **“जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी। क्योंकि, मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूँ। मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ”** (यशा. 42:2,3-5)।

परमेश्वर अपने इस वचन के मुताबिक अपने लोगों को बचाने हेतु स्वर्ग छोड़कर उतर आया। उनके साथ उस आग में उतर आए। आग में अपने भक्तों के साथ घूम रहे हैं और उनसे बातें कर रहे हैं एवं उनको आग जैसे दुख में संगति दे रहे हैं। परमेश्वर वह नहीं है जो किसी स्थान में चुपचाप बैठा रहता हो परन्तु परमेश्वर वह है जो संकट के समय अति सहज से मिलने वाले सहायक के रूप में मेरी और आपकी सहायता करता हो। यह चौथा व्यक्ति कौन है? यह वही उद्धारकर्ता है जो त्रियेक परमेश्वर के त्रियेकता का दूसरा व्यक्तित्व अर्थात् प्रभु यीशु मसीह। इस चौथे व्यक्ति का वर्णन उत्पत्ति की पुस्तक से आरंभ हुआ है सो प्रकाशितवाक्य तक मिलता है।

इस वर्णन में बताई गयी बात आने वाले भविष्य में परमेश्वर के लोग इस्राएलियों पर आने वाले भयंकर पीड़ा और सताव के लिये एक संकेत है।

अन्तिम समय में विरुद्ध मसीह के द्वारा इस्राएल पर आने वाले सताव के लिये एक इशारा है। आग सात गुणा बढ़ाने का मतलब है भारी क्लेश के अन्तिम 3 साल की अवधि में विरुद्ध मसीह द्वारा इस्राएलियों पर क्लेश को सर्वाधिक बढ़ाया जाना। यह सात गुणा अर्थात् पूरी शक्ति के साथ प्रभु के लोगों को सताया जाना। पर याद रखिये उन का छुड़ाने वाला सिय्योन से उतर आयेगा और उन्हें सताव से और भारी क्लेश से बचायेगा (रोमि-11:26)।

वास्तव में परमेश्वर अपने भक्तों को बचाने वाला है। इस चमत्कार को देखकर राजा अपने महल की ऊपर वाली छत पर निरीक्षणार्थ खड़े थे। राजा चिल्लाकर अपने अधीनस्थ अधिकारियों से पूछता है कि तीन जन को ही डाले थे या कहीं गलती तो नहीं हुई? फिर ये चार कहां से हो गये? राजा को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। अधिकारियों ने कहा हमने तीन जन को ही डाले हैं। राजा पूछता है फिर यह चौथा व्यक्ति कौन है ? यह चौथा व्यक्ति सबके लिये एक सवाल और आश्चर्य का विषय बना। यहां वह अपने भक्तों को बचाने वाले के रूप में आग के अन्दर प्रकट हुआ है। इसका क्या उत्तर है? यह वह है जिस के बारे में राजा ने पूछा, **“मेरे हाथों से बचाने वाला देवता कौन है ?”**। आग के अन्दर से राजा और हाकिमों के सामने आनन्दित और हर्षित होकर बिना शब्दों से वे यह उत्तर दे रहे हैं कि यह वह देव है जो तेरे हाथ से और आग से बचाने वाला है। संकट में उतरकर आने वाला और बचाव का प्रबंध करने वाला है प्रभु यीशु मसीह। बचाने वाला केवल एक ही है, वह प्रभु यीशु मसीह के अलावा और कोई नहीं है। परमेश्वर के वचन में लिखा है कि, **“और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे, मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें”** (प्रेरित.4:12)। क्या आपने इस चौथे व्यक्ति से मुलाकात की ? यदि नहीं तो आज ही उसको पुकारें और अपना उद्धारकर्ता और स्वामी स्वीकार करें।

राजा अब तक क्रोध से झुंझला रहा था। उसकी आवाज़ बुलन्द थी। एक घमण्ड भरी आवाज़—मेरे हाथ से छुड़ाने वाला देवता कौन? पर उसका चेहरा बदल गया। आवाज़ धीमी पड़ गयी। घमण्ड की उंची छत से शीघ्र उतर कर भट्टे के पास दौड़ कर आ गये। वह दृश्य देख कर राजा को ऐसा लगा कि धरती उस के पांव के नीचे से खसक गयी हो। वह भट्टे के पास

आकर पुकार कर कहा गया वचन सुनने के योग्य था। मैं वह वचन बाइबल से उसी प्रकार उतार देता हूँ, “धन्य है शद्रक, मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर, जिसने अपना दूत भेजकर अपने दासों को इसलिये बचाया, क्योंकि इन्होंने राजा की आज्ञा न मानकर, उसी पर भरोसा रखा, और यह सोच कर अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम अपने परमेश्वर को छोड़ किसी देवता की उपासना व दण्डवत् न करेंगे” (3:28)।

राजा दौड़ कर भट्टे के पास आए और शीघ्र ही भट्टे का द्वार खोलने का आदेश दिया होगा। उसके बाद वह कहने लगा हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे! परमेश्वर के दासों निकल कर यहां आओ। यह सुनकर शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल आये। और अधिपति हाकिम गवर्नर और राजा के मन्त्रियों ने देखा तो उन लोगों को कोई हानि नहीं हुई थी। उनके बाल भी नहीं झुलसा, न उनके मोजे बिगड़े और न उनमें जलने की कुछ गंध पाई गयी। जब परमेश्वर किसी को बचाते हैं तो पूरी तौर से बचाते हैं। यहां एक और बात ध्यान देने योग्य है वह यह है कि राजा ने आश्चर्यचकित होकर तीनों भाईयों को आग से नाम लेकर बाहर बुलाया पर वह चौथे व्यक्ति को क्यों नहीं पुकारा। आज भी हम आश्चर्यकर्म को आलिंगन करना पसन्द करते हैं पर चमत्कार और आश्चर्यकर्म करने वाले महान प्रभु यीशु मसीह को और जीवित परमेश्वर को जो तीसरा व्यक्ति है, हम स्वीकार नहीं करना चाहते।

इस आश्चर्यकर्म से आंतकित होकर राजा ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर के बारे में एक घोषणा की। बल्कि एक आदेश दिया। राजा ने आज्ञा दी कि देश देश और जाति जाति के लोग, भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की निन्दा न करें। यदि ऐसा करने का कोई साहस करेगा तो उसके टुकड़े टुकड़े किये जायेंगे और उनके घर घूरा बनाए जायेंगे। फिर सबके प्रतिनिधि के रूप में एक महत्वपूर्ण अंगीकार किया गया। क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं जो इस रीति से बचा सके (3:29)। राजा का अंगीकार समस्त प्रजा के प्रतिनिधि के रूप में था। ऐसे कितने बार जीवित परमेश्वर के बारे में लोगों ने अंगीकार किया है, फिर भी लोग कैसे मूर्ति पूजा में फंसे हुए हैं, यह एक चिन्तन करने वाली बात है।

अन्त में इस अध्याय के अन्दर शद्रक, मेशक और अबेदनगो की पदोन्नति का वर्णन करके समाप्त किया गया है। आग में से निकल कर आए तो उन्हें एकदम पदोन्नति (Promotion) प्राप्त हो गयी। एक पदोन्नति उन्हें दूसरे अध्याय की घटना से प्राप्त हो चुकी थी। यह दूसरा मौका है। पहले अध्याय में अपने जीवन को नियमित रूप में परमेश्वर के लिये उसके वचनानुसार समर्पण करते हुए देखते हैं। परमेश्वर के लिये जो त्यागना था वह त्याग दिये। अपने जीवन को जोखिम में डाल कर समर्पित किया, तो परमेश्वर उन के लिये भी समर्पित हो गया। याद रखिये सच्चे दिल से परमेश्वर के वचन के मुताबिक जीवन बिताने वालों को परमेश्वर बचाता है। उनके खिलाफ तैयार की जाने वाली आग उन्हें भस्म नहीं कर सकेगी। उसमें वे ही जल जायेंगे जो उन्हें आग में डालने का प्रयास करते हैं। दूसरी बात परमेश्वर के लिये जीने वालों को परमेश्वर सदा उन्नति की शिखर की ओर ऊँचा उठाता है। उन्हें पदोन्नति देने वाला परमेश्वर है। कई लोग हैं जो दो पैसा देकर बड़ा दाता बनना चाहते हैं। वाह! भैया वाह! क्या आप जीवन में सुरक्षा और उन्नति पाना चाहते हैं? तो आप के जीवन में भी इन भाइयों के समान एक पहला अध्याय हो। एक प्रार्थना का जीवन हो। दिलेरी से परमेश्वर की गवाही देने वाले हो। तब प्रभु आशीष देगा।

अध्याय-4

दानिय्येल और वृक्ष के स्वप्न का अर्थ बताना

4:1,2,3:- इस अध्याय में नबुकदनेस्सर राजा के द्वारा देखे गये दूसरे स्वप्न का वर्णन है। इस से पहले कि वह उस स्वप्न का वर्णन करे, वह एक घोषणा करता है। यह घोषणा जीवित परमेश्वर के बारे में है। यह एक पत्र के रूप में तैयार किया गया है और उस के साम्राज्य के अधीन रहने वाले सभी देश-देश और जाति-जाति के लोगों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले समस्त संसार के लोगों के लिये भेजे गये हैं। उस पत्र में वह अपनी व्यक्तिगत गवाही प्रस्तुत करता है। परमेश्वर के बारे में उसके अपने व्यक्तिगत अनुभव कहता है, "मुझे यह अच्छा लगा, कि परमपधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह और चमत्कार दिखाए हैं, उनको प्रकट करूं। उस के दिखाए हुए चिन्ह क्या ही बड़े, और उसके चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रकट होती है उसका राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है (4:2,3)। वह महान जीवित परमेश्वर का गुणानुवाद कर रहा है और परमेश्वर के राज्य की स्थिरता के बारे में बोल रहा है।

4:4-7 :- उसके पश्चात् वह अपने एक स्वप्न के बारे में वर्णन करता है।

यह स्वप्न उसको अपने आराम के समय में उसको दिया गया । मतलब सारे संसार को अपने अधीन कर लिया गया । कोई ऐसा देश नहीं जो उसके अधीन आना बाकी हो । लड़ाईयां खत्म हो गई । सब दूर उसको चैन और आराम था । वह अपने राज्य में और सिंहासन पर निश्चिंत बैठकर शासन कर सकते हैं । किसी प्रकार का डर और भय की आवश्यकता नहीं है । उस प्रकार शारीरिक और मानसिक शांति उसको प्राप्त हो गई । राज्य के शासन के बारे में जहां तक सवाल है कोई भय नहीं है । पिता के देहांत के पश्चात् शासन और सिंहासन के लिये कोई और दावेदार नहीं है । सब प्रकार से यह चैन की सांस लेने का समय था । उस माहौल में उसके आराम को विघ्न पहुँचाते हुए एक और स्वप्न । स्वप्न का अर्थ मालूम नहीं है । इस समय स्वप्न याद है पर उसका अर्थ मालूम करने का प्रयास करता है ।

यह स्वप्नों के क्रम में दूसरा स्वप्न है । पहला स्वप्न परमेश्वर के दास भविष्यवक्ता दानिय्येल के द्वारा अर्थ बताया गया था । दानिय्येल ने उसी समय समझाया कि यह मनुष्य की बुद्धि एवं शक्ति से संभव नहीं है परंतु यह परमेश्वर के द्वारा ही संभव है । परमेश्वर और परमेश्वर की महानता के बारे में खूब अच्छी तरह समझने के बाद भी पता नहीं नबूकदनेस्सर अपने में स्थिर नहीं पाया गया । इस स्वप्न की व्याख्या के लिये भी वह जादूगरों और ज्ञानियों को बुलाते हैं । दानिय्येल को ज्योतिषियों के प्रधान पुकारता है, उसका दिमाग अभी भी उसी बात में लगा हुआ है ।

खैर, राजा ने सबसे पहले अपने तमाम पंडितों को उनके सामने हाज़िर किये जाने का आदेश दिया । सो ज्योतिषि, तंत्रि, कसदि और होनहार बताने वाले स्वप्न को बताने वाले भीतर आये और राजा ने उनको अपना स्वप्न बताया । परन्तु वे उसका फल न बता सके । आपको शायद याद है कि दूसरे अध्याय में राजा ने स्वप्न देखा पर स्वप्न भूल गया । उस समय राजा का आदेश यह था कि स्वप्न एवं अर्थ दोनों बताएं । उस समय ज्योतिषियों ने कहा था कि स्वप्न हमें बतायें, हम अर्थ बतायेंगे । लेकिन इस समय राजा स्वप्न नहीं भूला । स्वप्न तो साफ—साफ वर्णन कर सुनाया । इस समय वे स्वप्न मालूम करते हैं । राजा ने स्वप्न पूर्ण रूप में बताया । अब वे क्यों नहीं बता सके स्वप्न का अर्थ । तो हम इस बात को अच्छी तरह समझ सकते हैं कि यह साधारण बुद्धि और ज्ञान के द्वारा किया जाना संभव नहीं है । अंत में

दानिय्येल आ जाता है। बहुत पहले ही दानिय्येल ने राजा को बता दिया था कि स्वप्न का अर्थ बताना मनुष्यों का काम नहीं है। यह परमेश्वर का विभाग है। अर्थात् इस पृथ्वी पर रहकर एक परमेश्वर का जन आत्मलोक के साथ सम्पर्क साधने से यह योग्यता प्राप्त होती है अर्थात् दानिय्येल का संबंध सीधे उस आत्मलोक से जीवित परमेश्वर के साथ था। याद रखिये परमेश्वर को जानने का मतलब है उस आत्मलोक से संबंध साधना। जब आपका संबंध उस आत्मलोक से हो जाता है तो आपके लिये गूढ़ एवं गुप्त बातें आवश्यकतानुसार प्रकट की जाती हैं।

4:8-12 :- राजा स्वयं कहता है कि दानिय्येल में पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है। राजा अभी भी एक से अधिक ईश्वर होने के विचार में है। कई लोग हैं, कितने भी बार जीवित परमेश्वर के द्वारा आश्चर्यकर्म और चमत्कार देखने पर भी कुछ समय बाद वे पुरानी मान्यताओं की ओर वापस जाते हैं। इससे पहले दो बार यह पक्का मालूम किया और घोषणा भी की कि दानिय्येल, शद्रक, मेशोक और अबेदनगो के परमेश्वर को छोड़ कोई परमेश्वर नहीं है। फिर भी मालूम नहीं कि उस पुरानी बात को कोई याद नहीं कर सके। आज भी कई लोग हैं जो यीशु मसीह के द्वारा कई चंगाई और चमत्कार पाने के पश्चात् भी यीशु मसीह को मानने के लिये तैयार नहीं होते। वे ईश्वरों के पीछे चले जाते हैं।

यहां लिखा है अन्त में नबूकदनेस्सर के देवता के नाम से पुकारे जाने वाले बेलतशस्सर अर्थात् दानिय्येल राजा के सामने बुलाया गया (दानि.4:8)। जब किसी से नहीं बना तो दानिय्येल की याद आ गई। मनुष्य को अपनी समस्या के निवारण और समाधान के लिये सब दूर कोशिश करने पर भी कोई फायदा नहीं होता, क्योंकि वे गलत स्थान में गलत तरीके से कोशिश करते हैं। जीवित परमेश्वर यीशु मसीह के अलावा कोई मानवजाति की समस्या का समाधान नहीं कर सकते हैं। नया नियम में एक स्त्री का वर्णन है जिसको 12 साल तक लहु बहने की बीमारी थी। उसने अपनी सारी संपत्ति वैद्यों को दे दी और इलाज करवाया। रुपया और सारी संपत्ति खत्म हो गई, पर कोई फायदा नहीं हुआ। रुपया और सारी संपत्ति खत्म हो गई और बीमारी अभी भी शरीर में है। अन्त में वह स्त्री यीशु मसीह के पास आई और वस्त्र का दामन छू लिया और वह तुरन्त चंगी हो गई (मरकुस

5:25-34) । यदि वह 12 साल पहले यीशु के पास आयी होती तो उसका स्वास्थ्य ठीक हो जाता और संपत्ति भी सही सलामत रहती ।

अन्त में दानिय्येल राजा के दरबार में बुलाया गया । राजा ने अपना स्वप्न दानिय्येल को बताया । इससे पहले कि वह स्वप्न दानिय्येल को बताए, वह उसके योग्यता की प्रशंसा करता है । वह परमेश्वर के कारण है, यह भी अंगीकार किया । परन्तु उसने सबसे पहले दानिय्येल को क्यों नहीं बुलाया? शायद दानिय्येल के परमेश्वर की महिमा और महानता उसकी आखों से ओझल हो गई होगी । वह अपने तरीके से अपने ईश्वरों के नाम से काम कराना चाहता है लेकिन वह इस समय पूरी तौर से हार गया और दानिय्येल को आना ही पड़ा (4:8,9) ।

राजा दानिय्येल को स्वप्न का वर्णन कर रहा है । 4:10-12 में लिखा है : “जो दर्शन मैंने पलंग पर पाया वह यह है : मैंने देखा कि पृथ्वी के बीचों बीच एक वृक्ष लगा है; उस की ऊंचाई बहुत बड़ी है वह वृक्ष बड़ा होकर दृढ़ हो गया, और उसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुँची, और वह सारी पृथ्वी की छोर तक दिखाई पड़ता था । उसके पत्ते सुन्दर और उसमें बहुत फल था, यहां तक कि उसमें सभी के लिये भोजन था । उस के नीचे मैदान के सब पशुओं को छाया मिलती थी, और उसकी डालियों में आकाश की सब चिड़ियां बसेरा करती थी, और सब प्राणी उस से आहार पाते थे” ।

दानिय्येल इस स्वप्न की व्याख्या करते समय पेड़ को नबूकदनेस्सर और बाबुल साम्राज्य के साथ तुलना करता है । इसका वर्णन आप स्वयं 4:19-26 तक पढ़ सकते हैं । वहां लिखा है कि स्वप्न का वर्णन सुनकर दानिय्येल घबरा गया । स्वप्न नबूकदनेस्सर के बारे में था पर दानिय्येल घबराता है । लिखा है: “तब दानिय्येल जिसका नाम बेलतशस्सर भी था, घड़ी भर घबराता रहा, और सोचते-सोचते व्याकुल हो गया” (4:19) । इस घबराहट का कारण स्वप्न के फल की गंभीरता है । राजा ने दानिय्येल को तसल्ली दी और कहा : “हे बेलतशस्सर इस स्वप्न से, व इसके फल से तू व्याकुल मत हो” (4:19) । स्वप्न के अर्थ को समझने के कारण दानिय्येल अति व्याकुल हो गया और कहने लगा: “हे मेरे प्रभु,

यह स्वप्न तेरे बैरियों पर, और इस काफल तेरे द्रोहियों पर फले” (4:19)। सो स्वप्न का अर्थ सीधे राजा पर लागू हो रहा था। इस कारण उस के अर्थ को राजा पर प्रकट करने में हिचकिचा रहा था।

वैसे पेड़ बाईबल में किसी राष्ट्र या शासनकर्ता को संकेत करके बताया गया है। “बड़ा पेड़” बाईबल के अन्दर बड़े शक्तिशाली और पराक्रमी राजा और शासनकर्ता का संकेत है। अशूर साम्राज्य की तुलना लबानोन के देवदार के साथ की गयी है (यहेज.31:3)। यीशु मसीह के दृष्टान्त में, यीशु मसीह राई के दाने का दृष्टान्त देता है। किसी ने उस दाने को खेत में बोया और वह उगा, बड़ा हुआ और बहुत बड़ा पेड़ हो गया और आकाश के सब पक्षी उसमें बसेरा करते हैं। (मत्ती.13:31,32) राई का पौधा जो उगा और बड़ा हुआ वह स्वभाव के विरुद्ध बढ़ता गया। राई का पौधा कभी बड़ा पेड़ नहीं बनता। पर यीशु मसीह ने कहा वह इतना बड़ा पेड़ बन जायेगा कि उसकी डालियों में आकाश के पक्षी आकर बसेरा करेंगे। यहां यह पेड़ मसीही कलीसिया का संकेत था। लेकिन इसमें जिस प्रकार कई डालियां हैं वैसे कलीसिया कई शाखाओं में विभाजित होंगे। उसकी बढ़ती इस बात को दर्शाती है कि कलीसिया संसार की सबसे बड़ी संस्था बन जायेगी।

कलीसिया का सारे संसार में फैलने और बढ़ने का विचार अच्छा है लेकिन आज कई शाखाएं हो गयीं। कितने-कितने नामों से कलीसिया पाई जाती है। उसके अलावा भी एक कलीसिया में फूट हो जाती है और एक झुण्ड वहां से निकल कर दूसरे स्थान में आराधना शुरू कर देती है। कुछ विभाग ऐसे भी हैं जो अलग होने के पश्चात् भी वही नाम से ही पहचाने जाने को घमण्ड की बात समझते हैं। आकाश के पक्षी अशुद्धता और अपवित्रता का संकेत है। अर्थात् संसार के सारे राष्ट्रों और देशों में फैलने के साथ-साथ सब प्रकार के लोग बिना मन फिराए कलीसिया की ओर आकर्षित हो गये और कलीसिया में प्रवेश प्राप्त कर लिया। मसीहियत एक सांसारिक संस्था के रूप में शक्तिशाली एवं प्रभावशाली हो गयी और इसकी असाधारण बढ़ती ने संसार पर प्रभाव डाला पर यह एक आत्मिक संस्था बनने की बजाय अनात्मिक एवं शारीरिक रह गयी। यह आज की कलीसिया की वास्तविक स्थिति है।

लेकिन इस पेड़ का जहां तक सवाल है, यह नबूकदनेस्सर का चित्र है। वह संसार में अधिक शक्तिशाली हो गया। उसका नाम, उसकी कीर्ति सारे संसार में फैल गई। उसका साम्राज्य सारे संसार की ओर फैल गया। पेड़ की ऊंचाई और व्याप्ति नबूकदनेस्सर की महिमा, प्रताप और शासन का संकेत है। पेड़ की शाखाएं शासन में मदद करने वाले अन्य राजाओं को और पत्ते बाबुल साम्राज्य के सैन्य शक्ति और पेड़ का फल उस साम्राज्य के आय और व्यय को दर्शाता है। आकाश के सारे पक्षी बसेरा करने का और सब जानवरों को उसके नीचे छाया मिलने का और सब प्राणियों को आहार मिलने का (पद.12) यह तात्पर्य है कि यह बाबुल साम्राज्य सब प्रकार की बुराईयों का स्थान बन गया है। सब प्रकार की अपवित्रता और पशु समान स्वभाव का केन्द्र स्थान बन जाना। यीशु मसीह का यह कथन कि **“जहां लोथ वहां गिद्ध”**— यहां सार्थक है ।

अभी बाबुल शहर संसार में नहीं पाया जाता, लेकिन परमेश्वर के वचन के मुताबिक यह शहर फिर से बनाया जायेगा। उस नगर की ओर सारे संसार के व्यापारी आकर्षित होंगे। वहां सब प्रकार के पाप और पाप करने की सुविधाएं प्रदान की जायेंगी। पर वह नगर शीघ्र नाश किया जायेगा। वचन में लिखा है: **“उसने ऊंचे शब्द से पुकार कर कहा, कि गिर गया बड़ा बाबुल गिर गया है : और दुष्टात्माओं का निवास, और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा (सब जानवर, आकाश के सब पक्षी) हो गये (प्र.वा.18:2)।** यह बाबुल आने वाले और भविष्य में बनाए जाने वाले बाबुल के संबन्ध में भविष्यवाणी है। आज बाबुल ईराक है। ईराक में यह शहर बाबुल के नाम से ही बनना आरंभ हो चुका है विस्तृत जानकारी के लिये लेखक के द्वारा लिखित **“प्रकाशितवाक्य का अध्ययन”** नाम पुस्तक पढ़िये। आज सददाम हुसैन अपने आप को नबूकदनेस्सर का पोता मानता है और बाबुल शहर को उस पूरे पूर्व महिमा और महानता के साथ बनाने का दावा कर रहा है और काम आरंभ कर चुका है।

आगे दानियेल स्वप्न का अर्थ समझाते हुए कहता है, जिस वृक्ष को तूने देखा, जो बड़ा और दृढ़ हो गया, और जिसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुँची और दृढ़ हो गयी, और जिसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुँची और जो पृथ्वी के सिरे तक दिखाई देता था; जिसके पत्ते सुन्दर और फल बहुत थे, और जिसमें

सभी के लिये भोजन था, जिसके नीचे मैदान के सब पशु रहते थे, और जिसकी डालियों में आकाश की चिड़ियां बसेरा करती थीं, हे राजा, वह तू ही है। तू महान और सामर्थी हो गया। तेरी महिमा बड़ी और स्वर्ग तक पहुँच गई, और तेरी प्रभुता पृथ्वी के छोर तक फैली (दानि.4:20-22)। सो दानिय्येल की व्याख्या के अनुसार यह पेड़ बाबुल का साम्राज्य और स्वयं नबूकदनेस्सर को दर्शाता है। वह साम्राज्य में स्थिर हो गया उसका साम्राज्य और अधिकार पृथ्वी के सिरे तक पहुँच गया। यह उसके राज्य की व्याप्ति और शीघ्र विकास का वर्णन है — आकाश के पक्षी और मैदान के पशु इस बड़े पेड़ की शरण में आ गये। यह तमाम दुनिया की अपवित्रता को दर्शाता है। मूर्ति पूजा और तमाम अन्धविश्वास का कार्य बाबुल में उत्पन्न होकर सारे संसार की ओर फैला है।

लेकिन आकाश के सब पक्षी और मैदान के तमाम पशु, सारे संसार से बाबुल में लाये गये लोगों को दर्शाता है। समस्त राष्ट्र के लोगों को वहां गुलाम बनाकर लाये गये। यह बड़ा पेड़ इस दृष्टिकोण से नबूकदनेस्सर और बाबुल साम्राज्य का संकेत है जो समस्त संसार में फैला हुआ है। लेकिन राजा ने सोते-सोते स्वप्न में यह भी देखा कि यह पेड़ बहुतों के आशा और आशीष के कारण ठहर गया था। उस राज्य और शासन की शक्ति दुनियां भर में फैल गयी। लेकिन स्वप्न में देखते-देखते उसने यह आदेश भी सुना कि वह पेड़ काट दिया जाए, और उसके पत्ते और फल बिखेर दिये जाएं। उसके संबन्ध में यूं लिखा हुआ है, “और हे राजा, तूने जो एक पवित्र पहरूए को स्वर्ग से उतरते और यह कहते देखा कि वृक्ष को काट डालो और उसका नाश करो, तो भी उसके टूँठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो और उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बान्धकर मैदान की हरी घास के भीतर रहने दो; वह आकाश की ओस से भीगा करे, और उसको मैदान के पशुओं के संग ही भाग मिले; और जब तक उसकी ऐसी ही दशा रहे” (दानि.4:23)। यहां दानिय्येल कहता है कि स्वर्ग में पहरूएं हैं जो मानव एवं साम्राज्य की स्थिरता और अस्थिरता का निर्णय करते हैं। ये पहरूएं (watchers) परमेश्वर के आदेश पर तुरन्त कार्य करने लगते हैं। ऐसा कहा जाता है कि दुनियां के प्रत्येक वस्तुओं पर अधिकार रखने वाले स्वर्गदूत हुआ करते हैं। पानी पर, वायु पर, सरकार एवं शासनकर्ताओं पर एवं साधारण मनुष्य पर भी अधिकार रखने वाले अलग-अलग स्वर्गदूत

या (watchers) हुआ करते हैं। इन सब पर परमेश्वर ने उन्हें अधिकार दे रखा है। इनमें से शासन और शासनकर्ताओं पर अधिकार रखने वाले पहरेदारों को परमेश्वर आदेश देता है कि पेड़ को काट डालो। अर्थात् नबूकदनेस्सर को कुछ समय के लिये शासन और साम्राज्य से दूर करो। उसका निश्चित समय भी बताया गया अर्थात् सात साल के लिये। पेड़ के टूट को रहने देने का अर्थ है सात साल की अवधि में राज्य सुरक्षित रखा जाना।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर साम्राज्य और राजाओं पर अधिकार रखने वाले पहरेदारों को आदेश देते हैं और वह आकर नबूकदनेस्सर राजा को पागल बना देता है। उसके दिमाग से मानव भेजा निकालकर पशु का भेजा बिठा देता है। वह महल, सुन्दर रानी, रखेलियों और सिंहासन को छोड़कर तुरन्त जंगल की ओर जाता है। सात साल पशुओं के साथ खुले आसमान के नीचे घूमता रहेगा। ओस, पानी और धूप उस पर पड़ता रहेगा। यह न्याय उसको सुनाया गया।

यह दण्ड कब तक है जब तक कि वह यह ना जानेगा कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है (4:25)। यह कितनी अद्भुत बात है। मनुष्य आज अपने जीवन में कुछ हासिल करने पर यह सोचता है कि वह उसके स्वयं के परिश्रम और प्रयास से प्राप्त किया है। यह भूल जाते हैं कि यह परमेश्वर का दान है। परमेश्वर की आशीष है। याद रखिये मनुष्य संसार में रहकर जो कुछ हासिल कर लेता है भले वह छोटी हो या बड़ी, साधारण कार्य हो या शासन कार्य, वह आपको परमेश्वर द्वारा दिया गया है। सदा उस दाता को याद रखें और उसके प्रति धन्यवादित रहें।

नबूकदनेस्सर को यह नहीं मालूम पड़ा कि शासन का असली अधिकारी परमेश्वर है और वह जिससे खुश हो जाता है उसे दे देता है। उसने पूरी दुनियां में जाकर लड़ाईयां लड़ी, राष्ट्रों को अपने अधिकार में ले लिया। इतना ही नहीं एक-एक देश पर विजय प्राप्त करते समय उसका यह भी विचार था कि उस देश में आराधना की जाने वाले ईश्वर और ईश्वरीय शक्ति पर विजय पा लेता है। इस्राएल पर विजय हासिल की तो सोचा कि वह इस्राएल के परमेश्वर को भी पराजित कर दिया। वह जीवित परमेश्वर

को जिसने उसको लड़ाईयां लड़ने और साम्राज्य स्थापित करने के लिये सामर्थ्य दी, उसे ही भूल गया। तो परमेश्वर ने निर्णय लिया कि उसे सात साल के लिये पशु बनाकर जंगल में भेज दें, जब तक उसको यह पता न चल जाये कि वह कुछ नहीं बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर साम्राज्य का असली अधिकारी है। सात साल के दण्ड के पश्चात् नबूकदनेस्सर को मालूम हुआ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर राज्य करता है। वह फिर राज्य में वापस आ गया।

यह दण्ड का वचन दानिय्येल ने नबूकदनेस्सर को सुनाया और सरल भाषा में समझाया। साथ ही साथ दानिय्येल ने राजा को एक व्यक्तिगत सलाह दी और कहा, **“इस कारण, ऐ राजा, मेरी यह सम्मति स्वीकार कर, कि यदि तू पाप छोड़कर धर्म करने लगे और अर्धम छोड़कर दीनहीनों पर दया करने लगे, तो संभव है कि ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे”** (4:27)। दानिय्येल एक परमेश्वर का दास होने के नाते उसको इस भयंकर न्याय से बचने का उपाय बता रहा है। दो काम उसको करना था अर्थात् पापों को छोड़े, नम्र हो जाए और दीन दरिद्रों पर दया करें। इसका यह अर्थ है कि परमेश्वर और मनुष्य के साथ संबन्ध सुधारें। घमण्ड को त्यागे, मन में दीनता और नम्रता को धारण करे। फिर भी दानिय्येल कहता है, **“संभव है”** कि परमेश्वर राजा की सुधि ले—और यह भयंकर विपत्ति से बचाए। कोई भरोसा नहीं, हो सकता है परमेश्वर दया करें और बचाए और चैन और आराम के दिन बढ़ जाएं।

मैं सोचता हूं राजा ने तुरन्त अपने मन को दीन और नम्र किया होगा। दीन और दरिद्रों पर दया करने का विचार किया होगा। क्योंकि एक साल तक यह विपत्ति उस पर नहीं आयी। इसका मतलब यह है कि राजा ने दानिय्येल की सलाह मान ली। पश्चाताप किया। किन्तु वह पश्चाताप और मन फिराव केवल एक साल के लिए था। कुछ लोग आज भी हैं जो विपत्ति और खतरे की बात को सुनकर तुरन्त रोते गाते हैं और पश्चाताप कर लेते हैं। पर वह स्थायी नहीं। पश्चाताप परमेश्वर के वचन को सुनने के कारण दिल में गहरा कार्य होने से संभव हो सकता है। जब भी मिस्र देश में विपत्ति आयी फिरौन राजा पछताया और मूसा को बुलाकर कहा—यह विपत्ति दूर होने के लिये प्रार्थना करें। दस बार वह पछताया पर दिल में कोई परिवर्तन नहीं आया। अन्त में वह लाल समुद्र में नाश हो गया। नबूकदनेस्सर के साथ

भी ऐसा ही हुआ। यदि आप भी ऐसे पश्चात्ताप करने वाले व्यक्ति हैं तो आपके साथ भी वही होगा। लेकिन परमेश्वर के सत्य वचन को सुनकर उसको अपने जीवन में ग्रहण करने एवं उसके मुताबिक अपने जीवन को बिताने के लिए तैयार हो जाएं तब परमेश्वर की उपस्थिति आपके साथ रहेगी। आप भी अपने जीवन में सफल हो जायेंगे।

खैर, आगे हम इस बात को देखते हैं कि राजा का मन परिवर्तन अस्थायी था। वहां आगे पढ़ते हैं — “यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया। 12 महिनों के बीतने पर जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा, क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है जिसे मैंने ही अपने बल और सामर्थ्य से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बढ़ाई के लिये बसाया है? यह वचन राजा के मुंह से निकलने भी न पाया था कि आकाशवाणी हुई, हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा निकल गयी है, और तू मनुष्यों के बीच से निकाला जायेगा, और मैदान के पशुओं के साथ रहेगा ; और बैलों की नाई घास चरेगा ; और सात काल तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि परम प्रधान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे उसे दे देता है” (4:28-32)। नबूकदनेस्सर राजा दानिय्येल की सम्मति सुनकर तुरन्त अपने आप को दीन कर दिया था पर वह केवल एक साल के लिये ही रहा। उसका यह विचार हुआ होगा कि एक साल बीत गया और अब तक वह स्वप्न पूरा नहीं हुआ। अब वह निश्चित हो गया। एक साल तक उसका मन दीन और नम्र रहा। ठीक 12 महीने बाद वह एक दिन अपने महल की छत पर टहलने गया और टहलते-टहलते उस पूरे बाबुल शहर की ओर दृष्टि कर देखने लगा। सुन्दर सा बाबुल शहर। वह एकदम घमण्ड से भर गया। कहने लगा, “क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैंने ही अपने राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बढ़ाई के लिये बसाया है”? बस इतना बोलते ही न्याय का वचन उसके कानों में सुनाई दिया जो एक साल पहले उसे सुनाया गया था।

उसके कथन में—मैं, मैंने, अपने प्रताप और अपनी बढ़ाई आदि शब्द दोहराया गया है। घमण्ड के शब्दों को परमेश्वर नहीं पसन्द करता। यह बोलकर पूर्ण विराम देते ही परमेश्वर का संदेश उसके पास आया।

आकाशवाणी हुई—“राज्य तुम्हारे हाथ से निकल गया, तू मनुष्यों के बीच से निकाला गया, अब मैदान के पशुओं के संग रहेगा। बैलों की नाई घास चरेगा और यह स्थिति सात साल तक रहेगी”।

बस वह महल के छत से उतरकर नीचे आया। अपने कमरे में जाने की बजाए वह मैदान की ओर चला गया। वह रानी और रखेलियों, सहयोगी और अफंसरों के देखते-देखते मैदान की ओर निकल गया। किसी ने उसको रोकने का साहस नहीं किया। यदि कोई पशु बन जाए तो उस के पास कौन जाने का साहस करेगा? सारे लोग जो महल में थे, आश्चर्यचकित हो गये। मैदान में पहुँचा तो इस नये किस्म के पशु को देखकर असली पशु जगत में भय और आश्चर्य हुआ होगा। परमेश्वर यदि किसी को उस के घमण्ड के कारण तिरस्कार कर दे तो क्या दशा होगी ? (भजन.50:22)। उसकी कोई मदद् नहीं कर सकेंगे।

नबूकदनेस्सर के घमण्ड भरे शब्द को सुनकर एक साल पहले सुनाया गया दण्ड फिर से दोहराया गया और मैं सोचता हूँ कि आकाशवाणी के साथ-साथ स्वर्ग के पहरेदार भी तुरन्त वहाँ भेज दिये गये और राजा का भेजा निकाल कर उसके स्थान पर बैल का भेजा बिठा दिया गया। बस वह सीधे महल के पास के वन की ओर चला गया। शायद उसी के द्वारा बनाए गए झूलेदार बगीचे की ओर गया होगा। सात साल उस मैदान में, बगीचे में रहा। कभी बीच में महल के तरफ नहीं आया न महल से कोई उसकी तरफ गया। परमेश्वर का न्याय क्या ही भयंकर है। यह कोई कहानी नहीं है पर यह एक ऐतिहासिक घटना है। घमण्ड मनष्य को चूर-चूर कर देता है, गिरा देता है, कभी-कभी जानवर की स्थिति में पहुँचा देता है। आज संसार में पागलों की तरह घूमने वाले लोग शायद इसी प्रकार दण्ड भोगने वाले हो सकते हैं।

सात साल बीतने पर नबूकदनेस्सर को परमेश्वर द्वारा जानवर का भेजा निकाल कर मानव का भेजा वापस दिया। तब वह अपने आपको देखने लगा। उसने अपनी स्थिति को स्वयं देखा कि परमेश्वर ने उसके घमण्ड के कारण उसके साथ क्या किया था। उसकी देह आकाश की ओस से भीगी हुयी थी। उसके बाल उकाब पक्षी के परों से और उसके नाखून चिड़ियों के

चंगुलों के समान बढ़ गये। तब उसका मन पूरी तौर से परमेश्वर के सम्मुख दीन हो गया। उसने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाई, परम प्रधान को धन्य कहा और वह परमेश्वर को इन वचनों से महिमा देने लगा, “उसकी प्रभुता सदा की है” और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहने वाला है। पृथ्वी के सब रहने वाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहने वालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है और कोई उसको रोक कर उससे नहीं कह सकता है, तूने यह क्या किया है ?

यदि वह दीनता और नम्रता की मनःस्थिति के साथ सदा जीवित रहता तो यह सात साल का भयंकर न्याय का समय उसको देखने की आवश्यकता नहीं होती। घमण्ड ने उसको कहां से कहां पहुंचा दिया। प्रिय पाठकगण आप को प्राप्त समस्त आशीर्ष परमेश्वर की ओर से हैं। उस पर घमण्ड कर के कभी यह कहने का साहस न करें कि यह मेरा है—मैंने बनाया। मैंने खरीदा है। पर सदा यह कहें—ये सब परमेश्वर का दान है। परमेश्वर को महिमा मिले। यदि हम ऐसा करते रहेंगे तो परमेश्वर को आदर और सम्मान प्राप्त होता रहेगा और हमारा संसार का जीवन धन्य होता चला जायेगा। परमेश्वर का वचन कहता है कि, **“जो मेरा आदर करेगा मैं उनका आदर करूंगा, और जो मुझे तुच्छ जाने वे छोटे समझे जायेंगे”** (1शमुएल.2:30)।

जब नबूकदनेस्सर राजा ने परमेश्वर के सम्मुख अपने आपको नम्र किया तब उसकी बुद्धि ज्यों की त्यों हो गयी। उसको उसका सिंहासन और मुकुट वापस मिल गया। उसके मंत्री और प्रधान उससे भेंट करने आए। उसका राज्य स्थिर हो गया। उसको उसका खोया हुआ अधिकार और खोई हुई प्रशंसा वापस मिल गई। अन्त में नबूकदनेस्सर राजा ने दिल से जीवित परमेश्वर को अंगीकार किया। उसने दिल की गहराई और पूरे मन से, पूरी बुद्धि से और पूरी शक्ति से कहा, **“अब मैं (पशु बनाने के दण्ड के पश्चात्) नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं, और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है”** (4:36,37)।

इस बड़े समर्पण और अंगीकार से वह परमेश्वर के उद्धार में भागी हो गया और जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे तो राजा नबूकदनेस्सर से मुलाकात होगी और वह कहेगा, अच्छा हो गया मैं पशु बना दिया गया अन्यथा मैं नरक में रहता ।

प्रिय मित्र, आपकी क्या दशा है ? मृत्यु के पश्चात् आप अनन्त काल का जीवन कहां बितायेंगे ? स्वर्ग में या नरक में ?

अध्याय — 5

दानिय्येल और बाबुल के पतन का सन्देश

चार और पांच अध्यायों के बीच में लगभग 30 वर्ष से अधिक का अन्तराल है। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की 44 वर्ष के लम्बे शासन के पश्चात् B.C.516 में मृत्यु हो गई। उसका सुपुत्र एविल मेरोड़क उत्तराधिकारी बना (2राजा.25:26—30; यिर्मयाह.52:31—34)। इन पदों में वर्णन किये गये रूप में यहूदा का राजा यहोयाकिन के साथ दया करने का कारण उसका यहोवा परमेश्वर के प्रति आदर और भय के कारण हो सकता है। वह अपने पिता नबूकदनेस्सर के साथ किये गये अद्भुत व्यवहार का स्मरण करता होगा ।

एविल मेरोड़क केवल दो साल ही बाबुल पर शासन कर पाया। वह उसके बहनोई (Brother-in-law) नेरिंगलिस्सार के द्वारा किये गये बलवे के कारण मारा गया। नेरिंगलिस्सार (B.C.559) में सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसका शासन बिल्कुल क्षणिक था। उसके पुत्र लेबाशी मरडूक (Labashi Marduk) ने शासन की बागडोर संभाली। लगभग एक साल के शासन के पश्चात् वह भी मारा गया। उसके पश्चात् B.C. 555 में नेबोनिडस (Nebonidus) सिंहासन का अधिकारी हो गया जो नेबुकदनेस्सर राजा का संभवतः दामाद था। जिस समय बाबुल पर आक्रमण हुआ था उस समय नेबोनिडस फारस के साथ युद्ध पर गया हुआ था। नेबोनिडस की अनुपस्थिति में उसके पुत्र बेलशस्सर को राज प्रतिनिधि (Regent) बना दिया था। वह पिता के साथ राज्य भार में शामिल था। पिता लड़ाई में पराजित हुआ और साम्राज्य के अन्य स्थानों के शासन में ध्यान लगा रहा था। बाबुल नगर में बेलशस्सर प्रतिनिधि के रूप में शासन कर रहा था ।

मतलब बेलशस्सर शासन के दूसरे स्थान में था। प्रथम स्थान में

नेबोनिडस मुख्य शासनकर्ता के रूप में और दूसरे स्थान पर राज प्रतिनिधि (Regent) के रूप में बेलशस्सर राज कर रहा था। इस कारण बेलशस्सर ने दानिय्येल को तीसरे स्थान पर शासन की प्रतिज्ञा दी थी (5:16)। वह इस प्रकार तीसरे स्थान की घोषणा इसलिये की कि वह स्वयं दूसरे स्थान में था। एक और बात यहां स्पष्ट करना है वह यह है कि नेबोनिडस को नबूकदनेस्सर का बेटा और बेलशस्सर को पोता कहा गया है (यिर्म.27:6,7)। याद रखिये पुराने ज़माने में दामाद को पुत्र कहा जाता और नाती और पोते को भी पुत्र कहा जाता था। लेकिन गहन अध्ययन में यह पता लगा है कि वह जो सगा बेटा नहीं, या तो दामाद है, ना ही नाती है या पोता। यह बेटा पुकारना एक प्रयोग मात्र है। सगा पुत्र न रहने पर भी ये लोग राज्य को संभालते थे। सो याद रखें नेबोनिडस या नेबोनइड (Nebonaid) नबूकदनेस्सर का दामाद और बेलशस्सर उसका नाती था।

पिता की अनुपस्थिति में बेलशस्सर ने अपने राज्य के हजार प्रधानों के लिये बड़ी जेवनार की, और उन हजारों लोगों के सामने दाखमधु पीया। यह एक ईश्वरन्दिक, आमोद-प्रमोद एवं अनैतिक ढंग का या लंपटना या मतवालापन का कार्यक्रम था। मतलब पीकर वे आपस में अनैतिक कार्य करने लग जाएं। अनैतिकता परमेश्वर को पसन्द नहीं है। उसके अलावा और भी कई गलतियां इन लोगों ने की। लिखा है, “दाखमधु पीते-पीते बेलशस्सर ने आज्ञा दी, कि सोने-चांदी के जो पात्र मेरे पिता नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर में से निकाले थे, उन्हें ले आओ कि राजा अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत उनमें से पीएं। तब जो सोने के पात्र यरूशलेम से परमेश्वर के भवन के मन्दिर में से निकाले गए थे, वे लाए गए, और राजा अपने प्रधानों, और रानियों, और रखेलियों समेत उनमें से पीने लगा” (दानि. 5:2-5)।

यह उनकी दूसरी गलती थी। यरूशलेम से लाए गए यहोवा के भवन के अर्थात् मन्दिर के पवित्र पात्रों को मदिरा के सेवन के लिये उपयोग करके अशुद्ध कर दिये गये। नबूकदनेस्सर राजा ने उन पात्रों को लेके तो आए पर उन पात्रों को किसी स्थान में सुरक्षित रखे थे।

तीसरी गलती उसने जो की वह यह थी कि उसने आराधना भी

आरम्भ की। किसकी आराधना ? सोने-चांदी, पीतल-लोहे, काठ और पत्थर के देवताओं की स्तुति करने लगे (5:4)। मनुष्य भले कुछ भी करता रहे आराधना नहीं छोड़ता। इतने भयंकर माहौल में भी आराधना का विचार रखता है। लेकिन याद रखिये अनैतिकता और अनात्मिकता एवं अनाचार करने वाला व्यक्ति, चार सौ बीसी करने वाला, नशे का जीवन बिताने वाला व्यक्ति कदापि जीवित ईश्वर की आराधना नहीं कर सकते। वे भले ही अन्य देवी देवताओं की, मूर्तियों की आराधना करें। लेकिन याद रखिये ये तीनों कार्य जीवित परमेश्वर के लिये क्रोध का कारण हो गया। नशेबाजी, अनैतिकता, परमेश्वर के मन्दिर के पात्रों का अशुद्ध किया जाना एवं मूर्तिपूजा आदि सभी कार्यों ने परमेश्वर को क्रोध दिलाया। तुरन्त परमेश्वर ने उसके खिलाफ न्याय सुनाया। वह एक अजीब और नए तरीके से किया गया।

उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की सी कई उंगलियां निकलकर दीवार के सामने राजमन्दिर की भीत के चूने पर कुछ लिखने लगी; और हाथ का जो भाग लिख रहा था, वह राजा को दिखाई पड़ा। उसे देखकर राजा भयभीत हो गया, और वह अपनी सोच में घबरा गया और उसकी कटि के जोड़ ढीले हो गये, और कांपते-कांपते उसके घुटने एक दूसरे से लगने लगे (दानि. 5:5,6) ।

जरा सोचकर देखिये एक हजार प्रधान, रानियां और रखेलियां मिलकर खा पी रहे हैं। बड़ा शोरशराबा, खुशियां और ये सब मूर्तिपूजा में परिणित हो गया। उन तमाम् खुशियों का अन्त करते हुए परमेश्वर ने अपने अदृश्य हाथों को भेजा और राजा और बाबूल साम्राज्य का न्याय भीत पर लिखने लगा। वह भयभीत हो गया और उसके कटि के जोड़ ढीले हो गये। मतलब जहां बैठा था वहां से उठने की भी शक्ति जाती रही।

मान लो आप वी.सी.आर. के द्वारा बढ़िया चित्र देख रहे हैं। या कोई खुशी का कार्यक्रम देख रहे हैं। पूरा परिवार मिल कर आनन्द मना रहे हैं। और उस समय आपके कमरे की दीवार पर कोई हाथ की उंगली का भाग प्रकट हो जाए और लिखना शुरू करें और लिखी हुई भाषा आपके समझ में न आए तो उस स्थिति में आपकी क्या हालत होगी। आपका रक्तचाप बढ़ जाएगा या आप बेहोश हो जायेंगे। यही कुछ बेलशस्सर के साथ भी हुआ

था। बेलशस्सर के देखते-देखते एक वाक्य पूरी भीत पर लिखा गया पर यह नहीं समझ में आया कि क्या लिखा है और उसका अर्थ क्या है। वह चिल्ला उठा। लिखा है, “तब राजा ने ऊंचे शब्द से पुकार कर तन्त्रियों, कसदियों और होनहार बताने वालों को हाजिर करने की आज्ञा दी। जब बाबुल के पण्डित पास आए, तब राजा उनसे कहने लगा, जो कोई वह लिखा हुआ पढ़कर उसका अर्थ मुझे समझाए उसे बैजनी रंग का वस्त्र, और उसके गले में सोने की कंठमाला पहनाई जायेगी, और मेरे राज्य में तीसरा वही प्रभुता करेगा” (दानि.5:7) ।

बेलशस्सर राजा के भयभीत होने का कारण कई है। पहला कारण उंगलियां जिसको भीत पर लिखा हुआ देखा। वह अदृश्य हाथ, किसका होगा, कहां से आया होगा ? दूसरी बात, वह लिखा हुआ वाक्य किस भाषा का है ? उसका अर्थ क्या होगा ? ऐसा दृश्य दिन में दिखाई दे तो व्यक्ति डर जाए, यह तो रात का समय था। तीसरी बात बाबुल के पण्डितों पर राजा ने पूरा भरोसा किया पर वे न तो उस वाक्य को पढ़ पाए न ही उसका अर्थ बता पाए। वे केवल नाम के पण्डित हैं। कहते हैं न “काम के न कांच के पर दुश्मन अनाज के”। पर वे भी क्या करें, लिखने वाला सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर है। उसने ऐसी भाषा में लिखा है जो परमेश्वर के प्रकाशन के बिना न समझ पाए। उनमें से कोई आत्मलोक से संपर्क रखने वाले नहीं थे। वह तो केवल दानिय्येल अकेला था।

जब बातें प्रकट नहीं हुईं तो राजा का चेहरा पीला पड़ गया। रानियां घबरा गयी, रखेलियां और प्रधानों के जी में जी नहीं रहा। उन सबको ऐसा लगा मानों धरती उनके पांवों के नीचे से खसक गयी हो। जब भरोसा किये गये पण्डित कुछ न कर पाए तो राजा की हालत खराब हो गई। लिखा है, “इस पर बेलशस्सर राजा निपट घबरा गया और भयातुर हो गया; और उसके प्रधान भी बहुत व्याकुल हुए” (5:9)। खुशी और कोलाहल और शोरगुल की वह जगह विलाप में परिणित हो गई। परमेश्वर अपने लोगों के विलाप को नृत्य में बदलता है परन्तु दुष्टों को देखिये उनका नृत्य और आनन्द परमेश्वर के हस्तक्षेप से विलाप में बदल गया। सबकी बोलती बन्द हो गयी। स्त्रीयां बेहोश हो गयीं होंगी। दाखरस हजम हो गया। जो भी खाया पीया सो सब गया।

उस घबराहट के समय में रानी भीतर आयी और कहने लगी व्याकुल होने की कोई बात नहीं और मन में न उदास हो। तेरे राज्य में दानिय्येल नाम का एक पुरुष है जिसका नाम तेरे पिता ने बेलतशस्सर रखा था, उसमें पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है (5:11-12) यह रानी बेलशस्सर की रानी नहीं बल्कि उसकी नानी मां, वयोवृद्ध रानी, नबूकदनेस्सर की रानी होने की संभावना है। उसने बेलशस्सर को दानिय्येल की याद दिलाई। परमेश्वर का दास जो संकट के समय काम आ सकता है उसके बारे में बेलशस्सर को पता ही नहीं। वैसे भी परमेश्वर के दासों की कई लोग कद्र नहीं करते। खैर, उसकी सलाह से दानिय्येल को भीतर बुलाया गया। वह राजा के सामने उपस्थित हुआ उस समय दानिय्येल काफी बुजुर्ग हो गया था। 17 साल की अवस्था में बाबुल में लाये जाने का अन्दाज है और अब यहूदा राष्ट्र के 70 साल की बन्धुवाई उसकी समाप्ति की ओर आ चुका है। मतलब दानिय्येल अभी 86 या 87 साल का हो गया है।

दानिय्येल के विषय में उसे कुछ पता ही नहीं है। राजा लोग अपने शासनकाल का इतिहास लिखते हैं। सभी घटनाओं का वर्णन उसमें रहता है ताकि उसके बाद आने वाले शासनकर्ता उसको पढ़ें। बेलशस्सर हालांकि बाबुल का वास्तविक शासनकर्ता नहीं था, वह केवल राजप्रतिनिधि था। फिर भी जानकारी के लिये इतिहास के पन्नों को पलट कर देखना चाहिये था। लेकिन वह लापरवाह एवं आमोद प्रमोद एवं लंपटता में मन लगाने वाला था। लेकिन इस मजबूरी में दानिय्येल से परिचित होना ही पड़ा। दानिय्येल उसके सामने उपस्थित हुआ। राजा ने उसका परिचय प्राप्त कर लिया (5:13,14)। फिर राजा दानिय्येल से कहने लगा, **“देख, अभी पण्डित और तंत्री लोग मेरे सामने इसलिये लाये गये थे कि यह लिखा हुआ पढ़ें और उसका अर्थ मुझे भी समझा सकें। परन्तु मैंने तेरे विषय में सुना है कि दानिय्येल भेद खोल सकता है और सन्देह दूर कर सकता है। इसलिये अब यदि तू उस लिखे हुए को पढ़ सके और उसका अर्थ भी मुझे समझा सके, तो तुझे बैजनी रंग का वस्त्र, और तेरे गले में सोने की कण्ठमाला पहनायी जायेगी, और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा”** (5:15,16)।

दानिय्येल ने अपना मुंह भीत की ओर उठाया और लिखा हुआ वाक्य पढ़ने लगा। वह उसका अर्थ परमेश्वर की आत्मा के द्वारा समझा और राजा

से कहा, “अपने दान अपने ही पास रख; और जो बदला तू देना चाहता है, वह दूसरे को दे; वह लिखी हुई बात मैं राजा को पढ़कर सुनाऊंगा और उसका अर्थ भी तुझे समझाऊंगा” (दानि.5:17)। लिखा हुआ वाक्य पढ़ने से प्रभु के दास दानिय्येल को पता चला कि राजा उसी दिन मरने वाला है। उसके राज्य का अंत हो गया है। फिर मरने वाले राजा का ईनाम एवं प्रतिष्ठा और खत्म होने वाले राज्य में तीसरे स्थान की प्रतिज्ञा दानिय्येल के लिये एक विरोधाभास लगी। उसने पहले से ही उन बातों के लिए इनकार कर दिया। बहुत से लोग मरने वाले मनुष्य से डरते हैं। मरने वाले मनुष्य की ओर से कुछ प्राप्त करने के अथक प्रयास में लगे रहते हैं। खत्म होने वाले राज्य के लिये और उसकी प्रतिष्ठा के लिये कोशिश करते हैं। प्रिय मित्र, दानिय्येल ने जो कुछ भी बाबुल में रहकर प्राप्त किया है वह सब परमेश्वर की ओर से था। आप किससे प्राप्त करना चाहते हैं ? आप किस राज्य की प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते हैं ? क्या परमेश्वर के राज्य में आपका कोई हिस्सा या भाग है ?

इससे पहले कि दानिय्येल लिखा हुआ वाक्य पढ़कर उसका अर्थ समझाए, उसने राजा को लम्बा सा एक भाषण दिया। उसने उस प्राप्त मौके को उलाहना देने, ताकीद देने और उपदेश देने के लिये उपयोग किया। उसने राजा को प्रणाम नहीं किया। उसने राजा से यह नहीं कहा कि तू युग-युग जीवित रहे। वह एक भविष्यवक्ता की हैसियत से और अपने लम्बे समय के आत्मिक अनुभव के प्रकाश में उसको बड़े कठोर शब्दों से समझाने का प्रयास कर रहा था। दानिय्येल ने उसके पिता नबूकदनेस्सर के बारे में यह कहकर याद दिलाया कि, “हे राजा, परमप्रधान परमेश्वर ने तेरे पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, बड़ाई, प्रतिष्ठा और प्रताप दिया था। और उसकी बड़ाई के कारण जो उसने उसको दी थी, देश-देश और जाति-जाति के सब लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले उसके सामने कांपते और थरथराते थे, और जिसको वह चाहता उसे वह घात करता था; जिसे वह चाहता उसे वह उंचा पद देता था, और जिसको वह चाहता उसे वह गिरा देता था” (दानि.5:18-19)।

वह नबूकदनेस्सर की महानता का वर्णन करते हुए उसकी प्रशंसा करने लगा और कहा इतना सब कुछ होने के बाद भी जब उसके मन में

घमण्ड आया तो परमेश्वर उसे दण्ड देने से पीछे नहीं हटा। उसको भयंकर दण्ड से दण्डित किया।

दानियेल ने कहा, “परन्तु जब उसका मन फूल उठा, और उसकी आत्मा कठोर हो गयी, यहां तक कि वह अभिमान करने लगा, तब वह अपने राजसिंहासन से उतारा गया, और उसकी प्रतिष्ठा भंग की गयी। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और उसका मन पशुओं का सा, और उसका निवास जंगली गदहों के बीच हो गया; वह बैलों की नाई घास चरता, और उसका शरीर आकाश की ओस से भीगा करता था, जब तक कि उसने जान न लिया कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता उसी को उस पर अधिकारी ठहराता है” (दानि.5:20-21)।

इतनी बातें बहुत ही गंभीरतापूर्वक बताने के बाद उसने बेलशस्सर से कहा, “तो भी, है बेलशस्सर, तू जो उसका पुत्र है, और यह सब कुछ जानता था, तो भी तेरा मन नम्र न हुआ। वरन् तूने स्वर्ग के प्रभु के विरुद्ध सिर उठाकर उसके भवन के पात्र मंगवाकर अपने सामने धरवा लिये, और अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत तूने उनमें दाखमधु पिया; और चांदी, सोने, पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के देवता, जो न देखते न सुनते, न कुछ जानते हैं, उनकी तो स्तुति की, परन्तु परमेश्वर, जिसके हाथ में तेरा प्राण है, और जिसके वश में तेरा सब चलना फिरना है, उसका सम्मान तूने नहीं किया। तब ही यह हाथ का एक भाग उसकी ओर से प्रकट किया गया है और वे शब्द लिखे गये हैं (दानि.5:22-24)।

स्वप्न का अर्थ बताने से पहले और लिखा हुआ वाक्य पढ़कर उसका अर्थ समझाने से पहले दानियेल अपनी उम्र और अपने अनुभव के आधार पर राजा बेलशस्सर को उलाहना देने लगा। परमेश्वर के दासों का आत्मिक अधिकार देखिये। राजा के सामने खड़े होकर उसको प्रणाम कर उस की दीर्घायु की कामना करके उसकी प्रशंसा नहीं कर रहा है बल्कि की गयी गलती को याद दिलाकर उसको खूब उलाहना दे रहा है और इतिहास में घटित अतीत के कार्यों की ओर उसका ध्यान आकर्षित कर रहा है।

पिता को दिये गये दण्ड को याद दिला रहा है। एक भविष्यवक्ता का अधिकार देखिये। युहन्ना बप्तिस्मा देने वाला परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। वह परमेश्वर के लिये खड़ा रहा और पाप का विरोध किया। यहां तक हेरोदेस राजा को भी नहीं छोड़ा जिसने अपने भाई की पत्नी को रखे हुए था। सच्चाई के कारण सिर कटवाया पर पाप और अधर्म के सामने सिर नहीं झुकाया। प्रिय पाठकों, परमेश्वर के वचन के सत्यता के लिये दिलेरी के साथ खड़े रहो। पाप और गलतियों का डटकर मुकाबला करो। प्रभु आपके साथ है।

राजा को उनकी भूल और गलतियों एवं घमण्ड को याद दिलाने के पश्चात् दानिय्येल ने अपना ध्यान उस भीत पर लिखे वाक्य की ओर लगाया। वहां बेलशस्सर का न्याय लिखा हुआ था। दानिय्येल ने अपना मुख भीत की ओर घुमाया और लिखा हुआ वाक्य पढ़ने लगा। उसने कहा, “और जो शब्द लिखे गये वे ये हैं — “मने, मने, तकेल और ऊपर्सिन” इस वाक्य का अर्थ यह है, मने अर्थात् परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। तकेल, तू मानो तराजू में तौला गया और हल्का पाया गया है। परेस अर्थात् तेरा राज्य बांटकर मादियों और फारसियों को दिया गया है” (दानि.5:25–28)।

बेलशस्सर राजा के न्याय के संबन्ध में लिखे गये शब्दों के अर्थ समझाने के द्वारा तीन बातें पूरी हुई :—

1. राजा के दिन गिनकर अन्त कर दिया गया।
2. परमेश्वर के सच्चे और धार्मिक तराजू में तौला गया और कम पाया गया।
3. उसके राज्य को विभाजित कर मादियों और फारसियों को दिया गया।

बाबुल नगर

बाइबल के वर्णन में बाबुल का नाम बहुत पहले से आया है। बाबुल की स्थापना पहला वीर और पराक्रमी शिकारी निम्रोद के द्वारा हुई (उत्प. 10:8–10)। बाबुल कुछ समय तक अशूर के अधीन रहा जिसकी राजधानी निनवे था (उत्प.10:11)। यह स्थिति ई.पू. छठवीं शताब्दी की रही जब कि

पिता को दिये गये दण्ड को याद दिला रहा है। एक भविष्यवक्ता का अधिकार देखिये। युहन्ना बप्तिस्मा देने वाला परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। वह परमेश्वर के लिये खड़ा रहा और पाप का विरोध किया। यहां तक हेरोदेस राजा को भी नहीं छोड़ा जिसने अपने भाई की पत्नी को रखे हुए था। सच्चाई के कारण सिर कटवाया पर पाप और अधर्म के सामने सिर नहीं झुकाया। प्रिय पाठकों, परमेश्वर के वचन के सत्यता के लिये दिलेरी के साथ खड़े रहो। पाप और गलतियों का डटकर मुकाबला करो। प्रभु आपके साथ है।

राजा को उनकी भूल और गलतियों एवं घमण्ड को याद दिलाने के पश्चात् दानिय्येल ने अपना ध्यान उस भीत पर लिखे वाक्य की ओर लगाया। वहां बेलशस्सर का न्याय लिखा हुआ था। दानिय्येल ने अपना मुख भीत की ओर घुमाया और लिखा हुआ वाक्य पढ़ने लगा। उसने कहा, “और जो शब्द लिखे गये वे ये हैं – “मने, मने, तकेल और ऊपर्सिन” इस वाक्य का अर्थ यह है, मने अर्थात् परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। तकेल, तू मानो तराजू में तौला गया और हल्का पाया गया है। परेस अर्थात् तेरा राज्य बांटकर मादियों और फारसियों को दिया गया है” (दानि.5:25-28)।

बेलशस्सर राजा के न्याय के संबन्ध में लिखे गये शब्दों के अर्थ समझाने के द्वारा तीन बातें पूरी हुई :-

1. राजा के दिन गिनकर अन्त कर दिया गया।
2. परमेश्वर के सच्चे और धार्मिक तराजू में तौला गया और कम पाया गया।
3. उसके राज्य को विभाजित कर मादियों और फारसियों को दिया गया।

बाबुल नगर

बाइबल के वर्णन में बाबुल का नाम बहुत पहले से आया है। बाबुल की स्थापना पहला वीर और पराक्रमी शिकारी निम्रोद के द्वारा हुई (उत्प. 10:8-10)। बाबुल कुछ समय तक अशूर के अधीन रहा जिसकी राजधानी निनवे था (उत्प.10:11)। यह स्थिति ई.पू. छठवीं शताब्दी की रही जब कि

क्षयर्ष (Xerxes) और नेबोपोलासर (Nabopolassar) ने निनवे पर आक्रमण कर उसको उलट दिया। नेबोपोलासर का पुत्र नबूकदनेस्सर और भी शक्तिशाली रूप में उसका उत्तराधिकारी बना। नबूकदनेस्सर का विजय बाबुल साम्राज्य को और भी अधिक महान बनाया। उस बाबुल को पुरातन काल के, यहां तक कहा जाए आधुनिक बड़े नगरों से भी सुन्दर और भव्य रूप में बनाया गया था।

हेरोडॉटस (Herodotus) के लेखों के अनुसार बाबुल शहर 15 मील चौकोर में था जिसके चारों तरफ एक शहरपनाह बनाया गया था। इस शहरपनाह की दीवार 87 फुट मोटी और 350 फुट ऊंची थी। उस शहरपनाह के ऊपर 250 गुम्मत बने थे। उस शहरपनाह की चौड़ाई इतनी थी कि उसके ऊपर एक ही समय 6 रथ एक साथ दौड़ा सकते थे। इस मोटी दीवार के बाहर से इससे कम मोटी एक और दीवार बनाई गयी थी। बाबुल शहर में 25 वृक्ष पंक्ति के छायावृत 150 फुट चौड़ी सड़क बनायी गयी थी जो शहर के उत्तर से दक्षिण तक और उसी रूप की सड़क पूर्व से पश्चिम तक थी जो एक दूसरी को काटती हुई जाती थी। इस प्रकार लगभग 676 बड़े-बड़े समकोण चतुर्भुज या चौकोर मैदान जिसके बीच में बगीचा और चारों तरफ मकान हो।

शहर के एक कोण से दूसरे कोण तक कर्ण रेखावत् (Diagonally) रूप में पुरातन नदी शहर के अन्दर से बहती थी। इस नदी के दोनों तट पर सुन्दर से घाट बने हुए थे। नदी के दोनों तरफ के मुख्य सड़कों को जोड़ने के लिये बड़े-बड़े नाव डाली गयी थी जो इस पार से उस पार जाने के लिये उपयोग की जाती थी।

जो सड़क नदी के दोनों तट पर थी, दो महल बनाकर एक पुल से जोड़ दिया था। इन महलों को एक भूमिगत (Underground)मार्ग से भी जोड़ा गया था। उन महलों के पास दो गुम्मत बने थे जो एक के ऊपर एक बने थे। बाबुल का झूलेदार बगीचा भी मशहूर है और यह प्राचीन संसार के 7 अजूबा वस्तुओं में से एक था। यह बगीचा 700 फुट चौकोर और एक के ऊपर एक मंजिल जैसे बना था। वह 350 फुट उंचाई में एक पहाड़ सा दिखाई देता था जिस में छोटे-छोटे पौधे या झाड़ लगाए गये थे। पौराणिक

कथाओं के आधार पर यह नबूकदनेस्सर राजा ने अपनी रानी को प्रसन्न करने के लिये बनाया था। कहा जाता है कि इस शहर में 10 लाख (one million) लोग रह सकते थे। इस प्रकार के एक नगर को लोगों ने उस समय तक नहीं देखा था। वास्तव में इस शहर का बनाने वाला एक अमानुषिक व्यक्ति था।

एक और बात ध्यान देने योग्य था। इस शहर के आसपास के इलाके में कुछ विशाल खेती थी जिसमें शहर की पूरी आबादी के लिये आवश्यक भोजन वस्तु उपजाते थे। इस प्रकार देखा जाए तो यह शहर सैनिकों के प्रवेश के लिये कठिन रूप में बनाया गया था।

आधुनिक बाबुल

आधुनिक समय में बाबुल अस्तित्व में नहीं है। वह संसार से मिट गया है। परन्तु वह फिर बनाया जायेगा। आज बाबुल इराक में है। इराक की राजधानी बगदाद है। बगदाद से 88 कि.मी. दूर प्राचीन बाबुल पाया जाता है। इराक अनेक राष्ट्रों से मिलकर बना है और उसमें बाबुल भी शामिल। इस बड़े भूविभाग में अनेक राष्ट्र पाए जाते थे अर्थात् बाबुल, निनवे, ऊर, अशूर और कसदियों का देश आदि। 1921 में ये सब राष्ट्र मिलकर एक राष्ट्र बन गया अर्थात् इराक।

पहले इस भूविभाग पर अनेक लोगों ने शासन किया अर्थात् हित्तिटिया, कासटिया, एरिमटिया, सनहरीब, नबुकदनेस्सर, कुस्रु, सिकन्दर महान, सेल्युकस, रोमी, मंगोली, ओटमन और ब्रिटिश आदि। 1932 में इराक ब्रिटिश की अधीनता से स्वतंत्र हुआ। 1958 में यहां राजकीय शासन समाप्त हो गया और 1979 में सद्दाम हुसैन इराक का राष्ट्रपति बन गया। लेकिन इराक की राजधानी बगदाद से 88 कि.मी. दूर बाबुल नाम का बह पुरातन शहर फिर से बनाया जायेगा। उसकी पूरी तैयारी हो चुकी है। विस्तृत जानकारी हेतु लेखक द्वारा लिखित पुस्तक—“प्रकाशितवाक्य का अध्ययन” नाम पुस्तक पढ़ें। जब बाबुल बनाया जाएगा तो बगदाद की महिमा समाप्त हो जायेगी और बाबुल इराक की राजधानी बन जायेगी। नबुकदनेस्सर के ही कुल में जन्मा सद्दाम हुसैन इस नगर का निर्माण करेगा। वह शहर अपनी पुरानी

महिमा एवं सौन्दर्य के साथ फिर बनाया जायेगा। वह संसार का सबसे बड़ा व्यापार केन्द्र बनेगा।

बाबुल शहर का विनाश

जब बेलशस्सर राजा का यह भ्रष्ट एवं अधर्मी भोज का कार्यक्रम अपनी चरम सीमा पर था तब उनका पिता नबोनेइड (Nabonaid) बोरसिप्पा नामक स्थान में फारस के साथ युद्ध कर रहा था। उसने शहर के एक मन्दिर में विश्राम किया, परन्तु कुछ समय पश्चात् उनके सैनिक घरे को फारस के राजा के समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा।

नबुकदनेस्सर राजा के वृक्ष वाले स्वप्न में पहरूए ने राजा को समझाया था कि, “परम प्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है” (दानि.4:17)। निश्चित रूप में बेलशस्सर इस वर्णन में बिलकुल सही बैठता है। बेलशस्सर एक ऐसा राजा था जो पियकड़पन, रात्रि उत्सव एवं आमोद-प्रमोद में मगन रहने वाला था।

जब बेलशस्सर राजा का रात्रि उत्सव एवं आमोद-प्रमोद अन्दर राज महल में चल रहा था कि शहर के शहरपनाह के बाहर फारसी सेना बड़ी संख्या में आकर यह प्रयत्न कर रही थी कि शहर में किस प्रकार प्रवेश किया जाए। राजा और उसके उपदेशक सभा यह विचार में थी कि बाबुल शहर बिलकुल सुरक्षित है। एक चढ़ाई करने वाला भला इस नगर में किस प्रकार प्रवेश कर सकते हैं ? क्या वे नगर के चारों तरफ की बड़ी ऊंची शहरपनाह पर चढ़ सकते हैं ? शहर के भीतर ही सभी लोगों के लिए कई वर्षों तक भोजन करने की सुविधा थी। शहर के खुली जगह में बहुतायत से भोजन वस्तु और सब्जियां पैदा होती थी। शहरपनाह के ऊपर रथ में सवार सुरक्षा कर्मियों को यह आदेश था कि किसी भी प्रकार के सैनिक गतिविधियों का वे जायज़ा रखें। जिस शहर ने एक भी सैनिक घरे का सामना नहीं किया वह आक्रमण के लिये तैयार हो रहा है।

बेलशस्सर अपने आप को बिलकुल सुरक्षित समझ रहे थे। शहर के भीतर प्रवेश करने वाले पुल अन्दर खोच सकते थे। बड़े पीतल का दरवाजा बन्द किया जाए तो बिलकुल सुरक्षा है इसके अलावा शहरपनाह के ऊपर सिपाही आने वाले हर आक्रमण का सामना करने के लिये तैयार थे। राजा ने इस प्रकार अपने आपको सुरक्षित महसूस किया कि वह एक बड़ी जेवनार कर रहा है, खाने पीने का कार्यक्रम कर रहा है। आनन्दोत्सव मना रहे हैं उस आनन्दोत्सव में वह इतना आनन्दित थे कि उन्होंने परमेश्वर के भवन के पात्रों को भी ले जाकर उस में दाखरस पीया। इतना ही नहीं उन पवित्र पात्रों में पीने के पश्चात बाबुल के देवी-देवताओं की उपासना और आराधना का। यह स्वर्ग के खिलाफ एक खुली अवहेलना थी।

इस समय शहर के बाहर राजा के ज्ञान के बिना फारसी सेना के अधिकारीगण किसी कार्य में व्यस्त थे। वे नगर में प्रवेश करने की योजनाबद्ध कार्य में लगे हुए थे। उसमें उन्होंने फरात नदी के पानी को सुखाने की योजना बनायी जो बाबुल नगर के बीचों-बीच बहती थी। ताकि सेना आराम से नदी के सूखी जमीन पर चलकर नगर में प्रवेश करें। ऐतिहासिक वर्णन के अनुसार फारसी सेना का सेनापति कुस्रु ने एक नया कनाल बनवाया और कई मील दूर शहरपनाह के पहरूओं के दृष्टि से काफी दूर एक बहुत बड़ा तालाब तैयार किया और इस कनाल द्वारा फरात नदी का पानी उसकी ओर बहाया। इस प्रकार फरात नदी के पानी को सुखाया।

सारा कार्य संपूर्ण करने के पश्चात कुस्रु को शहर पर आक्रमण का समय आया तो बेलशस्सर राजा पीकर मतवाला हो गया था। साइरस ने अपनी सेना को तीन भागों में विभाजित किया। एक झुण्ड फुरात नदी के पानी को दूसरी दिशा की ओर ले जाने और दूसरे झुण्ड को फरात नदी के नगर प्रवेश द्वार पर और तीसरे झुण्ड को पानी बहता हुआ दूर पहुँचने वाले स्थान पर खड़े किया। जैसे कि फरात नदी का पानी कम हुआ और सेना उसमें चलने लायक हुई तो सेना के दो झुण्ड को ; दो टुकड़ी को आज्ञा दी कि वे इस प्रकार नदी के दोनों तरफ से मार्च करें कि एक साथ शहर के बीच में पहुँचे जहां पर बेलशस्सर राजा का राजमहल है। सेना मार्च करके शहर के शहरपनाह के पास पहुँची तो उनके आश्चर्य की कोई सीमा नहीं थी। उन्होंने देखा नदी पर बने पीतल का दरवाजा जिससे होकर शहर में प्रवेश

किया जा सकता है, लापरवाही के कारण उस रात खुला रह गया। कहते हैं न, विनाशकाले विपरीत बुद्धि। सब खाने-पीने में और आमोद-प्रमोद में लगे हुए थे। हो सकता है कि वे रक्षा पंक्ति और, सुरक्षाकर्मी भी पीने पिलाने में लग गये हों। या सुरक्षा कर्मियों ने नदी के पानी को कम होते देख कर सूचना (Alarm) दी हो पर कोई ध्यान नहीं दिये। सब भोज के आमोद में आनन्दित थे। या वे आसमान के तारे जो सीसरा के विरुद्ध उस समय लड़ा सो आज बाबुल के विरुद्ध लड़ने लग गये (न्यायिओं.5:20)।

इस प्रकार बाबुल पर होने वाले आक्रमण के संबंध यशायाह भविष्यवक्ता ने अपनी पुस्तक में लगभग दो सदी पूर्व वर्णन किया था (यशा.44:28;45:1-3)। आक्रमणकारी राजा कुस्रु का नाम उसके जन्म के बहुत वर्षों पूर्व वर्णन आया है। यशायाह भविष्यवक्ता के वचन के अनुसार बाबुल नगर पर मादी फारसी राज्यों की संयुक्त शक्ति ने पराजित कर दिया। इस प्रकार बाबुल साम्राज्य को पराजित करने का कारण था। यहूदा राष्ट्र बाबुल में बन्धुवाई में थे। बन्धुवाई का समय परमेश्वर की ओर से निर्धारित किया गया था अर्थात् 70 वर्ष। वह पूरा होने पर था परन्तु बाबुल साम्राज्य बना रहता और बेलशस्सर राजा शासन करता रहा तो यहूदा राज्य को रिहा नहीं करेंगे। इस कारण परमेश्वर ने उस साम्राज्य को पराजित करके, नष्ट करके दूसरी शक्ति को साम्राज्य और शासन प्रदान किया और वह साम्राज्य था मादी पारसी साम्राज्य।

बड़े योजनाबद्ध तरीके से कुस्रु के नेतृत्व वाली सेना ने नगर में प्रवेश करके बेलशस्सर राजा का वध किया। और साम्राज्य को अपने अधिकार में ले लिया। इससे पहले दानिय्येल ने बेलशस्सर की मृत्यु का सन्देश दे दिया था। दानिय्येल को मृत्यु से पहले साम्राज्य के तीसरे पद पर पदोन्नति देने घोषणा की गयी। उसको बैंगनी रंग का वस्त्र और उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहनाई गयी, और ढिंढोरिये ने उसके विषय में पुकारा कि राज्य में तीसरा दानिय्येल ही प्रभुता करेगा (दानि.5:26)।

लेकिन क्या फायदा जिस साम्राज्य में दानिय्येल को पदोन्नति दी गयी वह साम्राज्य ही नहीं रहा। उस पदोन्नति की घोषणा करने वाला राजा भी जीवित नहीं रहा। उसी रात कसदियों का राजा बेलशस्सर मार डाला

गया। और दारा मादी जो कोई 62 वर्ष का था राजगद्दी पर विराजमान हुआ (दानि.5:30,31)। याद रखिये मरने वाले मनुष्यों की पदोन्नति के पीछे चलकर हमारे परमेश्वर की आशीषों से वंचित नहीं रहें। प्रभु आपकी सहायता करने पाए।

अध्याय — 6

दानिय्येल सिंहीं की माब्द में

बाबुल साम्राज्य का अन्त हो गया। नबूकदनेस्सर के स्वप्न के अनुसार मूर्ति का दूसरा भाग (चान्दी) अर्थात् मादी फारसी संयुक्त शासन वाला साम्राज्य आरंभ हो गया। सर्वप्रथम मादी लोगों ने शासन की बागडोर संभाली। क्योंकि यह माना जाता है कि कुस्रु कुछ और राज्यों को भी अपने अधिकार में लेना चाहते थे सो उनको कुछ और लड़ाइयां लड़नी थी। इस कारण आपस के समझौते के द्वारा मादी लोग शासन करने लगे। दारा राजा ईसा पूर्व 538 में नये साम्राज्य का सम्राट बना। उसने केवल दो ही साल शासन किया। इस समय दानिय्येल 88 वर्ष का होना चाहिये। राजा ने प्रत्यक्ष रूप में दानिय्येल के ज्ञान के बारे में और उसकी अद्भुत उपलब्धियों के बारे में सुना। तुरन्त दानिय्येल को राज्य में शासन में राजा की सहायता करने वाले तीन अध्यक्षों में प्रमुख एवं प्रधान नियुक्त किया। उसके ज्ञान और उसमें निहित उत्तम आत्मा के कारण राजा ने उसे पूरे साम्राज्य के सभी क्षेत्रों पर उत्तरदायित्व सौंपना चाहा।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि मादी फारसी साम्राज्य एक संपूर्ण साम्राज्यवादी शासन प्रणाली से चलने वाला शासन नहीं था। वह एक संपूर्ण राजतन्त्र (absolute monarchy) शासन प्रणाली वाला देश नहीं था, जैसा बाबुल साम्राज्य शासन प्रणाली रही। यह कुछ सांसद सदस्यों द्वारा (Parliament) चलाए जाने वाला शासन प्रक्रिया थी। एक बार संसद में कानून बन जाए तो वह राजा भी तब्दील नहीं कर सकते थे।

यह प्रकट हो गया कि राजा के द्वारा दानिय्येल को उन्नति और प्रतिष्ठा दी जाने वाली है, देश पर नियुक्त अध्यक्षों और उच्च अधिकारियों को यह बात पसन्द नहीं आई। उन्हें मालूम था कि दानिय्येल के अन्दर उनसे

बढ़कर एक उत्तम आत्मा रहती है। इस कारण उन्हें मालूम था कि दानिय्येल किसी भी प्रकार के गलत कार्य एवं किसी भी प्रकार के कपट और असत्यता एवं बेईमानी (dishonesty) को अपने दफ़्तर में बर्दाश्त नहीं करेंगे। वे इस बात से काफी परेशान हो गये। वे इस बुजुर्ग एवं अनुभवी प्रबन्धकर्ता एवं शासक (administrator) को नीचा दिखाना या हो सके तो निलम्बित करना चाहते थे। वे कहने लगे, पर उसमें कोई दोष तो नहीं पाना असंभव है, क्योंकि लिखा है, **“तब अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानिय्येल के विरुद्ध दोष ढूँढ़ने लगे; परन्तु वह विश्वासयोग्य था, और उनके काम में कोई भूल व दोष न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध व दोष न पा सके”** (दानि.6:4)।

दानिय्येल के संबन्ध में, उसकी ईमानदारी (integrity), दुर्बल न किये जाने वाली योग्यता, एक अद्भुत गवाही है। दफ़्तर संबंधी या कार्य संबंधी मामले में उसके अन्दर कोई दोष न पा सके। वह अपने सिद्धान्त में और प्रबन्ध में निर्दोष (flowless) था। इस वर्णन में एक परमेश्वर के दास के इह जीवन का संपूर्ण ब्यौरा मिलता है। हमें प्रभु के लोग होने के नाते अपने कार्यक्षेत्रों में बहुत ही इमानदार रहना चाहिये। आप भले ही किसी भी क्षेत्र में क्यों न नियुक्त हो, छोटा या बड़ा कार्य, उसमें आपको अपनी ईमानदारी को (integrity) दर्शाना होगा। कोई आपको देखे या न देखे, अपना कार्य पूरी ईमानदारी के साथ करें।

सो दानिय्येल के साथियों और अधीनस्थों ने उसमें दफ़्तर एवं कार्य संबंधी मामलों में उसको फंसा न सके तो उसके आत्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने का इरादा किया। तब उन्होंने सोचना शुरू किया और कहा, **“हम उस दानिय्येल के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़, और किसी विषय में उसके विरुद्ध कोई दोष न पा सकेंगे”** (दानि.6:5)। यह कहा जाता है, **“शैतान उनकी सहायता करता है जो बुराई की ओर झुके हुए होते हैं”**। चालाक प्रतिद्वन्द्वियों ने दानिय्येल के खिलाफ दोष लगाने के लिये उपाय ढूँढ़ने में विलम्ब नहीं किए। उन्होंने इस मौके पर दानिय्येल की प्रार्थना में विघ्न डालने का प्रयास किया जो वह यहोवा से निरन्तर करता चला आया। उन्होंने राजा के सम्मुख यह इच्छा ज़ाहिर की कि सारे मादी साम्राज्य के निवासी 30 दिन के लिये राजा से प्रार्थना करें, अन्य किसी देवी देवता से

नहीं। वहां यूँ लिखा है, “तब वे अध्यक्ष और अधिपति राजा के पास उतावली से आए, और कहा, हे राजा दारा, तू युग-युग जीवित रहे। राज्य के सारे अध्यक्षों ने, और हाकिमों, अधिपतियों, न्यायियों, और गवर्नरों ने भी आपस में सम्मति की है, कि राजा ऐसी आज्ञा दे और ऐसी कड़ी आज्ञा निकाले, कि 30 दिन तक जो कोई हे राजा, तुझे छोड़ किसी और मनुष्य व देवता से विनती करे, वह सिंहों की मान्द में डाल दिया जाए। इसलिये अब हे राजा, ऐसी आज्ञा दे, और इस पत्र पर हस्ताक्षर कर, जिससे यह बात मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार अदल-बदल न हो सके। तब दारा राजा ने उस आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया” (दानि.6:6-9) ।

अब आप बताइये इस भक्ति और आराधना में कोई सच्चाई और ईमानदारी है? सिर्फ एक व्यक्ति को फंसाने के लिये यह आराधना संबंधी आज्ञा निकलवाई है। इसमें ईर्ष्या और जलन छिपा हुआ है। एक बार एक स्त्री एक गायक से कहने लगी जब वे उनके घर आए, कि आप कुछ गीत गाइये। तब गायक ने पूछा कौन से राग में गाऊँ ? तब वह स्त्री ने कहा कि, “कोई भी राग गाइये मुझे तो सिर्फ पड़ोसी को परेशान करना है”। भला बताओ लोग कुछ अच्छे कार्य बुरी मनोवृत्ति से करना और कराना चाहते हैं।

दारा राजा ने इन षड्यंत्रकारियों की मनोवृत्ति को जाने बिना आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। बाद में राजा को मालूम हुआ कि यह दानिय्येल को फंसाने के लिये किया गया था। लेकिन राजा कुछ नहीं कर पाया। मादियों और फारसियों का नियम पारित होने के पश्चात आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर होने के पश्चात राजा भी उसमें परिवर्तन नहीं ला सकता था। राजा भी काफी उदास हुआ।

दानिय्येल को पता चला कि इस प्रकार के आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर हो चुका है तो वह डरा नहीं, यह भी नहीं सोचा कि चलो 30 दिन की तो बात है राजा से प्रार्थना किया जाए। या 30 दिन कोई भी प्रार्थना न की जाए—नहीं। दानिय्येल ने क्या किया, वचन में लिखा है,—“जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया जिसकी उपरौठी कोठरी की खिड़कियां यरूशलेम

के सामने खुली रहती थी, और अपनी रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेक कर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा। तब उन पुरुषों ने उतावली से आकर दानिय्येल को अपने परमेश्वर के सामने बिनती करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया” (दानि.6:10,11)।

आज्ञा पत्र की कठोरता और मादी फारसी लोगों के अटल नियम से वह डरा नहीं। उसने चाहा कि नियम न बदले पर परमेश्वर सिंहों को बदल डाले। परमेश्वर पर और परमेश्वर की सामर्थ्य पर उसका पूरा-पूरा विश्वास था। दानिय्येल को मालूम था परमेश्वर उसको सिंहों से बचायेगा। वह दिन में तीन बार प्रार्थना करता था सो उस परिस्थिति में भी करता था। उसको मालूम था आग से बचाने वाला सिंहों से भी बचायेगा।

क्या हुआ— दानिय्येल को सिंहों के मान्द में डाल दिया गया। क्योंकि उन्होंने दानिय्येल के संबंध में यह कह कर शिकायत की कि, “यहूदी बन्धुओं में से जो दानिय्येल है, उसने, हे राजा, न तो तेरी ओर कुछ ध्यान दिया, और तेरे हस्ताक्षर किये हुए आज्ञा पत्र की ओर, वह दिन में तीन बार विनती किया करता है” (दानि.6:13)। यह षड्यन्त्र रचाने वालों ने सोचा, राजा क्रोधित हो जायेंगे और तुरन्त दानिय्येल को सिंहों के मान्द में डालने की आज्ञा देंगे। परन्तु मामला ऐसा हुआ नहीं। बल्कि उसके बदले राजा काफी उदास हुआ लिखा है, “यह वचन सुनकर, राजा बहुत उदास हुआ, और दानिय्येल को बचाने के उपाय सोचने लगा; सूर्य के अस्त होने तक उसे बचाने का यत्न करता रहा। इसके अलावा अधिकारियों ने नियम की आड़ में उसका फायदा उठाते हुए राजा को डराने लगे— कहा, “तब वे पुरुष राजा के पास उतावली से आकर कहने लगे, हे राजा, यह जान रख, कि मादियों और फारसियों में यह व्यवस्था है कि जो मनाही व आज्ञा राजा ठहराए, वह नहीं बदल सकती” (दानि.6:14,15)।

राजा के द्वारा दानिय्येल को बचाने का उपाय निष्फल हो गया। राजा ने आज्ञा दी कि दानिय्येल को सिंहों के मान्द में डाल दिया जाए (दानि. 6:16)। याद रखिये दानिय्येल को राजा नहीं बचा सकते परन्तु परमेश्वर

बड़े आराम से बचा सकता है। राजा के पास दानिय्येल को बचाने के संबंध में सैकड़ों मजबूरियां हो सकती हैं पर परमेश्वर के पास ऐसी कोई मजबूरी नहीं है इसी कारण वचन में यह वर्णन आया है, **“यहोवा की शरण लेनी, प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है”** (भजन-118:8,9)।

दानिय्येल को शाम के समय सिंहों की मान्द में डाल दिया। उसके ऊपर का ढक्कन बन्द करके मुहर भी लगा दी गयी। रातभर दानिय्येल ने सिंहों के बीच में आनन्द के साथ समय बिताया। परन्तु दार। राजा अपने महल के सुन्दर मुलायम गद्दे पर सो नहीं पाया। परमेश्वर के दासों को सताने वाले तुम्हारी नींद तुमसे छीन ली जायेगी। निद्रा देवी तुमसे रूठ कर चली जायेगी। किसी प्रकार से राजा रात बिताई। भोर को उठा और सिंहों के मान्द के द्वार पर आ खड़ा हुआ। पुकार कर रोती हुई आवाज़ में दानिय्येल से पूछता है, **“राजा गड्डे के निकट आया, तब शोक भरी वाणी से चिल्लाने लगा और दानिय्येल से कहा, हे दानिय्येल हे जीवित परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है”**? (दानि.6:20) ।

दानिय्येल रात को बिना किसी हानि से सोया। मैं सोचता हूं दानिय्येल के गड्डे के भीतर पहुंचने से पहले स्वर्गदूत वहां पहुंच गया और एक कक्षा चलाई और उन सिंहों को समझाया, देखो अभी एक वयोवृद्ध को, एक बूढ़े आदमी को यहां डालने वाले हैं उसके शरीर में हड्डी और चमड़ी है ज्यादा से ज्यादा चार-पांच किलो मटन होगा। उसे खाना मत। इतना ही नहीं वह 88 साल का है सो उनकी हड्डी काफी मजबूत है, इस कारण तुम लोगों के दांत भी टूटने की संभावना है। इसलिये उनको खाना नहीं। कल बहुत से लोग सपरिवार यही डाले जायेंगे। वे जवान हैं और हट्टे-कट्टे हैं बढ़िया जेवनार होगा। सो आज रात और रुक जाओ।

इस प्रकार दण्ड देकर मनुष्यों को सिंहों के मान्द में डालते हैं तो उन सिंहों को चार-पांच दिन भूखा रखते हैं, ताकि जो व्यक्ति डाला जाए वह तुरन्त उनका शिकार बन जाए। यदि ऐसा है तो एक और दिन परमेश्वर की आज्ञा से सिंहों के लिये उपवास घोषित हो गया। जब परमेश्वर का आदेश हुआ तो वे मान गये और उस रात शान्त रहे। दानिय्येल नीचे पहुंचा तो

उन्होंने बड़े प्रेमभाव से दानिय्येल का स्वागत किया। परमेश्वर ने अपने दूतों को भेजकर अपने दास को बचाया। सिंहों के मुंह को बन्द रखा। दानिय्येल एक सिंह के पेट के मुलायम बालों पर सिर रखकर आराम से सोया मानों तकिये पर सिर रखकर सो रहा हो। प्यारे भाई—बहन जहां मनुष्य आपकी सहायता नहीं कर सकता। आपको बचा नहीं सकता वहां परमेश्वर आपको बचा सकता है। राजा सहायता न कर पाने से निराश मत हो जाइये, और क्रूर सिंहों को याद करके आतंकित भी मत हो जाइये, परमेश्वर उठेगा और शत्रु तितर-बितर हो जायेंगे।

रात भर सुरक्षित रहने के पश्चात् दानिय्येल ने यह कहकर अपनी गवाही दी कि, “तब दानिय्येल राजा से कहा, हे राजा, तू युग-युग जीवित रहे मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुंह को ऐसा बन्द कर रखा कि उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की, इसका कारण यह है, कि मैं उसके सामने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैंने कोई भूल नहीं की। तब राजा ने बहुत आनन्दित होकर, दानिय्येल को गड्ढे में से निकाला गया, और उस पर हानि का कोई चिन्ह न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था” (दानि.6:21-23)। इतना ही नहीं राजा ने आज्ञा दी कि जिन पुरुषों ने दानिय्येल की चुगली खाई थी, वे अपने-अपने लड़के वालों और स्त्रियों समेत लाकर सिंहों के गड्ढे में डाल दिये जाएं; और वे गड्ढे की पैदी तक भी न पहुँचे कि सिंहों ने उन पर झपटकर सब हड्डियों समेत उनको चबा डाला (दानि.6:24)। सिंह परमेश्वर के लोगों को और बगैर परमेश्वर के जीने वाले लोगों को बराबर पहचानते हैं। दानिय्येल को हानि नहीं पहुँचाई पर दानिय्येल के विरोधियों के हड्डियों को भी चबा डाला।

याद रखिये परमेश्वर के भय मानने वालों को और किसी चीज़ से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप परमेश्वर का भय मानेंगे तो परमेश्वर आपके लिये अपनी महानता को प्रकट करेगा। आपकी रक्षा करेगा। दानिय्येल सिंहों के बीच में भी आराम से सोया क्योंकि परमेश्वर अपने भक्त को नीन्द दान देता है।

उसके बाद राजा ने एक और आज्ञा पत्र लिखकर तैयार किया और

उसमें लिखा है, “तब दारा राजा ने सारी पृथ्वी के रहने वाले देश-देश और जाति-जाति के सब लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों के पास यह लिखा, तुम्हारा कुशल हो। मैं यह आज्ञा देता हूँ कि जहां-जहां मेरे राज्य का अधिकार है, वहां के लोग दानिय्येल के परमेश्वर के सम्मुख कांपते और थरथराते रहें, क्योंकि जीवित और युगानुयुग तक रहने वाला परमेश्वर वही है। उसका राज्य अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्थिर रहेगी। जिसने दानिय्येल को सिंहों से बचाया है, वही बचाने वाला और छुड़ाने वाला है; और स्वर्ग में और पृथ्वी पर चिन्हों और चमत्कारों को प्रकट करने वाला है ” (दानि. 6:25-27) ।

यह क्या ही अद्भुत बात है जिसने दानिय्येल के खिलाफ आज्ञा पत्र तैयार किया वही अब दानिय्येल के अनुकूल दूसरा आज्ञा पत्र तैयार कर रहा है और उसके द्वारा दानिय्येल के परमेश्वर का सम्मान कर रहा है। समस्त अधीनस्थ लोगों से दानिय्येल के परमेश्वर से डरने का आदेश दे रहा है। ऐसा शासनकर्ता जो जीवित परमेश्वर को मानने वाला और उसको अंगीकार करने वाला और उसका भय मानने वाला किसी भी देश के लिये एक आशीष का कारण बनेगा। काश कि सब अधिकारीगण जीवित ईश्वर की आराधना करने वाले बन जाते और भ्रम से बचते और अपने लोगों को, देशवासियों को भी भ्रम से बचा लेते और सच्चे परमेश्वर की आराधना के लिये प्रोत्साहित करते तो कितना अच्छा होता।

अन्त में यह लिखकर इस अध्याय को समाप्त किया है कि दानिय्येल, दारा और कुस्रु फारसी, दोनों के राज्य के दिनों में भाग्यवान रहा। परमेश्वर को मानने वाला, उसका भय मानने वाला, उससे प्रार्थना करने वाला कभी भी लज्जित नहीं होगा। वह भाग्यवान एवं कुशल रहेगा। प्रिय पाठक आप इस मामले में कहां हैं? क्या आपने प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण कर पिता परमेश्वर को प्रसन्न किया है? यदि नहीं तो आज का दिन आप उसके लिये उपयोग करें। आपका भी जीवन विपरीत परिस्थितियों से गुजरने के पश्चात् भी भाग्यशाली होगा। प्रभु आपकी सहायता करे।

अध्याय 7

दानिय्येल द्वारा “जन्तुओं का स्वप्न”

इस अध्याय का वर्णन फिर हमें पीछे की ओर ले जाता है। लिखा है, “बाबुल के राजा बेलशस्सर के पहले वर्ष में दानिय्येल ने पलंग पर स्वप्न देखा। तब उसने उस स्वप्न को लिखा, और बातों का सारांश भी वर्णन किया” (दानि-7:1)। 6 अध्याय के अंतिम भाग में जब हम आते हैं तो वहां बेलशस्सर की मृत्यु के बारे में वर्णन आया है फिर सात अध्याय में आगे का वर्णन आना चाहिये। मादी फारसी साम्राज्य का वर्णन आना चाहिये। लेकिन यहां ऐसा न करते हुए हमें काफी पीछे की ओर ले जाते हैं। पाठक इस वर्णन से कुछ कठिनाई महसूस कर सकते हैं परन्तु यहां उसकी आवश्यकता नहीं है। याद रखिये इस भविष्यवाणी में एक साधारण सी बात है विषय को बहुत आगे ले जाने के पश्चात् किसी बात को बताने के लिये लोगों का ध्यान पीछे की ओर ले जाते हैं विषय को या समय को दोहराता है।

प्रकाशितवाक्य में भी यही बात दोहराई गयी है। अधिक जानकारी के लिए लेखक द्वारा लिखित पुस्तक “प्रकाशितवाक्य का अध्ययन” पढ़िए। यहां, सात अध्याय से भविष्यवाणी का वर्णन आरंभ होता है अभी तक दानिय्येल अन्य लोगों के स्वप्न की व्याख्या कर रहा था। पर यहां से आगे वह स्वयं स्वप्न एवं दर्शन देख रहा है और उसका अर्थ स्वर्गदूतों से हासिल कर रहा है। यहां दानिय्येल ने जो स्वप्न देखा उसका समय बता रहा है। दानिय्येल बेलशस्सर के राज्य के पहले वर्ष में पलंग पर था रात के समय आराम कर रहा था। राज्य संबंधी कोई जवाबदार पद उसके पास नहीं था। आराम का जीवन था।

इस समय वह परमेश्वर के वचन के जो मूसा की व्यवस्था, भजन की पुस्तकों और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें और अन्य जो भी साहित्य उपलब्ध था, उनका अध्ययन और प्रार्थना में समय व्यतीत करता था। इस सेवानिवृत्त जीवन में वह मृत्यु का रास्ता देखता हुआ पलंग पर पड़ा हुआ आराम नहीं कर रहा था। पर परमेश्वर के वचन पर ध्यान मनन और प्रार्थना में समय व्यतीत कर रहा था। उसके लोगों की बन्धुबाई समाप्त होने और स्वदेश लौटने से संबंधित विचार भी उसके मन में था (दानि-9:1,2) सेवानिवृत्त जीवन आराम से काटने का उत्तम तरीका यही है।

यह स्वप्न लगभग B.C.541 का है और उसम दानिय्येल 84 साल का रहा होगा। नबूकदनेस्सर राजा की मृत्यु के कुछ 23 वर्ष की बात हो सकती है। दानिय्येल स्वयं परमेश्वर द्वारा भविष्य में किये जाने वाले कार्यों को दर्शन में देख रहा है। पहले छः अध्यायों के बिना इन अन्तिम अध्यायों का अर्थ समझना मुश्किल है, पहले भाग में इन्हीं बातों का एक बाहरी एवं सांसारिक अर्थ बताया गया है। दानिय्येल यहां वही बात जो नबूकदनेस्सर ने मूर्ति के द्वारा देखा जो चार साम्राज्यों से संबंधित था, दूसरे रूप में कहा जाए तो कुछ स्पष्ट एवं विस्तृत रूप में देख रहा है।

इस बात में एक बहुत बड़ा अन्तर हम देखते हैं। जब परमेश्वर ने साम्राज्यों का स्वप्न नबूकदनेस्सर को दिखाया तो एक मनुष्य के रूप में दिखाया, पर वह कई प्रकार के धातुओं से बना हुआ था। सोने से आरंभ होकर मिट्टी से अन्त होता है। एक आकर्षक वस्तु से आरंभ होकर एक साधारण वस्तु में जिसमें स्वभाविक रूप में कोई आकर्षण नहीं, समाप्त होता है। मानवीय दृष्टि से यह साम्राज्य बड़ा आकर्षक था। परन्तु ध्यान देने पर यह देखा जा सकता है कि वह उन्नति की ओर नहीं पर अवनति की ओर उतरते और विनाश की ओर जा रहे हैं। याद रखिये आज का शासन उन्नति नहीं कर रहा है पर अवनति की ओर उतर रहे हैं। एक दिन परमेश्वर इन्हें चकनाचूर करेगा और हवा में उड़ा देगा।

इस साम्राज्यवाद को जो बड़े आकर्षक वस्तु के रूप में सांसारिक व्यक्ति, नबूकदनेस्सर राजा ने देखा, वहीं बात एक आत्मिक व्यक्ति को, एक भविष्यवक्ता को, दानिय्येल को दिखाई गई तो उसको असली रूप में

दिखाया गया। चार साम्राज्यों को चार पशुओं के रूप में दिखाया गया। मतलब मानव के लिये जो अच्छा और आकर्षक लगता है वही एक आत्मिक व्यक्ति असली रूप में देखता है। मतलब संसार की शासन प्रणाली और शासनकर्ता पशु समान है सो जो चीज नबूकदनेस्सर को मूर्ति द्वारा दिखाया वही परमेश्वर ने अपने दास दानिय्येल को पशुओं को अलग-अलग लेकर अध्ययन करने का प्रयास करते हैं।

ये चारों पशु समुद्र के पानी से निकल कर आ रहे हैं। यह समुद्र भूगोल के अनुसार भूमध्य सागर है। लेकिन यहां भविष्यवाणी की भाषा में वर्णन किया गया है, सो हमें यह देखना पड़ेगा कि यह समुद्र और पानी भविष्यवाणी की भाषा में किस बात को दर्शाता है। भविष्यवाणी में समुद्र और पानी, लोग और जातियां और भाषाओं को दर्शाता है (प्र.वा-17:15; यशा-17:12,13)। यहां लिखा है, **“मैंने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चौमुखी आंधी चलने लगी। तब समुद्र में से चार बड़े-बड़े जन्तु, जो एक दूसरे से भिन्न थे, निकल आए ”** (दानि-7:2,3)। यह आंधी राजनैतिक आन्दोलन को दर्शाती है। लोगों के बीच में वर्तमान शासन प्रणाली में परिवर्तन लाने के क्रान्तिकारी आन्दोलन को दर्शाती है। चौमुखी आंधी का मतलब है पृथ्वी की चारों दिशा से, सब लोगों और जातियों एवं भाषाओं से एक सही शासन की मांग करते हुए किये जाने वाले क्रान्तिकारी कार्य को यह आंधी संकेत करती है। उस समय जनसमुदाय रूपी सागर में उथल-पुथल हुई और उस समय तक संसार में चल रहे शासन प्रणाली में बड़ा परिवर्तन आया और साम्राज्यवाद संसार में प्रारंभ हो गया। इस साम्राज्यवाद को ये चार पशु संकेत देते हैं। इन पशुओं के स्वभाव के अनुसार इन साम्राज्यों का शासन और शासन का स्वभाव रहा है।

एक प्रकार की शासन प्रक्रिया कुछ समय तक चलने के पश्चात लोगों में असन्तुष्टि का अहसास होने लगता है और वे दूसरे प्रकार के शासन के लिये मांग करते हुए क्रान्तिकारी कार्य में उतर आते हैं यह दुनिया के इतिहास की एक सत्यता है। रूस में जार बादशाहों का शासन बहुत दिनों तक चलता रहा। लोग थक गये और बड़ी क्रान्ति खड़ी की। उसके फलस्वरूप वहां मजदूरों की पार्टी का शासन, साम्यवाद का शासन आ गया। भारत में लोग हर 5 साल बाद नयी पार्टी का शासन लाने में इच्छुक

रहते हैं। कोई भी एक पद्धति से मनुष्य सदा सहयोग देना नहीं चाहते हैं। सदा परिवर्तन के विचार में लोग रहते हैं। लेकिन यहां किसी एक देश का नहीं परन्तु पूरे संसार में आए परिवर्तन का वर्णन करता है। उस समय तक चले राजाओं का शासन खत्म करके साम्राज्यवाद आरंभ कर दिया। इस साम्राज्यवाद में संसार पर शासन किये गये 4 प्रमुख साम्राज्य हैं। बाबुल, मादी, फारसी, यूनान और रोमी बादशाहत। इन चारों साम्राज्यों को चार जन्तुओं द्वारा प्रस्तुत किया गया है। अब हम एक-एक पशु के बारे में दिये गये वर्णन के अनुसार इन साम्राज्यों के स्वभाव को समझने का प्रयास करेंगे।

1. सिंह

(बाबुल साम्राज्य - B.C. 606-536)

इनमें प्रथम पशु सिंह है। इस पशु के स्वभाव के बारे में अध्ययन करें तो हमें पता चलेगा कि इस साम्राज्य का स्वभाव क्या है। यहां लिखा है, “तब समुद्र में चार बड़े-बड़े जन्तु, जो एक दूसरे से भिन्न थे, निकल आए। पहला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाब के से थे। और मेरे देखते-देखते उसके पंखों के पर नोचे गये और वह भूमि पर से उठकर, मनुष्य की नाई पांवों के बल खड़ा किया गया, और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया” (दानि-7:3-4)। इसके भेद की चर्चा करने से पहले हम सिंह के बारे में थोड़ा सा विचार करें। सिंह जंगली जानवरों का राजा है। यह अन्य जंगली जानवरों में सबसे ज्यादा बलवान, शूरवीर एवं हिम्मतवाला है। इसका सिर गोल एवं मोटा है और उसका कान गोल एवं अग्नि समान आंखें भी हैं। उसका मुंह काफी चौड़ा है और उसके दांत काफी मजबूत हैं। लम्बी पूंछ, चौड़ा सीना एवं मोटे-मोटे एवं बलवान पांव एवं पांवों में आवश्यकतानुसार निकालने और अन्दर दबाने वाले मुड़े हुए और मजबूत नाखून हैं। नर सिंह की गर्दन के दोनों तरफ बाल पाये जाते हैं। मादा को ऐसा नहीं है। बहुत दूर से ही अन्य जानवरों को सूंघ कर पता लगाने की शक्ति इनके पास है। बिल्ली के समान आधी आंखें खोल कर कुछ समय वे सोते हैं। इसकी गर्जन बिजली के गर्जन के समान ही है। सभी जानवर इनसे डरते हैं। नर अक्सर गुफा में सोता रहता है। 95% शिकार मादा सिंह करती है। नर केवल 5% शिकार करते हैं। बाकी उसका

काम सन्तान उत्पत्ति में मन लगाना और सोते रहना है। इन्हें अपने बच्चों से बहुत अधिक प्यार है।

खैर हमारा विषय ये सब नहीं है। यहां जो वर्णन पाया जाता है, उसके अनुसार हम हमारे अध्ययन में आगे बढ़ेंगे। यहां दानियेल ने जो सिंह का दर्शन देखा है वह समुद्र से निकल कर आ रहा है। यह उस प्रथम साम्राज्य को दर्शाता है। यहां लिखा है, **“पहला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाब के से थे। और मेरे देखते-देखते उसके पंखों के पर नोचे गये और वह भूमि पर से उठा कर, मनुष्य की नाई पांवों के बल खड़ा किया गया, और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया”** (दानि-7:4)। इसी अध्याय के 15 पद से लेकर 18 पद तक इसकी व्याख्या या इसका अर्थ बताया गया है। उससे यह पता चलता है कि ये चारों जन्तु संसार के चार साम्राज्यों का संकेत करता है। यदि ऐसा है तो यह पहला पशु, साम्राज्यों की सूची में पहला साम्राज्य है। जैसे धातुओं में सबसे सुन्दर और कीमती धातु के द्वारा बाबुल साम्राज्य का संकेत नबूकदनेस्सर को दिया गया है ठीक इसी प्रकार पशु जगत में सबसे बड़ा पशु, पशुओं का राजा, सिंह के द्वारा बाबुल का संकेत दिया।

सो यह सिंह बाबुल साम्राज्य को दर्शाता है परमेश्वर के वचन में सम्राट नबूकदनेस्सर को सिंह की संज्ञा दी गयी है। आप पढ़कर देखिये, **“सिख्योन के मार्ग में झंडा खड़ा करो, अपना सामान बटोर के भागो, खड़े मत रहो, क्योंकि मैं उत्तर की दिशा से विपत्ति और सत्यनाश ले आया चाहता हूं। एक सिंह अपनी झाड़ी से निकला, जाति-जाति का नाश करने वाला, चढ़ाई करके आ रहा है.....”** (यिर्मयाह-4:6,7)।

इसके अलावा उकाब पक्षी का वर्णन भी बाबुल के साथ जुड़ा हुआ है। लिखा है: यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचा है, मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के घराने से यह पहेली और दृष्टान्त कह ; प्रभु यहोवा यों कहता है, एक लम्बे पंख वाले, परों से भरे और रंग-बिरंगे बड़े उकाब पक्षी ने लबानोन जाकर एक देवदार की फुनगी नोच ली। तब उसने उस फुनगी की सबसे ऊपर की पतली टहनी को तोड़ लिया, और उसे लेन-देन करने वालों के देश में ले जाकर व्यापारियों के एक नगर में लगाया (यहेज-17:1-4)।

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, उस बलवा करने वाले घराने से कह, क्या तुम इन बातों का अर्थ नहीं समझते ? फिर उसने कहा, बाबुल के राजा ने यरुशलेम जाकर उसके राजा और प्रधानों को लेकर अपने यहां बाबुल में पहुंचाया (यहेज-17:11,12)।

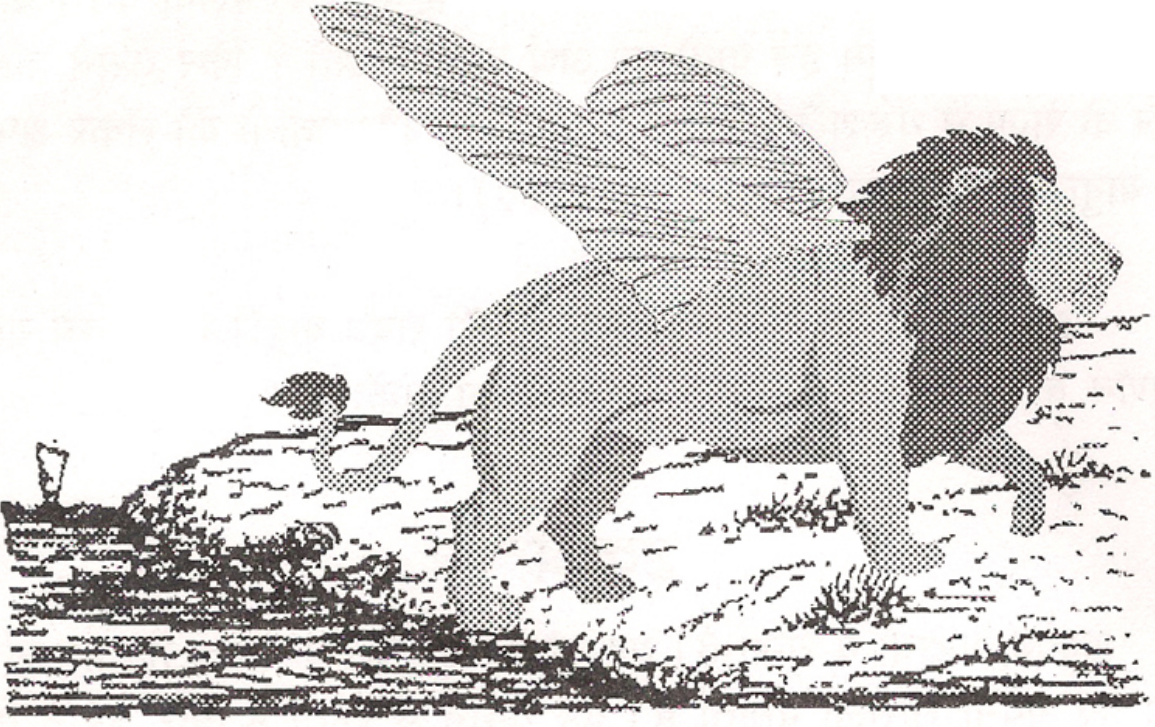
इन दोनों वर्णनों में उकाब पक्षी का भी संबंध बाबुल से है। सो यहां के वर्णन के अनुसार सिंह बाबुल साम्राज्य का संकेत है।

उकाब

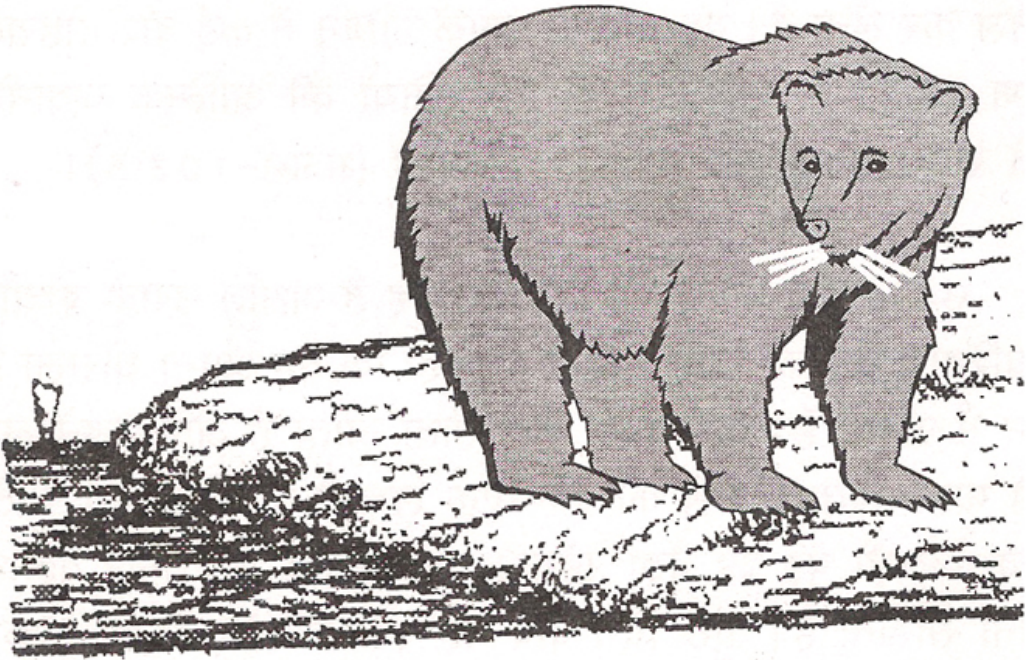
उकाब, पक्षियों में राजा है। यह ऊंचाई को पसन्द करता है। वह ऊंचे स्थान पर अपना घोंसला बनाता है। वह चट्टान में रहता है और चट्टान की चोटी और दृढ़ स्थान में बसेरा करता है। उसकी आंखें बहुत तेज हैं और वह दूर से अपना भोजन वस्तु देख सकता है। जितनी ऊंचाई की ओर जाता है उतनी सफाई से उसका चारा दिखाई देता है। उसके बच्चे भी खून चूस लेते हैं।

उकाब जब बूढ़ा हो जाता है तो वह कुछ समय के लिये किसी ऊंचे पहाड़ पर जाकर बैठता है और अपनी चोंच से अपने शरीर के परों को नोंच डालता है और काफी दिनों तक बैठ जाता है। कुछ समय के पश्चात् उसके शरीर में नया पर और पंख तैयार हो जाता है। वह अपनी जवानी को फिर हासिल कर लेता है। यह प्रक्रिया उसके जीवन में कई बार दोहराती है। इस कारण बाइबल धर्मशास्त्र में भी विश्वासियों की आत्मिक जवानी की चर्चा करते समय उकाब का उदाहरण दिया है (भजन-103:5)।

उकाब पक्षी की दूसरी विशेषता यह है अर्थात् उसके बच्चों को उड़ने का प्रशिक्षण देने की विधि। पहले ही कहा कि वह अपना घोंसला किसी ऊंचे स्थान में रखता है। जब बच्चा बड़ा होता जाता है और उड़ने लायक होता है तो माता-पिता घोंसले की एक-एक लकड़ी को निकालते जाते हैं। अन्त में एक लकड़ी पर वह बैठा रहेगा। उस स्थिति में बैठकर वह अपना पंख चलाना सीखता है। कुछ दिन बाद वह एक लकड़ी को भी निकाल लेते हैं और बच्चा ऊंचाई से नीचे की ओर जाता है और लगता है अब नीचे गिरकर



सिंह (बाबुल साम्राज्य)
दानि. 7 : 1 - 4



रीछ (मादी फारसी साम्राज्य)
दानि. 7 : 5

मर जायेगा तो मां एकदम तेजी से नीचे की ओर उड़कर बच्चे को अपने पंख के ऊपर उठा लेती है। फिर ऊंचाई की ओर उड़ने लगती है। ऊपर जाकर फिर गिरा देती है। यह प्रक्रिया कई बार दोहराती है। अन्त में वह बच्चा भी आकाश की ऊंचाई में उड़ने लगता है। इस अनुभव को ध्यान में रखकर मूसा लिखता है परमेश्वर ने उकाब के पंखों में उठाया (निर्ग-19:4; व्यवस्था-32:10,11)। आत्मिक लोगों के बल और शक्ति के लिये एवं जवानी के लिये उकाब को ही उदाहरण में लिया है (यशा-40:31)।

सो उकाब पक्षी ऊंचाई की ओर उड़ने वाला पक्षी है और तेज उड़ने वाला पक्षी है। बाबुल के लिये पशुओं में सिंह और पक्षियों में उकाब के पंख की संज्ञा बहुत ही ठीक जमती है। सिंह शक्तिशाली पशु और उकाब तेज उड़ने वाला पक्षी। सिंह बाबुल साम्राज्य को संकेत करता है तो उकाब पक्षी उस साम्राज्य के सैन्य बल और तेजी से सारे राष्ट्रों पर आक्रमण कर उन्हें अपने अधिकार में लेने के विचार को व्यक्त करता है। दानिय्येल के देखते-देखते उसके पंखों के पर नोचे गये और वह भूमि पर गिर पड़ा। यह नबुकदनेस्सर राजा के घमण्ड के कारण उसको अधिकार और सिंहासन से निकाल कर पागल बनाकर जंगल भेजने की ओर संकेत करता है। फिर सात साल के पश्चात् उसको दण्ड से मुक्त कर वापस अधिकार में लेने के लिये यह कहा गया है कि “वह भूमि पर से उठकर, मनुष्य की नाई पांवों के बल खड़ा किया गया; और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया” (दानिय्येल-7:4)। यह विवरण मूर्ति के स्वप्न में प्रकट नहीं किया गया है।

2. रीछ

(मादी फारसी साम्राज्य - B.C. 536-330)

दानिय्येल ने अपने रात्रि दर्शन में एक और पशु को देखा। यह सब दर्शन दानिय्येल ने एक ही रात में देखे हैं। यह दूसरा पशु रीछ के समान था। लिखा है: “फिर मैंने एक और जन्तु देखा जो रीछ के समान था, और एक पांजर के बल उठा हुआ था, और उसके मुंह में दांतों के बीच में तीन पसली थी; और उससे कह रहे थे, उठकर बहुत मांस खा” (दानि-7:5)।

यह दूसरा जन्तु मादी फारसी साम्राज्य का संकेत है। यह मूर्ति के सीना और हाथों के भाग से बताया गया था। दानिय्येल जब देख रहा था तो इस जन्तु ने अपना एक पांव उठाकर रखा था। यह उठा हुआ पांजर मादी साम्राज्य का संकेत है। यह दूसरा साम्राज्य दो राष्ट्रों का एक संयुक्त शासन रहा है। दो शक्ति एक साथ मिलकर शासन में आई। एक कमजोर और दूसरा शक्तिशाली रहा। मादी लोगों ने पहले शासन किया जो तुलनात्मक दृष्टिकोण से कमजोर थे। यह मूर्ति में स्पष्ट दिखाई देता था। मूर्ति का बाया हाथ उस कमजोर राज्य को और दाहिना हाथ शक्तिशाली फारसी राज्य को संकेत कर रहा है।

दांतों तले तीन पसली का संकेत उन राज्यों का है जिन पर यह साम्राज्य विजयी हुए थे। ये राज्य लीबिया, मिस्र, बाबुल आदि हैं। यह एक विजयी राज्य के रूप में धीरे-धीरे राज्यों पर विजय प्राप्त करते हुए आ रहे थे। उन लड़ाइयों में बहुत से राज्य पराजित हुए। उनमें से प्रमुख तीन राज्य हैं और वे ये तीनों राज्य हैं जिनको तीन पसलियों के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यह रीछ तीन पसलियों को मुंह में रखकर आने का मतलब है, वे शक्तिशाली राज्यों पर विजयी है।

यह जन्तु रीछ देखने में न तो सुन्दर है न ही उसकी चाल में तेजी है। यह बहुत धीमी गति से चलने वाला पशु है। उसका शरीर बड़ा भारी है। इससे यह प्रकट है कि मादी फारसी लोग अपनी कार्यकुशलता, तेज रफ्तार या योग्यता के कारण नहीं जीते बल्कि वे अपनी सेना की बहुतायत के कारण ही जीते हैं। वे अपनी लड़ाइयां सेना की बड़ी संख्या के कारण जीत पाए। कुछ आंकड़े इस प्रकार से बताते हैं कि यूनान के खिलाफ क्षयरष राजा जो फारसी साम्राज्य का सम्राट था, लड़ने गया तो उन्होंने अपने साथ 25,00,000 सेना को ले गये। यह कुछ हद तक अतिशयोक्ति या आयुक्ति कहा जा सकता है। पर यह उस वर्णन की पुष्टि करता है जहां इस पशु के लिये यह वर्णन आया है कि, **“उठकर बहुत मांस खा”**।

यह साम्राज्य एक संपूर्ण साम्राज्यवादी या राजतन्त्र (absolute monarchy) देश नहीं था। बल्कि यह एक प्रकार से प्रतिनिधि सभा या

संसदों द्वारा चलाया जाता था। इस प्रतिनिधि सभा (Parliament) में नियम बनाया जाता था जिसको दुरुस्त करने का अधिकार सम्राट को था। परन्तु एक बार नियम बन जाए तो उसको सम्राट भी बदल नहीं सकता था। इसी कारण दानिय्येल के विरुद्ध सिंहों के मान्द में डाले जाने वाले नियम को दारा राजा बदलने में असमर्थ रहे।

उठकर मांस खाने का अर्थ यह है कि वे खूब लड़ाईयां करेंगे और बहुत से देशों के ऊपर विजय प्राप्त करेंगे और लाखों लोगों को लड़ाई में मार डालेंगे। उनके भारी विजय की ओर संकेत करता है।

3. तीसरा पशु – चीता (यूनान साम्राज्य B.C. 330-146)

दानिय्येल ने एक चौथा पशु देखा और इस प्रकार वर्णन किया गया है: “इसके बाद मैंने देखा, कि चीते के समान एक और जन्तु है जिसकी पीठ पर पक्षी के से चार पंख हैं; और उस जन्तु के चार सिर थे; और उसको अधिकार दिया गया”।

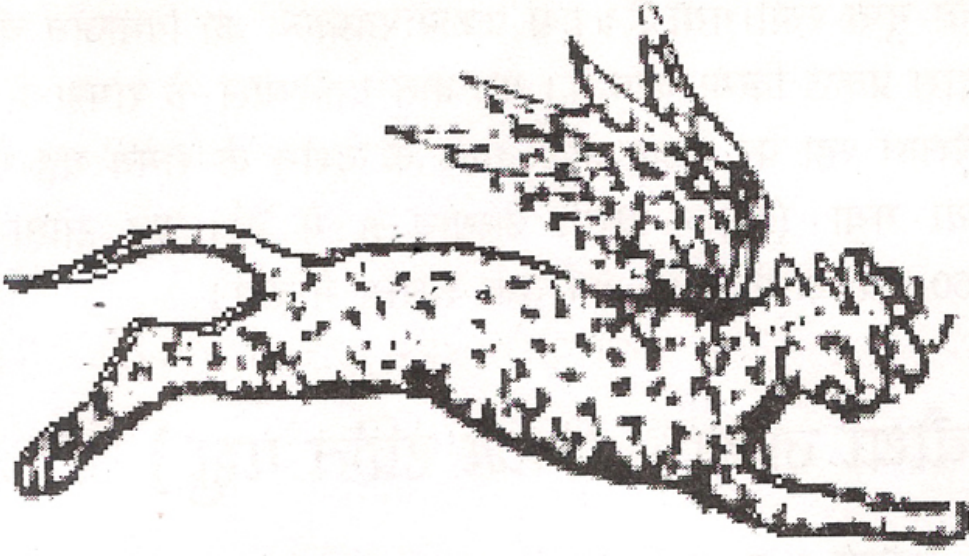
जब दानिय्येल को साम्राज्यवाद का दर्शन दिया गया तो जन्तुओं के द्वारा दिया गया जिसका उद्देश्य प्रारंभ में हम देख चुके हैं। यहां एक और विशेष बात देख सकते हैं। जैसा कि मूर्ति में दिखाया गया और यहां भी वही बात देख सकते हैं। मूर्ति में साम्राज्यवाद का दर्शन दिया तो बहुमूल्य धातु से प्रारंभ होकर मिट्टी अर्थात् मूल्य रहित वस्तु की ओर उतरते जाते हैं। ठीक इसी प्रकार यहां जन्तुओं द्वारा प्रकट किया तो भी वही क्रम हम देख सकते हैं। पहले सिंह जो पशुओं में महत्वपूर्ण पशु अर्थात् पशुओं में राजा है और उकाब पक्षियों में सर्वश्रेष्ठ पक्षी है। फिर उससे कम दर्जे के पशु दिखाए गये हैं। मतलब साम्राज्यवाद उन्नति की ओर नहीं बल्कि अवनति की ओर जाते हैं। यह साम्राज्यवाद की पराजय या पतन की ओर संकेत करता है।

यही यूनान (Greece) साम्राज्य को बताते हुए चीते को दर्शाया है। चीता देखने में बहुत ही सुन्दर है। उसकी चमड़ी पर सुन्दर-सुन्दर रेखाएं बनी हैं। पीले रंग की पीठ पर काली-काली रेखाएं देखने में बहुत ही सुन्दर

हैं। यह बहुत ही क्रूर, तेज रफ़्तार से दौड़ने वाला और किसी प्रकार से नियन्त्रित नहीं किया जाने वाला पशु है। चीता फलस्तीन देश में बहुतायत से पाए जाते थे। यह दिखने में ज्यादा बड़ा नहीं पर अपने हाथ से जानवरों को मार डालने में तेज और शक्तिशाली है। यह गुप्त रूप में आक्रमण करने वाला और बदले की भावना से भरपूर है।

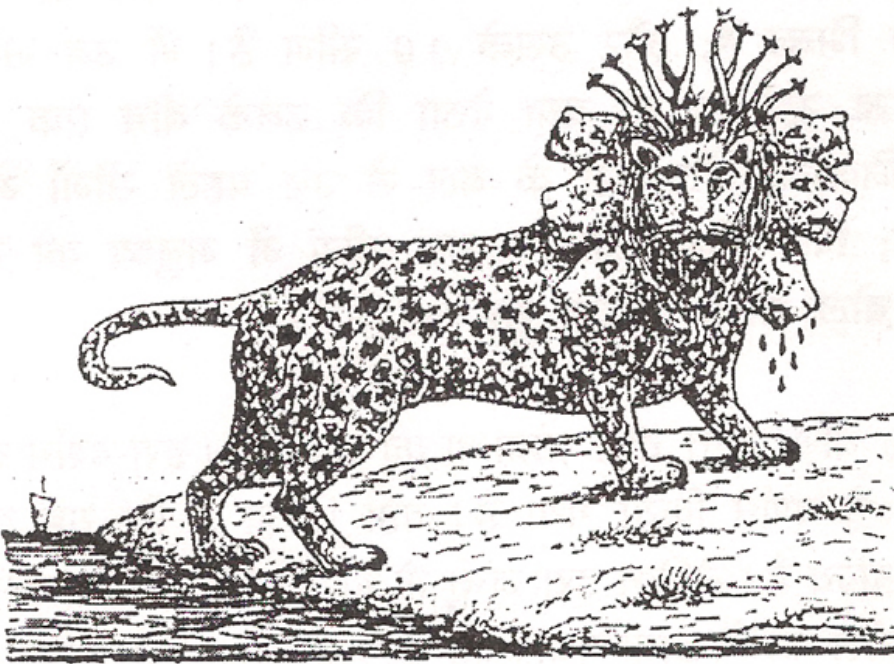
यहां यूनान को संकेत करने वाला चीता कुछ अजीब रूप में बताया गया है। इस रूप का चीता किसी भी जंगल में नहीं पाया जाता है। इसकी पीठ पर चार पंख हैं। 4 संख्या 4 दिशा का संकेत है। पंख यूनानी सैनिकों के तीव्र गति से दुनियां के चारों दिशाओं में जाकर आक्रमण करने की गति को दर्शाता है। चीते के शरीर पर जो रंग है वह यूनान देश के विभिन्न रंगों का संकेत है। मूर्ति में यह साम्राज्य का भाग पीतल से बने पेट और कमर का भाग है। यूनान साम्राज्य की सेना के युद्ध के लिये उपयोग किया जाने वाले शस्त्र और हथियार पीतल के बने थे। पीठ पर दर्शाए गये चार पंख नीचे उड़ने वाले (मुर्गी जैसे) पक्षियों के पंख हैं। अंग्रेजी अनुवाद से यह पता चलता है। यूनान की सेना ने जो भी युद्ध किये वह सब निचले स्थानों में (low land war) रहा हैं। इसके लिये इतिहास में हमें प्रमाण मिलता है। लेकिन उनकी लड़ाईयां आकस्मिक एवं तेज रफ़्तार की होने से चन्द समय के अन्दर उन्होंने पूरी दुनियां को अपने अधीन कर लिया। चीता यूनान साम्राज्य के पहला शासनकर्ता सिकन्दर महान को दर्शाता है। चीते के चार सिर सिकन्दर महान के देहान्त के पश्चात् साम्राज्य के चार भागों में विभाजित होने की बात का संकेत है। सिकन्दर महान के वियोग के बाद देश चार भागों में विभाजित हो गया अर्थात् सीरिया, मिस्र, मकिदूनिया और एशिया माइनर। ये सब राष्ट्र आज स्वतन्त्र राष्ट्र हो गये।

1. एशिया माइनर — लिसिमाकस के अधीन हो गया जो वर्तमान में तुर्की (Turkey)
2. मकिदूनिया — कासन्डर के अधीन (Macedonia)
3. मिस्र — टोलमी के अधीन जो 1930 में स्वतन्त्र राष्ट्र हो गया (Egypt)
4. सीरिया — सेल्यूकस के अधीन वर्तमान में ईरान 1794 में स्वतन्त्र हुआ (Iran)



चीता (यूनान साम्राज्य)

दानि. 7 : 6



भयंकर और डरावना पशु (रोमी साम्राज्य)

दानि. 7 : 9 - 10

इस विभाजन का रहस्य नबूकदनेस्सर की मूर्ति में नहीं दर्शाया गया है। वहां यह बात गुप्त रखी गयी है। इस प्रकार साम्राज्य का विभाजन चीते के चार सिरों द्वारा प्रकट किया गया है। यह बात दानिय्येल के समझ में न आने से वह परेशान रहा पर मेंढक और बकरे के दर्शन के समय यह भेद उसको समझाया गया (इसका वर्णन अध्याय 8 में है)। यह साम्राज्य B.C.330 से 150 तक अर्थात् 180 वर्ष तक शासन में रहा।

4. चौथा जन्तु – (नाम रहित पशु)

रोम (B.C.146 A.D.4760)

उसी रात दानिय्येल को एक अलग दर्शन में यह चौथा पशु दिखाया गया। यह पशु रोम साम्राज्य का संकेत है। यह नबूकदनेस्सर की मूर्ति के लोहे के भाग से संकेत किया गया है। उसका वर्णन यूं आया है: “फिर इसके बाद मैंने स्वप्न में दृष्टि की ओर देखा, कि एक चौथा जन्तु है जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है; और उसके बड़े-बड़े लोहे के दांत हैं। वह सब कुछ खा डालता है और चूर-चूर करता है और जो बच जाता है, उसे पैरों से रौंदता है। और वह सब पहले जन्तुओं से भिन्न है; और उसके 10 सींग हैं। मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उनके बीच एक और छोटा सा सींग निकाला और उस के बल से उन पहले सींगों में से तीन उखाड़े गये; फिर मैंने देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आँखें, और बड़ा बोल बोलने वाला मुंह भी है”।

यह चौथा जन्तु चौथे साम्राज्य का संकेत है। इस दर्शन की व्याख्या का पद 19 में वर्णन किया गया है। वहां लिखा है कि यह वह अन्तिम मानवीय साम्राज्य है। लेकिन इस जन्तु के बारे में समझने से पहले एक और दर्शन दानिय्येल को दिखाया गया। वह परमेश्वर द्वारा इस संसार में स्थापित होने वाले साम्राज्य की चर्चा है। सो हम इस चौथे साम्राज्य के बारे में पहले चर्चा कर लेते हैं।

यह चौथा जन्तु एक विशेष शक्ल नहीं रखने वाला है। इस प्रकार का एक जन्तु संसार के किसी भी जंगल में नहीं पाया जाता है। दानिय्येल ने उसको भयंकर और डरावना जन्तु बताया है। लेकिन यह भयंकर और डरावना इसलिये है क्योंकि यह तीन जानवर मिलकर एक है। यह समझने के लिये हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का सहारा लेना पड़ेगा। प्र.वा. 13:1,2 में लिखा है: **“और मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे; और उसके सिरों पर निब्दा के नाम लिखे हुए थे। और जो पशु मैंने देखा, वह चीते की नाई था; और उसके पांव भालू के से, और मुंह सिंह का सा था”**।

इस प्रकार का एक पशु यदि आज निकल कर आए और आपने उसे देख लिया तो क्या आपके लिये वह भयंकर और डरावना नहीं होगा? कई लोग रोज़ दिखने वाले कुत्ते से डरते हैं तो फिर इस प्रकार के भयंकर जानवर से क्यों नहीं डरेंगे। बेहोश न हो जाए तो गनीमत है।

सो यह चौथा पशु रोम साम्राज्य का संकेत देता है। यह चौथा साम्राज्य अन्य तीनों साम्राज्य के स्वभाव कठोर और क्रूरता को अपने में समेटे हुए है। वह चार शक्ल अपने में रखे हुए है। मुंह सिंह का सा है जो बाबुल साम्राज्य का संकेत है। फिर शरीर चीते के समान है जो तीसरा साम्राज्य यूनान को दर्शाता है। रीछ या भालू का पांव मादी फारसी साम्राज्य का संकेत है। तो तीनों पहले के साम्राज्य के स्वभाव को अपने में समाया हुआ यह भयंकर स्वरूप, रोमी साम्राज्य को प्रतिनिधित्व करता है। इस पशु के दांत लोहे के थे जो नबूकदनेस्सर की मूर्ति में लोहे के जांघ और पैरों का भाग है जो रोम साम्राज्य को संकेत किया है। वह इस लोहे के दांत से सब कुछ खा डालता है और चूर-चूर करता है और बच जाने पर पैरों से रौंद डालता है। यह उसके कठोरतम शासन प्रणाली का संकेत है। रोमी शासन अन्य सभी साम्राज्य और शासन से लोहे के समान कठोर रहा।

नबूकदनेस्सर की मूर्ति में जांघ और पैरों का भाग है। जैसे पांव लम्बे हैं, ठीक इसी प्रकार रोमी साम्राज्य के शासनकाल बहुत लम्बा रहा। वे संसार पर अपना शासन B.C.146-A.D.476 तक करते रहे। जिस प्रकार मूर्ति में कमर के बाद दो पैर अलग-अलग दिखाई देते हैं ठीक इसी प्रकार

रोमी साम्राज्य आगे चलकर दो भाग में विभाजित हो गया। B.C. 146 में आरंभ हुए रोमी साम्राज्य A.D. पहली शताब्दी में आकर बहुत ही उन्नति प्राप्त कर लिये। लेकिन A.D. चौथी शताब्दी में पहुंच कर वह विभाजित हो गया और पश्चिमी रोम और पूर्वी रोमा के नाम से जाना गया। A.D. 15 वीं शताब्दी में पश्चिमी रोमा साम्राज्य कई जातियों के अधीन हो गये। A.D. 15 वीं शताब्दी में पूर्वी रोम तुर्कियों के आक्रमण के पश्चात् तुर्की राज्य में परिणित हो गया। इस प्रकार दोनों विभाग साम्राज्य शासन से लोप हो गये।

लेकिन आज भी रोमी साम्राज्य का प्रभाव पूरे यूरोप में साया कर रहा है बल्कि सारे संसार में असर कर रहा है। आधुनिक यूरोपीय राष्ट्र लगभग सभी राष्ट्र रोमी साम्राज्य के नियम संहिता के अनुसार ही शासन कर रहे हैं। रोमी नियम संहिता सारे विश्व राष्ट्र को नियंत्रित कर रहा है। लेकिन रोमी शक्ति आज एक दस संयुक्त राज्य के रूप में संसार में नहीं है। रोमी साम्राज्य आज सारे संसार में अपने प्रभाव को डालते हुए जन समुदाय रूपी सागर में डूबा पड़ा है। वह एक समय जन समुदाय रूपी सागर से बाहर निकलने के संबन्ध में बाईबल की भविष्यवाणी पूर्व सूचना दे चुकी है। मतलब एक समय रोमी साम्राज्य फिर से एक साम्राज्य के रूप में प्रकट होने वाला है।

परमेश्वर का राज्य

चौथे जन्तु का दर्शन देखकर उसकी व्याख्या कर समझाने से पहले एक और दर्शन उससे एकदम लगा हुआ दिखाया गया था। दानिय्येल ने उस दृश्य को भी बड़े स्पष्ट रूप में देख लिया। वह दृश्य परमेश्वर पिता से राज्य और शासन का अधिकार प्राप्त करने का दृश्य था। वह वर्णन इस प्रकार आया है, “मैंने देखते-देखते क्या देखा, कि सिंहासन रखे गये, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से देख पड़ते थे। उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे, फिर न्यायी बैठ गये, और पुस्तकें खोली

गयी” (दानि-7:9,10)।

यह दृश्य स्वर्ग का है। पृथ्वी पर उठने वाले और शासन करने वाले साम्राज्यों और शासन प्रणाली का वर्णन कर दानिय्येल को दर्शाया और उसके बाद एकदम अन्त में होने वाले ईश्वरीय शासन को यहां प्रकट किया गया है। यह शासन मानवीय शासन की समाप्ति पर प्रकट होने वाला है। यह ईश्वरीय शासन आरंभ होगा तो वह अनन्तकाल तक चलेगा। यह कभी अन्त न होने वाला राज्य और शासन रहेगा। उसके बारे में लिखा है, **”और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक नहीं टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जायेगा”** (दानि-2:44) ।

लेकिन यहां का दर्शन जो दानिय्येल को दिया गया है, वह राज्य स्थापित करने एवं अन्तिम न्याय का अधिकार आदान-प्रदान करने के संबन्ध में है। यहां सिंहासन रखे गये और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ, आदि वर्णन प्रकाशितवाक्य के अध्याय.4:2-4 तक के वर्णन के साथ मिलता जुलता है।

दोनों एक ही वर्णन हैं। यहां सिंहासन पर विराजमान अति प्राचीन स्वयं परमेश्वर पिता हैं। पिता परमेश्वर सिंहासन पर बैठे हुए हैं। यह सिंहासन परमेश्वर भ्रमण करने के लिये उपयोग करने वाला सिंहासन है। क्योंकि इसमें पहिये लगे हुए हैं। यह सिंहासन उठाने वाले विशेष स्वर्गदूत भी हैं (यहेज-1:4-27)। आवश्यकतानुसार परमेश्वर पृथ्वी पर भ्रमण करके अपने लोगों की सहायता करता और उनके शत्रुओं पर न्याय भी उड़ेलता है।

खैर यह सिंहासन स्वर्ग में रखा गया है। सिंहासन पर पिता परमेश्वर विराजमान हैं। उसके हजारों लाखों स्वर्गदूत सेवा ठहल कर रहे हैं। परमेश्वर का एक नाम सेनाओं का यहोवा है, सो वह यहां पूरा हो रहा है। परमेश्वर अपने स्वर्गीय सेनाओं के बीच में सिंहासन पर विराजमान है। यहां का विशेष कार्यक्रम अपने पुत्र यीशु मसीह को (मनुष्य के सन्तान को) शासन और न्याय का अधिकार देना है। क्योंकि पिता किसी का न्याय नहीं करता लिखा है, **“और पिता किसी का भी न्याय नहीं करता, परन्तु**

न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है” (युहन्ना-5:33)। सो यीशु मसीह सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर पिता से अधिकार लेने आता है।

उसके संबन्ध में लिखा है, “मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखा, मनुष्य की सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हो, उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरेगा” (दानि-7:13,14)। तभी यहां सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर पिता न्याय या शासन स्वयं नहीं कर रहा है पर वह पुत्र को अधिकार प्रदान करने का कार्यक्रम सम्पन्न कर रहा है।

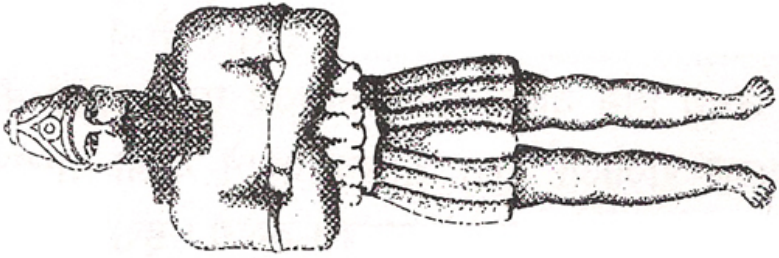
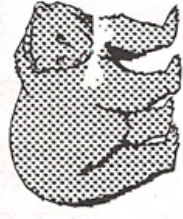
उस प्राचीन का वस्त्र हिम सा उजला है। मतलब यह उस पवित्रता का द्योतक है। सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे, अर्थात् यह उसकी सनातनता का संकेत है। उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से दिखाई पड़ते थे अर्थात् यह उसके न्याय की भयंकरता को दर्शाता है। पुस्तकें खोली गयी अर्थात् होने वाले न्याय किताबों में लिखे विवरण के अनुसार होगा। एक मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक के सारे कार्यकलाप स्वर्ग में, स्वर्गीय दफ्तर में लिखित रूप में सुरक्षित है। स्वर्ग में कई प्रकार की पुस्तकें हैं अर्थात् जीवन की पुस्तक, यादगारी की पुस्तक और न्याय की पुस्तक आदि। न्याय के दिन किताबें खोली जायेंगी और किताबों के वर्णन के अनुसार सारे मानव जाति का न्याय होगा। मतलब न्याय के दिन कोई बच नहीं सकते न वे विवाद कर सकते हैं। सो इस सिंहासन के समक्ष आकर पुत्र, प्रभु यीशु मसीह पिता से शासन और न्याय का अधिकार ले रहा है और संसार के मानवीय शासन प्रणाली के अन्त में अपना राज्य इस संसार में स्थापित करेगा। पहले एक हजार साल का राज्य। उसके बाद युगानुयुग का शासन। उस समय मसीहों विश्वासियों की वह प्रार्थना पूरी होगी, कि “तेरा राज्य आए”।

इस दर्शन के बाद दानिय्येल दर्शन समझाने वाले स्वर्गदूत से उन जन्तुओं के बारे में पूछताछ करता है (दानि.7:15-18)। समझाने वाले ने

कहा चार बड़े-बड़े जन्तुओं का भेद चार राज्य हैं। फिर उसने चौथे जन्तु के बारे में मालूमात किया। उसको समझाया गया कि यह चौथा जन्तु चौथा साम्राज्य है अर्थात् रोमी साम्राज्य। यह संसार के अन्दर शासन कर चुके हैं। यह दानिय्येल को दर्शन देते समय भविष्यवाणी थी पर आज वह पूरी होकर हमारे सामने इतिहास बन चुकी हैं। लेकिन इस चौथे जन्तु के दर्शन में कुछ बातें हैं जो अभी भी भविष्यवाणी के रूप में बताया गया है, **“मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उनके बीच में से एक और छोटा सा सींग निकला, और उसके बल से उन पहले सींगों में से तीन उखाड़े गये। फिर मैंने देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आंखें, और बड़ा बोल बोलने वाला मुंह भी है”** (दानि-7:8)। यहां जो वर्णन है अर्थात् 10 सींग, वह मूर्ति में भी दर्शाया गया है, जो 10 उंगलियों के रूप में बताया गया है। दोनों एक ही बात का संकेत देते हैं। यह रोम साम्राज्य के फिर से उदय होने के बारे में वर्णन करता है।

फिर से उदय होने वाला रोमी साम्राज्य

जैसे हम पहले देख चुके हैं, रोमी साम्राज्य संसार के अन्दर बहुत लम्बे समय तक शासन करते रहे अर्थात् B.C.146 से लेकर A.D.476 तक। फिर वह लोप हो गया। लेकिन इस भविष्यवाणी के मुताबिक रोमी साम्राज्य फिर से उदय होकर संसार के अन्दर शासन करेगा। लेकिन फिर से उदय होने वाला रोमी साम्राज्य एक सम्राट के द्वारा शासन न करके 10 संयुक्त राजाओं द्वारा शासन करने वाली शासन प्रणाली होगी। 10 लोग मिलकर संयुक्त रूप में शासन करेंगे। इससे पहले कि यह शासन संसार में आए मूर्ति के पांच के भाग का भी शासन प्रकट होना है। वह आज वर्तमान काल में पूरे संसार में चल रहा है अर्थात् मिट्टी और लोहे के मिश्रण के समान शासन। यह प्रजातंत्र का संकेत है। जिस प्रकार मिट्टी और लोहा मिलाने पर भी मिलता नहीं ठीक उसी प्रकार आज का प्रजातन्त्र है। पांच साल शासन करने के उद्देश्य से शपथ ग्रहण कर वचनबद्ध होते हैं पर कभी तेरह दिन में, कभी 1½ महिने में कभी तीन महिने में गिर जाते हैं। क्योंकि लोहा और मिट्टी है। यह प्रजातंत्र का समय है। इससे सारे संसार के मानव आज नाखुश हैं।

दानियेल के दर्शन एवं नबुकदनेस्सर के स्वप्न के आधार पर साम्राज्यों का तुलनात्मक अध्ययन				
नबुकदनेस्सर का स्वप्न जिसमें साम्राज्यों को मूर्ति के रूप में दिखाया गया	नबुकदनेस्सर द्वारा स्वप्न में देखी गयी मूर्ति	साम्राज्य जिन्हें दर्शन में देखा गया	दानियेल द्वारा स्वप्न में देखे गये जन्तु	दानियेल का स्वप्न जिसमें साम्राज्यों को पशुओं के रूप में दर्शाया गया
सिर चोखे सोने का (दानि 2:32) छाती और बाहें चांदी की (दानि 2:32) पेट और जांघे पीतल की (दानि 2:32) पांव लोहे के (दानि 2:33) चर मिट्टी और लोहे के (दानि 2:)		बाबुल साम्राज्य B.C.606 से B.C.536 मादी फारसी साम्राज्य B.C.536 से B.C.330 यूनान साम्राज्य B.C.330 से B.C.146 रोम साम्राज्य B.C.146 से A.D.476 लोकतंत्र (Democracy) वर्तमान शासन प्रणाली	   	सिंह दानि 7:1-4 रीछ (दानि 7:5) चीता (दानि 7:6) भयानक एवं डरावना जन्तु (दानि 7:7,8; प्र.वा.13:1,2)

दानिय्येल द्वारा साम्राज्य का दर्शन

साम्राज्य के नाम	शासनावधि	साम्राज्यों के प्रतीक
बाबुल साम्राज्य (वर्तमान में ईराक)	B.C.606 से B.C.536	सिंह दानि 7:1-4
मादी फारसी साम्राज्य (वर्तमान में ईरान)	B.C.536 से B.C.330	रीछ (दानि 7:5)
यूनान साम्राज्य	B.C.330 से B.C.146	चीता (दानि 7:6)
रोम साम्राज्य	B.C.146 से A.D.476	भयानक एवं डरावना जन्तु (दानि 7:7,8; प्र.वा. 13:1,2)

सो कुछ समय पश्चात् जनसमुदाय रूपी सागर में उथल-पुथल होगा और यह चौथा जन्तु नये रूप में, प्रकाशित वाक्य 13 अध्याय के वर्णन के अनुसार फिर से उदय होगा (प्र.वा-13:1)। लेखक द्वारा लिखित प्रकाशितवाक्य के व्याख्या पुस्तक लेकर पढ़िये। फिर से उदय होने वाले रोमी साम्राज्य में जो कि प्रजातन्त्र के अंत में प्रकट होने वाला है, 10 राजाओं द्वारा शासन किए जाने वाली संयुक्त शासन प्रणाली होगी। कुछ समय वे इस संसार पर शासन करेंगे। वे लोग शासन कर रहे होंगे और 10 सींगों के बीच में से एक छोटा सा सींग उगेगा। यह दिखने में छोटा है पर इसके मनुष्य की सी आंखें और बड़ा बोल बोलने वाला मुंह है। यह विरुद्ध मसीह है। विरुद्ध मसीह प्रकट होते ही ये 10 राजा उनके साथ मुकाबला और मुठभेड़ के लिये तैयार होंगे। तब उनमें से 3 सींगों को उखाड़ेगा अर्थात् तीन राजाओं को मार डालेगा। तब बाकी 7 राजा उस के संग शामिल हो जायेंगे। वे शासन उसको सौंप देंगे। याद रखिये यह विरुद्ध मसीह B.C. 606 में आरंभ किये गये अन्य जातीय शासन का अन्तिम राजा होगा। अन्य जातियों के शासन का प्रथम राजा नबूकदनेस्सर था तो अन्तिम राजा विरुद्ध मसीह होगा। विरुद्ध मसीह के बारे में एक और बात यहां बतायी गई है। वह यह है कि वह तीन राजाओं को पराजित करके अपने राज्य की स्थापना करने के पश्चात् अपना शासन आरंभ करेगा। इस शासन के समय के बारे में यहां वर्णन आया है कि **“वरन साढ़े तीन काल तक वे सब उसके वश में कर दिये जायेंगे” (दानि-7:25)**। इस पद से समझ में आता है कि वह भारी क्लेश के सात साल के अन्तिम साढ़े तीन साल की अवधि में आक्रामक शासन करेगा। उस समय कलीसिया यहां संसार में नहीं रहेगी। कलीसिया के उठा लिये जाने के पश्चात् विरुद्ध मसीह शासन के लिये प्रकट होते हैं।

वह प्रकट होने के प्रारंभिक दिनों में बड़े प्रेमपूर्वक सब लोगों से व्यवहार करेगा। वह राजनीतिक व्यक्ति होने के कारण सबका सहयोग प्राप्त करने के लिये इस प्रकार करते हैं। उसको अधिकार और सामर्थ्य शैतान से प्राप्त होने के पश्चात् पशु बन जाता है और घमण्ड से भर जाता है वह इतना घमण्डी हो जाता है, यहां तक वह परमेश्वर के विरुद्ध भी बात करेगा। लिखा है, **“और वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा” (दानि-7:25)**। इस वचन के मुताबिक

वह परमेश्वर के विरुद्ध ही नहीं वरन परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध भी कार्य करेगा। लिखा है वह पवित्र लोगों को अर्थात् यहूदियों और उस समय राज्य के सुसमाचार सुनकर यीशु मसीह पर विश्वास करने वालों को भी सतायेंगे। लेकिन भारी क्लेश के अन्त में प्रभु यीशु मसीह सब पवित्र लोगों के साथ और हजारों लाखों स्वर्गदूतों के साथ पृथ्वी की ओर आयेगा और अन्य जातियों के समय को समाप्त करेगा और अन्य जाति राजा विरुद्ध मसीह को पराजित करेगा और उसे पकड़कर आग की झील में अर्थात् नरक की आग में झोंक देगा। वहां वह तड़पते रहेंगे। तब प्रभु यीशु मसीह पिता से प्राप्त किये गये अधिकार के अन्तर्गत अपना कभी अन्त न होने वाला राज्य स्थापित करेगा। अन्य जातीय शासन और बीच में आए प्रजातंत्र एवं रोमी साम्राज्य का शासन आदि को समाप्त करेगा। ईश्वरीय शासन सारे संसार में स्थापित होगा।

अध्याय 8

मेढ़ा और बकरे का स्वप्न

इस अध्याय के दर्शनों को बेलशस्सर राजा के शासन के तीसरे वर्ष में दिया गया है अर्थात् भीत पर बाबुल के पतन और पराजय के वाक्य लिखे जाने से पूर्व यह दर्शन दानिय्येल को दिया गया। इस दर्शन के समय दानिय्येल एलाम नाम प्रान्त में शूशन नाम राजगढ़ में रहता था। एलाम प्रान्त मादी फारसी साम्राज्य की राजधानी थी। मतलब इस साम्राज्य की दो राजधानी थी जैसे महाराष्ट्र की दो राजधानी है, मुम्बई और उप राजधानी नागपूर। यह नेहम्याह का भी घर था जहां एस्तेर की पुस्तक की घटनाएं वर्णित है।

इस अध्याय में मादी फारसी साम्राज्य और यूनान साम्राज्य के बारे में मुख्य रूप में वर्णन किया है। यहां चार जन्तुओं के द्वारा दिये हुए दर्शन को और अधिक स्पष्ट रूप में वर्णन आया है। यहां चार जन्तुओं द्वारा दिये हुए दर्शन द्वारा दानिय्येल को समझाया गया है। इस दर्शन में बाबुल साम्राज्य की चर्चा नहीं है न ही रोमी साम्राज्य का वर्णन आया है। केवल दो साम्राज्यों का वर्णन किया गया है।

मेढ़े का दर्शन (मादी फारसी साम्राज्य)

दानिय्येल जब एलाम नाम प्रान्त में शूशन राजगढ़ में रहता था, तो वह रात्रि दर्शन में यह देखा कि वह ऊलै नदी के किनारे खड़ा है। तो उसने एक मेढ़े को देखा जिसकी दो सींगें हैं। उसके दोनों सींग बड़े हैं परन्तु उनमें से एक अधिक बड़ा है। जो बड़ा है वह दूसरे के बाद निकला। इस वर्णन से हम आराम से समझ सकते हैं कि यह मादी फारसी साम्राज्य है। यह उसके दो सींगों से स्पष्ट किया गया है। छोटा सींग पहले शासन किया गया

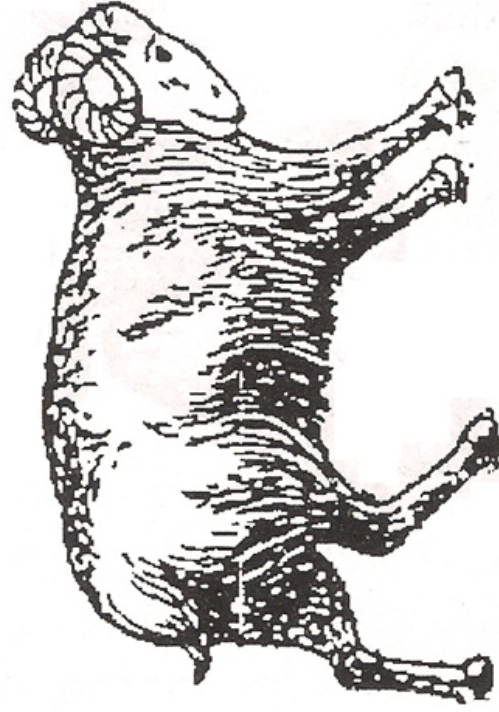
मादी राज्य है । बड़ा सींग बाद में आया, मतलब मादियों के शासन के पश्चात् वे शासन में प्रवेश किये । अर्थात् फारसी साम्राज्य का शासन ।

दानियेल के देखते देखते वह पश्चिम, उत्तर और दक्खिन की ओर सींग मारता है, और कोई जन्तु उसके सामने खड़े नहीं हो पाता और न ही कोई किसी को उसके हाथ से छुड़ा सकता है; और वह अपनी ईच्छा के अनुसार काम करके बढ़ता जाता था (दानि-8:4)। इस मेढ़े का तीन दिशा में सींग मारने का अर्थ है, उन दिशाओं में पाए जाने वाले राष्ट्रों अर्थात् पश्चिम में बाबुल साम्राज्य, दक्षिण में लिबिया और उत्तर में मिस्र देश को पराजित कर अपना साम्राज्य स्थापित करना। यहां तीन पसुली दांतों तले रखकर प्रकट हुआ रीछ मादी फारसी साम्राज्य का संकेत है। फारसी राज्य उत्तर की ओर लिबिया को आक्रमण करके अर्मीनिया तक और दक्षिण में मिस्र पर चढ़ाई कर इथियोपिया (Ethiopia) तक और पश्चिम में बाबुल को आक्रमण कर सिरिया तक अपने अधिकार के सीमा का विस्तार किया। इस प्रकार क्षयरक्ष राजा के समय में फारस साम्राज्य हिन्दुस्तान से लेकर कूश देश तक 127 प्रान्तों वाला विशाल साम्राज्य था। सो यह मेढ़ा मादी फारसी साम्राज्य का संकेत है।

याद रखिये यहां मादी फारसी साम्राज्य के लिये मेढ़े को बताया गया है उसके बारे में यह लिखा है कि उसके हाथ से कोई किसी को बचा नहीं सकता है। भला बताईये बाबुल के लिये सिंह बताया गया है वह पशुओं का राजा है लेकिन उसके सामने मेढ़ा कितना कमजोर पशु है। परन्तु वचन में लिखा है कि सिंह भी उसके सामने खड़ा नहीं हो सकता था। परमेश्वर मेढ़े को उठायेगा तो सिंह भी उसके सामने ठहर नहीं सकेगा।

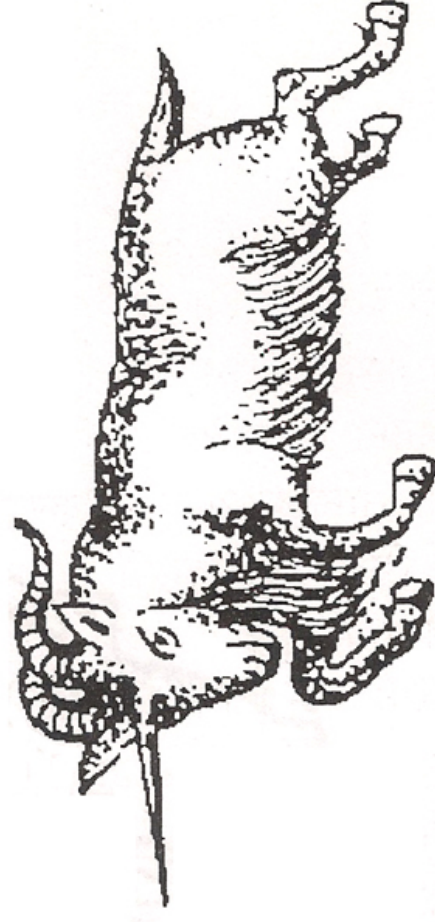
प्रिय मित्र, परमेश्वर के हाथ में एक मेढ़े के समान बनना अच्छा है बजाय इसके कि परमेश्वर द्वारा त्यागा हुआ एक सिंह बने। सिंह होगा पर परमेश्वर छोड़ देगा तो मेढ़े से भी उसको डरना पड़ेगा। सिंह को पराजित कर मेंढ़ा अर्थात् मादी फारसी साम्राज्य, साम्राज्यों की सूची में द्वितीय साम्राज्य के रूप में संसार में स्थापित हुआ और शासन किया।

दानिय्येल 8 : 1 - 27



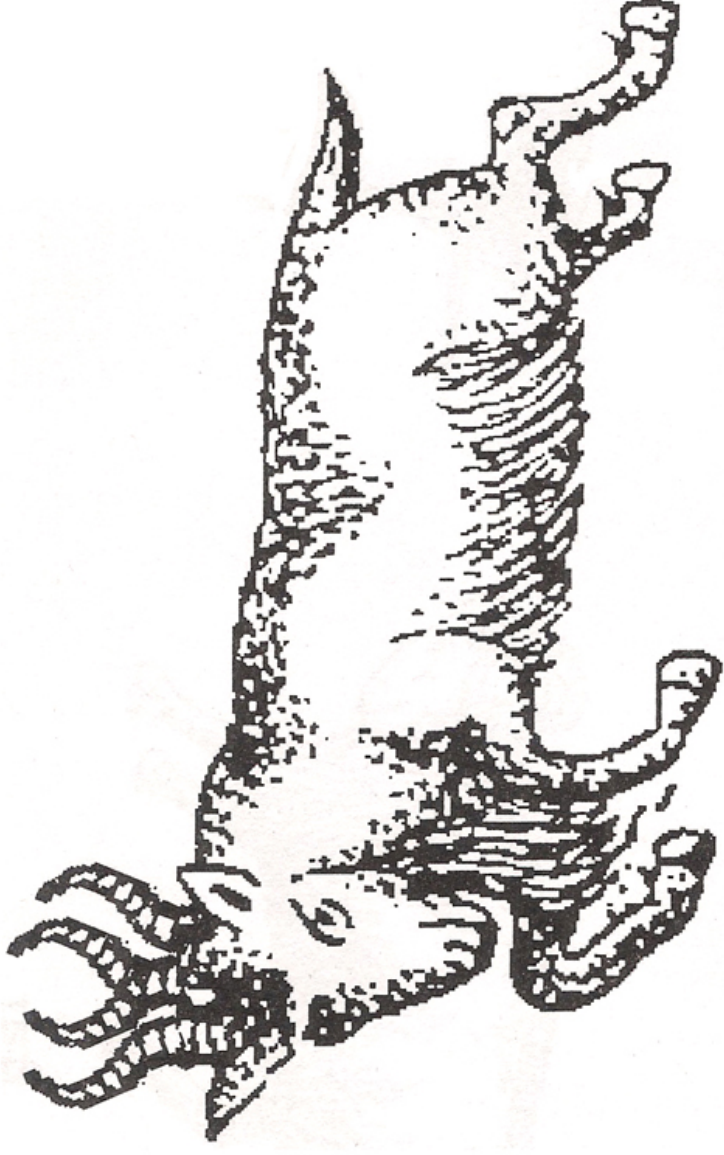
मेढा

मादी फारसी साम्राज्य



बकरा

युनान साम्राज्य



बकरा (विभाजित यूनान साम्राज्य)

दानि. 8 : 8 - 12

बकरे का दर्शन (यूनान साम्राज्य)

दानियेल पहले वाले स्वप्न के बारे में सोच ही रहा था कि एक बकरा पश्चिम से चला आया। वह पृथ्वी के ऊपर ऐसा फिरा कि चलते समय भूमि पर पांव न छुआया। यह यूनान साम्राज्य का संकेत है वह पृथ्वी पर पांव न छुआया— उसके तीव्र गति, अचानक प्रकट होने की सच्चाई को दर्शाता है। वह फारसी साम्राज्य को चकनाचूर करना आरंभ किया। यूनानी लोग अपने नेता सिकंदर महान के नेतृत्व में फारसी साम्राज्य को ग्रिनिकस् लड़ाई में पूरी तौर से पराजित किया।

बकरे की आखों के बीच में से निकले वह देखने योग्य सींग सिकन्दर महान था जो यूनान साम्राज्य का शासनकर्ता था। बकरा मेढ़े के पास जाकर झुंझलाया और मेढ़े को मारकर उसके दोनों सींगों को तोड़ दिया। उसको जमीन पर डालकर रौंद डाला। अर्थात् मादी फारसी साम्राज्य को पूरी तौर से पराजित किया। उसके बाद सिकन्दर महान सारे संसार में जाकर सारे राष्ट्रों और राज्यों और राजाओं को पराजित किया। बिलकुल कम उम्र में और बहुत ही कम समय (तीन साल) में उसने सारे संसार के राष्ट्रों को अपने पावों तले कर दिया। कोई देश शेष न रहा जिसे उसने अपने अधीन न किया हो। कहा जाता है लड़ने और जीतने के लिये कोई राज्य और राजा शेष न थे। जब 33 वर्ष की अवस्था में उसने पूरे संसार को अपने अधीन कर दिया। उसके पश्चात् कहा जाता है, वह दुनियां के नक्शे को देखकर एक बार रोया और कहा, अब मैं जीवन भर क्या करूंगा? तब वह एक दिन समुद्र के किनारे गया और विशाल समुद्र को देखकर चिल्लाया और कहा कि, “यदि तुम भी कोई देश होतें और तुम में भी कोई राजा होता तो मैं तुम्हें भी पराजित कर देता”। खैर, यह अतिशयोक्ति हो सकती है, पर यह सत्य है कि छोटी सी उम्र में उसने पराक्रम का काम किया और यूनान साम्राज्य की स्थापना की।

लड़ते लड़ते वह भारत में आया। पंजाब की सीमा पर मच्छर ने उसको काटा और वह मलेरिया से पीड़ित हो गया। उसको नहीं मालूम था कि भारत के मच्छर इतने खतरनाक हैं। वह कहने लगा मुझे यहां से ले

चलो। स्वदेश पहुँचकर वह अपनी पत्नीयों और रखेलियों के साथ तरणताल (swimming pool) में खूब देर तक नहाया, नहाकर निकला तो मलेरिया बढ़ गया और निमोनिया में परिणित हो गया और अपने जीवन से हाथ धो बैठा।

लम्बे 12 साल की लड़ाइयों के पश्चात् साम्राज्य स्थापित किया पर वह लम्बे समय तक उसमें शासन नहीं कर पाया। अनैतिकता और अपवित्रता के जीवन के कारण जवानी में ही उसे अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। वह सभी राष्ट्रों पर विजयी हुआ पर अपने जीवन पर जीत हासिल नहीं कर पाया।

प्रिय मित्र आप शायद बहुत भागा दौड़ी कर रहे होंगे, अपने लिये साम्राज्य स्थापित करने की योजना बना रहे होंगे अपने लिये बहुत कुछ जुटा रहे हैं, पर उसका आनन्द न उठा सके तो क्या फायदा। केवल 33 वर्ष की अवस्था में सिकन्दर महान इह जीवन समाप्त कर आत्मलोक में प्रवेश कर गया। कहा जाता है कि मृत्यु से पहले उसने अपने चार सेनापतियों को बुलाकर कहा कि मृत्यु के बाद मेरा कफन शहर से ले जाते समय दोनों हाथ पेटी के दोनों तरफ बने छेद में से बाहर की ओर डाल देना। उन अधिकारियों ने पूछा कि महाराज इसका क्या तात्पर्य है? उस ने बताया कि मेरी जनता को ज्ञात हाने दो कि मैं साथ में कुछ नहीं ले जा रहा हूँ।

याद रखिये आप इस संसार में आक्रामक रूप में जीवन बिताएं, अन्याय करके कमाएं और उसको अनुभव न कर सके तो क्या फायदा? असमय आत्मलोक में जाना पड़े तो क्या लाभ? आत्मिक जीवन बिताएं, आत्माओं को जीते, अनन्तकालीन जीवन को प्राप्त करें। वही केवल प्रयोजन का है। आज ही आत्मा के उद्धार के लिये प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में आमंत्रित करें और अंगीकार करें।

इस वर्णन में बकरे का आकर्षक सींग टूटने के पश्चात् अर्थात् यूनान साम्राज्य के सम्राट सिकन्दर महान की मृत्यु के पश्चात् उस एक सींग के स्थान पर चार सींग निकलकर आए। B.C.323 में बड़ा सींग टूट गया और उस की सन्ती देखने योग्य चार सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगा। यह सिकन्दर महान की मृत्यु के उपरान्त साम्राज्य के चार भागों

में विभाजन को दर्शाता है। साम्राज्य सिकंदर के चार सेनापतियों द्वारा बांट लिये गये। वह विभाजित राज्य क्रमानुसार एशिया मैनर (त्रोस), मकिदुनिया (Macedonea), मिस्र (Egypt), और सिरिया (Sirya) है। इन राज्यों को कौन कौन अधिकार में लिये, यह इससे पहले हम देख चुके हैं।

छोटा सींग

इन चार सींगों में से एक सींग से एक छोटा सींग निकल कर आया। उसके बारे में 8:9-25 तक वर्णन किया गया है। सबसे पहले यह सवाल आता है कि 7 अध्याय और 8 अध्याय का छोटा सींग एक ही है? और 9:26,27 एवं 11:36-45 तक वर्णन किये गये, आने वाला प्रधान और **“अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला राजा”** ये भी वही है? या अलग-अलग व्यक्ति है? यह अध्ययन द्वारा हमें पता लगाना है। 7वें अध्याय में बताया गया छोटा सींग विरुद्ध, मसीह है। उसमें कोई सन्देह नहीं है। लेकिन यहां 8वें अध्याय में वर्णन करने वाला छोटा सींग दो व्यक्तियों के लिये उपयोग किये गये हैं। पहला वर्णन अन्तियोकुस एपिपानस के बारे में है। वह शैतान की शक्ति द्वारा कार्य किया है (8:24)।

हर भविष्यवाणी की तीन प्रकार से पूर्ती होती है:-

- (1) अक्षरसः (Literally)
- (2) आत्मिक पूर्ती (Spiritual fulfillment)
- (3) आंशिक पूर्ती (Partial fulfillment)

इस प्रकार से देखा जाए तो इस अध्याय का छोटा सींग अक्षरसः अन्तियोकुस एपिपानस है लेकिन भविष्यवाणी की भाषा में इसकी पूर्ति विरुद्ध मसीह के प्रकट होने से पूरी होगी। मतलब आने वाला विरुद्ध मसीह ठीक अन्तियोकुस एपिपानस के समान ही होगा। दोनों का स्वभाव और कार्य एक समान होगा। इस छोटा सींग का उस समय अन्तियोकुस एपिपानस के साथ पूरा हुआ लेकिन विरुद्ध मसीह के साथ पूरा होना बाकी है।

इस भविष्यवाणी को समझने के लिये इस अध्याय के दो वर्णनों को पढ़ना चाहिये। पहले दानियेल-8:9-14 तक हम लोग देखेंगे; **“फिर इन**

में से एक छोटा सा सींग और निकला, जो दक्खिन, पूरब और शिरोमणी देश की ओर बहुत ही बढ़ गया । वह स्वर्ग की सेना तक बढ़ गया; और उसमें और तारों में से भी कितनों को भूमि पर गिरकर रौंद डाला । वरन वह उस सेना के प्रधान तक भी बढ़ गया, और उसका नित्य होमबलि बन्द कर दिया गया; और उसका पवित्र वासस्थान गिरा दिया गया । और लोगों के अपराध के कारण नित्य होमबलि के साथ सेना भी उसके हाथ में कर दी गयी, और उस सींग ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया, और वह काम करते-करते सफल हो गया । तब मैंने एक पवित्र जन को बोलते सुना; फिर एक और पवित्र जन ने उस पहले बोलने वाले से पूछा, नित्य होमबलि और उजड़वानेवाले अपराध के विषय में जो कुछ दर्शन देखा गया, वह कब तक फलता रहेगा, अर्थात् पवित्र स्थान और सेना दोनों का रौन्दा जाना कब तक होता रहेगा ? और उसने मुझसे कहा, जब तक सांझ और सबेरा दो हजार तीन सौ बार न हों, तब तक वह होता रहेगा; तब पवित्र स्थान शुद्ध किया जायेगा ” ।

इस वर्णन को इतिहास के साथ जोड़कर अध्ययन करने से हमें पता चलता है कि यह वह ऐतिहासिक शासनकर्ता अन्तियोकुस एपिपानस के संबन्ध में है । यह सेल्यूकी शासन में 8 वां राजा था । वह सीरिया में B.C. 175 में सिंहासन पर विराजमान हुआ और 11 साल तक अन्ताकिया (Antioch) में शासन किया । इस क्रूर शासनकर्ता की कहानी, यहूदियों को सताना, मन्दिर को अशुद्ध करना आदि वर्णन 1 मकाबियों में किया गया है जो अपोक्लीपा की एक पुस्तक है । उपरोक्त वर्णन में उसके क्रूर कृत्य का वर्णन है जो उसने यहोवा परमेश्वर की आराधना को मिटाने के लिये किया गया था । उसने अपने आपको बहुत ही ऊंचा किया । उसने महायाजक ओनियास तृतीय का सामना किया और मूसा द्वारा निर्धारित प्रतिदिन के बलिदान को बन्द करवा दिया (29:38-43) । उसने अपने गलत कार्यों को बड़े हास्य रूप में और निन्दाजनक रूप में यहोवा परमेश्वर के आराधनालय में अर्थात् यहूदियों के मन्दिर में किया । उसने बलिदान की वेदी पर एक सुअर को बली चढ़ाया । उसका लहु पवित्र स्थान में छिड़का । परमपवित्र स्थान में जूपिटर देवता की मूर्ती की स्थापना की । उसने अधर्म करता हुआ बढ़ता गया ।

इस समय दर्शन में दानिय्येल एक पवित्र जन को दूसरे पवित्र जन से बोलते हुए सुना, वह पूछ रहा था कि मन्दिर का इस प्रकार अशुद्ध किया जाना और रौंदा जाना कब तक रहेगा। उसका उत्तर यह था कि यह समय सीमा **“2300 सुबह और शाम बताया गया”** । यह किंग जेम्स वर्शन के अनुसार उतना दिन नहीं है । उसके बाद मन्दिर शुद्ध किया जायेगा ।

इस कथन का मतलब यह है कि मन्दिर का रौंदा जाना 2300 प्रतिदिन के बलिदान के समय के लिये है जो एक सुबह और एक शाम को किया जाता है (निर्ग-29:38-43) । जबकि दो बलिदान है जो सुबह शाम चढ़ाया जाता है तो वह कुल समय 1150 दिन होता है । यह मकाबियों के समय की सतावट का ठीक-ठीक कालावधि रही अर्थात् B.C.168 से लेकर 165 तक । इस अवधि के बाद मकाबियों के द्वारा मन्दिर शुद्ध किया गया (॥ मकाबियों-10:1-5) । यह समय 3 साल 2 महीना और 10 दिन का समय रहा । यह एक ऐतिहासिक बात है । यह अन्तियोकुस एप्पिपानस के समय में पूरा हो चुका है ।

भविष्यवाणी के दो प्रकार का संबंध

9-14 तक के पदों में दी गयी भविष्यवाणी के बारिकी से अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि इस भविष्यवाणी का दो प्रकार से संबंध है अर्थात् दो प्रकार की पूर्ति है । उसके प्रारंभिक पूर्ती सिकन्दर महान के साम्राज्य के चार विभागों में से एक अर्थात् सीरिया के राजा अन्तियोकुस में केन्द्रित है । तौभी उस छोटे सींग का स्वभाव एक मुख्य पूर्ती की ओर संकेत करता है अर्थात् अन्तिम दिनों में यीशु मसीह के महिमा के साथ पृथ्वी पर आगमन के कुछ समय पूर्व पूरी होगी । वह विरुद्ध मसीह को संकेत करता है ।

यहां 8:9-12 तक के वर्णन के अनुसार इस भविष्यवाणी की प्रारंभिक पूर्ती अन्तियोकुस में पूरी हो गयी है । पर स्वर्गदूत द्वारा दर्शन समझाए जाने पर यह बताया गया है कि यह एक ऐसे दुष्ट व्यक्ति के बारे में संकेत करता है जो अन्तिम समय में प्रकट होने वाला है । उसके बारे में दो वर्णन किया गया है । पहला वर्णन पद 19 में है, अर्थात् लिखा है, **“तब**

उसने कहा, क्रोध भड़कने के अन्त के दिनों में जो कुछ होगा, वह मैं तुझे जताता हूँ; क्योंकि अन्त के ठहराए हुए समय में वह सब पूरा हो जायेगा” । और इसी बात को और स्पष्ट शब्दों में आगे 23,24 वें पद में लिखा गया है। वहां लिखा है, “और उन राज्यों के अन्त समय में जब अपराधी पूरा बल पकड़ेगा तब क्रूर दृष्टिवाला और पहेली बूझने वाला एक राजा उठेगा। उसका सामर्थ्य बड़ा होगा, परन्तु उस पहले राजा का सा नहीं” । दूसरे अनुवादों में यह आया “परन्तु अपनी शक्ति से नहीं” ।

इन पदों के द्वारा हम समझ सकते हैं कि यहां वर्णन किया गया शासनकर्ता अन्तियोकुस एप्पिपानस के अलावा एक अन्य व्यक्ति की ओर भी संकेत करता है । वह अन्तिम समय में प्रकट होने वाला है । सब शासनकर्ताओं के शासन के बाद अन्तिम राजा के रूप में वह प्रकट होगा । अन्य जाती राज्य का पहला राजा नबुकदनेस्सर था और अन्तिम राजा सब राजाओं और शासनकर्ताओं के अन्त में आने वाला विरुद्ध मसीह होगा । 7वें अध्याय में केवल उसके व्यक्तित्व के बारे में वर्णन आया है । पर 8वें अध्याय में उसके आने के समय के साथ-साथ उसके आने के स्थान के बारे में भी वर्णन किया गया है अर्थात् आने वाला वह दुष्ट व्यक्ति सीरिया से आयेगा ।

आगे लिखा है कि उसका कार्य अपने स्वयं की शक्ति से नहीं होगा। किसी और से शक्ति और अधिकार को प्राप्त कर के साथ कार्य करेगा। प्रकाशितवाक्य 12 अध्याय में हम देखते हैं कि भारी क्लेश के दूसरे और अन्तिम भाग के प्रारंभिक समय में शैतान आकाश मण्डल से गिराया जायेगा। वह अपने वर्षों पुराने अड़्डे से, आकाश मण्डल से गिराया जायेगा तो क्रोध के साथ उतर आयेगा और अपना शैतानिक शक्ति और अधिकार उस अन्तिम शासनकर्ता को प्रदान करेगा । वह शैतान की शक्ति और अधिकार को पाकर कार्य करने से उसका कार्य दुष्टता का कार्य रहेगा ।

वह शैतान की शक्ति और अधिकार से कार्य करने के कारण परमेश्वर के लोग यहूदियों के विरुद्ध वह कार्य करेगा । उसके अलावा उसका मुकाबला करने वाले हर एक को वह सतायेगा । यहूदियों के आत्मिक नेतृत्व करने वाले याजकों का भी वह डट कर विरोध करेगा। इस

प्रकार विरोध करते—करते वह उनके प्रभु अर्थात् यीशु मसीह के भी विरोध में कार्य करेंगे । तब वह अन्त में किसी के हाथ से बिना मार खाए पराजित किया जायेगा और नरक में डाल दिया जायेगा (प्र.वा-19:20;20:10) ।

अन्त में दानिय्येल को बताया गया कि यह दर्शन अन्तिम दिनों में पूरा होने का है, सो उसको बन्द रखे । परन्तु दानिय्येल इस स्वप्न के बारे में सोच—सोचकर परेशान हो गया और वह बीमार हो गया । मनुष्य मानसिक तनाव में आता है, बातों को बराबर समझने नहीं पाते है, तो वह बीमार होने लगता है । सो दानिय्येल कई दिन तक बीमार रहा । उसके बाद वह उठा और राजा के कार्य में लग गया । परन्तु यह दर्शन किसी के समझ में नहीं आया । वह एक जटिल समस्या बन कर रह गयी ।

अध्याय 9 दानिय्येल के “सत्तर सप्ताह का दर्शन”

यहां तक अन्य जातीय राजाओं और साम्राज्यों की चर्चा चल रही थी। उनका आगमन, उनका शासन उनका पतन इत्यादि की चर्चा हो रही थी। पर इस अध्याय से आगे परमेश्वर की प्रजा इस्राएल की चर्चा आरंभ हो रही है। इस्राएलियों से संबन्धित बातें प्रकट कर रहे हैं। इस अध्याय के अन्दर मशहूर 70 सप्ताह का वर्णन पाया जाता है। वह इस्राएल से संबन्धित परमेश्वर के व्यवहार का सीधा-सीधा विषय है। उसको हम सविस्तार वर्णन कर अध्ययन करने का प्रयास करेंगे। लेकिन इससे पूर्व कि हम उस विषय के संबन्ध में विचार करें, इसमें दिये गये प्रारंभिक विषय के संबन्ध में विचार करना अनिवार्य है। वह है दानिय्येल की प्रार्थना।

पद-1-19:- यह घटना मादी साम्राज्य के प्रथम राजा दारा के शासन के प्रथम वर्ष की है। यहूदा राष्ट्र को गुलामी में ले जाने वाला नबुकदनेस्सर और उनके साम्राज्य उसकी समाप्ति की ओर आ गया। दूसरा साम्राज्य मादी फारसी साम्राज्य के शासन का प्रारंभ हो गया। उसका प्रथम शासनकर्ता दारा था जो मादी क्षयर्ष का पुत्र था। उसके शासन के प्रथम वर्ष में दानिय्येल परमेश्वर का वचन पढ़ रहा था। वह मूसा की व्यवस्था के मुताबिक चलने वाला और भविष्यवक्ताओं के पुस्तकों का पठन-पाठन करने वाला था। परमेश्वर के वचन को नियमित रूप में पढ़ने वाला और उस पर विश्वास करने वाला था।

एक दिन वह यिर्मयाह नबी की पुस्तक पढ़ रहा था। पढ़ते-पढ़ते वह उसके 25:11,12 पदों में पहुंचा तब दानिय्येल का दिल आनन्द से भर गया। उसने इस बात का ज्ञान हासिल किया कि यहूदियों के बाबुल की

बन्धुवाई का समय 70 वर्ष का है। आगे पढ़ने लगा तो उसके 29:10 में लिखा है कि, “यहोवा यों कहता है, कि बाबुल के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूंगा, और अपना यह मन- भावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊंगा, पूरा करूंगा”।

इस वचन का पढ़ना दानिय्येल के विचारों को बदलने में काम आया। वह तुरन्त अपना मुंह परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाने लगा। वह प्रार्थना में समय व्यतीत करने लगा। दानिय्येल एक प्रार्थना करने वाला पहले ही से था। वह दिन में तीन बार यरुशलेम की ओर खिड़की खुली रखकर रोज प्रार्थना किया करता था। अनुकूल परिस्थिति में ही नहीं बल्कि विरोध के दिनों में भी उसने प्रार्थना के जीवन से अपने आपको वंचित नहीं किया। प्रार्थना करना उसके जीवन का अटूट अनुभव एवं अभिन्न भाग बन गया था। लेकिन यह एक विशेष प्रार्थना है। यह प्रार्थना वचन के पढ़ने की प्रेरणा के फलस्वरूप हुआ है। यहां की प्रार्थना के संबन्ध में हम कई बातें सीख सकते हैं।

पहली बात, हमें प्रार्थना की प्रेरणा प्राप्त करना है तो परमेश्वर के वचन को अवश्य पढ़ें। परमेश्वर के वचन को पढ़ने से हम परमेश्वर की आशीषों और प्रतिज्ञाओं को मालूम कर सकते हैं। परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाएं हमें प्रार्थना की ओर ले जायेंगी। हम परमेश्वर के सम्मुख बैठकर भरोसे के साथ प्रार्थना कर सकते हैं। दानिय्येल को विश्वास हो गया कि इस्राएलियों की बन्धुवाई खत्म होने पर है और वे शीघ्र ही स्वदेश लौट जायेंगे। एक तरफ दानिय्येल खुशी से भर गया परन्तु दूसरे तरफ वह दुःख से भी भर गया। वह गिड़गिड़ाने लगा। वह गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करने लगा। यह बात पढ़कर कि 70 साल बाद वे स्वतन्त्र होने वाले हैं और बन्धुवाई खत्म होने वाले हैं। सो उन्हें खुश होना चाहिये था। पर उस समय यह सोचने लगा कि वे बाबूल में आने का कारण क्या है। वह उनका पाप और मूर्तिपूजा के कारण हुआ है। मूर्तिपूजा के कारण परमेश्वर उनसे क्रोधित हो गया। परमेश्वर ने कहा तुम लोग उस देश में जाओ जहां से मूर्तिपूजा की उत्पत्ति हुई, मूर्ति पूजा का उद्गम हुआ है। बाबुल में रहकर भी उन्होंने कई बार अन्य देवताओं और मूर्तियों की पूजा की है लेकिन उन हर एक समय में दानिय्येल और उसके मित्र मूर्तिपूजा से बचे रहे।

यहां हम एक विशेष बात को देखते हैं वह यह है कि प्रार्थना में हमको हमारे पाप और अपराध याद आते हैं और हम उसके लिये गिड़गिड़ा सकते हैं। पापों को प्रार्थना में मान सकते हैं और छोड़ने का निर्णय भी ले सकते हैं। वचन में लिखा है, “जो अपने अपराध छिपाकर रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उसको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी” (नीति-28:13)। परमेश्वर के वचन में यह भी लिखा है, “क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढांपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेख न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो” (भजन-32:1,2)।

दानिय्येल गिड़गिड़ाकर, उपवास के साथ, टाट पहन कर, राख में बैठकर प्रार्थना करने लगा। यह स्थिति पुराने नियम में पश्चाताप के लिये दर्शायी गयी है। जब कोई भारी दुःख जीवन में आता है, तभी लोग ऐसी प्रार्थना करते हैं। दानिय्येल ने अपने और अपने लोगों के पापों को स्मरण किया। लोग तो अभी भी मस्त जीवन बिता रहे हैं। पर परमेश्वर का जन दानिय्येल प्रार्थना में लगा हुआ है। प्रार्थना में वह अपने को अन्य लोगों के अपराधों के साथ शामिल करके प्रार्थना कर रहा है। यह जीवन की एक अनिवार्य बात है। यह एक गहन सत्य है कि हम समाज से और समाज के कार्यों से अपने को अलग नहीं कर सकते हैं। मैं सोचता हूं कि इन 68 सालों में दानिय्येल का जीवन परमेश्वर के वचन के मुताबिक रहा है। प्रार्थना में और वचन के पठन-पाठन में, मनन और ध्यान में रहा है। मैं नहीं सोचता कि दानिय्येल ने कोई पाप किया हो। फिर भी जहां अपने लोगों के पापों और अपराधों की बात आयी, उसने अपने को उनके साथ शामिल (identify) किया। वह पापों और कुटिलता को मानने लगा (दानि-9:5-6)। वह यह भी मानता है कि वे अनाज्ञाकारी हैं। प्रभु के दासों की बातें नहीं मानी। भविष्यवक्ताओं की बातें ठुकराई (9:6)।

प्रार्थना में वह परमेश्वर को सच्चा और धर्मी स्वीकार करता है। परमेश्वर को दयालु और करुणा करने वाला स्वीकार करता है। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और विश्वासयोग्यता को स्मरण करता है (9:4-7)। उसी समय अपने लोगों, सभी दर्जे के लोगों के अपराध को वह अंगीकार कर रहा है।

वह प्रार्थना में यह भी स्मरण कर रहा है कि परमेश्वर उनके लोगों और पवित्र नगर का स्वामी है। परमेश्वर के प्रभुत्व और स्वामित्व को वह स्वीकार करता है। मूसा के द्वारा दी गयी व्यवस्था को तोड़ने के अपराध को स्वीकार करके प्रार्थना करता है। उसको तोड़ने के कारण उनकी उजड़ी हुई दशा को मानकर प्रार्थना कर रहा है।

इस प्रार्थना में हम एक और बात देखते हैं वह यह है कि प्रार्थना का उत्तर तुरन्त मिल रहा है। जिस बात के लिये प्रार्थना की, उसका उत्तर तो मिल गया और उससे ज्यादा भी मिल गया। वचन में लिखा है, **“कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है”** (इफि-3:20)। सो यहां दानिय्येल 70 साल के पूरे होने पर उसको और उसके लोगों को प्राप्त होने वाली स्वतन्त्रता के संबंध में प्रार्थना कर रहा है। एक सामयिक छुड़कारे या आशीष के लिये प्रार्थना कर रहा है। परन्तु परमेश्वर ने अनन्तकाल तक की अपनी कार्य परिपाटी दानिय्येल पर प्रकट की। प्रार्थना के द्वारा हम परमेश्वर की पूरी मंशा और कार्यक्रम को मालूम कर पाते हैं। सो प्रार्थना हमारे जीवन में कितनी आवश्यक है। प्रार्थना में हमें नया नया प्रकाशन मिलता है।

पद.20:23 :- इस प्रकार दानिय्येल पापों और अपराधों को अंगीकार कर रहा था और प्रार्थना कर रहा था, तुरन्त परमेश्वर ने जिब्राइल दूत को उसके पास भेजा। वह इससे पहले भी दानिय्येल के पास आ चुका है। दानिय्येल के प्रार्थना करते ही परमेश्वर ने शीघ्र ही अपने दूत को उसके पास भेजा। लिखा है, **“उसने वेग से उड़ने की आज्ञा पाकर, सांझ को अन्नबलि के समय मुझको छू लिया और मुझे समझाकर मेरे साथ बातें करने लगा”** (9:21)। गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते ही उत्तर दिया गया (9:22)। याद रखिये हमारा परमेश्वर सुनने वाला और उत्तर देने वाला भी है। हमें हमारी समस्याओं को प्रार्थना द्वारा परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत करना ही पर्याप्त है। दानिय्येल ने शायद दोपहर से प्रार्थना करना आरंभ किया। सांझ के अन्नबलि के समय उसके पास उत्तर लेकर दूत प्रकट हुआ। इस्राएलियों को नियमानुसार कई बलिदान चढ़ाना था। उसके अलावा सबेरे और सांझ को भी बलि चढ़ाना पड़ता था। सो सांझ के अन्नबलि के समय वह प्रकट होता है। बलिदान और आराधना उनके नियमित रूप में नहीं होता था। वे मन्दिर और आराधना से

कब से वंचित हैं। यहां केवल समय को समझाने के लिये कहा गया है। सांझ को जिब्राएल दूत प्रकट हुआ।

सत्तर सप्ताह (Seventy Weeks)

पद-24:-“तेरे लोगों और पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गये हैं”। दानिय्येल प्रार्थना कर रहा था कि 70 साल के बाद परमेश्वर अपने लोगों की सुधि लेंगे। उन्हें बन्धुवाई से छुड़ा कर उनके पितरों के देश में, प्रतिज्ञा के देश में अर्थात् फलस्तीन देश में वापस ले जायेंगे। मसीहा आयेगा और राज्य स्थापित करेंगे और उनका दुःख दूर हो जायेगा। लेकिन प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर 70 साल की चर्चा नहीं कर रहा है बल्कि वह 70 सप्ताह की बात कर रहा है। किस विषय के लिये प्रार्थना की और किस बात को समझाया जा रहा है। 70 साल के बाद परमेश्वर ने अपने लोगों को अपने वचन के अनुसार बाबुल देश की बन्धुवाई से छुड़ाया और स्वदेश ले गया। परन्तु दानिय्येल की प्रतीक्षा के अनुसार उसकी प्रार्थना के अनुसार मसीहा अभी नहीं आ रहा है। परन्तु कहा जाता है कि उसके लिये बहुत और समय लगेगा। परमेश्वर ने अपने भविष्य के कार्यक्रम के लिये एक समय सारणी तैयार की है और वह समय सारणी 70 सप्ताह के रूप में सामने लाया। सो परमेश्वर ने अपने दूत के द्वारा यह बताया कि 70 वर्ष की बात को अलग रखें और 70 सप्ताह की बात को समझने का प्रयास करें। याद रखिये 70 सप्ताह परमेश्वर के द्वारा ठहरायी गयी समय सारणी (Time Table) है। किसी भी संस्था में आप देखें आप एक समय-सारणी देखेंगे। यातायात व्यवस्था में एक समय सारणी आप देखेंगे। सब कुछ समय के मुताबिक चलता है। सो परमेश्वर ने समय से लेकर अनन्तकाल तक के अपने कार्यक्रम के लिये समय सारणी निर्धारित की है। वह समय सारणी है 70 सप्ताह। अब जो कुछ हो रहा है सो सब कुछ इस समय सारणी के मुताबिक हो रहा है।

दानिय्येल के विचार के अनुसार 70 साल की बन्धुवाई के तुरन्त बाद परमेश्वर अपने राज्य को संसार में स्थापित नहीं करने जा रहा है परन्तु उसके लिये और भी समय लगेगा। राज्य की स्थापना हजारों वर्ष बाद ही

संभव है। राज्य की स्थापना के पूर्व यहूदियों को 6 बातें अपने जीवन के अनुभव से पूर्ण करना होगी। उन बातों के अन्त में ही यह कार्य संभव है। उन 6 बातों के बारे में हमें सबसे पहले विचार करना है।

1) अपराध का होना बन्द हो:- यह यहूदियों के अपराध की चर्चा है। यह अपराध बन्द होने का मतलब है, वे जातीय रूप में यीशु मसीह को उनके मसीहा के रूप में ग्रहण करना और मसीहा उनके अपराधों को क्षमा करना। यह तभी होगा जब वे जातीय रूप में यीशु मसीह को ग्रहण करते हैं। वे अपने पाप और अपराध को मान लेते हैं। तब वह वचन पूरा हो जायेगा जो रोमियां 11:26,27 में लिखा गया है अर्थात्, **“और इसी रीति से सारा इस्राएल उद्धार पायेगा, जैसा लिखा है, कि छुड़ाने वाला सिय्योन से आयेगा, और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा। और उनके साथ मेरी यही वाचा होगी, जबकि मैं उनके पापों को दूर कर दूंगा”**।

2) पापों का अन्त करना:- यह इस्राएलियों के पाप की चर्चा है। यह पाप का कारण शैतान है जिसको पकड़कर अथाह कुण्ड में डालने से ही यह संभव है (प्र.वा.20:1-3) । उस समय पाप का अन्त होगा।

3) अधर्म का प्रायश्चित किया जाना:- यह एक राष्ट्र के रूप में यीशु मसीह को इनकार करने का अधर्म है। क्रूस पर प्रायश्चित का कार्य पूरा हो चुका है। लेकिन इस्राएल को वह तब प्राप्त होगा जब वे यीशु की ओर देखेंगे जिनको उन लोगों ने बेधा था (जकर्याह0.12:10-13; यशा.66:8) ।

4) युग-युग की धार्मिकता प्रकट होना:- अपराध बन्द हो जाए और पापों का अन्त हो जाए तो युग-युग की धार्मिकता अपने आप प्रकट हो जायेगी (हबक्कूक.2:14) ।

5) दर्शन और भविष्यवाणी पर छाप:- इस्राएल का अपराध और पाप क्षमा हो जाए और परमेश्वर के साथ उनका सही संबंध हो जायेगा तो फिर दर्शन और भविष्यवाणी की आवश्यकता नहीं है।

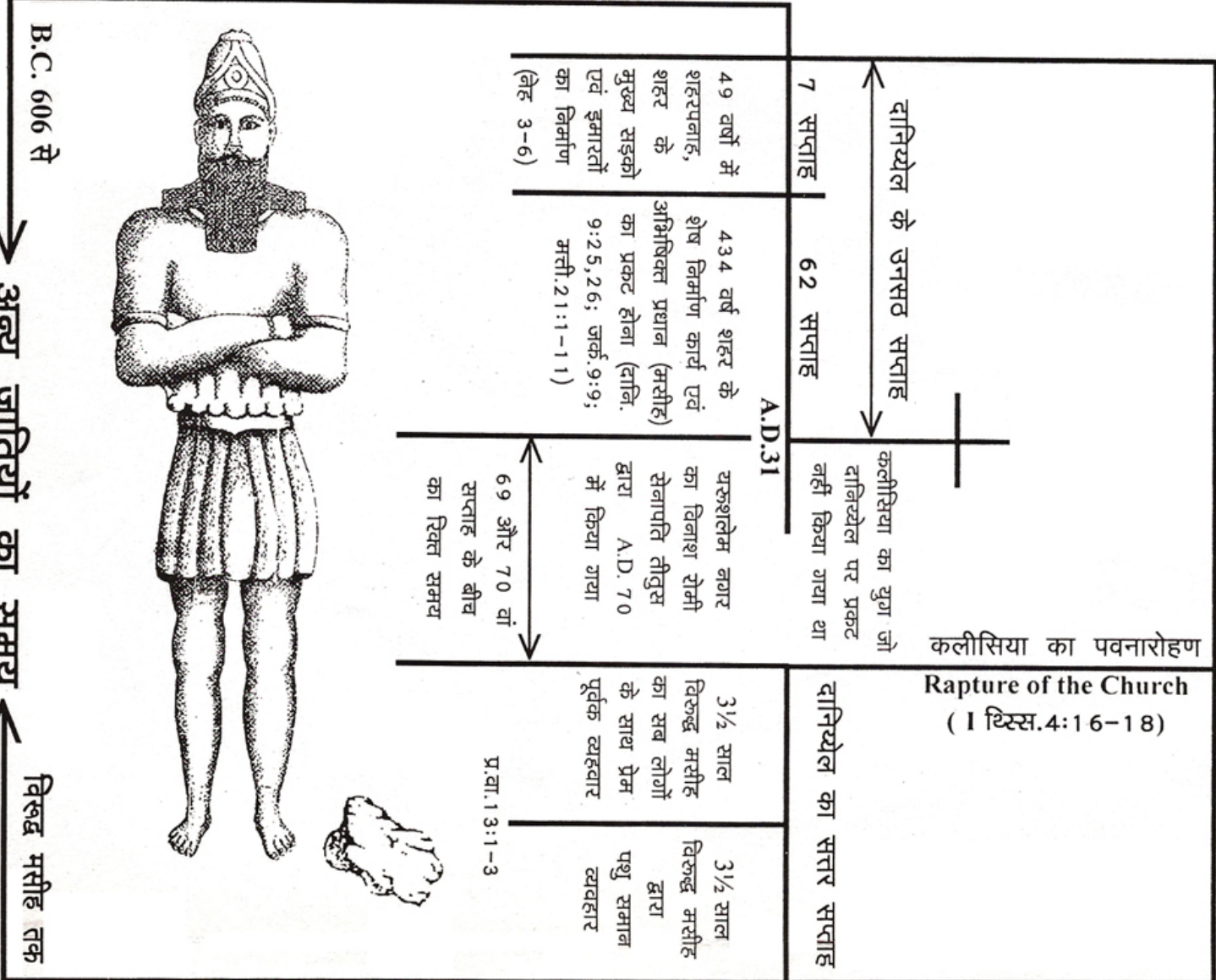
6) परम पवित्र का अभिषेक किया जाना:- यह एक हजार साल के

(दानियेेल की सत्तर सप्ताह)

9 : 24-27

महिमा में प्रकट होना
Revelation

- जैतून पहाड़
- 1 अरमगिदोन कि लड़ाई
- 2 विरुद्ध मसीह व झूठे नबियों का नरक में डाला जाना
- 3 1000 वर्ष के लिये शैतान को अथाह कुण्ड में बंद करना
- 4 जातियों का न्याय महिमा के सिंहासन के सामने
- 5 भारी क्लेश के संतानों का पुनरुत्थान
- 6 1000 वर्ष का राज्य
- 7 शैतान का छोड़ा जाना
- 8 अंतिम न्याय
- 9 नई पृथ्वी और नया आकाश



राज्य के समय में बनाए जाने वाले मन्दिर के परम पवित्र स्थान का और उसमें प्रभु यीशु मसीह को राजा और याजक के रूप में अभिषेक करने के संबंध में यहां मतलब है (जकर्याह-6:12,13)।

ये छः बातें सत्तर साल की बन्धुवाई के पूरे होने पर पूर्ण नहीं हुआ। हालांकि यहूदा राज्य के लोग 70 साल की बन्धुवाई समाप्त होने पर स्वदेश वापस आए। जैसे पुस्तक के प्रारंभ में सूचित किया गया है, वे लोग तीन बार में, तीन अलग-अलग समयों में बाबुल की ओर ले जाए गये। ठीक इसी प्रकार वापस आना भी तीन बार में हुआ।

जैसे ही यहूदा राज्य की बन्धुवाई अपनी समाप्ति की ओर आयी वैसे ही परमेश्वर ने राजनैतिक एवं शासन के क्षेत्र में बड़ा अन्तर एवं परिवर्तन लाया। परमेश्वर के लोगों को बन्धुवाई में ले जाने वाले बाबुल साम्राज्य के लोग थे। यदि वे 70 साल तक शासन करते रहते तो शायद परमेश्वर के लोगों को रिहा नहीं करते। सो परमेश्वर ने उसके साम्राज्य का अन्त किया और मादी फारसी साम्राज्य को संसार में शासन करने के लिये लेकर आए। यह एक द्विसंख्यक (Dual) साम्राज्य था। पहले मादी शासनकर्ता अर्थात् दारा ने शासन किया। उनका शासन केवल दो साल ही रहा (B.C. 538-537)। उसके पश्चात् कुसू जो फारसी साम्राज्य का प्रथम शासनकर्ता है, शासन की बागडोर संभाली (B.C. 536)।

स्वतन्त्रता का पहला आदेश

कुसू शासन में आते ही यहूदियों को जो उस साम्राज्य की सीमा में पाए जाते हैं, स्वतन्त्रता का आदेश दिया गया। उसने कहा सारे यहूदी अपने स्वदेश यरुशलेम लौट जाएं। यह आज्ञा एज्जा-1:1-3 में अंकित किया गया है। फारस का राजा कुसू यों कहता है कि “स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसने मुझे आज्ञा दी, कि यहूदा के यरुशलेम में मेरा एक भवन बनवा। उसकी समस्त प्रजा के लोगों में से तुम्हारे मध्य जो कोई हो, उसका परमेश्वर उसके साथ रहे, और वह यहूदा के यरुशलेम को जाकर इस्राएल के

परमेश्वर यहोवा का भवन बनाए- जो यरुशलेम में है वही परमेश्वर है”।

यह आज्ञा यहोवा परमेश्वर के भवन के निर्माण के संबंध में थी। इसके अलावा कुस्रु राजा कोई और आज्ञा नहीं देता। वह दावा करता है कि परमेश्वर ने उसको यह आदेश देने के लिये कहा है। बन्धुवाई से निकल कर जो लोग गये उन्होंने भवन के निर्माण के अलावा कुछ नहीं किया। सो इस आज्ञा को पाकर कुछ यहूदी लोग B.C.535 में जरुबाबेल के नेतृत्व में यरुशलेम की ओर गये। उन्होंने जाकर यहोवा का मन्दिर बनाया और B.C.516 में मन्दिर को अर्पण किया गया।

स्वतन्त्रता का दूसरा आदेश

यह यहूदियों के रिहाई का दूसरा आदेश है। यह आदेश फारस के राजा अर्तक्षत्र के द्वारा दिया गया है। यह अर्तक्षत्र का पहला आदेश था। उसने विशेष कार्य के लिये एज्रा को यरुशलेम भेजा (एज्रा-7)। यह आदेश अर्तक्षत्र राजा के शासन के 7 वें वर्ष में दिया गया (एज्रा-7:8)। अर्तक्षत्र ने फारस के साम्राज्य में B.C.465 से 424 तक शासन किया। उसके शासन का 7 वां वर्ष B.C.458 था।

एज्रा एक वास्तविक आत्मिक व्यक्ति था। वह यहोवा की व्यवस्था में निपुण था (एज्रा.7:26)। यह भी लिखा है कि वह यहोवा के वचनों का और इस्राएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था (एज्रा.7:11)। उसके पास व्यवस्था की प्रति भी रखी हुई थी। वह इसलिये भेजा गया कि यरुशलेम जाकर यहूदियों के आत्मिक और भौतिक बातों का पता लगाए और वह व्यवस्था के अनुसार ठीक-ठाक करें। उसके साथ 1700 लोगों का एक झुण्ड भी यरुशलेम की ओर गया (एज्रा.8:1-31)। चार महीने की यात्रा के पश्चात् वे लोग यरुशलेम पहुंचे। मन्दिर के पात्रों को भी वे साथ ले गये थे जो मन्दिर में जमा किये और वहां बलिदान चढ़ाए। राजा द्वारा दिये गये पत्रों को आसपास के राज्यपालों के हाथ में दिये (एज्रा.8:33-36)।

यरूशलेम वापस आए हुये यहूदियों में से कुछ लोग और याजकों में से कुछ लोग अन्य जाति की स्त्रियों के साथ अन्तरजातीय विवाह संबन्ध में जुड़ गये थे। ऐसे लोगों को अपने अपने अन्य जाति पत्नियों को त्यागने के लिये प्रोत्साहित किया गया (एज्जा-9,10)। इस प्रकार के सुधार कार्य करने के लिये राजा ने उसे विशेष राजकीय अधिकार देकर ही भेजे थे (एज्जा-8:25)। यदि कोई व्यवस्था के अनुसार दिये जाने वाले ताकीत और शिक्षा को ग्रहण न कर बलवा करें अर्थात् परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की व्यवस्था न माने, उसको दण्ड देने का भी अधिकार एज्जा को देकर भेजा था। उसमें प्राण दण्ड, देश निकाला माल जप्त किया जाना और कैद आदि शामिल है। एज्जा वह व्यक्ति था जिन्होंने यहूदियों को व्यवस्था पढ़कर सुनाई और व्यवस्था के मुताबिक जीवन बिताने के लिये उन्हें प्रोत्साहित भी किया। एल्याशीब महायाजकीय सेवा करने के दिनों में एज्जा का देहान्त होने का वर्णन यहूदी इतिहासकार जोसीफस के वर्णनों से ज्ञात होता है। भविष्यवक्ताओं की सेवा से शास्त्रीयों की सेवा के परिवर्तन के समय को एज्जा प्रतिनिधित्व करता है।

इस आज्ञा में भी वह बात नहीं प्राप्त हो रही है जिसकी हमें तलाश है। इस आज्ञा के अन्तर्गत केवल आध्यात्मिक बातों को ठीक करना, आराधना को पुनः स्थापित करना एवं मन्दिर को सुन्दर और आकर्षक बनाने का वर्णन ही मिलता है (8:27)।

स्वतन्त्रता का तीसरा आदेश

यह तीसरा आदेश अर्तक्षत्र राजा के शासन के 20 वें वर्ष में नेहम्याह को दिया गया। यह B.C. 445 में था। यह वर्णन नेहम्याह 1,2 अध्याय में पढ़ने को मिलता है। हमारे मतलब की बात 2:4-8 पदों में वर्णित है। इस आदेश में यरूशलेम की शहरपनाह को बनाने का आदेश पाया जाता है। नेहमायाह राजनैतिक अधिकारों के साथ और उसकी पूर्ति के लिये यरूशलेम आ रहा था। नेहमायाह स्वयं उस साम्राज्य में उच्च पद में था, वह राजा का पिलाने वाला था। यह पद राजा के साथ निकट संबन्ध रखने वाला पद था।

इस यात्रा में राजा ने नेहमायाह को सेनापति एवं सवारी भी भेजे थे। वह अंगरक्षकों के साथ यात्रा कर रहा था। वह एज्जा शास्त्री और उनके

संग आए झुण्ड के साथ लगभग 13 वर्ष बाद पहुंचे हैं। यरुशलेम में रहने वाले यहूदियों की सहायता से शहरपनाह का कार्य आरंभ किया (नहे. 2:17-20)। होरोनी सम्बल्लत, अमोनी तोबियाह, अरामी गशेम आदि आसपास की अन्य जाति के लोग शहरपनाह के काम में विघ्न उत्पन्न किये (2:19; 4-6 अध्याय)। उसके बाद भी 52 दिनों के अन्दर शहरपनाह का कार्य पूरा किया गया (6:15)। इतना ही नहीं, एज्रा की सहायता से लोगों को व्यवस्था की ओर वापस ले आए और याजकों एवं प्रधानों सहित सब लोगों से यह वाचा बन्धवाया कि वे यहोवा की सेवा करेंगे और वाचा पर हस्ताक्षर करवाया (8-10)। 12 वर्ष यहूदा देश के अधिपति और हाकिम रहने के पश्चात् B.C.433 नेहमायाह शूशन वापस गया (13:6; 5:14)। कुछ समय के बाद नेहमायाह यरुशलेम वापस आया और शेष समय यरुशलेम में रहकर यहोवा के मन्दिर की आराधना को पवित्र किया, अन्तरजातीय विवाह की मलीनता को लोगों के बीच में से दूर किया। अच्छे बुढ़ापे में मृत्यु को पाने के संबन्ध में जोसिफस वर्णन करता है।

दानिय्येल का 70 सप्ताह यह B.C. 445 के अन्तिम आज्ञा के इस समय से स्वीकार किया गया है। “सो यह जान और समझ लें, कि यरुशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चारों ओर खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जायेगा” (दानी-9:25,26)। इस वचन के अनुसार देखा जाए तो सत्तर सप्ताह को तीन भागों में विभाजित किया गया है अर्थात् सात, बासठ और एक सप्ताह।

(1) आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक

सात सप्ताह बीतेंगे:- B.C.445 नीसान महिने (March) की 14 तारीख को अर्तक्षत्र राजा के शासन के 20 वे वर्ष में आज्ञा निकली। इस वचन में दो प्रधानों का वर्णन आया है। एक प्रभु यीशु मसीह है जो प्रधान कहा गया है। दूसरा प्रधान आने वाला है (पद 26) जो छोटा सींग कहा गया है। यह विरुद्ध मसीह के लिये वर्णन है। इस सात सप्ताह की अवधि में शहरपनाह एवं मुख्य सड़कें बनाई गयीं। यहां जो प्रयोग आया है अर्थात् अभिषिक्त प्रधान, वह केवल एक साधारण प्रयोग है। कारण यह है कि उस समय कोई प्रभु या प्रधान प्रकट नहीं हो रहा है।

(2) फिर बासठ सप्ताहों में चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट

के समय फिर बसाया जाना:- इस दूसरे विभाग के समय में यरूशलेम नगर पूरी तरह बनाया जायेगा। एक नगर के लिये जो कुछ भी आवश्यक है, वह सब तैयार हो गया। सब प्रकार की इमारतें, सड़कें, नालियां आदि के साथ यरूशलेम नगर तैयार किया गया। इतने में यीशु मसीह (मसीहा) आया और अपनी सेवा आरंभ किया और 69 सप्ताह के बीतने पर मसीहा अर्थात् अभिषिक्त प्रधान काटा गया। यह यीशु मसीह के क्रूस की मृत्यु का संकेत है। इस प्रकार अब तक कुल 69 सप्ताह बीत गये हैं। अब एक सप्ताह बाकी बचा हुआ है।

हमने इस बात को देखा कि यरूशलेम को फिर बसाना और अभिषिक्त प्रधान का आगमन और मृत्यु तक 69 सप्ताह अर्थात् $69 \times 7 + 483$ दिन है। यदि एक दिन एक वर्ष के बराबर है तो 483 दिन उतना वर्ष है। लेकिन B.C.445 से A.D.31 तक 476 वर्ष मिलता है अर्थात् 7 साल का अन्तर इस हिसाब से पाया जाता है। इस अन्तर को हम कैसे हिसाब करेंगे?

यह हमें नहीं भूलना चाहिये कि कई प्रकार के वर्ष पाए जाते हैं। एक लूनार वर्ष है जिसके 354 दिन हैं। यहूदियों के कलेन्डर में 360 दिन हैं। एक सोलार वर्ष भी है जिसके 365 दिन हैं। एक जूलियन या सूर्य वर्ष (Astronomical Year) के 365 $\frac{1}{4}$ दिन हैं और इस कारण हमें हर चार साल में कलेन्डर के साथ एक दिन जोड़ना पड़ेगा।

अब इनमें से कौन से सन् को हम अपने इस हिसाब में उपयोग करें ? इसके लिये हम परमेश्वर के वचन में एक कुंची देखते हैं वह हमें मिलती है उत्प.7:11-24; 8:3 में। वहां जल प्रलय का वर्णन किया गया है। यह जल प्रलय का 5 महीना, दूसरे महीने के 17 तारीख से 7 वें महीने की 17 तारीख तक लगाया गया है जो 150 दिन हैं। वह 30 दिन के महीने के हिसाब से है अर्थात् 360 दिन का वर्ष है। सो हमें इस भविष्यवाणी को 360 दिन के कलेन्डर वर्ष के अनुसार हिसाब लगाना होगा।

लेकिन सोलार वर्ष के हिसाब से जो कि 365 दिन का वर्ष है हमें A.D.31 मिलता है 445 से 470 तक है $(476-445=31)$ । अब B.C.445 से

A.D. 31 तक सोलार वर्ष के अनुसार 476 मिलता है। इस 476 को 365 से गुना करें (जो सोलार वर्ष के दिन के अनुसार) तो हमें 173740 दिन मिलता है और उसके साथ 119 दिन जो लीप वर्ष का जोड़ें तो हमें 173859 मिलता है। इस संख्या के साथ मार्च 14 से अप्रैल 2 तक का 21 दिन जोड़ें तो हमें ठीक 173880 की संख्या मिलती है और वह इतना दिन है। यह दिन की संख्या को चन्द्र वर्ष के 360 दिन से (भविष्यवाणी के दिन से) भाग करें $(173880 \div 360)$ तो हमें ठीक 483 के भविष्यवाणी वर्ष की संख्या मिलेगी। यह 483 वर्ष सप्ताह के अर्थात् सातों के हिसाब से $483 \div 7 = 69$ सप्ताह होते हैं।

उपरोक्त वर्णन के अनुसार आज्ञा निकलने वाला समय अर्थात् B.C. 445 मार्च 14 तारीख 173880 दिन अथवा 483 भविष्यवाणी के वर्ष अर्थात् 69 सप्ताह पूरा होने वाला दिन A.D. 31 अप्रैल 4 तारीख थी और उसी दिन यीशु मसीह गदही और लादू के ऊपर बैठकर राजा के रूप में यरूशलेम में प्रवेश किया परन्तु यहूदी लोगों द्वारा तिरस्कृत हुआ। दूसरे रूप में सोचा जाए तो यहूदियों के कलेन्डर के अनुसार उनका महीना 30 दिन का और वर्ष 360 दिन का होता है। इस कारण 483 वर्ष है। वे लोग चन्द्रमा की बढ़ती और घटती के आधार पर महीने के दिन गिनते हैं। लेकिन हमारा वर्ष सूर्य वर्ष (Solar Year) और उसके अनुसार 476 और 21 दिन है। सो आज्ञा निकलने के 445 को 476 से घटाएं $(476 - 445)$ तो ठीक A.D. 31 मिलता है। उसी दिन यीशु मसीह यहूदियों द्वारा तिरस्कृत हुआ और क्रूस पर मारा गया। यीशु मसीह की मृत्यु के साथ दानिय्येल की सत्तर सप्ताह में से 69 सप्ताह पूरा हो गया। अब एक सप्ताह बाकी है।

सात सप्ताह और 62 सप्ताह के बीच में कोई रुक (Break) नहीं है। वह लगातार चल रहा है। लेकिन 69 सप्ताह और 70 वां सप्ताह के बीच में एक लम्बा कोष्ठक समय (Bracket Time) पाया जाता है जिसमें बहुत सी बातें पूरी होनी है। पहली बात अभिषिक्त पुरुष अर्थात् मसीहा काटा जाना। यह मसीह की मृत्यु का संकेत है। वह सारे संसार की मानव जाति के लिये मार डाला गया। इसके बाद हम पढ़ते हैं कि, **“आने वाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्र स्थान को नाश करेगी” (9:26)**। यहां यह नहीं लिखा है कि **“प्रधान”** (Prince) नगर और पवित्र स्थान को नाश करेगा परन्तु यह लिखा है कि आने वाले प्रधान की प्रजा नाश करेगी। प्रजा जो नगर और

पवित्र स्थान को नाश किये थे वे रोमी थे। इस कारण यह अनुमान लगाया जाता है कि आने वाला प्रधान (Prince) रोमी नागरिक होना चाहिये। इसका यह मतलब नहीं कि वह एक सीरियाई यहूदी नहीं होगा। उस समय सीरिया फिर से उदय होने वाले रोमी साम्राज्य (Revived Roman Empire) में शामिल राज्य रहेगा। तरसूस का शाऊल एक यहूदी होने के साथ साथ रोमी नागरिक था। सो आने वाला प्रधान एक सीरियाई यहूदी जो रोमी नागरिकता रखने वाला होगा।

आगे यह कहा गया है कि इस्राएल देश की दुर्दशा लगातार चलती रहेगी। अन्त तक लड़ाइयां होती रहेगी। अन्तिम लड़ाई अरमगिदोन की लड़ाई होगी। सत्तरवां सप्ताह (70th week) आरंभ होने से पूर्व संसार के राजनैतिक गतिविधि में बड़ा एक परिवर्तन आना बाकी है। आज संसार में प्रायः सभी देशों में प्रजातन्त्र का शासन चल रहा है। परन्तु इस शासन प्रणाली से मनुष्य ऊब गया है। प्रजातन्त्र को लोग चुनौती देने लगे हैं। यह कुछ समय बाद संसार की शासन प्रणाली में बड़ा परिवर्तन लाकर रख देगा। संसार फिर से साम्राज्यवाद का स्वागत करेगा। वह साम्राज्य जो फिर से उदय होने वाला है वह रोमी साम्राज्य (Revived Roman Empire) के रूप में होगा। वह आज दुनियां के रंगमंच पर आ उपस्थित हुआ है। वह यूरोपीय संघ के रूप में हमारे समक्ष प्रकट हो चुका है। आज उसमें 11 मुल्क हैं। लेकिन बाइबल की भविष्यवाणी के मुताबिक उस संघ में 10 मुल्क होंगे। यूरोपीय संघ वह फिर से उदय होने वाला रोमी साम्राज्य है जिसकी चर्चा प्र. वा.13:1,2 में वर्णन किया गया है। वह साम्राज्य 10 राजाओं के एक संयुक्त शासन होगा। वे 10 राजा शासन करते समय विरुद्ध मसीह प्रकट होगा जिसकी चर्चा दानिय्येल “आने वाले प्रधान” के रूप में यहां किया गया है। आने वाला प्रधान अर्थात् विरुद्ध मसीह अन्य जाति शासनकर्ताओं में अंतिम शासनकर्ता होगा। अन्य जाति शासन काल का पहला राजा नबुकदनेस्सर था। अन्य जातियों का समय B.C. 606 में नबुकदनेस्सर के शासन के साथ आरंभ हुआ और विरुद्ध मसीह के शासन के साथ अन्त होगा। सो विरुद्ध मसीह के शासन से 70वां सप्ताह अर्थात् अन्तिम एक सप्ताह आरंभ होगा। सो इतनी सारी बातें 69 और 70 वां सप्ताह के बीच पूरी होनी है। लेकिन इस 69 वां और 70वां सप्ताह के बीच में जो कोष्टक समय (Bracket Time) है, उसमें एक और मुख्य कार्यक्रम चल रहा है। वह परमेश्वर का कार्य है।

वह अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह के लिये एक दुल्हिन अर्थात् कलीसिया को तैयार करने का कार्य है। सो अब कलीसिया के निर्माण का समय चल रहा है। कलीसिया का निर्माण कार्य यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के 50 वां दिन अर्थात् पेन्तिकुस्त के दिन आरंभ हुआ। वह आज तक चल रहा है। कलीसिया जब तक संसार में है तब तक यह 70 वां सप्ताह आरंभ नहीं होगा। सत्तरवां सप्ताह विरुद्ध मसीह के शासन का समय है। कलीसिया के संसार में रहते विरुद्ध मसीह प्रकट नहीं हो सकता। उसको पवित्र आत्मा रोके हुए है।

सो यह 70 वां सप्ताह 69 सप्ताह अर्थात् 483 वर्ष के तुरन्त बाद आरंभ नहीं हुआ। इन दोनों समयों के बीच में एक लम्बा खाली समय पाया जाता है।

यह शेष सत्तरवां सप्ताह अर्थात् सात वर्ष, 483 वर्ष समापन होते ही शुरू नहीं हुआ। इन दोनों के बीच में एक लम्बा खाली समय पाया जाता है। मसीहा के तिरस्कार और क्रूस पर मृत्यु के साथ-साथ यहूदी लोग मसीह को राजा के रूप में स्वीकार न करके उसे तिरस्कार कर दिया। इस कारण परमेश्वर ने भी उन्हें तिरस्कार किया। इस प्रकार एक समय के लिये परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया। वे परमेश्वर द्वारा तिरस्कृत हो जाने से उनको उनका देश, याजक पद, राजकीय शासन आदि सब नष्ट हो गया। वे सारे संसार में तितर-बितर हो गये। उनका सब कुछ नष्ट हो गया।

उन्होंने त्रियेक परमेश्वर को तीन समयों में इनकार किये। परमेश्वर पिता को इस्राएलियों ने शाऊल राजा के समय में इनकार किये (1शाम-8:7) यीशु मसीह संसार में जब आया तो उन लोगों ने यीशु मसीह को भी इनकार किया (मत्ती-21:23 युहन्ना-1:11) और आगे बढ़कर उन लोगों ने पवित्र आत्मा को भी त्याग दिये (प्रेरित-7:51)। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें भारी नींद में डाल रखा है और ऐसी आंखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुने (रोमि-11:8)। देखने की आंखें और सुनने के कान परमेश्वर द्वारा बन्द कर दिये गये।

उनके द्वारा परमेश्वर को इनकार किये जाने के कारण उन्हें तीन

प्रकार का भयंकर नुकसान उठाना पड़ा।

1. B.C. 606 में उनकी राजकीय पदवी नष्ट हो गई।
2. A.D. 70 में मंदिर और आराधना उन्हें नष्ट हो गया (A.D. 70 में रोमी सेनापति तीतूस के नेतृत्व में आई सेना द्वारा यरूशलेम मन्दिर पूरी तौर से नष्ट किया गया, दस लाख यहूदी मार डाले गये और 97 हजार लोग बन्दी बनाकर रोम ले जाए गये)।
3. A.D. 135 में रोम के हड्रियान (Hadrian) बादशाह के समय में यहूदी लोग फलस्तीन देश से पूरी तौर से निकाले गये। वे सारे संसार में तितर बितर हो गये।

A.D. 70 के पहले रोमी सेनापति वस्पेशियन एक बड़ी सेना के साथ फलस्तीन की ओर आया। उस समय नीरो बादशाह की मृत्यु का समाचार मिला और वह वापस स्वदेश लौट गया और बादशाह का पदभार संभाला। उसके बाद फसह के पर्व के अवसर पर वस्पेशियन का पुत्र तीतूस एक बड़ी सेना लेकर यरूशलेम पर चढ़ाई करने को आया। उसने बहुत कोशिश की पर शहर पर जयवंत होने के लिये मुश्किल का सामना किया। शहर के चारों तरफ एक बड़ा गड्ढा खुदवाया और ऊंची शहरपनाह भी बनवाया गया ताकि शहर के अन्दर रहने वाले बाहर नहीं निकल पाएं न ही भोजन वस्तु अन्दर ले जा सकें। शहर के भीतर रहने वाले बिना भोजन के यहां वहां भागते रहें प्यास के मारे लोग सड़कों पर बेहोश होकर गिरने लगे। उनको दफन करने वाले भी कोई नहीं मिले। सड़कों पर लाश पड़े-पड़े सड़ने लगी। लोग कुत्ता, बिल्ली, सुअर, चूहा आदि जन्तुओं को एवं भूसी और चप्पल आदि खाने लगे। भूख सहन न होने के कारण माता-पिता अपने मासूम बच्चों को काटकर पकाए और खाये।

अन्त में तीतूस ने शहर पर कब्जा कर लिया। तीतूस की अभिलाषा यह थी कि मन्दिर को उसके जय के चिन्ह के रूप में नष्ट न करें। लेकिन यह आदेश एक जवान ने नहीं सुना और उसने एक आग का गोला उठाकर मन्दिर के ऊपर फेंक दिया। इस प्रकार वह बड़ी भारी इमारत जल कर भस्म हो गयी। उस बड़े मन्दिर के विभिन्न स्थान पर लगा सोना पिघलकर पत्थर के दरारों में घुलने लगा। दीवार के पत्थरों के अन्दर सोना पिघल कर प्रवेश

किया। इसके अलावा वे यह भी सोचने लगे कि इसकी नींव के नीचे खजाना होगा। उसके बाद उस सोने को निकालने के हेतु सिखाए गये विशेष हाथियों के द्वारा पूरा मन्दिर जोत डाला। एक एक पत्थर ऊपर से लेकर नींव तक खोद डाला। इससे यीशु मसीह का वह वचन पूरा हो गया जिस में कहा गया है, **“वे दिन आयेंगे, जिनमें यह सब जो तुम देखते हो, उनमें से यहां किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जायेगा”** (मत्ती-21:6)। यह भी कि, **“इसलिये तुम्हारे कारण सिव्योन जोतकर खेत बनाया जायेगा, और यरुशलेम डीह ही डीह हो जायेगा”** (मीका-3:12) ।

संसार के इतिहास में इससे पूर्व या इसके बाद न होने वाले भयंकर कत्ल उस दिन यरुशलेम में हुए। अनेक हजार लोग तलवार एवं भाले के शिकार हो गये। अनेक लोगों को क्रूस पर लटका दिए और मार डाला। इस युद्ध में मारे जाने वाले लोगों की कुल संख्या यहूदी इतिहासकार जोसीफस लिखता है। इस प्रकार वह प्रार्थना उनके जीवन में पूरी हो गयी कि **“उसका लहु हम पर और हमारी सन्तान पर हो”** (मत्ती-27:25) ।

इसके साथ-साथ यहूदी लोग वहां से संसार के विभिन्न देशों की ओर तित्तर बितर हो गये। वे फलस्तीन देश से परमेश्वर द्वारा उखाड़ कर फेंके गये। जिस प्रकार ऊपर वर्णन किया गया है कि A.D.135 के पश्चात् यहूदियों को उनके स्वदेश से पूरी तौर से निष्कासित कर दिये गये। इस समय के पश्चात् जहां जहां वे पहुंचे वहां-वहां वे सताए गये। A.D. 102-1227 में इंग्लैंड में, A.D.1306.1723 तक फ्रांस के अन्दर, A.D.1348-1560 तक जर्मनी के अन्दर, राजा फिलिप और फर्डिनन्स द्वारा स्पेन के अन्दर और 19 वीं सदी के अन्त में निकोलास बादशाह के समय में रूस के अन्दर, और फिर से हिटलर द्वारा जर्मनी के अन्दर वे सताए गये (A.D.1932 से 1936 तक)। सुलैमान के समय में आकाश के तारागणों के समान यहूदी लोगों की संख्या थी जो इस समय तक अर्थात् 17 वीं सदी के अन्त तक 10 लाख में परिवर्तित हो गये। इस प्रकार 1919 तक 1800 वर्षों में वे स्वदेश के बिना घूमते फिरते रहे। लेकिन दूसरे विश्व युद्ध के बाद वे लोग स्वदेश लौट आए, आते रहे और अभी भी आ रहे हैं। उन लोगों ने अपना देश अधिकार में ले लिया है। उन लोगों ने अपने राष्ट्र की स्थापना

भी की है। लेकिन वे परमेश्वर के द्वारा आज भी तिरस्कृत हैं। यह उस समय तक चलेगा जब तक कि वे एक राष्ट्र के रूप में यह न बोलेंगे कि, “**धन्य है जो यहोवा के नाम से आता है**”।

यह तिरस्कार का समय 70वां सप्ताह के आगमन तक रहेगा। यहूदियों द्वारा प्रभु यीशु मसीह को तिरस्कार करने वाले 69 वां सप्ताह से लेकर 70 वां सप्ताह आरंभ होने तक यहूदियों के तिरस्कार की शून्यता के समय में अब तक 2000 साल बीत चुके हैं। इस प्रकार 69 और 70 सप्ताह के बीच में जो खाली समय (Bracket Time) आया है वह कलीसिया के निर्माण का समय है अर्थात् यह समय अनुग्रह का युग कहलाता है। यह अनुग्रह का युग समाप्त होगा और कलीसिया का पृथ्वी पर निवास का समय पूरा होने तक यह 70वां सप्ताह का आगमन नहीं होगा। इस कारण परमेश्वर के हिसाब-किताब के अनुसार हम लोग आज भी इस खाली समय (Bracket Time) में रह रहे हैं। कलीसिया के उठा लिये जाने के बाद इस्राएल का इतिहास फिर से प्रारंभ होगा। उस समय 70 वां सप्ताह आरंभ होगा। वह सप्ताह आरंभ होने पर केवल 7 वर्ष ही इस्राएल के जातीय इतिहास (National Life) में शेष होगा। वह सात साल के बीतने पर इस्राएल का पूर्ण शुद्धिकरण होगा और वे रोमियों 11:26 के अनुसार उद्धार पायेंगे।

इसका मतलब है, यहूदियों के उद्धार के लिये 490 वर्ष के लम्बे समय का एक समय सीमा निर्धारित कर दिया गया है। पाप करने के कारण उनका संबन्ध परमेश्वर से टूट गया। परमेश्वर के द्वारा दी गयी सारी आशीषों से वे वंचित हो गये। फिर उन आशीषों को वापस प्राप्त करने के लिये यह 70 सप्ताह अर्थात् 490 साल का कार्यक्रम बनाया गया है। वैसे परमेश्वर का पापी मानव से व्यवहार और उन्हें पुनः स्थापित करने के लिये अक्सर यह 490 वर्ष ठीक-ठीक दोहराते हुए बाइबल के प्रकाश में ही हमें जानकारी मिलती है। यह वर्णन बाइबल के आरंभ से अर्थात् मानव जीवन के आरंभ से ही देखने को मिलता है। इस वर्णन की सुन्दरता को आप स्वयं अध्ययन कीजिये जो बाइबल के उत्पत्ति की पुस्तक से वर्णन है।

N.I.V और Living Bible कहती है 490 अर्थात् 70 सप्ताह। बाइबल की भाषा में यह समझ सकते हैं कि एक सप्ताह 7 वर्ष है। यदि एक सप्ताह 7 वर्ष है तो 70 सप्ताह 490 वर्ष है। परमेश्वर यहूदियों से 490 वर्ष

के हिसाब से व्यवहार करने का वर्णन बाइबल में बताया गया है। लेकिन हम इब्राहिम के समय से आरंभ करते हैं। इब्राहिम के जन्म से इस्राएली लोग मिस्र से बड़े समूह के रूप में निकलने के समय तक 505 वर्ष है। इसमें से इश्माइल को बाहर निकालने के 15 वर्ष को घटा दे तो 490 वर्ष ठीक मिलता है।

मिस्र से इस्राएल के निर्गमन से लेकर सुलैमान के द्वारा मन्दिर बनाए जाने वाले समय तक 601 वर्ष है। इसमें से उन न्यायियों का समय घटाएं जिन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया था। वह उल्लंघन का समय 111 वर्ष है। वह 601 से 111 वर्ष घटाए तो ठीक 490 मिलता है।

सुलैमान के मन्दिर के अर्पण से लेकर अर्तक्षत्र राजा द्वारा दी गयी आज्ञा के समय तक 560 वर्ष है और उसमें से बाबुल की बन्धुवाई का समय अर्थात् 70 वर्ष घटाएं तो 490 वर्ष ठीक-ठीक मिलता है।

संक्षेप में कहा जाए तो यह है कि 490 वर्ष के हिसाब से एक-एक समय या काल में परमेश्वर यहूदियों से अलग-अलग रूप में व्यवहार करते हुए बाइबल के प्रयोग से व्याख्या करने में कोई गलती नहीं है।

7 वर्ष को बाइबल के विद्वान भविष्यवाणी की भाषा में भारी क्लेश कहा गया है:—

- (1) निर्जन करने का समय (यशा—24:1)
- (2) थोड़ी देर (यशा—26:20)
- (3) संकट का समय (दानि—12:1)
- (4) परीक्षा का समय (प्र.वा.13:10)
- (5) याकूब के क्लेश का समय (यिर्म—30:7)
- (6) प्रकोप का भयानक दिन (प्र.वा.6:17)
- (7) प्रभु का दिन (॥ थिस्स—2:2)

ये सब यहूदियों के साथ परमेश्वर के व्यवहार का काल या समय है।

सो यहूदियों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के 490 वर्ष में 69 सप्ताह अर्थात् 483 वर्ष बीत गये। बाकी एक सप्ताह अर्थात् सात वर्ष बाकी है। यह 70वां सप्ताह अर्थात् अन्तिम सप्ताह अब तक पूरा नहीं हुआ है। इन दोनों के बीच में एक अप्रधान या निक्षिप्त रूप या समय आ गया। यह समय यहूदियों

के राजा के रूप में आए उनके मसीहा को तिरस्कार करने के कारण जो पाप और अपराध हुआ है, उसके कारण बढ़ गया उसके बाद आज लगभग 2000 साल बीत चुके हैं। अब तक उनका उद्धार नहीं हुआ है। जब तक वे अपने मसीहा को अंगीकार नहीं करेंगे तब तक यह संभव नहीं है। लेकिन वे इस 70 वां सप्ताह अर्थात् सात साल के अन्तिम समय में मसीहा को ग्रहण करेंगे।

यीशु मसीह का बादलों पर आगमन

ऊपर हम लोग यह वर्णन करते आए कि हम अभी एक कोष्ठक समय (Bracket time) में पाए जाते हैं। अर्थात् हम लोग अनुग्रह के युग में, कलीसिया के युग में पाए जाते हैं। अभी मुख्य रूप में परमेश्वर का कार्यक्रम कलीसिया का निर्माण है। यह कलीसिया पेन्तिकुस्त के दिन आरंभ हुआ। प्रारंभिक समयों में यह कलीसिया का कार्य यहूदियों के बीच में ही रहा। यहूदियों में प्रचार-प्रसार होता आया। लेकिन यहूदियों ने एक राष्ट्र के रूप में परमेश्वर के इस शुभ कार्य का विरोध किया। सो प्रभु के प्रेरित यहूदियों के बीच में सेवा बन्द करके अन्य जातियों की ओर मुड़ गये (प्रेरित-13:46, 47-50)। अन्य जातियों के बीच में कलीसिया का कार्य आरंभ हो गया।

सबसे पहला अन्य जाति व्यक्ति जो मसीह को ग्रहण कर के विश्वास में आया अर्थात् कलीसिया में आया वह कुरनेलियूस और परिवार था। उसके बाद कितने हजारों अन्य जाति विश्वास करके बप्तिस्मा लेकर पवित्र आत्मा का बप्तिस्मा पाकर कलीसिया में प्रवेश करने लगे। आज भी वह कार्य चल रहा है। एक दिन परमेश्वर के निर्धारित समय वह अन्य जाति अन्तिम व्यक्ति कलीसिया में प्रवेश कर लेगा तब कलीसिया का निर्माण कार्य पूरा होगा और कलीसिया का प्रभु और उद्धारकर्ता बादलों पर आयेगा और उसकी कलीसिया को धरती से स्वर्ग को ले जाएगा (1थिस्स-4:16-18)। इस प्रकार पवनारोहण के अर्थात् उठा लिए जाने (Rapture) के समय से लेकर 7 साल तक कलीसिया स्वर्ग के किसी स्थान में मसीह के साथ रहेंगे। उस अवधि में विश्वासियों का न्याय होगा अर्थात् उनके पृथ्वी पर रहते समय किए गये कार्यों का लेखा लिया जाएगा (कुरि-5:10) यह न्याय उन्हें नरक में डालने के लिए नहीं पर उनके प्रतिफलों का निर्णय करने के लिये है।

जब कलीसिया स्वर्ग में है उसी समय उन सात साल की अवधि में परमेश्वर का व्यवहार यहूदियों के साथ प्रारंभ हो जायेगा। इस सात साल की अवधि को हम 70 वां सप्ताह अर्थात् अन्तिम साल कहते हैं। कलीसिया उठा ली गयी और अन्य जातियों के साथ परमेश्वर के व्यवहार का समय समाप्त हो गया। अब परमेश्वर सीधे अपने लोगों से, यहूदियों से व्यवहार करने का समय है।

सत्तर सप्ताह

इस 70 वां सप्ताह का वर्णन नया नियम में आया है। प्रकाशित वाक्य 6 से लेकर 19 तक अध्यायों में वर्णन की गयी घटनाएं दानियेल के 70 वां सप्ताह की बातें हैं। यह विशेष समय को उसके स्वभाव के अनुसार और कार्यों के अनुसार दो भागों में विभाजित किया गया है। वह 1260 दिन के दो विभाग है। अर्थात् प्रथम साढ़े तीन साल और अन्तिम साढ़े तीन साल का समय। इस पूरे सात साल को भारी क्लेश का समय बताया गया है। यह विशेष समय विरुद्ध मसीह के शासन का समय होगा। विरुद्ध मसीह प्रकट होकर सारे संसार को शासन करने का समय होगा। वह एक विश्व शक्ति के रूप में प्रकट होगा। जब वह प्रकट होगा तब सारे संसार के लोग उसे अपना नेता ग्रहण करेंगे। वह प्रकट होकर सब के साथ मेल प्रेम से व्यवहार करेगा। विशेषकर वह यहूदियों के साथ वाचा भी बान्धेगा। उनको हर प्रकार से मदद करने के लिए तैयार हो जायेंगे। उनका मन्दिर जो यरुशलेम में था जो आज उस स्थान में नहीं पाया जाता है, उसे बनाने में विरुद्ध मसीह यहूदियों की सहायता करेगा। इन तमाम बातों के कारण यहूदी लोग विरुद्ध मसीह को मसीहा समझेंगे और उसके साथ वाचा बाधेंगे कि हम आप का साथ देंगे। पहले साढ़े तीन साल की अवधि में यह वाचा का संबंध सही रूप में चलेगा। लेकिन जैसे ही यह प्रथम साढ़े तीन साल का समय समाप्त होकर अन्तिम साढ़े तीन साल में प्रवेश करते हैं तो विरुद्ध मसीह अपना स्वभाव बदलेगा। वह कहेगा कि मेरी मूर्ति बनायी जाए और यहूदियों के मन्दिर के परमपवित्र स्थान में रखी जाए और उसकी पूजा की जाए। लेकिन यहूदी लोग मूर्ति पूजा करने की सलाह को इंकार करेंगे। यहूदी लोग मूर्ति पूजा के कारण बाबुल की बन्धुवाई में बंदी बनाकर ले जाए गये थे। वहां से वे 70 साल की बन्धुवाई के पश्चात् स्वदेश लौट आए तो उन्होंने मूर्ति पूजा की आदत को सदा के लिए त्याग दिया। अभी अन्य अनेक पाप यहूदी लोग

करते होंगे पर वे मूर्ति पूजा बिल्कुल नहीं करते हैं। मूर्ति पूजा के पाप से वे सदा के लिए अलविदा हो गए।

यहां उस समय की भविष्यवाणी के अनुसार वे मूर्ति पूजा में शामिल नहीं होंगे। तब विरुद्ध मसीह को वे लोग ठीक से पहचानेंगे और जान जाएंगे कि यह मसीहा नहीं है। वे विरुद्ध मसीह के साथ अपनी वाचा को तोड़ेंगे और विरुद्ध मसीह के विरुद्ध हो जायेंगे। मूर्ति परमेश्वर के मंदिर में रखी जायेगी। यह बात करने वाली मूर्ति होगी। याद रखिये यह केवल एक नहीं बल्कि सारे संसार में अनेक मूर्तियां बनायी जायेगी। सारे संसार के लोग आराम से मूर्ति पूजा करेंगे। उस समय मूर्ति पूजा अपनी चरम सीमा पर होगी। उस समय यीशु मसीह का वह वचन पूरा हो जायेगा जो मत्ती-24:21,22 में कहा गया है। मत्ती-24:15 में भी हम इस संबन्ध में पढ़ते हैं अर्थात्, **“सो जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यवक्ता के द्वारा हुई थी पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पड़े, वह समझें)”**। यह वर्णन उस मूर्ति की स्थापना की चर्चा है। उस समय विरुद्ध मसीह स्वयं पूजा और आराधना की वस्तु बन जाएगा। लिखा है, **“जो विरोध करता है और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को प्रकट करता है”** (॥ थिस्स 2:4)। वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बांधेगा, परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बंद करेगा (दानि-9:27)।

इस प्रकार उस 7 साल की अवधि में उसके आधे समय में ही यहूदियों के संग वाचा तोड़ देगा। वह अपनी मूर्ति बनाकर परम पवित्र स्थान में रखवा कर उसकी पूजा करने के लिए यहूदियों को आज्ञा देगा। इसका मतलब, वह अपनी वाचा की बात में यहूदियों के विषय विश्वासयोग्य रहना है तो उन्हें विरुद्ध मसीह के इस आज्ञा का पालन करना होगा और उसकी मूर्ति की पूजा करनी होगी। अन्यथा उन्हें मौत का सामना करना होगा। जिस प्रकार नबुकदनेस्सर राजा के समय में बड़ी भारी मूर्ति खड़ी कराई गयी और सबको यह आज्ञा दी गयी कि सब प्रकार के वाद्य सामग्री के बजाए जाने पर सब लोग गिरकर उस खड़ी करायी गयी मूर्ति को दण्डवत करें। मूर्ति के सामने दण्डवत न करने पर हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह के लिए आग 7 गुणा अधिक धधका दिया। इसके अलावा 30 दिन तब सब लोगों को राजा

से प्रार्थना करना था अन्य किसी से प्रार्थना करने पर सिंहो के मांद में डाले जाने का आदेश आदि सभी बातें उस आने वाले भारी क्लेश के समय के सताव के लिये एक संकेत है। याद रखिये यह सताव जो भारी क्लेश के समय में होगा वह यहूदियों के लिये है। उनके शुद्ध किये जाने के लिये है। इसे याकूब का क्लेश कहा गया है (यिर्म-30:7) ।

यह अन्तिम साढ़े तीन साल का समय वास्तव में भारी क्लेश कहा गया है। विरुद्ध मसीह यहूदियों के विरुद्ध हो जायेगा। वे विरुद्ध मसीह यहूदियों के विरुद्ध हो जाएगा। आसपास के अन्य राष्ट्रों के द्वारा भी सताए जायेंगे। इतना सताव होगा कि कई लोग मर जायेंगे। कई लोग आसपास के पड़ोसी देशों की ओर भाग जायेंगे। वहां भी भारी दुखों का सामना करना पड़ेगा। वे अपने आपको निस्सहाय महसूस करेंगे। कई शहीद हो जायेंगे। उस समय यहूदी लोग उनके मसीहा से प्रार्थना करेंगे कि वह आए और उनकी सहायता करें। उस समय उनका परमेश्वर उनकी सहायता के लिये एलिय्याह और मूसा को भेजेंगे है। वे आकर उन्हें मसीहा के आगमन और राज्य के लिए तैयार करेंगे। साढ़े तीन साल के अंत में यहूदियों के लिये मसीहा प्रकट होकर विरुद्ध मसीह पर अपना क्रोध उड़ेलेगा और उसके अनुयाइयों को नाश करेगा। यह उस बड़े युद्ध अरमगिदोन युद्ध के साथ समाप्त होगा। इसके साथ साथ विरुद्ध मसीह और झूठा नबी नरक की आग में डाल दिए जायेंगे।

इस भारी क्लेश के अन्त में यीशु मसीह उनके मसीहा के रूप में प्रकट होकर उनकी सहायता करेगा। वे मसीह को देखकर रोयेंगे और विलाप करेंगे। जिस प्रकार मिस्र देश में यूसुफ के भाई लोग यूसुफ के सामने अपने पाप और भूल को अंगीकार किये और यूसुफ ने अपने आप को उनके सामने प्रकट किया। ठीक उसी प्रकार यीशु मसीह यहूदियों के सामने प्रकट होगा। वह कहेगा मैं वहीं हूं जिसको तुम्हारे बापदादे सताए थे और क्रूस पर चढ़ाए थे। तब यहूदी लोग बड़े विलाप और पश्चाताप के साथ यीशु मसीह को ग्रहण करेंगे (जकर्याह.12:10,प्र.वा.-1:7) । इस प्रकार उस समय जीवित रहने वाले सारे यहूदी उद्धार पायेंगे (रोमियों.11:26,27) वे एक ही दिन में एक देश के रूप में उभरकर आयेंगे और परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किए जायेंगे

अध्याय 10

दानिय्येल द्वारा मसीह का दर्शन

दानिय्येल का इस अध्याय में वर्णन किया गया दर्शन B.C. 536 था। उस समय मादी फारसी साम्राज्य में कुस्रु शासन कर रहा था। उसके शासन के तीसरे वर्ष में दानिय्येल को यह दर्शन प्राप्त हुआ। वह समय लगभग B.C.533 था। अर्थात् पिछले दर्शन के 4 वर्ष बाद यह दर्शन मिला। उस समय दानिय्येल की उम्र 17 वर्ष की होने का अनुमान लगाया जाता है। इस समय दानिय्येल सेवानिवृत्त हो गया पर प्रभु परमेश्वर की सेवा से निवृत्त नहीं हुआ है। आज भी वह दर्शन देखता है और प्रभु की सेवा में पाया जाता है। दानिय्येल बाबुल में शुशन नाम राजगढ़ में है। उसने उन यहूदियों के साथ प्रस्थान नहीं किया, जो यरुशलेम में अपने स्वदेश की ओर दो साल पहले लौट गये। वह इस कारण नहीं गया होगा कि उसकी उम्र अधिक हो गयी हो या यह भी संभव है कि परमेश्वर उस को एक और दर्शन बाबुल में ही देना चाहता हो।

अतीत के दर्शन को वह अच्छे रूप में समझ नहीं पाया और परमेश्वर एक और दर्शन देना चाहता है। एक और बात उसको परेशान किए हुई थी, वह यह कि उसके लोगों को कुस्रु राजा ने स्वदेश लौटने का आदेश तो दिया पर बहुत कम लोग ही वापस गये हैं। केवल 50,000 लोगों ने ही उस अवसर पर फायदा उठाया। बहुमत लोगों ने तो बाबुल के सुख विलास में ही जिन्दगी गुज़ारने का फैसला किया। उन्होंने परमेश्वर द्वारा उनके बाप दादों को दिये सुन्दर देश और जीवित परमेश्वर की आराधना से दूर ही रहना पसंद किया। यह केवल साधारण लोग ही नहीं परन्तु याजकों एवं प्रधानों ने भी बाबुल के सुख विलास को प्राथमिकता दी। उनके दुःख का यह भी कारण हो सकता है कि जो लोग यरुशलेम पहुंच गये थे वे आसपास के लोगों से परेशान हो रहे थे। पड़ोसी उन्हें दुःख देने लगे। वे यहूदियों के पुनःस्थापन

से तनिक भी खुश नहीं थे। जो लोग वापस गये थे, वे बिल्कुल निर्बल प्राणी थे जो शत्रुओं का सामना करने में असमर्थ थे। ये तमाम बातें दानिय्येल के दिमाग में आती रही और वह कुछ नहीं कर सका सिवाय प्रार्थना और उपवास के। वह इन तमाम बातों को दिल में रखकर परमेश्वर के दर्शन के अभिलाषी हो गये। मतलब इस संकटमय परिस्थिति में परमेश्वर इन विषयों के बारे में दर्शन द्वारा क्या प्रकट करता है।

वह उन दिनों में तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। उन तीन सप्ताहों के पूरे होने तक, न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न मांस व दाख मधु अपने मुंह में रखा, और न अपनी देह में कुछ भी तेल लगाया (10:2,3)। जीवन की समस्याओं को लेकर वह परमेश्वर के पास जाता है। तीन सप्ताह तक उसने उपवास और प्रार्थना में मन लगाया। इसका यह मतलब नहीं कि वह कठिन उपवास में था। उम्र के हिसाब से कठिन उपवास उसको शारीरिक रूप में अधिक निर्बल कर देगा। मानसिक रूप में वह निर्बल था और शरीर में भी वह निर्बल हो जाए। सो मन पसन्द एवं स्वादिष्ट भोजन को तजकर केवल जीने के लिये कुछ-कुछ लेता रहा। संभव है वही सागपात और पानी ही इस समय भी लिया हो। बुढ़ापे में लोग ज्यादा खाते हैं अच्छा स्वादिष्ट भोजन खाना पसन्द करते हैं। बार बार कुछ न कुछ खाते रहना चाहते हैं। इसलिये पाठकगण अपने बुजुर्गों का इस विषय में विशेष ध्यान दें। खैर यहां दानिय्येल ने स्वादिष्ट भोजन तजकर दुःख में समय बिताया और ऊपर लिखा है कि उसने दर्शन के लिए मन लगाया। दुःख में और परेशानी में परमेश्वर की इच्छा जानने के लिये समय अलग करे तो कितना अच्छा है।

दानिय्येल का उदाहरण हमें उत्साहित करने पाए। आज हमारे देश की भयानक स्थिति को देखकर हमें दानिय्येल के समान दुःखी होना है। देश जीवित परमेश्वर को तजकर मूर्ति पूजा में धंसता चला जा रहा है जिससे देश की आर्थिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक स्थिति बिगड़ती चली जा रही है। देश के अन्दर से और बाहर से खतरे ही खतरे नजर आ रहे हैं। शासनकर्ताओं की कोशिशें नाकाम हो रही है। स्थिति नियंत्रण से बाहर जा रही है। ऐसा लगता है कि सब कुछ इस तरह नियंत्रण के बाहर है कि तेज रफ़्तार से जाकर किसी गहरे गर्त में गिरकर चकनाचूर हो जाए। सो परमेश्वर के लोगों को चाहिये कि स्थिति में सुधार आने के लिए उपवास और प्रार्थना में लग

जाए। स्वादिष्ट भोजन को तजकर प्रभु परमेश्वर के दर्शन के अभिलाषी हो जाएं। ताकि हमारा देश विनाश के गर्त में गिरने से बच जाए और सही दिशा में चले।

परमेश्वर के पुत्र का दर्शन

पद.4-9:- पहले महीने के चौबीसवें दिन को जब दानिय्येल हिद्देकेल नदी के तीर पर था, तब परमेश्वर के पुत्र को दर्शन में देखा। इस प्रकार का एक दर्शन दानिय्येल के जीवन में पहली बार हो रहा है। इससे पहले इस व्यक्तित्व का दर्शन दानिय्येल को कभी नहीं हुआ था। कई लोग इस व्यक्तित्व को केवल एक स्वर्गदूत मानते हैं। लेकिन यह विचार बिल्कुल गलत है। यह स्वयं प्रभु यीशु मसीह है जो अपने मानव अवतार के पूर्व दानिय्येल पर अपने आपको प्रकट करता है। याद रखिए यीशु मसीह अपने मानव अवतार से पहले महिमायुक्त रूप में था। उसने अपनी महिमा को त्याग कर, अपने को शून्य करके, मनुष्य बनकर, यहां तक दास बनकर प्रकट हुआ था (फिलि-2:6,7)। सो यह यीशु मसीह के मानव अवतार के पूर्व की स्थिति है।

यह यीशु मसीह होने का प्रमाण एक तुलनात्मक अध्ययन से मिलता है जो प्रकाशित वाक्य 1:13-17 में वर्णन किया गया है। इन दोनों दर्शनों में उपयोग किए गये कुछ शब्दों के प्रयोग में हेराफेरी है या अन्तर है अन्यथा दर्शन एक ही व्यक्ति का है। वहां युहन्ना पतमूस नामक टापू में अकेला बैठा है। उसको वहां प्रभु बड़े उद्देश्य के साथ ले गया था। उसको वे बातें समझाना और प्रकट करना था जो दानिय्येल को वर्षों पूर्व दर्शाया था। दोनों स्थानों में भविष्य में होने वाली बातें प्रकट कर रहा है। भविष्य के बारे में आधिकारिक रूप में प्रकट करने का अधिकार केवल प्रभु यीशु मसीह को है। इस भविष्य संबन्धी बात को परमेश्वर पिता ने प्रभु यीशु मसीह को दिया और यीशु मसीह ने अपने दूत को दिया और दूत ने युहन्ना को दिया और युहन्ना ने उसको दर्शन के मार्फत प्राप्त किया और पुस्तक के रूप में तैयार कर आज की स्थिति में लाए जाने में सक्षम हुआ (प्र.वा.1:1,2)। भविष्य के कार्यक्रम की समय सारणी जो दानिय्येल पर प्रकट की गयी थी, वह कलीसिया के कार्यक्रम के बिना अधूरी होने के कारण यूहन्ना को पतमूस में

ले जाकर वे बातें उस पर प्रकट की। सो भविष्यवाणी के द्वारा प्रकट किए गये कार्यक्रम के अंतर्गत कलीसिया भी शामिल हो गई। सो कलीसिया के समय को भी उस समय सारणी में शामिल कर दिया, तो यह कार्यक्रम बिलकुल नियमित हो गया। सो इस प्रकटीकरण के समय में भी कई स्वर्गदूत कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। परन्तु यीशु मसीह ने स्वयं भी महिमायुक्त शरीर में प्रकट होकर यूहन्ना को दर्शन दिया।

यीशु मसीह के उस दर्शन के साथ यहां का दर्शन तुलना करते हैं तो हम इस बात को बड़ी आसानी से समझ सकते हैं कि दोनों स्थानों में प्रकट होने वाला व्यक्ति एक ही है, अर्थात् मानव अवतार के पूर्व प्रभु यीशु और मानव अवतार के पश्चात् का प्रभु यीशु मसीह। शब्दों के प्रयोग का अन्तर भी इस बड़े अन्तर को दर्शाने के लिये किया गया है। अब एक सवाल सामने आता है जो बहुत से लोग उठाते हैं वह है पद 13 का वर्णन। वहां लिखा है कि फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना करते रहा, परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिए आया। लेकिन यहां किसी प्रकार की शंका का कारण नहीं है। 13 पद का व्यक्ति और 4 से 9 तक वर्णन किया गया व्यक्ति, दोनों एक नहीं परन्तु दो अलग-अलग व्यक्ति हैं। एक स्वयं प्रभु यीशु मसीह है और दूसरा जिब्राएल दूत है। 13 पद का व्यक्ति जिब्राएल दूत है। उसको अन्य व्यक्ति की सहायता की आवश्यकता होती है। प्रभु को किसी की सहायता प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती है। सो पद 4 से 9 तक वर्णन किया गया व्यक्ति कदापि पद 13 में दोहराया नहीं गया है।

इस दर्शन में परमेश्वर के पुत्र को सन का वस्त्र पहने और उफान देश के कुंदन से कमर बान्धे हुए, शरीर फिरोसा के समान, मुख बिजली की नाई, आंखें जलते हुए दीपक की सी, बाहें और पांव चमकाएं हुए पीतल के से, और उसके वचनों का शब्द भीड़ों के शब्द का सा, आदि वर्णन हमें पत्मूस नाम टापू के वर्णन याद दिलाता है अर्थात् दोनों एक ही व्यक्ति है। पर अलग-अलग समयों में अलग अलग व्यक्ति को एक ही विषय का दर्शन और ज्ञान दे रहा है। दोनों जगह भविष्य के कार्यक्रमों का वर्णन दिया गया है वह यह है कि दानिय्येल की पुस्तक की अपेक्षा प्रकाशितवाक्य के दर्शन में भविष्यवाणी का विषय एकदम स्पष्ट और नियमित रूप में रखा गया है।

आगे यह लिखा है कि दानिय्येल ने प्रभु का दर्शन देखा मगर उस के साथियों में से किसी ने भी उस पुरुष का दर्शन नहीं देखा। लेकिन परमेश्वर के पुत्र की उपस्थिति का आभास उन्हें ज़रूर हुआ। लेकिन व्यक्ति का शक्ल उन लोगों ने नहीं देखे। उसकी उपस्थिति का आभास उन्हें भयभीत किया। लिखा है कि **“वे बहुत ही थरथराने लगे, और छिपने के लिए भाग गए”**। यह दर्शन दानिय्येल के लिये आनन्द और आशा का विषय था। पर वही उसके साथियों के लिए भय और घबराहट का विषय था। वे भागकर छिपने का स्थान ढूँढ़ लिये। तब दानिय्येल अकेला हो गया और उस अद्भुत दर्शन को देखने लगा। यह एक सत्य है, प्रभु का दर्शन और प्रभु का संदेश एवं प्रभु की आशीष अकेलापन में मिलता है। कई लोगों ने प्रभु की आशीष और आवाज़ को सुनने के लिए अकेले हो जाने का वर्णन बाइबल में आरंभ से ही वर्णन किया गया है। इब्राहिम मोरिया पहाड़ पर परमेश्वर के अद्भुत आशीष को पाने के लिए एक दिन की दूरी पर नौकरों को छोड़कर आगे बढ़ा (उत्पत्ति-22:5)। याकूब ने अपने संकटमय परिस्थिति में परमेश्वर से आशीष लेना चाहा तब उसने सब कुछ यब्बोक नदी के पार कर याकूब अकेला नदी के इस तरफ रहा और परमेश्वर प्रकट हुआ और उसे आशीष दिया (उत्पत्ति-32:22,23)। ठीक इसी प्रकार शाऊल को इस्राएल के राजा होने के लिये अभिषेक करना है। शामुएल ने शाऊल से कहा कि सेवकों को आगे बढ़ने के लिए कहो और तुम रुक जाओ (1 शामु-9:27:10:1)। जब वह अकेला हुआ तब शमुएल ने उसे अभिषेक किया। सो सदा यह जीवन का नियम है कि प्रभु की आशीष को पाने के लिये भीड़ को छोड़कर अकेले होने की आवश्यकता होती है।

यहां दानिय्येल भी जब अकेला हुआ तब उस को प्रभु का अद्भुत दर्शन प्राप्त हुआ। उस महान प्रभु के दर्शन के कारण यह भयातुर हो गया और उसके शरीर का बल पूरा घट गया। उस निर्बल अवस्था में दानिय्येल ने प्रभु का वचन सुना और उस सन्देश के सुनने के कारण वह मुंह के बल गिर गया और उसको भारी नींद आयी। वह भारी नींद में सो गया। यही अनुभव पत्मूस नाम टापू में यूहन्ना का भी रहा है। प्रभु ने ही उसे छुआ और खड़ा किया। यूहन्ना को भी प्रभु ने उठाकर खड़ा किया था। (प्र.वा.-1:17)। दानियेल को प्रभु ने हाथ बढ़ा कर छुआ और उठाकर घुटनों और हथेलियों के बल थरथराते हुए बैठा दिया। इस स्थिति में खड़ा करने के बाद प्रभु उस

को अतिप्रिय पुरुष पुकारता है। उसको परमेश्वर का सन्देश सुनाता है।

क्या आप परमेश्वर का, प्रभु यीशु मसीह का दर्शन करना चाहता है? क्या आप भी उसके स्पर्शन को प्राप्त करना चाहता है? क्या आप भी दानियेल के समान प्रिय पुरुष या प्रिय स्त्री बनाना चाहते हैं? क्या आप भी भविष्य की सुरक्षा का वह सुसंदेश सुनना चाहता है? तो आप को भी भीड़ में से, तमाम प्रकार के संबन्धों से बाहर आना होगा। कई लोग इन तमाम आशीष को पाना चाहते हैं पर अलग होकर प्रभु के पास आना नहीं चाहते। भीड़ वाली बड़े गिर्जे में रहना पसंद करते हैं, जीवन काल भीड़ में व्यतीत करना चाहते हैं। मरने के बाद भीड़ वाली कब्रस्थान में गाड़ा जाना चाहते हैं और बड़ी भीड़ के साथ उस अनंत आग वाले स्थान में नरक में पड़ना चाहता है (मत्ती-7:13)। यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाला बड़ी भीड़ वाली मन्दिर और मन्दिर की आराधना को त्यागकर जंगल में चला गया और वहां उसे परमेश्वर और परमेश्वर का वचन प्राप्त हुआ (लूका-3:2)। याद रखिए भीड़ में रहे और परमेश्वर का दर्शन और परमेश्वर का वचन प्राप्त करना चाहे तो, यह असंभव है। इब्राहिम को सब कुछ छोड़कर निकलना पड़ा। वह अपना देश, अपनी जन्मभूमि, अपने पिता के घर को छोड़ा तब परमेश्वर की इच्छा पूरी हुई अर्थात् परमेश्वर के लिए एक प्रजा तैयार हुई और वह स्वयं भी विश्वासियों का पिता बना। क्या आप प्रभु के लिए एक बीड़ी भी छोड़ नहीं सकते? प्रिय पाठक प्रभु के वचन की सच्चाई के लिये अलग होकर प्रभु के पास आए। उसका दर्शन प्राप्त कर। उसका स्पर्शन प्राप्त करें और उससे शक्ति प्राप्त करें। प्रभु आपकी सहायता करने पाए।

10:10-14:- सो दानियेल को प्रभु ने उठाकर खड़ा किया। वह भय और घबराहट के कारण चार पैरों में खड़े रहने की स्थिति में खड़ा कराया गया। फिर उस से कहता है कि सीधा खड़ा कराया गया। फिर उस से कहता है कि सीधा खड़ा हो क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूं। दानियेल थरथराता हुआ खड़ा रहा। दानियेल से कहा गया मत डर। उस के भय को दूर कर दिया। उसे साहस दिया। अभी यहां इस स्थान में जिब्राएल दानियेल से बात कर रहा है। प्रभु अभी प्रकट नहीं हो रहा है। आरंभ से लेकर हम इस अध्याय को पढ़ते हैं तो देखते हैं कि कभी प्रभु आता है तो कभी दानियेल के पास जिब्राएल आता है। तो कभी दानियेल से कहता है कि पहले ही दिन उसकी प्रार्थना सुनी गयी। हमने प्रारंभ में यह देख चुके

है कि दानिय्येल 3 सप्ताह उपवास और प्रार्थना में था। वह 21 दिन तक प्रार्थना करता रहा। अभी भी जब जिब्राएल उस के पास खड़ा है तो वह प्रार्थना में ही था। 21 दिन की प्रार्थना उसकी समाप्ति की ओर आ गया। वह प्रार्थना का उत्तर लेकर प्रार्थना के अन्तिम दिन आया है। वह प्रार्थना के उत्तर आने में विलम्ब होने का कारण बता रहा है। इस वर्णन से हम भी समझ सकते हैं कि हमारी प्रार्थना भी पहले ही दिन सुनी जाती है पर उत्तर आने में देर क्यों होता है।

स्वर्गदूत कहता है प्रार्थना के प्रारंभिक दिन में ही उसकी प्रार्थना सुनी गयी। उत्तर देकर परमेश्वर ने जिब्राएल को तुरन्त भेजा भी। परन्तु वह स्वयं कहता है कि उसको फारस के प्रधान ने 21 दिन तक रोक रखा। यह फारस का प्रधान कौन है? यह वास्तव में शैतान और उस के कार्य को बताया गया है लेकिन शैतान का नाम सीधे न लेते हुए फारस का प्रधान बताया गया है। याद रखिए, जब परमेश्वर ने शैतान को जो लूसीफेर कहलाता है, स्वर्ग से गिराया तब वह स्वर्ग से गिरा पर वे पृथ्वी पर नहीं आया। वे आकाश मण्डल में लटक गए। शैतान भी आत्मा है, सो वे आत्मलोक में, आकाश मण्डल में अपना शासन का राजधानी बनाया। वह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में आकाश मण्डल में अपना निवास स्थान बनाया। वह अपना शासन पृथ्वी पर करता है। वह मनुष्य को परमेश्वर की इच्छा के केंद्र स्थान से विचलित कर अपनी इच्छा पर चलाना चाहता है। वह इस अर्थ में संसार का ईश्वर कहलाता है (॥ कुरि-4:4)। यह भी कहा गया है कि सारा संसार उस दुष्ट के अधीन में पड़ा है (1यूहन्ना-5:19)।

सो इस दृष्टिकोण से संसार के शासन की बागडोर संभालने वाले समस्त शासनकर्ताओं को वह नियंत्रित करता है। उनकी शासन प्रणाली, व्यापारिक प्रतिष्ठान और पद्धति शैतान के इशारे पर और नियंत्रण में चलाने के लिये वह प्रभाव डालता है। इस कारण शैतान जब पुकारा जाता है तो जिस देश की चर्चा की जा रही है उस देश के अधिकारी और शासनकर्ता के नाम से वह जाना जाता है। इस अर्थ में यहां शैतान को फारस का राजा कहा गया है। उस समय दानिय्येल फारस देश में पाया जाता था और फारस देश के अन्तर्गत रहता था। इसलिये रोकने वाले शैतान को फारस का राजा कहा गया है। यही प्रयोग बाबुल के राजा के साथ, उस के नाम

से भी कहा गया है (यशा—14:12)। उस समय शैतान के बारे में वर्णन करना था तो बाबुल का राजा पुकारा। इससे हम यह समझ सकते हैं कि सारे संसार का शासन शैतान के द्वारा नियंत्रित किया जाता है। हर शासनकर्ता के पीछे और उनके शासन के पीछे शैतान का नियंत्रण है।

याद रखिये परमेश्वर का सर्वाधिकार आज भी संसार के शासन प्रणाली में पाए जाते हैं। लेकिन वह दुष्ट शैतान उसको बिगाड़ना चाहता है। फिर भी समय समय पर राजाओं और शासनकर्ताओं ने इस महान ईश्वरीय सर्वाधिकार को स्वीकार किए हैं (दानि.2:47:3:28—29)। परमेश्वर इस संसार पर अपना शासन सीधे यहूदियों द्वारा करना चाहता था। इस कारण परमेश्वर ने एक समर्पित व्यक्ति को, इब्राहिम को चुना था। इब्राहिम से इसहाक इसहाक से याकूब और याकूब से 12 गोत्र एवं 12 गोत्रों से एक बड़ा राष्ट्र को इसलिए तैयार किया कि इस राष्ट्र के द्वारा एक ईश्वरीय शासन (Theocratic Nation) का शुभारंभ करें अर्थात् परमेश्वर यहूदियों को एक ईश्वरीय शासित राष्ट्र बनाना चाहता था जिसके द्वारा सारे संसार में परमेश्वर का शासन हो। पर वह राष्ट्र बार बार शैतान के प्रभाव में आकर मूर्ति पूजा रूपी महापाप एवं व्याभिचार रूपी घृणित पाप करते रहे। परमेश्वर ने उनके राष्ट्र को अर्थात् यहूदियों को बार बार दण्ड देते रहें और उनके राष्ट्र को भी दो भागों में विभाजित किया। उस विभाजन के पश्चात् भी वे पाप कर्म को छोड़े नहीं तो उन दोनों विभागों को बन्धुवाई में भेज भेज दिए। पहले 10 गोत्र वाला इस्राएल B.C. 722 में अशूर की बन्धुवाई में गए। उसके बाद 2 गोत्र वाला यहूदा राष्ट्र 116 वर्ष और स्वदेश में रहा। यहूदा राज्य के राजाओं के पाप कर्म के कारण वह राज्य B.C. 606 में बाबुल की बन्धुवाई की ओर गए। उसके साथ ईश्वरीय शासन की योजना पर पानी फिर गया। B.C. 606 वह महत्वपूर्ण समय है जिस में अन्य जातियों का शासन संसार में प्रारंभ हो गया। अन्य जाति शासन का प्रथम शासनकर्ता नबूकदनेस्सर था। वह अन्य जाति शासन आज भी संसार में चल रहा है।

यह अन्य जाति शासन आगे भी चलता रहेगा जब तक कि यीशु मसीह आकर अपनी योजना के अनुसार संसार में अपना शासन आरंभ नहीं करता है। अन्य जाति शासन प्रणाली में अन्तिम शासनकर्ता के रूप में विरुद्ध मसीह सारे संसार पर शासन करेगा। सो इस अन्य जाति शासन के

समय में शैतान का बड़ा प्रभाव सारे संसार के शासनकर्ता पर हम देखते हैं। शैतान की प्रेरणा से संसार का शासन चल रहा है। इस कारण परमेश्वर की योजना और परमेश्वर के लोगों के जीवन के लिये अक्सर खतरा ही साबित होता है। सो इस अन्य जाति शासन के समय में कई बार शैतान को उस देश के शासन— कर्ताओं के नाम से पुकारे जाते हैं अर्थात् बाबुल का राजा या फारस का राजा आदि। सो दानिय्येल की प्रार्थना का उत्तर लाने वाले जिब्राएल को रोकने वाला शैतान को उस समय के राजा के नाम से पुकारा गया अर्थात् फारस का राजा। उसने 21 दिन तक दानिय्येल की प्रार्थना के उत्तर को रोक दिया ताकि दानियेल पूरी तौर से निराश हो जाए। परन्तु मिकाएल के समय पर आकर हस्तक्षेप करने के कारण वह सफल नहीं हुआ। ठीक 21वें दिन दानिय्येल को उत्तर मिला।

मिकाएल स्वर्गीय सेना का सेनापति है। जिब्राएल संदेशवाहक है। मिकाएल की सहायता से वह उस समय बच निकला। इस समय यहां के वर्णन से हम समझ सकते हैं कि हमारी भी प्रार्थना उसी दिन या उसी समय सुनी जाती है पर उत्तर मिलने पर देर होने का कारण शैतान है। वह नहीं चाहता कि हमारी प्रार्थना सुनी जाए और उसका उत्तर हमें मिले और संसार में परमेश्वर के राज्य का निर्माण हो। उसकी प्रार्थना का शीघ्र उत्तर मिलने का कारण वहां लिखा है अर्थात् वह परमेश्वर के दर्शन को समझना चाहा और अपने आपको परमेश्वर के सामने दीन किया। नम्रता और दीनता के साथ, परमेश्वर की इच्छा जानने के विचार से की जाने वाली प्रार्थना परमेश्वर सुनता है और शीघ्र उत्तर भी देता है। इस प्रार्थना के उत्तर पाने में थोड़ा सा विलम्ब हुआ पर उत्तर मिल गया। वैसे इस से पूर्व जो भी प्रार्थना दानिय्येल करता था वह शीघ्र ही सुनी जाती थी (दानि.9:20—21)। आप भी अपनी समस्याओं और आवश्यकताओं के लिये नम्रता और दीनता के साथ प्रार्थना करें। हमारा परमेश्वर प्रार्थना का सुनने वाला और उत्तर भी देने वाला है।

सो प्रार्थना के उत्तर के रूप में जिब्राएल दूत दानिय्येल को दर्शन की बात समझाने आया। किसी भी ज़माने में क्यों न हो, अपने आपको नम्र और दीन करने वालों को समझाने और संभालने का प्रबन्ध परमेश्वर करता है। जिब्राएल ने दानिय्येल को दर्शन की बात समझाया और कहा कि दर्शन की

बात कुछ समय बाद पूरा होने वाला है। मतबल दर्शन की पूर्ति के लिये समय लगेगा। अर्थात् जो दर्शन दानिय्येल ने देखा है वह अंतिम समय में पूरा होने वाला है दानिय्येल सारा दर्शन देखकर परेशान हो गया यह सोचकर कि वह सब उसके लोगों से संबंधित है और शीघ्र पूरा होने पर है वह यह सोच रहा था कि परमेश्वर शीघ्र ही उनके मसीहा को भेजने वाला है और वह आकर उनके लिये राज्य स्थापित करने वाला है। या इस विषय में कुछ समय लगेगा? वह बिल्कुल परेशान था कि क्या है और क्या नहीं है। इस कारण वह उपवास और प्रार्थना द्वारा इस मामले को समझने का मन लगाया। सो परमेश्वर ने उसको दर्शन का समय और समाप्ति समझाया उसको मालूम हो गया कि उस समय अर्थात् 70 साल की बन्धुवाई के तुरन्त बाद मसीहा आकर राज्य स्थापित करने वाला नहीं है। इस कारण हो सकता है कि दानिय्येल वापस स्वदेश जाने का विचार बदल दिया और बाबुल में ही मृत्यु को प्राप्त किया।

10:15-17:- जब जिब्राएल दानिय्येल से बातें कर चुका तो दानिय्येल भूमि पर मुंह के बल गिर गया और चुपका रह गया। इस अवस्था में फिर वही परमेश्वर का पुत्र प्रकट होता है और दानिय्येल के ओंठ को छू लेता है। तब दानिय्येल मुंह खोलकर बातें करने लगा उसके सामने प्रभु स्वयं भी उपस्थित था। दानिय्येल उनसे अपनी असली हालत बतायी। उस ने कहा प्रभु दर्शन की बातों के कारण मुझमें कुछ भी बल नहीं रहा। वह कहता है इस दुर्बल अवस्था में दानिय्येल प्रभु से बात करने की अपनी असमर्थता को प्रकट करता है। उसके देह में कुछ भी बल नहीं रहा। वह कहता है उसको ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ सांस ही उसके अन्दर नहीं रहीं। यह वर्णन प्रेरित यूहन्ना के अनुभव के साथ बिल्कुल मिलता जुलता है (प्र.वा.-1:17)। यह क्या ही सच बात है कि मसीह का वास्तविक दर्शन करने वाला फिर पुराने अनुभव में जीवित नहीं रहता। उसका जीवन मानो दुनियां और पापकर्म के प्रति मर जाता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति शारीरिक रूप में मर जाता है तो उसके अन्दर किसी चीज़ का लालसा एवं इच्छा नहीं रहती। ठीक उसी प्रकार एक व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह का दर्शन कर लेता है तो उसके अन्दर एक ऐसा परिवर्तन आता है मानो वह दुनिया और दुनियां की बातों के लिये मरा हुआ हो। आप यदि आज भी उस पुराने मनुष्यत्व के साथ है तो उस का मतलब है कि आप ने अपने जीवन में प्रभु को ग्रहण नहीं किया है। प्रेरित पौलूस ने

मसीह को अपनाया तब उसका भी यही अनुभव था। वह कहता है मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझमें जीवित है (गलतियों.2:20)। सो इस अनुभव में हर एक को आना है।

10:18-19 :- इस दर्शन में फिर एक बार और मनुष्य के रूप में परमेश्वर का पुत्र प्रकट होता है और दानियेल को छूकर हियाब बन्धाता है वह दानियेल को एक और बार अतिप्रिय पुरुष कहता है। यह परमेश्वर के लिए अतिप्रिय पुरुष इसलिए हुआ कि वह पूरे 70 साल के बाबुल की बन्धुवाई के दिनों में अपने प्रभु परमेश्वर को अतिप्रिय जाना और हर जोखिम को उठाकर, प्राण को खतरे में डालकर भी परमेश्वर के लिए स्थिर रहा। परमेश्वर का वचन स्पष्ट रूप में कहता है कि जो मेरा आदर करें मैं उसका का आदर करूंगा (1शमु.2:30) यदि आप अतिप्रिय बनना चाहे तो परमेश्वर का भय मानकर उसकी मनसा को अपने जीवन में पूरी करने का यत्न करें। मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला चापलूस नहीं पर परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला शूरवीर बन जाए।

वह आगे कहता है मत डर दानियेल के भय को प्रभु ने अपने स्पर्शन के द्वारा और सानिध्य के द्वारा दूर किया। इस भय और डर से भरे संसार में प्रभु के अलावा हमारे डर को दूर करने वाला कोई नहीं है। यीशु मसीह ने अपने चेलों को जो आधी रात में आन्धी में फंसे थे कहा, मत डर मैं हूँ (मत्ती. 14:27) भयातुर मानव को भयरहित करने वाला केवल प्रभु यीशु मसीह है कहा जाता है पूरे बाइबल में 365 बार यह शब्द **“डरों मत”** का प्रयोग आया है। मतलब साल के प्रत्येक दिन मानों प्रभु हम से कहता है कि मत डर। यदि आप एक अशांति एवं भयातुर जीवन बिताते हैं, तो आप भी यीशु मसीह को पुकारे। वह आप को भी भयरहित कर देगा। आगे फिर कहता है तुझे शांति मिले। जहां भय अधिक काम करता है वहां लोग अशांति को महसूस करते हैं। अशांति के कारण लोग असफल हो जाते हैं। दानियेल दर्शनों के बारे में पूरी जानकारी न प्राप्त करने के कारण वह अशांति उसके दिल में समा जाता है। यह अशांति को हटाकर दिल, दिमाग में शांति डालने वाला एक ही है वह प्रभु यीशु मसीह है। उसने शिष्यों से विदा हाते समय यह कहा कि मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूँ जैसे संसार देता है मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे (यूहन्ना.14:27)। प्रिय पाठक आज ही मन की शांति

के लिए प्रभु यीशु से प्रार्थना करें। परमेश्वर जो शांति हमें देता है वह एकदम स्थाई है और ठहरने वाली है।

फिर दानिय्येल को इस बातचीत के द्वारा दृढ़ किया गया। आगे आने वाले बातचीत एवं चर्चा को सुनने से पूर्व वह एक प्रार्थना करता है कि वह एकदम शारीरिक रूप से निर्बल हो गया है। उसको बल की आवश्यकता है सो प्रभु यीशु मसीह वहां उपस्थित था ताकि उसे बलवन्त करें। सो प्रभु ने अपने स्पर्शन के द्वारा उसे बलवन्त किया और सीधे खड़ा किया तब दानिय्येल में कुछ बल आया। तब दानिय्येल ने कहा कि अब कह क्यों कि तूने मेरा हियाब बंधाया है (पद 19)। इससे पहले कि वह जिब्राएल द्वारा संदेश आगे सुने वह इस कदर निर्बल हुआ उसका ध्यान ही उस संदेश से हटने लगा। सो इस निर्बलता से निकलने के बाद वह परमेश्वर द्वारा भेजे गये संदेश को सुनने के लिए कान लगाया।

स्वर्गदूत के भेजे जाने का उद्देश्य

पद-20,21:- इन अंतिम दो पदों में जिब्राएल स्पष्ट करता है कि उसके भेजे जाने का उद्देश्य क्या है। उसको परमेश्वर ने दानिय्येल के पास इसलिये भेजा कि उस को यह बताए कि उसके लोगों के जीवन में आने वाले भविष्य में क्या क्या बीतने पर है। लेकिन इससे पूर्व कुछ घटनाओं को एक पूर्वदर्शन के रूप में दिखाया जो मसीह के आगमन से पूर्व होना है। उसके बाद भविष्यवाणी को प्रकट किया जो अंतिम दिनों में पूरी होने वाली है।

आगे वह कहता है कि उसको फारस के प्रधान के साथ युद्ध करना है। फारस का प्रधान अर्थात् शैतान उस समय पराजय की ओर आया पर पूरी तौर से पराजित नहीं हुआ था। आगे कहता है कि फारस का प्रधान पराजित हो जाए तो एक और शक्ति अर्थात् यूनान का प्रधान आने वाला है और वह आकर शासन को ले लेगा। इस प्रकार स्वर्ग में अर्थात् आकाश मण्डल में लगातार परमेश्वर के दूतों और शैतान के सलतनत के साथ सदियों से लड़ाई होती आ रही है। शैतान स्वर्गदूतों से लड़ाई कर तो रहे है पर वह दुनियां में रहने वाले परमेश्वर के लोगों के कारण होती है। अभी 70

साल तक यहूदा राज्य को बाबुल की बंधुवाई में ले जाकर रखा ताकी उनके द्वारा परमेश्वर की इच्छा पूरी न हो। लेकिन दानियेल को दर्शन द्वारा आने वाले भविष्य की बातें समझाता है। इस कार्य के लिए दानियेल की प्रार्थना के उत्तर को लेकर आने वाले स्वर्गदूत के साथ शैतान लड़ रहा है।

परमेश्वर के लोगों को शैतान कई प्रकार से परेशान करता है। एक तो उन लोगों की प्रार्थना को रोकने के द्वारा करता है। अन्य बहुमत समयों में अन्य जातीय राजाओं और शासककर्ताओं के द्वारा सतावट को खोल देने के द्वारा भी करता है। यहां फारस के राजा कुस्रु ने यहूदियों को स्वदेश जाने और उनके नगर एवं आराधना के मंदिर जो यहावा का मंदिर है बनाने हेतु अनुमति दी। तो शैतान उस राज्य को पराजित कराया और यूनान साम्राज्य को लाने की योजना बनाई। स्वर्गदूत यहां यह बात कहता है कि यूनान अधिक दिन तक स्थिर नहीं रहा। वह साम्राज्य शीघ्र ही समाप्त हो गया क्यों कि उसके सम्राट सिकन्दर महान की मृत्यु हो गयी। वह राज्य चार भागों में विभाजित हो गया। उसमें से एक विभाजन अर्थात् सीरिया राज्य है। उस राज्य में क्रूर शासनकर्ता उठा और वह परमेश्वर के लोगों के साथ लड़ा और उनको सताया। उसका नाम था अन्तियोकुस एपिपानस। वह बहुत ही क्रूर शासनकर्ता था। उसने यहूदियों को खूब सताया कईयों को मौत के घाट उतार दिया। कई लोग अपने घर एवं संपत्ति को छोड़कर पहाड़ों की ओर भाग गए। इसका पूरा वर्णन मकाबियों के पुस्तक में आया है। इसकी एक झलक इब्रानियों की पत्री 11:35 से आगे दिया गया है।

यहां एक और भयंकर बात हम देखते हैं वह यह है कि यहूदी लोग स्वदेश लौट गए और वहां बस गए। उनको परेशान करने के लिए शैतान एक सीरिया राज्य और उसके क्रूरतम शासनकर्ता अन्तियोकुस एपिपानस को उपयोग करता है। दानियेल 10:20 के अनुसार यह बात और स्पष्ट हो जाता है। शैतान नहीं चाहता था कि यहूदी लोग वापस स्वदेश पहुंचे। जब परमेश्वर के सेर्वाधिकार के कारण ऐसा हुआ तो उन्हें नष्ट करने एवं उनके आराधानालय को अशुद्ध करने प्रयास किया। इस प्रकार उन को पूरी तौर से या तो नष्ट अन्यथा भ्रष्ट करना था ताकि संसार का उद्धारकर्ता संसार में न आए। वचन के अनुसार यूनान के प्रधान के समय में भी परमेश्वर के लोगों के लिये स्वर्गदूत लड़ रहे हैं। परमेश्वर के लोगों की मदद कर रह रहे हैं।

याद रखिये परमेश्वर का हमारे प्रति बहुत बड़ी योजना रहती है। परन्तु शैतन इस कोशिश में है कि हमें भ्रष्ट करें और ये हमसे पाप कराए और हमें नष्ट करें। यूं परमेश्वर की योजना पूरी न हो पाए। लेकिन परमेश्वर अपना कार्य करता और कराता ही हैं।

आने वाले अध्यायों में प्रकट किये गये रहस्यमय बातों को समझने की शक्ति प्रदान करते हुए यह अध्याय समाप्त किया गया है। यहां अन्तिम पद में बताया गया है कि **“और जो कुछ सच्ची बातों से भरी हुई पुस्तक में लिखा हुआ है वह मैं तुझे बताता हूं”**। यहां से हम एक महत्वपूर्ण बात को समझने पाते हैं कि परमेश्वर के वचन की गूढ़ बातें समझने के लिये परमेश्वर की ओर से असामान्य एवं अद्वितीय सामर्थ और ज्ञान प्राप्त किये बिना यह संभव नहीं है। सच्ची बातों से भरी हुई अगले अध्यायों की बात समझने के लिये दानिय्येल को विशेष अभिषेक पाना ही था। उसके लिये दानिय्येल अभिषेक पाना ही था। उसके लिये दानिय्येल को सुसज्जित करने की प्रक्रिया के रूप में परमेश्वर का पुत्र प्रकट हुआ था। प्रभु यीशु मसीह के मानव अवतार के पूर्व वह महिमा के साथ प्रकट हुआ और दानिय्येल को सशक्त किया एवं सुबुद्धि दी। अब वह आसानी से समझ सकता था। यदि रखिये परमेश्वर के वचन के कई विषयों को कठिन समझकर कोने में ढकेलने के बदले परमेश्वर का अनुग्रह एवं अभिषेक प्राप्त कर, उस को समझने का प्रयास करना चाहिए।

आगे वह एक विशेष बात का ज्ञान प्राप्त कर रहा है अर्थात् परमेश्वर का विशेष प्रबन्ध जो परमेश्वर अपने लोगों के प्रति करता है। लिखा है, **“उन प्रधानों के विरुद्ध तुम्हारे प्रधान मीकाएल को छोड़ मेरे संग स्थिर रहने वाला और कोई भी नहीं है”**।

यहां मीकाएल को यहूदियों का प्रधान कहा गया है। मीकाएल स्वर्गीय सेना का अधिपति एवं अधिकारी है। वह प्रभु के साथ और आवश्यकता पड़ने पर जिब्राएल की भी सहायता के लिये उतर कर आता है। वह आकाश मण्डल में होने वाली लड़ाइयों में आगे रह कर शैतान से लड़ता है और उसको पराजित भी करता है। वह महान स्वर्गीय सेना का अधिकारी परमेश्वर

के लोगों के अंगरक्षक है उसे यहूदियों का प्रधान कहा गया है। वर्तमान समय में भी यहूदियों की सारी लड़ाई में भले वह अरबियों के साथ हो या फिलस्तीनियों के साथ हो मीकाएल और उसकी सेना लड़ने निकलती है। इस कारण कोई भी यहूदियों को पराजित नहीं कर पा रहे है। यह रहस्य यहूदियों के सारे दुश्मन समझ जाते तो कितना अच्छा होता। याद रखिये मीकाएल स्वर्गीय सेना का अधिपति और अधिकारी है जो यहूदियों का भी प्रधान ठहरा है (पद-21,12:1) । वह स्वर्गदूतों एवं प्रभु यीशु मसीह के साथ भी रहकर स्वर्गीय लड़ाइयों को विजय दिलाता है। मीकाएल के अलावा और कोई भी उसके लिये स्थिर नहीं रहने की वास्तविकता भी यहां बताया गया है।

आज नया नियम के समय में भी उद्धार पाने वालों के लिए उनके रक्षा करने वाले के रूप में स्वर्गदूत प्रदान किया जाता है इब्रानियों (1:13,14)। न केवल सामान्य समयों में हमारे साथ रहता पर हमारी लड़ाइयों में जो हम शैतान एवं शैतान के लोगों के साथ लड़ते है उसमें भी मैं विश्वास करता हूं, मीकाएल कलीसिया और कलीसिया के विश्वासियों की सहायता के लिए आ जाता है। जब मीकाएल आता है तो अवश्य है उसकी सेना भी उसके साथ आती हो। परमेश्वर आता है तो अवश्य है उसकी सेना भी आती है।

अध्याय 11

दानिय्येल द्वारा विरुद्ध मसीह का दर्शन

भविष्यवाणी के अध्ययन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण, अर्थसंपूर्ण एवं गहन विषय से संपन्न अन्य कोई भविष्यवाणी नहीं होगी जितना यह 11 अध्याय में निहित है। इस अध्याय के अध्ययन द्वारा हमें यह स्पष्ट मालूम हो जाएगा कि परमेश्वर का वचन कितना सत्य एवं अटल है। बाइबल की भविष्यवाणी इस उद्देश्य से रखी गयी है कि साधारण से साधारण लोग और विद्वान एवं ज्ञानी लोग भी बाइबल को परमेश्वर के वचन होने का दावा स्वीकार कर सकें। इस अध्याय की बातें उसकी पूर्ति के द्वारा इतिहास बनने के कई वर्ष पूर्व दानिय्येल द्वारा इसकी भविष्यवाणी की गयी। जिस प्रकार भविष्यवाणी हुई ठीक उसी प्रकार उसकी पूर्ति होना कितनी आश्चर्यजनक बात है। हम इसके अध्ययन में वह बात सविस्तार वर्णन कर जानने की कोशिश करते हैं।

पद.1:— “और दार्य नाम मादी राजा के राज्य के पहिले वर्ष में उसको हियाव दिलाने और बल देने के लिये मैं ही खड़ा हो गया।”

दार्य राजा के शासन के प्रथम वर्ष में उसको दृढ़ करने के लिए परमेश्वर के पुत्र के खड़े रहने के वर्णन के साथ यह अध्याय आरंभ होता है। दूसरे साम्राज्य के प्रथम वर्ष में उसके प्रथम शासनकर्ता को दृढ़ करने के लिए परमेश्वर का पुत्र उतर आया। उस समय पहले साम्राज्य अर्थात् बाबुल को परास्त करके मादी फारसी साम्राज्य शासन में आया ही था। इस साम्राज्य के शासनकाल में यहूदियों को बाबुल से स्वदेश लाने का परमेश्वर का कार्यक्रम था। उस कार्य को इस साम्राज्य के द्वारा सम्पन्न कराना है। इस कारण प्रभु उस साम्राज्य को दृढ़ करने के लिए उतर आया।

पद.2:- “और अब मैं तुझको सच्ची बात बताता हूँ ”

इस पद में फारसी राजाओं की चर्चा की गयी है। जैसे पहले भी हम विचार कर चुके हैं, दूसरा साम्राज्य एक द्विशक्ति शासन रहा। मादी और फारसी लोग मिलकर शासन करने पर थे। इनमें से पहले मादी लोगों को शासन करने का मौका दिया गया। मादी लोगों में से दारा राजा प्रथम शासनकर्ता रहा। लेकिन मादी लोग शासन के मामले में सशक्त नहीं रहे। सो शासन का कार्य शीघ्र ही फारसी लोगों के हाथ में आ गया। सो इस पद में फारसी शासन की चर्चा की गयी है। अभी दानिय्येल फारसी शासनकर्ता कुस्रु के समय तक ही पहुंचा है। इस पद में यह बताया गया है कि कुस्रु के बाद तीन और राजा आयेंगे। वे तीन राजा क्रमशः क्षयर्ष, अर्तक्षत्र और दारियूस थे। इतिहास में उन के नाम काम्पीसस (Cambyses, B.C. 524 - 522) , स्यूडो-स्मेरडीस (Pseudo-smerdis, B.C. 522-521), और डेरियस हिस्तास्पस (Darius Histaspes, B.C.521-485) थे। अन्तिम राजा या चौथा राजा जो बड़ा धनी था जिसका नाम था सेरक्सस (Xerxes, B.C.485-465)।

उसने सिंहासन पर विराजमान होते ही 10 लाख सेना को लेकर और इसके अलावा 1200 जहाज लेकर यूनान पर एक निर्णायक हमला किया। थेरमोफिले की इस मशहूर लड़ाई को इतिहास में एक विशेष युग या काल कहा जाता है। B.C.48 के सलामी के समुद्री लड़ाई में सेरक्सस की निश्चित या असंदिग्ध पराजय हुई और तीव्र निराशा, भय और शंका के साथ वापस अपने स्वदेश लौट गया। वह यूनान के ऊपर विजय हासिल नहीं कर पाया।

पद-3,4:- इन पदों में जो पराक्रमी राजा का वर्णन है वह यूनान देश का सिकन्दर महान है। यह वर्णन हमें पीछे की ओर अर्थात् मेढा और बकरे के दर्शन की ओर ले जाता है। (8:3-8,20-22)। सिकन्दर महान बिजली के समान तीव्रता से अपने 20 साल की आयु में एशिया के आक्रमण में निकल पड़ा। लगभग 12 साल के अन्दर वह पूरे एशिया को परास्त कर भारत के सीमावर्ती इलाके तक आया। B.C.331 में अपनी लड़ाई के अन्तिम पुकार के अन्तर्गत उसने फारसी देश के साथ लड़ाई की। यह कहा जाता है कि वह और भी देशों पर विजय प्राप्त करने के लिए पुकारा लेकिन केवल 33 साल की अवस्था में उसकी जीवन लीला समाप्त हो गयी। मदिरा सेवन करने और

शारीरिक अभिलाषा के मुख्य कारण से उसकी मृत्यु हुई। सिकन्दर महान की मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य चार भागों में विभाजित हो गया। उन विभाजित राज्यों में उस प्रकार की शक्ति नहीं रही जो विभाजन से पहले थी। उसके अलावा उसका राज्य उसके वंश में से किसी को नहीं मिला अर्थात् उसके पुत्रों को या परिवार के अन्य सदस्यों को नहीं मिला। उसका राज्य अन्य लोगों के वश में चला गया। अर्थात् उसके चार सेनापति उसके राज्य के चार भागों पर अधिकार जमाए। यह भविष्यवाणी का वचन था जो अक्षरसः पूरा हुआ और इतिहास बन गया। उसके दोनों पुत्र हर्कुलिस और सिकन्दर बचपन में ही मृत्यु के पाने के कारण सेनापतियों ने राज्य को विभाजित कर अपने अपने वश में कर लिए। यह चार राज्य त्रेस, मासिडोनिया, सीरिया और मिस्र थे।

इस अध्याय के इन उपरोक्त पदों के अध्ययन से हमें यह समझ में आता है कि ये चार पद इस अध्याय के विषय का एक परिचय मात्र है। उन विषयों को पहले के अध्यायों में कई प्रकार से सूचित किया गया है और वर्णन किया गया है। लेकिन इस अध्याय के 5 वें पद से विषय का पहला भाग आरंभ होता है। 20 वें पद तक विभाजित यूनान साम्राज्य के मिस्र नाम दक्षिणी राज्य के बारे में और सीरिया नाम उत्तरी राज्य के बारे में वर्णन देख सकते हैं। अमुक राज्य के संबन्ध में यह विशेषता है कि वह दोनों फलस्तीन देश के दक्षिण और उत्तर में पाए जाते हैं। इस कारण इन दोनों राज्यों को दक्षिणी राज्य और उत्तरी राज्य कहते हैं। इन दोनों राज्यों के आपस के संघर्ष का वर्णन, उसके एक ऐतिहासिक दर्शन, भविष्यवाणी के रूप में उन 16 पदों में वर्णन किया गया है।

यह चार देशीय विभाजन में से पूर्वी देश और पश्चिमी देश अर्थात् त्रेस (Asia Minor) और मकिदुनिया (Macedonia) के बारे में इस भविष्यवाणी में कोई चर्चा नहीं है। इनके बारे में चुप्पी भी एक भेदभरी बात है। फलस्तीन से संबन्धित विषय में मिस्र और सीरिया ही हस्तक्षेप किया है। इस कारण फलस्तीन के साथ किसी भी प्रकार का संबन्ध न रखने वाले एशिया माइनर और मकिदुनिया के बारे में कोई वर्णन नहीं आया है। फलस्तीन देश के साथ संघर्ष करने वाले मिस्र और सीरिया के बारे में उन घटनाओं के कई वर्ष पूर्व परमेश्वर की आत्मा उन विषयों के बारे में बिना गलती से वर्णन करना, एक

आश्चर्य की बात है। यह इस बात का प्रमाण है कि हम भविष्यवाणी के वचन को पूर्ण रूप में विश्वास कर सकते हैं।

पहला भाग—दक्षिणी राज्य और उत्तरी राज्य

पद—5—21:— 5 वें पद में वर्णन किया गया प्रथम शक्तिशाली दक्षिणी राजा मिस्र के टोलमी सोटर (Ptolmy Soter) था। मिस्र में टोलमी के आधिकारिक नाम से कई राजा हुए हैं। परन्तु उसके आगे आने वाले नामों से एक-एक राजा को पहचान सकते थे। आगे चलकर टोलमी सोटर के अधीन में शासन करने वाले प्रभुओं में से एक सेल्यूकस निकेटर महान बन गया और उस का शासन एक महान शासन हो गया। कुछ समय बीत गया और 6 वें पद के अनुसार टोलमी सोटर और सेल्यूकस निकेटर में आपस का मेल मिलाप हो गया। आगे इन दोनों का एक मिला जुला वर्णन पाया जाता है।

आगे लिखा है कि मिस्र का राजा टोलमी फिलाडेल्फस ने अपनी बेटी बेर्णिके का सीरिया के राजा अन्तियोकुस तियूस के साथ विवाह के संबन्ध में जोड़ने के विषय यहां भविष्यवाणी के रूप वर्णन आया है। इस विवाह के द्वारा उसका उद्देश्य यह था कि अपना राज्य और सीरिया के बीच में जो बैर था वह दूर करे, पर ऐसा संभव नहीं हो सका। इस विवाह के कारण अन्तियोकुस तियूस ने अपनी पत्नी और बेटे को त्याग दिया था। कुछ समय पश्चात् टोलमी फिलाडेल्फस का देहांत हो गया और उसके साथ-साथ अन्तियोकुस तियूस ने अपनी नई पत्नी अर्थात् टोलमी की बेटी को त्याग दिया। इस प्रकार 6 वें पद की वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो इन शब्दों में वर्णन किया गया है। अर्थात्, **“परन्तु उस का बाहुबल बना न रहेगा”**। अन्तियोकुस तियूस द्वारा तिरस्कृत पहली पत्नी को उसने फिर ग्रहण किया। लवोडिस नाम की इस स्त्री ने पति को जहर खिलाया और मार डाला। यूं उसने अपना बदला लिया। बरर्निके और उसका पुत्र लवोडिस की आज्ञा से मार दिए गए। उसके पश्चात् सीरिया के सिंहासन में लवोडिस ने अपने पुत्र को राजा के रूप में बैठा दिया।

कुछ समय के पश्चात् बरनिके का भाई जो “उसके जड़ों में से उत्पन्न होकर”, कहा गया है अर्थात् टोलमी यूरीजेटिस नाम के मिस्र का राजा अपनी बहन की मृत्यु का बदला लेने के लिए एक बड़ी सेना लेकर सीरिया की ओर गया। उसने लवोडिस को मार डाला जो बरनिके की मृत्यु का कारण बनी थी। सेल्यूकस कल्लिनिकस से चार साल अधिक टोलमी यूरीजेटिस ने शासन किया और सीरिया की सारी संपत्ति को मिस्र में लेकर आए और पद 8 और 9 के अनुसार वह उस देश से सारी संपत्ति को लूटकर ले आया। कहा जाता है कि उसने 40,000 तोड़े मतलब दस लाख से अधिक कीमत की चांदी और उनके देवता के मंदिर के 2500 बहुमूल्य सोने के बर्तन भी लूटकर ले गए। यह मिस्र का राजा सीरिया के राजा से अधिक वर्ष शासन में रहा।

टोलमी यूरीजेटीस के मरणोपरांत मिस्र में टोलमी फिलोपेटर ने शासन की बागडोर संभाली। ठीक इसी प्रकार सीरिया का राजा सेल्यूकस कल्लिनिकस के उत्तराधिकारी के रूप में सेरवूनस और महान अन्तियोकुस शासन शक्ति में आते ही मिस्र के साथ जो पूर्व शत्रुता थी, वह फिर से दोहरायी। सेरवूनस की मृत्यु के पश्चात् उस का भाई महान अन्तियोकुस सीरिया का अकेला शासनकर्ता रहा। अन्तियोकुस, मिस्र के राजा टोलमी फिलोपेटर के साथ युद्ध आरंभ किया। इस बात का वर्णन 10 वें पद में किया गया है। यूरीजेटिस के द्वारा आक्रमण कर अधीन किये गये सारे इलाके को उसने वापस ले लिया। मिस्र के सीमावर्ती इलाके में पाए जाने वाले सफाय नाम शहरपनाह तक वह अग्रसर हुआ। लेकिन यहां पहुँच कर अन्तियोकुस को पराजय का मुंह देखना पड़ा।

तब 11 पद के अनुसार दक्षिण देश का राजा टोलमी फिलोपेटर क्रोध में आकर निकला और उत्तरी राज्य के राजा के साथ युद्ध किया। इस लड़ाई में अन्तियोकुस पराजित होकर लौट गया। अपने विजय के कारण घमण्ड करने वाला टोलमी फिलोपेटर सीरिया को वश में करने की बजाए अन्तियोकुस के साथ सन्धि में हस्ताक्षर किया। तनिक भी बल प्राप्त किये बिना मिस्र का राजा टोलमी फिलोपेटर फलस्तीन देश पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और उस पर आक्रमण कर बैठा (पद-12)।

अन्तियोकुस और टोलमी एपिपानस

अन्तियोकुस का दूसरा आक्रमण जो उसने मिस्र पर किया। सफाया शहरपनाह के पास 14 वर्ष पहले पराजित अन्तियोकुस टोलमी फिलोपेटर के पुत्र टोलमी एपिपानस के विरुद्ध युद्ध करने के लिए तैयार हुआ (पद-13)। टोलमी एपिपानस को उन दिनों में सीरिया के अलावा अन्य शक्तियों के साथ भी लड़ना पड़ा। मिस्र के कई यहूदी मिस्र के राजा के विरुद्ध उठ खड़े हुए जैसा कि लिखा है, **“तेरे लोगों में से भी बलात्कारी लोग उठ खड़े होंगे”** (पद-14)। ये यहूदी टोलमी के विरुद्ध गुप्त रूप में अन्तियोकुस की सहायता करते रहे। यहूदा को मिस्र की अधीनता से स्वतंत्र करने के विचार से सीरिया की सहायता की परन्तु वह परिश्रम विफल हो गया। वे ठोकर खाकर गिर पड़े।

क्लियोपट्रा का विवाह

B.C.198 में अन्तियोकुस ने एक बड़ी सेना के साथ टोलमी एपिपानस का सामना किया। (पद-15,17) और बाद में शिरोमणी देश में प्रवेश किए। मिस्र पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन करने में अन्तियोकुस असमर्थ रहा। चालाकी से मिस्र को अपने अधीन करने के विचार से अन्तियोकुस ने अपनी बेटी क्लियोपट्रा को मिस्र के राजा टोलमी एपिपानस के साथ विवाह कराया। इससे उसने अन्तियोकुस के साथ संधि की। उसने अपने विनाश के लिए अपनी बेटी को उसकी पत्नी होने के लिए दी (पद-17)। इस विवाह के द्वारा अन्तियोकुस का उद्देश्य यह था कि धीरे-धीरे मिस्र को अपनी बेटी के प्रभाव द्वारा अपने वश में कर लेना। लेकिन इस भविष्यवाणी के मुताबिक कि **“वह स्थिर न रहेगी न उस राजा की होगी,”** क्लियोपट्रा ने अपने पति के साथ मिलकर पिता को इनकार किया।

महान अन्तियोकुस की मृत्यु

18 वें पद में अन्तियोकुस के द्वीपों के आक्रमण का वर्णन पाया जाता है। रोमियों के साथ युद्ध में अन्तियोकुस ने कुछ द्वीपों को अपने वश में कर लिया। लेकिन एक रोमी सेनापति लूशियस सिपियो असीयाटिकस (Lucius Scipio Asiaticus) ने उनके अहंकार को मिटा दिया। B.C.190 में मगनीशिया

नाम स्थान में उस सेनापति ने अन्तियोकुस को पराजित किया। रोमियों द्वारा चारों तरफ से आक्रमण किए जाने पर अन्तियोकुस ने शीघ्र ही स्वदेश की ओर मुंह किया (पद-19) और एक विपत्ति में पड़ गया। रोमियों की मांग के अनुसार एक बड़ी रकम देने में असमर्थ होने के कारण अन्तियोकुस एलोमाइस नाम के स्थान पर एक मंदिर लूटने के उद्देश्य से गया और उस कार्य की कोशिश में था कि एक हुल्लड़ में फंस गया और अकाल मृत्यु को प्राप्त किया। इस प्रकार महान अन्तियोकुस **“ठोकर खाकर गिर पड़ा”** (पद-19)।

अन्तियोकुस के स्थान पर शासन में आया उसका बेटा (पद-20) सेल्यूकस फिलोपेटर अपने एक सेनापति जो अंधेर करने वाला हेलियोडोरस को शिरोमणी देश अर्थात् यहूदा देश की ओर भेजा। इस कार्यक्रम के अंतर्गत उसने मंदिर को लूटने की योजना बनाई। लेकिन कुछ समय बाद अर्थात् 12 वर्ष बाद हेलियोडोरस ने अपने स्वामी सेल्यूकस फिलोपेटर को जहर खिलाकर उसे मार डाला। इस प्रकार वह क्रोध व युद्ध किए बिना ही नाश हो गया (पद-20)। शीघ्र ही उसका भाई अन्तियोकुस एपिपानस पेर्गमूस के राजा युमनेस की सहायता से B.C. 175 में सीरिया का सिंहासन हथिया लिया।

दूसरा भाग अन्तियोकुस एपिपानस

पद.21—36:— पहला भाग 20 वें पद के साथ समाप्त हो गया। उसके बाद दूसरा भाग में, 21 वें पद से लेकर 36 वें पद तक 16 पदों में एक ही व्यक्ति के बारे में वर्णन किया गया है। उसके बारे में यह वर्णन आया है कि एक तुच्छ मनुष्य अन्तियोकुस एपिपानस के नाम से प्रसिद्ध होगा। इस सीरिया राजा की वीरता और यरुशलेम के विरुद्ध उसके द्वारा किए गये क्रूरतम कार्यों को इस भाग में ठीक ठीक वर्णन किया गया है। घटनाओं की स्पष्टता के कारण कई आलोचना करने वाले दानिय्येल की भविष्यवाणी को अन्तियोकुस एपिपानस के समय के पश्चात् लिखे जाने की घोषणा करते हैं। लेकिन पोरफिरी आदि के इस प्रकार का विवाद बिलकुल अर्थशून्य है। इस बात का इस पुस्तक के आरंभ में ही वर्णन किया गया है।

अन्तियोकुस एपिपानस ने राजा बनने के लिए बहुत प्रयास किया। लिखा है, **“जिसकी राज प्रतिष्ठा पहले तो न होगी, तो भी वह चैन के**

समय आकर चिकनी चुपड़ी बातों के द्वारा राज्य को प्राप्त करेगा' (पद-21)। उसने चतुराई से राज्य हासिल किया। परगमुस के राजा युमनेस की सहायता से राज्य का सिंहासन अपने अधीन करने का वर्णन उपरोक्त पद में आया है (पद-21)। बहुत ही चतुराई से राज्य हासिल करने के बाद बाड़ समान सैन्य शक्ति को लेकर एप्पियानस ने मिस्र पर आक्रमण किया। टोलमी फिलोमेटर जो "वाचा का प्रभु" कहा गया है, अन्तियोकुस एप्पियानस की बहन का बेटा था। महान अन्तियोकुस की बेटी और अन्तियोकुस एप्पियानस की बहन क्लियोपट्रा से मिस्र के राजा टोलमी एप्पियानस विवाह करने का वर्णन हम इससे पहले देख चुके हैं। इस विवाह द्वारा उत्पन्न बेटा था, टोलमी फिलोमेटर। क्लियोपट्रा के विवाह के समय में फलस्तीन उसको दहेज में देने का वायदा महान अन्तियोकुस द्वारा टोलमी एप्पियानस के साथ किया था। लेकिन वह वायदा अब तक पूरा नहीं हुआ था। मां का हक नष्ट न करने के विचार से टोलमी फिलोमेटर कोशिश करने पर मिस्र की सेना को अन्तियोकुस एप्पियानस ने भगा दिया। इस प्रकार मामा और भांजा आपस में लड़ने लगे। अंत में बहुत ही चालाकी से मेफोस नाम मिस्र का एक नगर एप्पियानस ने अपने अधीन कर लिया। टोलमी फिलोमेटर के साथ इस अवसर पर एप्पियानस ने बड़े प्रेमपूर्वक व्यवहार किया। इस प्रकार छलकपट करके थोड़ी सी सेना को लेकर अन्तियोकुस प्रबल हुआ (पद-23)। इस प्रकार कपट एवं चालाकी द्वारा वह चैन के समय में प्रांत के उत्तम से उत्तम स्थानों पर चढ़ाई करके अन्तियोकुस एप्पियानस ने मिस्र पर ऐसी शीघ्र विजय हासिल किया जो उसके पुरखा और पुरखाओं के पुरखा प्राप्त न कर सके (पद-24)। अन्तियोकुस एप्पियानस ने मिस्र पर अपनी शीघ्र विजय स्थापित की।

सीरिया का आधिपत्य

इस प्रकार से मुख्य शहरपनाह सीरिया के अधीन में आ गया। मिस्र का राजा टोलमी फिलोमेटर अन्तियोकुस एप्पियानस के अधीन हो जाने के कारण लोगों ने टोलमी फिस्कन (Ptolomy Physcon) अर्थात् यूरोजेटिस द्वितीय को मिस्र का राजा नियुक्त किया। इससे अन्तियोकुस एप्पियानस क्रोधित हो गया और एक बड़ी सेना को लेकर दक्षिण देश के राजा के विरुद्ध अपनी शक्ति और हिम्मत का प्रयोग किया (पद-25)। नए राजा को भगा दे

और अन्तियोकुस के हाथ में एक गुड़िया के सामान रहने वाले टोलमी फिलोमेटर को फिर से राजा बनाने का व्यर्थ परिश्रम चालाकी से किया। इस प्रकार फिलोमेटर के अन्न को खाने वालों ने ही उसको हरवाया। (पद-26)। अन्तियोकुस और फिलोमेटर दोनों बुराई करने के विचार से एक ही मेज पर बैठकर आपस में झूठ बोले और परस्पर प्रेम का नाटक रचाया (पद-27) और एक समझौता करने का प्रयास किया। लेकिन वह सफल न हो सका (पद-27)। क्योंकि इन सब बातों का अंत नियत समय के लिए रखे गये हैं। अन्तियोकुस एपिपानस तुच्छ मनुष्य कहा गया है। वह एक क्रूर स्वेच्छाचारी और दुष्ट शासनकर्ता था। राज्य उस को सही रूप में प्राप्त नहीं हुआ था बल्कि चालाकी से उसने हथिया लिया था। वह यरुशलेम गया और वाचा का प्रधान अर्थात् यहूदियों के महायाजक ओनियास तृतीय को उसके स्थान से या पद से हटाया। उसका शासन आरंभ में विनीत एवं विनयपूर्ण था पर वह थोड़े ही लोगों को लेकर सशक्त हो गया। उसने मिस्र पर आक्रमण तो किया पर उस पर विजय हासिल नहीं कर पाया। उसकी क्रूरता, सतावट के कार्य विश्वासघात आदि इतिहास में काले अक्षरों में अंकित किये गए हैं। उसने मिस्र के शासनकर्ताओं से मेज पर बैठकर झूठी बातें की।

मिस्र से लौटते समय अन्तियोकुस ने सुना कि यरुशलेम में उसकी मृत्यु का संदेश फैल गया और जिससे सब लोग बड़ा आनंद मना रहे हैं। सो उसने यरुशलेम में प्रवेश किया और 40,000 निवासियों को मार डाला और अन्य बहुत से लोगों को गुलामों के रूप में बेच डाला और मंदिर को लूट लिया और अन्ताकिया की ओर लौट गया (मकाबियों.5:11-21)। इस आक्रमण के लिए अन्तियोकुस और रोम द्वारा भेजे गए दूत अर्थात् राजप्रतिनिधि पोप्लियूस मिस्र के सीमावर्ती इलाकों में पहुंचे। उन दोनों की मुलाकात रोम में इससे पूर्व हो चुकी थी। दोनों की अच्छी पहचान थी। वार्तालाप के दौरान अन्तियोकुस ने पोप्लियूस से पूछा कि आप के आगमन का तात्पर्य क्या है ? तब पोप्लियूस ने कहा रोम नहीं चाहता कि आप मिस्र पर आक्रमण करें अतः आप वापस स्वदेश लौट जाए, तब अन्तियोकुस ने कहा कि मैं इस बारे में सोचूंगा। पोप्लियूस अकेला था उसके साथ न तो सेना थी न उसका कोई अंग रक्षक। उसने अपने पास जो लाठी थी जिससे अन्तियोकुस के चारों तरफ एक गोला खींचा और कहा कि इससे पूर्व कि तुम इस गोले से बाहर निकलो अपना निर्णय बताओ। थोड़ी देर सोचने के पश्चात् उसने कहा, ठीक

है मैं वापस जाता हूँ।

अन्तियोकुस एप्पियानस की यरुशलेम पर चढ़ाई

अन्तियोकुस एप्पियानस ने स्वदेश अर्थात् सीरिया की ओर लौटते समय यरुशलेम पर चढ़ाई की (पद-28)। लिखा है, “तब उत्तर देश का राजा बड़ी लूट लिए हुए अपने देश को लौटेगा, और उसका मन पवित्र वाचा के विरुद्ध उभरेगा और वह अपनी इच्छा पूरी करके अपने देश को लौट जाएगा”। उसने पवित्र मंदिर में कई अपवित्र कार्य किये। एक यहूदी इतिहास के अनुसार उसने एक सुअर को वेदी पर चढ़ाया। इस अवसर पर उसने सुअर का मांस खाने के लिए यहूदियों को मजबूर किया और न खाने पर अनेक यहूदियों को निर्मम तरीके से वध किया और मंदिर के सोने और चांदी के बर्तनों को अपने स्वदेश सीरिया की ओर ले गया। B.C.168 की यह घटना एक ऐतिहासिक बात है।

B.C.168 में अन्तियोकुस द्वारा मिस्र पर किए गये तीसरे आक्रमण की चर्चा पद 29 में अंकित की गयी है। किन्तु यह आक्रमण विजय में परिणित नहीं हुई। इस का कारण यह था कि कित्तियों के जहाज उस के विरुद्ध आए (पद-30)। इसका मतलब है कि रोमी सेना अन्तियोकुस के विजय के लिए बाधा बन गयी। पहली यात्रा और लड़ाई से लौटने के पश्चात् यरुशलेम में ईश्वरीय आराधना आरंभ की गयी जो अन्तियोकुस के लिये घृणा का कारण बन गयी। मिस्र के साथ उसकी लड़ाई सफल न होने से वह उदास होकर लौटा और यरुशलेम में प्रवेश किया। उसने अपना क्रोध परमेश्वर के लोगों पर उतारने का प्रयास किया। लेकिन उसने यरुशलेम में रहने वाले उन यहूदियों की सुधि ली जो पवित्र वाचा को तोड़ने वाले अर्थात् व्यवस्था को तोड़ने वाले थे। इन विश्वासघात यहूदियों में मेनलस नाम के याजक और अन्य यहूदी भी शामिल थे। अपलोनियस नाम के सेनापति के नेतृत्व में अन्तियोकुस द्वारा भेजी गयी सेना ने पवित्र मंदिर को अशुद्ध किए। रोज के पवित्र बलिदानों को बंद कर दिए गये। उजाड़ करने वाली घृणित वस्तु को खड़ी कराई गई (पद-31)। अर्थात् जूपिटर देवता की मूर्ति को एप्पियानस

की आज्ञा से यहूदियों के मंदिर के परम पवित्र स्थान में स्थापित कर दी गयी। उसके अलावा हजारों की तादाद में यहूदियों को मार डाला और यह घोषणा की कि यह स्थापित मूर्ति एप्पिपानस स्वयं की है। ये सारी बातें अंतिम दिनों में विरुद्ध मसीह द्वारा किए जाने वाले ईश्वरीय दोषारोपणयुक्त प्रक्रियाओं की एक झलक और संकेत के अलावा और कुछ नहीं है। अंतियोकुस द्वारा स्थापित मूर्ति विरुद्ध मसीह द्वारा स्थापित होने वाली मूर्ति का एक स्पष्ट संकेत है।

मकाबियों का मुकाबला

इस समय परमेश्वर की वाचा को तोड़ने वाले यहूदियों को उसने चालाकी और चतुराई से अपवित्र किया। वह चिकनी चुपड़ी बातें कहकर भक्तिहीन कर दिये। परन्तु सब प्रकार की अपवित्रता एवं अशुद्धता से भरे इस माहौल में परमेश्वर का ज्ञान रखने वाले भक्ति और विश्वास में परमेश्वर को जानने वाले कुछ लोग स्थिर रहकर बड़े हियाव के साथ वीरता का कार्य किये (पद-32)। मकाबियों के नेतृत्व में कुछ देशभक्त लोग एवं ईश्वर विश्वासी अन्तियोकुस एप्पिपानस के कूरतम शासन का डटकर मुकाबला किया और धीरे-धीरे उसको चकनाचूर करके कुछ वर्षों तक यहूदा देश में स्वतंत्रता को कायम किया। इसके साथ साथ परमेश्वर के मंदिर का पुनः अर्पण करके पवित्र भी किया गया (B.C.165)। इन बातों की सूचना अन्तियोकुस के पास पहुँचा तो वह आश्चर्यचकित, अचेत एवं मूर्छित हो गया। वह शारीरिक एवं मानसिक रूप में निर्बल हो गया और एक वर्ष बाद उसका देहांत हो गया। उसकी आशाएं एवं आंकाक्षाएं पूरी न हुईं न उसके लिए आंसू बहाने वाला कोई मिला। ऐसे दुष्टों की आशाएं पूरी कैसे होगी और उनके लिए रोने वाले भी कहां मिलेंगे। हां उसको कोसने वाले और लानत देने वाले अधिक रहे होंगे। याद रखिए अनेक लोगों के आंसू बहाने वाले के लिए कोई रोने वाले नहीं रहेंगे। आज तक यहूदी लोग उसके नाम को ईश्वर के श्राप के उदाहरण के रूप में स्मरण करते हैं।

पद-33,34:- में लिखा है, “और लोगों के सिखाने वाले बुद्धिमान जन बहुतों को समझायेंगे, तो भी वे बहुत दिन तक तलवार से छिदकर

और आग में जलकर, और बंधुए होकर और लुटकर, बड़े दुख में पड़े रहेंगे”। आंतरिक कलह एवं अत्याचार के कारण मकाबियों की शक्ति शीघ्र ही शिथिल हो गयी। यहूदा देश को रोमियों के आक्रमण के अधीन होना पड़ा। इसके साथ-साथ मकाबियों की शक्ति एवं स्वतंत्रता नष्ट हो गयी। लेकिन मकाबियों के प्रतिनिधि होने वाले यहूदियों के शेष लोगों को भविष्य में प्राप्त होने वाले उज्ज्वल भविष्य की प्रतिज्ञा के साथ यह दूसरा भाग समाप्त होता है वह निश्चित समय में ही पूरा होगा (पद-35)।

भविष्यवाणी और इतिहास का संबंध

इस दूसरे भाग में वर्णन किये गये मिस्र और सीरिया के संघर्ष का इतिहास दानियेल के समय में भविष्यवाणी के रूप में लिखा जाना एक आश्चर्य का विषय है। भविष्यवाणी विश्वासयोग्य ईश्वरीय संदेश होने का प्रमाण इस पूरी हुई बात से प्रमाणित है। फारसी राजाओं के बाद शासन में आए साम्राज्य की उन्नति को दर्शाने वाले सिकन्दर महान के साम्राज्य उसकी मृत्यु के बाद उस के संतान को प्राप्त न होकर उनके चार सेनापतियों को प्राप्त होने वाली बात को पहले से कितने सुंदर तरीके से बिना गलती से वर्णन किया गया है। यह बात सोचने वाले किसी भी व्यक्ति को आश्चर्यचकित कर देगी। ठीक इसी प्रकार विभाजित यूनानी साम्राज्य के दक्षिणी राज्य अर्थात् मिस्र और उत्तरी राज्य सीरिया के आपसी संघर्ष और उसके द्वारा फलस्तीन देश का सामना किए गये दुख और क्लेश बहुत सालों पूर्व भविष्यवाणी में जगह ले लिया था।

इन दोनों राज्यों के बीच में फलस्तीन देश होने से उसको काफी दुःख का सामना करना पड़ा और यह दुःख सीरिया के शासनकर्ताओं की क्रूरता के कारण हुआ है। सीरिया के राजा अन्तियोकुस एपिपानस के द्वारा किए गये सताव एवं यहूदियों के क्लेश का वर्णन आश्चर्य में डालने वाला है इसके अलावा भविष्य में सीरिया से उठने वाला एक दुष्ट शासनकर्ता अन्तियोकुस के पदचिन्हों पर चलकर ईश्वर विरोधी रवैयों में शामिल होने और उसके द्वारा यहूदी लोग सामना करने वाले भारी क्लेश का वर्णन भी इस अध्याय में आया है। वह अभी भी एक भविष्यवाणी के रूप में पाए जाते हैं। जो कुछ पूरा हुआ

वह इतिहास बनकर इतिहास के पन्नों में और जो पूरा नहीं हुआ है वह आज भी भविष्यवाणी के रूप में परमेश्वर के वचन में पाए जाते हैं।

संसार का अन्तिम शासनकर्ता

दूसरा भाग 35 वें पद के साथ समाप्त होकर 36 वें पद से लेकर 44 वें पद तक संसार में उदय होने वाले अंतिम शासन प्रणाली के एक कूर शासनकर्ता का वर्णन पाया जाता है। इन 9 पदों में वर्णन किए गये कोई भी बात संसार के किसी भी शासनकर्ता के जीवन में अब तक पूरा न होने के कारण यह केवल अन्य जाति अंतिम शासनकर्ता विरुद्ध मसीह के लिए ही सार्थक सिद्ध होता है। इस नए राजा की चर्चा इस वर्णन के साथ आरंभ किया है कि वह राजा अपनी इच्छा के अनुसार शासन करेगा (पद-36)। इस स्वेच्छाधिकारी का शासन भारी क्लेश के अंत तक चलता रहेगा। अन्तियोकुस एप्पिपानस के समान एवं अनेक सदियों बाद प्रकट होने वाले इस राजा को दानिय्येल अन्तियोकुस के उत्तराधिकारी के रूप में दर्शन में देखते हैं। यह उत्तराधिकार उसके स्वभाव और कार्यों में पाए जाने की बात हम विशेष रूप में समझे। इस अंतिम नेता का कार्य देखने से ऐसा लगेगा कि वह अन्तियोकुस का सीधा उत्तराधिकारी है। इन दोनों शासनकर्ताओं के बीच में अनेक सदियों का अन्तर पाया जाता है। नया नियम में आकर हम इस व्यक्ति के बारे में अधिक जानकारी हासिल करते हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उसके बारे में वर्णन आया है कि वे सात राजा भी हैं, पांच तो हो चुके हैं और एक अभी है और एक अब तक आया नहीं और जब आएगा तो कुछ समय तक उसका रहना भी अवश्य है (प्रवा.17:10-14)।

विरुद्ध मसीह का असली स्वभाव

यहां वर्णन किया गया शासनकर्ता अर्थात् तब वह राजा अपनी इच्छा के अनुसार काम करेगा और अपने आपको सारे देवताओं से ऊंचा और बड़ा ठहरायेगा; वरन् सब देवताओं के और परमेश्वर के विरुद्ध भी अनोखी बातें कहेगा, वह अपने पुरखाओं के देवताओं की चिंता न करेगा, न स्त्रियों की

प्रीति की कुछ चिंता करेगा और न किसी देवता की क्योंकि वह अपने आप ही को सब के ऊपर बड़ा ठहरायेगा (पद.36,37)। उपरोक्त वर्णन विरुद्ध मसीह के लिए बिल्कुल ठीक बैठता है। दृढ़ गढ़ों के देवता का मतलब है कि वह हाथ से बनाए हुए देवता की पूजा करने वाला होगा। यह व्यक्ति एक भ्रष्ट यहूदी होने का विचार पद 37 के आधार पर किया जाता है। वह अपने पुरखाओं के देवताओं को और स्त्रियों की प्रीति की परवाह न करेगा।

स्त्रियों की प्रीति का क्या अर्थ है ? यहूदी स्त्रियां सदा मसीह के मातृत्व को चाहने वाली थीं। सो स्त्रियों की प्रीति को न चाहने का मतलब है मसीहा के प्रति प्रीति न होना। इसका अर्थ है कि विरुद्ध मसीह कभी मसीहा का आदर नहीं करेगा। अपने आप को ऊंचा करने वाले इस नेता का अंत एक मूर्ति पूजा में समाप्त होता है। वह सोना, चांदी, मणी एवं सुंदर वस्तुओं से या मनभावन वस्तुएं चढ़ाकर उस का सम्मान करेंगे। यह अंतिम दिनों में शासन में आने वाले विरुद्ध मसीह द्वारा बनायी जाने वाली सोने की मूर्ति और उस की आराधना की ओर एक संकेत है (प्र.वा.17:4)।

वह उन्हें जो उसको माने उसे वह बड़ी प्रतिष्ठा देगा ऐसे लोगों को वह बहुतों के ऊपर प्रभुता देगा और अपने लाभ के लिए अपने देश की भूमि को बांट देगा (पद.39)। फलस्तीन देश के ऊपर विरुद्ध मसीह के स्वेच्छा शासन और सत्तावट को इस पद के द्वारा वर्णन किया गया है। मतलब उसके कहने के अनुसार कार्य करने वालों को हर प्रकार की सुख सुविधाएं प्रदान करेगा, पर उसके विरुद्ध रहने वालों को वह सतायेगा।

विरुद्ध मसीह के शासन की चरमसीमा पर पहुंचने पर उसके विरुद्ध कुछ शक्तियां उठने के संबन्ध में पद 40 से आगे अंकित किया गया है। अंत के समय दक्खिन देश का राजा उसको सींग मारने लगेगा। परन्तु उत्तर प्रदेश का राजा उस पर बवण्डर की नाई बहुत से रथ सवार और जहाज लेकर चढ़ाई करेगा (पद.40)। इस वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि अंतिम दिनों में विरुद्ध मसीह के समय में मिस्र और सीरिया का फिर से उठना होगा। ये दोनों देश विरुद्ध मसीह के विरुद्ध होने का वर्णन अद्भुत है। इस समय विरुद्ध मसीह शिरोमणि देश अर्थात् फलस्तीन देश में प्रवेश करते हैं। वहां प्रवेश करके वह आक्रमण करेगा और बहुत से लोग मारे जायेंगे परन्तु

एदोमी, मोआबी और मुख्य मुख्य अम्मोनी आदि जातियों के देश उसके हाथ से बच जाएंगे, (पद.42) और उसको लूट लेगा और मिस्र देश के साथ संबन्ध रखने वाले देश अर्थात् लूबी और कूशी को वह अपने अधीन कर लेगा। इस अर्थ में यहां लिखा है कि और लूबी और कूशी लोग भी उसके पीछे हो लेंगे (पद.43)।

इन लड़ाईयों और सफलताओं के समय वह एक समाचार सुनेंगे और उस समाचार से यह शेर दिल वाला घबराते हुए वर्णन किया गया है (पद-44)। यह समाचार उसके पास उस समय पहुंचता है जब वह मिस्र से लड़कर उत्तर की ओर लौटते होंगे। यरुशलेम के आसपास से मिलने वाली यह खबर भयंकर एवं दुखदाई है। अपनी सेना के विरुद्ध ऊपर से न्याय और दण्ड की प्रतीक्षा करने वाला विरुद्ध मसीह यह समाचार सुनते ही अपनी राजधानी को यरुशलेम की ओर स्थानांतरित करते हैं। उसी समय वह पूरब और उत्तर दिशाओं से समाचार सुनकर घबरायेगा, और क्रोध में आकर बहुतों को सत्यानाश करने के लिए निकलेगा। और वह दोनों समुद्रों के बीच पवित्र शिरोमणी पर्वत के पास अपना राजकीय तम्बू खड़ा करेगा (पद-44,45)।

अर्मिज्दोन की लड़ाई

यह विरुद्ध मसीह कलीसिया के उठा लिये जाने के पश्चात् भारी क्लेश के आरंभ में पृथ्वी पर प्रकट होगा। वह अन्य जाति शासन का अंतिम राजा के रूप में प्रकट होने वाला है। अन्य जाति शासन B.C.606 में संसार के अन्दर आरंभ हुआ और इस विशेष शासन प्रणाली का प्रथम राजा नबुकदनेस्सर राजा था और अन्तिम राजा विरुद्ध मसीह होगा। कहा जाता है वह नबुकदूनेस्सर सिकन्दर महान व कैँसर और नेपोलियन आदि की शक्ति और योग्यता के साथ प्रकट होगा। वह शैतान का पक्का अवतार होगा। वह एक प्रकाश के दूत के समान आएगा। लेकिन आगे चलकर वह पशु स्वभाव को धारण करेगा। वह संसार के सब लोगों के लिए एक समस्या का कारण बनेगा पर यहूदियों का वह एक पक्का दुश्मन रहेगा। आरंभ में वह यहूदियों के साथ वाचा बांधेगा। यह यशायाह के अनुसार इस वाचा को मृत्यु के साथ वाचा कहा गया है (यशा.28:15,18)। भारी क्लेश के अन्त में वह यह

समाचार सुनेगा कि यहूदियों का मसीहा, प्रभु यीशु मसीह अपने स्वर्गीय सेना के साथ स्वर्ग से उतरकर उनकी सहायता करने वाला है। यह समाचार सुनकर वह घबरा जायेगा और बहुतों को नाश करने के लिये क्रोध के साथ निकलेगा।

वह मेगिदो की तराई में अपनी सेना को इकट्ठी करेगा ताकि स्वर्गीय सेना के साथ युद्ध करें। लेकिन यहां लिखा है कि वहां उसका अन्त हो जायेगा। और कोई उस का सहायक न रहेगा (पद.45)। विरुद्ध मसीह की सेना का विनाश बहुत ही दयनीय है। स्वर्गीय सेनापति प्रभु यीशु मसीह के साथ आने वाले अनगिनत सेना के स्वर्ग से उतरने के कारण विरुद्ध मसीह

अध्याय 12

दानिय्येल द्वारा अन्तिम समय का दर्शन

पद.12:1- “उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति भाईयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे”

यहां भारी क्लेश के समय में यहूदियों पर होने वाले भारी अत्याचार और उस समय मीकाएल सहायता के लिए उतरकर आने के संबंध में वर्णन किया गया है। प्रधान दूत मीकाएल यहूदियों के पक्ष में खड़ा होगा। उस समय का क्लेश भयंकर होगा। किसी भी जाति ने उत्पन्न होने के समय से आज तक इस प्रकार का क्लेश और सताव का सामना नहीं किया होगा, जिसका सामना यहूदी लोग करेंगे। यह क्लेश वास्तव में यहूदियों को शुद्ध करने के लिए दिया जायेगा। उनके द्वारा मसीहा को त्यागने एवं क्रूस पर चढ़ाने के महापाप के दण्ड के रूप में यह सताव दिया जायेगा। पर इस सताव से वह जाति पूरी रीति से नष्ट न हो इस कारण प्रधान दूत मीकाएल भेजे जाते हैं।

यह क्लेश, भारी क्लेश के अंतिम साढ़े तीन वर्ष की अवधि में होगा। आपको मालूम है भारी क्लेश का कुल समय 7 वर्ष है। उसमें से प्रारंभिक साढ़े तीन वर्ष बहुत ही प्रेमपूर्वक और दयापूर्वक बीतेंगे। विरुद्ध मसीह यहूदियों के साथ वाचा बांधेगा। उनका मंदिर जो सदियों से नष्ट किए गये हालत में है उसे बनाने में वह उनकी सहायता करेगा। मन्दिर के निर्माण संबंधी विवाद जो अरबियों के साथ हैं उसका भी निपटारा बड़ी बुद्धिमानी से करेगा और एक समझौते में लाएगा। अंत में मंदिर का निर्माण भी करेगा। हर

प्रकार से विरुद्ध मसीह यहूदियों की सहायता करेगा। लेकिन प्रथम साढ़े तीन वर्ष के पश्चात् अंतिम साढ़े तीन वर्ष शुरू होते ही वह वाचा को तोड़ेगा। विरुद्ध मसीह अपनी मूर्ति बनाने एवं उस मूर्ति को यहूदियों के मंदिर के परमपवित्र स्थान में रखने की आज्ञा देगा। तब यहूदी लोग विरुद्ध मसीह के विरुद्ध हो जाएंगे।

यहूदी लोग विरुद्ध मसीह द्वारा बनाए जाने वाली मूर्ति की पूजा नहीं करेंगे। मूर्तिपूजा परमेश्वर के लिए सबसे ज्यादा घृणा का विषय है। मूर्तिपूजा के कारण यहूदी लोग परमेश्वर द्वारा दण्डित किए गये थे। वे इस पाप के दण्ड के रूप में बाबुल भेजे गए। बाबुल की बन्धुवाई से लौटने के बाद बल्कि आज तक वे अनेक अन्य पाप किए होंगे परन्तु मूर्तिपूजा उन लोगों ने कभी नहीं की है। मूर्तिपूजा के पाप से वे सदा के लिए अलविदा हुए। क्लेश के समय विरुद्ध मसीह द्वारा मूर्तिपूजा करने की आज्ञा को वे टुकरायेंगे इस कारण क्रोधित होकर विरुद्ध मसीह यहूदियों को बहुत सतायेगा। हजारों यहूदी लोग मारे जायेंगे। कई लोग आसपास के देशों की ओर भाग जायेंगे और वहां उन देशों में शरण लेंगे। उन देशों के लोग कुछ उनकी सुधि लेंगे कुछ उन लोगों की सुधि नहीं लेंगे।

उस समय कुछ लोग जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं वे बच निकलेंगे। हर युग में हर हालत में परमेश्वर के लिए स्थिर रहने वाले रहते हैं। सो भारी क्लेश में भी कुछ लोग परमेश्वर के लिए स्थिर रहेंगे। जिस प्रकार बाबुल में नबुकदनेस्सर द्वारा खड़ी कराई गयी मूर्ति की पूजा बहुमत लोगों ने की पर हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह उस मूर्तिपूजा के कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए। सो उनके के लिए आग सात गुणा धधका दिया था। उस सात गुणा धधकाए हुए आग में वे डाले गये पर परमेश्वर ने उन्हें उस भयंकर आग से बचाया। ठीक उसी प्रकार विरुद्ध मसीह द्वारा खड़ी कराई जाने वाली उसकी मूर्ति की पूजा न करने से विरुद्ध मसीह भारी क्लेश के समय में रहने वाले यहूदियों को सतायेगा। उस भयंकर सतावट के द्वारा परमेश्वर का उद्देश्य यहूदियों को शुद्ध करना है। लेकिन उसका फायदा उठाकर विरुद्ध मसीह उन्हें आवश्यकता से अधिक सतायेगा तब परमेश्वर उन्हें कायम रखने, एक राष्ट्र के रूप में स्थिर रहे और नष्ट न हो जाए इस कारण प्रधान दूत मीकाएल को भेजते हैं।

भारी क्लेश के समय यहूदियों की रक्षा और सहायता के लिये मीकाएल को भेजने के संबंध में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में बहुत अधिक वर्णन किया गया है। मीकाएल आकर शैतान से स्वर्ग में अर्थात् वायुमण्डल में लड़ेगा (प्र.वा.12:7)। इस समय शैतान का राज्य जो आकाश मण्डल में है, गिरा दिया जायेगा और शैतान और उसकी सारी सेना पृथ्वी पर आ जायेगी। उस समय शैतान पूरी शक्ति के साथ विरुद्ध मसीह में समा जायेगा और वह पशु स्वभाव धारण करेगा। इसके पहले वह मानव स्वभाव में था। साढ़े तीन वर्ष तक प्रेमपूर्वक एवं सद्भावना के साथ सब लोगों से पेश आया। पर शैतान उसके अन्दर समा जाने से वह पशु स्वभाव को धारण कर लेता है। यह बात नबुकदनेस्सर और दानिय्येल के साम्राज्यों से सम्बन्धित दर्शनों के अन्तर द्वारा भी समझ सकते हैं। नबुकदनेस्सर को संसार के शासन प्रणाली का दर्शन दिखाया तो मनुष्य के रूप में सुन्दर, मूल्यवान एवं आकर्षक धातुओं के रूप में दिखाया परन्तु एक आत्मिक व्यक्ति को, भविष्यवक्ता दानिय्येल को दिखाया तो भयंकर स्वभाव के जंगली जानवरों के रूप में दिखाया। इसका यह अर्थ है कि विरुद्ध मसीह का शासन कुछ समय मानव स्वरूप और स्वभाव में रहेगा परन्तु आगे चलकर किसी परिस्थिति में अर्थात् शैतान की सहायता से वह पशु बन जायेगा। इस कारण प्रकाशितवाक्य में विरुद्ध मसीह को पशु कहा गया है। लेकिन प्रकाशितवाक्य के 6 अध्याय में जब वह प्रकट होता है तो मनुष्य के रूप में श्वेत घोड़े पर बैठकर आता है जो शांति का प्रतीक है

जब विरुद्ध मसीह पशु स्वभाव धारण करके संसार में प्रकट होगा तो वह उसके खिलाफ रहने वाले सबको बहुत बुरी तरह सतायेगा। उस सतावट के समय वे नाश न हो पर स्थिर रहे, इस कारण प्रेमी परमेश्वर उनकी रक्षा के लिये प्रधान दूत मीकाएल को भेजते हैं। यह सहायता कब करेंगे, उसका स्थान कहां है इत्यादि बातें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 12 अध्याय में वर्णित की गई हैं। इन पदों को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है, कि वह सदा यहूदियों के पक्ष लेते रहे हैं। लिखा है, **“उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति भाईयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा”** (प्र.वा. 12:1)। इस समय विशेष रूप में मीकाएल सहायता करने को खड़ा रहेगा क्योंकि लिखा है, **“तब ऐसा संकट का समय होगा जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा (12:1)।**

पद-2:- इस पद में पुनरुत्थान के विषय में चर्चा की गयी है। यह एक महत्वपूर्ण अवसर रहेगा। हमें पुनरुत्थान के संबंध में अच्छी तरह अध्ययन कर लेना चाहिये। पुनरुत्थान के संबंध में पुराने नियम के समय से लोग विश्वास करते चले आ रहे हैं। परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा कई लोगों को जो मृत्यु को पाए थे पुनः जीवन में लाने की घटना का वर्णन कई जगह किया गया है। एलिय्याह ने सारपत नगर की विधवा के बेटे को जिलाया (1राजा. 17:17-22)। एलीशा के मृतक हड्डी के स्पर्श से एक मृतक सिपाही का शरीर जीवन में वापस आया। फिर यीशु मसीह के समय में अनेक लोग जिलाए गये। प्रेरितों की सेवकाई में भी यही चमत्कार हुआ।

यहूदियों में सदूकी लोग पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं करते थे। वे मनुष्य के आत्मा की अमरता को मानते थे पर मृतक शरीर के पुनरुत्थान पर तनिक भी विश्वास नहीं करते थे। लेकिन पुनरुत्थान परमेश्वर के वचन की सत्यता है। विश्वासियों के पुनरुत्थान का आधार प्रभु यीशु मसीह का पुनरुत्थान है। जैसे आदम में सब मरते हैं ठीक वैसे ही मसीह में सब जिलाए जायेंगे (1कुरि.15:22)। इस विषय के संबंध में प्रेरित पौलूस का कहना है, **“यदि मरे हुआँ का पुनरुत्थान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा”** (1कुरि.15:13)। फिर वह कहता है, **“यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है”** (1कुरि. 15:14)। फिर आगे वह कहता है, **“यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं”** (1कुरि. 15:19)। सो पुनरुत्थान एक वास्तविकता है और वह यीशु मसीह के पुनरुत्थान पर आधारित है।

अब हमें यह देखना है कि पुनरुत्थान का समय कब है। नया नियम में पुनरुत्थान तीन समयों में होने वाला है। उसमें दो तो धर्मियों के और एक पापियों का है। कलीसिया के युग के अन्त में यीशु मसीह बादलों पर आयेगा और उस समय पवित्र लोगों का पुनरुत्थान होगा। लिखा है **“प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जायेगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे”** (1थिस्स.4:16)। इस समय आदम से लेकर यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाले तक जितने पुराने नियम के पवित्र लोग मृतक लोक में हैं

जो आने वाले मसीहा पर विश्वास करके मृत्यु को पाए हैं, वे सभी एवं पेन्तिकुस्त के दिन से लेकर कलीसियां के अन्तिम दिन तक मसीह पर विश्वास करके मृत्यु को पाए हैं, वे सब भी पुनरुत्थान पाकर जीवन में आयेंगे। अर्थात् यीशु मसीह के बादलों पर आगमन में पुराने और नये नियम के सभी पवित्र लोग जी उठेंगे (इब्रा.11:35,39,40) ।

उसके पश्चात् यीशु मसीह अपने सारे पवित्र लोगों के साथ एक हजार साल के राज्य की स्थापना के लिये पृथ्वी पर महिमा में प्रकट होते समय, एक हजार साल के राज्य के पहले पुनरुत्थान होगा। इसे पहला पुनरुत्थान कहा गया है। यह कलीसियां के उठा लिये जाने के 7 साल बाद संपन्न हो रहा है। यह उन पवित्र लोगों का पुनरुत्थान है जो भारी क्लेश की अवधि में मसीह पर विश्वास किये हुए हैं और शहीदी मृत्यु या साधारण मृत्यु से प्रभु में सो गये। इस समय यह पुनरुत्थान इसलिये हो रहा है ताकि भारी क्लेश की अवधि में मूसा और एलिय्याह एवं अन्य प्रचारकों द्वारा राज्य के सुसमाचार सुनकर यीशु मसीह पर विश्वास किये और उद्धार प्राप्त किये हैं। याद रखिये कि कलीसियां के उठा लिये जाने के बाद, भारी क्लेश के समय में एवं एक हजार साल के अवसर पर भी उन लोगों को उद्धार में शामिल करेंगे जिन्हें उद्धार पाने के लिये पहले अवसर प्राप्त नहीं हुए हैं। लेकिन फर्क यह है, कि कलीसियां के युग में अनुग्रह का सुसमाचार सुनकर और भारी क्लेश के समय में राज्य का सुसमाचार सुनकर लोग उद्धार प्राप्त करते हैं। एक हजार साल के राज्य के समय में सीधे यीशु मसीह के मुंह से वचन सुनकर उस समय के लोग उद्धार पा सकेंगे ।

खैर यह पहला पुनरुत्थान उन पवित्र लोगों के लिये है जो भारी क्लेश की अवधि में मसीह पर विश्वास करके मृत्यु को प्राप्त किये हैं (प्र.वा. 20:4-6)। वे इसलिये मारे गये क्योंकि उन लोगों ने विरुद्ध मसीह की मूर्ति की पूजा नहीं किये । आपको शायद मालूम होगा कि यहूदी लोग बाबुल की बन्धुवाई से वापस आने के पश्चात् कभी मूर्तिपूजा नहीं किये हैं। अन्य अनेक पाप वे किये होंगे परन्तु वे आज तक मूर्तिपूजा रूपी भंयकर पाप कभी नहीं दोहराए हैं। सो भारी क्लेश की अवधि में विरुद्ध मसीह के आदेश के कारण मूर्ति पूजा अपनी चरम सीमा पर होगी। सारे संसार के लोग बड़े आराम से मूर्तिपूजा करेंगे पर परमेश्वर के लोग मूर्तिपूजा से परे रहेंगे और एलिय्याह

और मूसा के साथ रहेंगे ।

इसके बाद दूसरा और अन्तिम पुनरुत्थान एक हजार साल के राज्य के अन्त में होगा । यह पापियों का पुनरुत्थान है । कैन से लेकर एक हजार साल के राज्य के अन्तिम समय तक यीशु मसीह पर विश्वास न करते हुए मृत्यु को पाए हुए सब न्याय के लिये जी उठकर आयेंगे । यह अन्तिम न्याय के लिये पुनरुत्थान है । यह न्याय श्वेत सिंहासन के सामने होगा । इस प्रकार तीन समय में अब निकट भविष्य में तीन पुनरुत्थान होने वाले हैं ।

वचन में लिखा है, **“और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उनमें से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नाम धराई और सदा तक अत्यन्त धिनौने ठहरने के लिये” (12:2)** । यहां इस पद में सबके जाग उठने या पुनरुत्थान पाने के संबन्ध में नहीं लिखा है । बल्कि यह लिखा है कि बहुत से लोग जाग उठेंगे । इसका मतलब यह है कि विश्वासी लोग जी उठने की ओर संकेत करता है । विश्वासियों में दो प्रकार के लोग होने की चर्चा है । एक तो जीवन के लिये अर्थात् आने वाले जीवन का पूरा-पूरा आनन्द उठाने के लिये और कुछ लोग लज्जित होने के लिये । पुनरुत्थान के पश्चात् न्याय एवं प्रतिफलों का वितरण होगा । लोगों को पद एवं पदवियां दी जायेंगी । कुछ लोगों को अच्छे पद एवं पदवियां प्राप्त होंगी पर कुछ लोगों को कोई पद नहीं मिलेगा और वे लज्जित होंगे । वे स्वर्ग में रहेंगे परन्तु उन्हें कोई विशेष स्थान नहीं रहेगा । उस प्रकार के लोगों की नाम धराई होगी एवं अन्य लोगों की दृष्टि में वे निम्न श्रेणी के और धिनौने ठहरेंगे । कई लोग स्वर्ग में जाकर पछतायेंगे और मन ही मन सोचेंगे कि नरक जाना इससे अच्छा था । वे स्वर्ग राज्य के नाखुश लोग होंगे ।

अन्य लोगों के पुनरुत्थान की चर्चा हमने की है वह अन्तिम पुनरुत्थान अर्थात् पापियों का पुनरुत्थान है जो न्याय एवं नरक में डाले जाने के लिये पुनर्जीवित हो रहे हैं । इसमें सब पापी लोग पुनर्जीवित होकर आयेंगे जो श्वेत सिंहासन के सामने प्रकट होंगे और यीशु मसीह उनका न्याय करेंगे । न्याय की पुष्टी एवं प्रमाण के लिये पुस्तकें खोली जायेंगी । जीवन की पुस्तक में जिस व्यक्ति का नाम नहीं देखेंगे उन का न्याय यहां हो रहा है । जीवन की

पुस्तक में उनका नाम लिखते हैं जिन्होंने यीशु मसीह को ग्रहण किये हैं। जीवन की पुस्तक में नाम नहीं होने से वे लोग श्वेत सिंहासन के सामने आ रहे हैं। उसके अलावा यादगारी की पुस्तक भी खोली जायेगी जिसमें व्यक्ति के जीवनकाल के सभी पाप कर्म लिखे होते हैं। यीशु मसीह पर विश्वास करने से पाप कर्म मिटा दिये जाते हैं। लेकिन इन लोगों ने पाप क्षमा करने वाले यीशु मसीह पर विश्वास ही नहीं किया है। इस कारण इनके पाप मिटाये नहीं गये। सो उन्हें उनके पाप दर्शाए जायेंगे। उसके बाद नियम पुस्तक (Law Book) खोली जायेंगी। यह नियम परमेश्वर के जीवित वचन को सिखाकर लोगों को धर्मी बनाते हैं। यह कार्य वर्तमान में एक खतरे और जोखिम भरा कार्य है। लेकिन यह कार्य करने वालों के लिये परमेश्वर का वचन एक बड़े प्रतिफल की घोषणा करता है। आज आत्माओं को जीतने वाले, बहुत से लोगों को धार्मिकता की ओर लाने वाले उस समय तारों की नाई चमकेंगे और प्रकाशमान होंगे। इतना बड़ा प्रतिफल इस कार्य के लिये है, सो हमें अधर्मियों को धर्मी बनाने के कार्य में कितना अधिक लगना होगा? हो सकता है, यह जोखिम भरा काम हो फिर भी हमें यह कार्य करना है। प्रेरित पौलूस इस कारण कहता है कि मैं अपने प्राण को बहुमूल्य नहीं समझता। वह सुसमाचार के प्रचार एवं बहुतों को धर्मी बनाने के कार्य में संलग्न रहा। यह पुराने नियम के समय में लोगों को धर्मी बनाने के संबंध में दानिय्येल चर्चा कर रहा है। परन्तु हर युग में इस शुभ कार्य में लगे हुए लोगों को यह प्रतिफल प्राप्त होंगे।

पद-4:- “परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिये बन्द रख। और बहुत लोग पूछताछ और दूढ़-ढाँढ करेंगे, और इससे ज्ञान बढ़ जायेगा” ।

इस पद के अनुसार दानिय्येल से कहा गया कि पुस्तक को बन्द करें। बहुत दिनों तक ये बातें प्रकट नहीं होंगी इस कारण इस पुस्तक को बन्द करने हेतु आदेश दिया गया। दानिय्येल ने इस भविष्यवाणी की बातों को समझना चाहा। पर उसको संतोषजनक रूप में समझाया नहीं क्योंकि वह सब बातें उस समय पूरी होने वाली नहीं थी। एक और कारण यह था कि दानिय्येल की उम्मीद यह थी कि 70 साल की बन्धुवाई शीघ्र पूरी हो जायेगी और मसीहा आकर अपने राज्य को स्थापित करेंगे और यहूदियों का सारा दुःख

दूर हो जायेगा। लेकिन उसके इस आशा और आकांक्षा के विपरीत परमेश्वर का कार्यक्रम था। अर्थात् मसीहा द्वारा राज्य की स्थापना में काफी विलम्ब था। यह जानकारी विस्तारपूर्वक दानिय्येल को दी जाए तो उसके दिमाग में वह बुरा असर कर जायेगा, इस कारण सब बातें प्रकट की तो गयीं पर प्रकट की गयी बातें पूरी तौर से दानिय्येल को समझायी नहीं। लेकिन प्रेरित यूहन्ना से कहा गया कि समय आने पर प्रभु यीशु मसीह इस पुस्तक की मुहरें खोलेंगे (प्र.वा.6:1)। दानिय्येल को पुस्तक बन्द करके मुहर लगाने के लिये कहा गया तो यूहन्ना से कहता है कि पुस्तक को बन्द मत कर (प्र.वा.22:10)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अन्त में यह कहा गया है कि पुस्तक को मुहर न लगाए क्योंकि उसमें लिखी हुई सारी बातें शीघ्र ही पूरी होने वाली हैं क्योंकि समय निकट आ गया है। प्रकाशितवाक्य 6 अध्याय पद एक से यह बन्द पुस्तक की मुहरें खोलते हुए दिखाया गया है। ये मुहरें यीशु मसीह द्वारा खोली जा रही हैं।

खैर उस अन्त समय तक, अर्थात् उस 70 वे सप्ताह के प्रारंभिक समय में याने भारी क्लेश की शुरुआत में यह मुहरांकित पुस्तक की बन्द मुहरें खोली जायेंगी। यह प्रभु यीशु मसीह द्वारा किया जाने वाला कार्य है। उसी पद में आगे लिखा है कि, **“और इससे ज्ञान बढ़ भी जायेगा”**। इसका मतलब है कि यह मुहरांकित पुस्तक खोले जाने से पहले मनुष्य ज्ञान बढ़ाने के कार्य में लग जायेगा। अन्य समयों से बढ़कर आज विद्या के लिये सबसे अधिक महत्व दिया जा रहा है। लोग विभिन्न प्रकार की विद्या हासिल करना चाहते हैं और उसके द्वारा ज्ञान बढ़ाना चाहते हैं। विज्ञान उसके अन्वेषण और अनुसंधान में काफी आगे बढ़ गया है। कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि इन अन्वेषण और अनुसंधानों के द्वारा मनुष्य इस धरती से उसके सृजनहार और मालिक परमेश्वर की आवश्यकता भी अनावश्यक समझने लगे हैं। ज्ञान बहुत बढ़ गया है। मनुष्य का ज्ञान उसको आकाश मण्डल, अन्य ग्रहों और उपग्रहों की ओर जाने और वहां जाकर बसने की उत्तेजना प्रदान कर रहा है। लगता है कि मनुष्य अपने ज्ञान के द्वारा उसके सृजनहार को ही चुनौती देने लगा है।

यह कम्प्यूटर युग है। एक निश्चित स्थान में बैठकर जानकार व्यक्ति दुनियां के किसी भी राष्ट्र की जानकारी प्राप्त कर सकता है। अपने कम्प्यूटर

का संबंध इन्टरनेट (Internet) के साथ जोड़ दिया जाए तो घर या दफ्तर में बैठे-बैठे व्यक्ति कुछ भी अध्ययन कर सकता है। किसी भी देश के साथ, किसी भी देश के विश्वविद्यालय के साथ आप कम्प्यूटर के जरिये से संपर्क साध सकते हैं और अध्ययन कर सकते हैं और किसी भी विषय पर अध्ययन करके स्वतंत्र शोधकार्य (Thesis) कर सकते हैं। इन तमाम बातों के लिये व्यक्ति को कहीं सफर करने की आवश्यकता नहीं अपितु अपने घर या दफ्तर में बैठकर कम्प्यूटर की सहायता से ये सब प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञान बढ़ गया है। परमेश्वर का वचन जो आज से 2534 वर्ष पहले दानिय्येल द्वारा लिखा गया है आज हमारे सामने पूरा हो रहा है। यदि यह बात आज से 10 साल पहले कहते तो आपको विश्वास करना कठिन होता। लेकिन आज हमारे सामने वह वचन पूरा हो गया है अर्थात् ज्ञान आज अत्यन्त बढ़ गया है।

ज्ञान बढ़ेगा

सूचना तकनीक (Information Technology) के युग में कम्प्यूटर (Computer) द्वारा रोज नये-नये कारनामों किये जाने की खबर हमें अचम्भित करती है। पोर्ट्स बर्ग विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की टीम का कहना है कि उन लोगों ने ऐसी तकनीक को इजाद किया है जिस पर हृदय रोग गति के लक्षण रखने पर उस व्यक्ति के मौत की सूचना उसे 8 घंटे पूर्व ही दी जा सकेगी। इस खोज का आधार सामान्य जैविक क्रिया है।

इस नई तकनीक के द्वारा कम्प्यूटर हृदय से संबन्धित चेतावनी मरीज को दे सकता है। वह अचानक होने वाली मौत की सूचना 8 घंटा पहले ही देता है जिससे कि मरीज उससे बचने के लिये सही कदम उठा सकता है। इससे हृदय रोग के मरीजों में बेहद उत्साह देखा जा रहा है। उम्मीद की जा रही है कि भविष्य में इसका प्रयोग अस्पतालों के गहन चिकित्सा कक्ष (Intensive Care Unit) में किया जा सकता है जो हृदय से पीड़ित व्यक्ति की स्थिति की पल-पल की खबर देगा। इस तकनीक के खोजकर्ताओं का कहना है कि इसके माध्यम से अब कई अनावश्यक प्रयोग जिसमें मरीज को बिजली के झटके आदि शामिल हैं, इससे काफी हद तक बचाया जा सकेगा क्योंकि इस प्रकार के झटकों से मरीज पर मानसिक बोझ बढ़ता है। इस

खोज से जुड़े कैली एन्डरसन का कहना है कि यदि हम आर्थमिया के होने का पता पहले ही लगा लें तो इससे बचने के उपाय किये जा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि आर्थमिया हृदय की असामान्य धड़कन है जो कि बेहद घातक हो सकती है। (स्रोत:— नवभारत दिल्ली 23 सितम्बर)।

बेल्जियम के सॉफ्टवेयर वैज्ञानिक ने सबसे आधुनिक सॉफ्टवेयर का अनुसंधान किया है। इसका उपयोग करके बाथरूम में प्रवेश करके कहे मुझे शावर चाहिये तो तुरन्त शावर चालू हो जायेगा। बाजार से सामान आने के लिये कहे तो जो सामान मांगे वह तुरन्त आ जायेगा। बेल्जियम के वैज्ञानिकों की यह प्रतिज्ञा है कि यह तकनीक डाक्टर और व्यापारियों के लिये अति उत्तम रहेगी।

मनुष्य ने समुद्र की तह तक उतरकर वहां के जीव जन्तुओं का पता करने एवं उनके साथ अधिक दिन तक समय लगाकर उन जीवों के बारे में अध्ययन करने योग्य साधन सामग्री और यन्त्र का अनुसंधान किया है। एक समय था कि मनुष्य समुद्र की गहराई के बारे में तट पर रहकर या समुद्र के सतह पर यात्रा करके अंदाज लगाया करते थे। लेकिन उसे आज समुद्र की गहराई की अच्छी जानकारी हो गयी है। मनुष्य ने समुद्र की तह में सुन्दर-सुन्दर बगीचों और वनों (Forest) के होने के रहस्य का पर्दाफाश किया है। सब प्रकार के जीवों का अध्ययन करने में वह सफल हो रही हैं। इस प्रकार की जानकारी देने के लिये टी.वी. में नेशनल जिओग्राफिक चैनल, डिस्कवरी चैनल एवं एनिमल प्लानेट आदि उपलब्ध हैं। ये सब करते हुए मनुष्य बुद्धिमान एवं ज्ञानी बन रहा है। परन्तु बुद्धि का मूल परमेश्वर का कही इंकार तो नहीं कर रहा है? क्योंकि बाइबल में लिखा है, **“यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं”** (नीति.1:7)। परमेश्वर से अलग हटकर या परमेश्वर के बिना बुद्धि अधूरी है। हमारा अनुसंधान अन्वेषण और अध्ययन हमें बुद्धिमान बनाए और वह बुद्धि हमें जीवित परमेश्वर से जोड़ दे अन्यथा वह बुद्धि और ज्ञान फायदेमन्द नहीं है।

पद.5—11:— इन पदों में इस्राएलियों पर आने वाले भारी क्लेश की अवधि में होने वाली बातों के बारे में स्वर्गदूतों की बातचीत या चर्चा का वर्णन किया

गया है। यहां दो दूतों का वर्णन आया है। लिखा है “कि दो पुरुष खड़े हैं, एक तो नदी के इस तीर पर और दूसरा नदी के उस तीर पर है। एक पुरुष सन का वस्त्र पहने हुए नदी के जल के ऊपर खड़ा था। उससे उन पुरुषों में से एक ने पूछा, इन आश्चर्यकर्मों का अन्त कब तक होगा?” तब उस सवाल का उत्तर देकर दानिय्येल को बता रहा है कि कब क्या-क्या होगा। “उस पुरुष ने जो सन का वस्त्र पहने हुए जल के ऊपर खड़ा था, अपने दोनों हाथों को स्वर्ग की ओर उठाकर सदा जीवित रहने वाले परमेश्वर की शपथ खाकर कहा यह भारी क्लेश की दशा साढ़े तीन काल तक ही रहेगी। और जब पवित्र प्रजा की शक्ति टूटते-टूटते समाप्त हो जायेगी तब ये सब बातें पूरी होंगी”।

आपको याद है, दानिय्येल अपने लोगों के उद्धार को ध्यान में रखकर और मसीहा के द्वारा राज्य की स्थापना की बातें मन में रखकर प्रार्थना कर रहा था। उसने सोचा कि 70 साल की बन्धुवाई के पश्चात् वे स्वतंत्र होकर बाबुल से यरुशलेम वापस पहुँचेंगे, और मसीहा आ जायेगा और वह अपना अनन्तकालीन राज्य स्थापित करेगा और यहूदियों के दुःख दूर किये जायेंगे। परन्तु दानिय्येल की प्रतीक्षा के विपरीत 70 सप्ताह का कार्यक्रम परमेश्वर ने उसको समझाया। उसमें मसीहा के आगमन के बारे में उसके तिरस्कृत होने के बारे में बताया गया और यह भी बताया कि इसके लिये 69 सप्ताह का समय लग जायेगा। फिर एक सप्ताह बाकी रहेगा और वह समय अन्त के दिनों के लिये रख रखा है। वह समय 7 साल का रहेगा। उस 7 साल को दो भागों में विभाजित किया गया है अर्थात् पहला और अंतिम 3½ वर्ष। पहले साढ़े तीन वर्ष की अवधि में, उसके आरंभ में विरुद्ध मसीह शासन के लिये संसार के रंगमंच पर प्रकट होगा। वह अन्य जाति राज्य का अन्तिम शासनकर्ता होगा। पहला अन्यजाति राजा नबुकदनेस्सर था और अन्तिम राजा विरुद्ध मसीह होगा।

विरुद्ध मसीह प्रकट होकर शासन करेगा तो प्रथम साढ़े तीन वर्ष में बड़ी शांति के साथ और प्रेमपूर्वक शासन करेगा। पर अन्तिम साढ़े तीन वर्ष आते ही वह पशु बन जायेगा और उनके हितों के अनुसार कार्य न करने वालों को वह सतायेगा। यह भयंकर समय रहेगा। इसको याकूब का क्लेश कहा गया है। अब रहा इस सतावट एवं उससे छुटकारा पाने के समय के

बारे में वर्णन अर्थात् कब प्रभु के लोग इस्राएल को छुटकारा मिलेगा ? इस्राएलियों को और साढ़े तीन वर्ष अर्थात् 1260 दिन बाद छुटकारा मिलेगा। लेकिन इसमें यह है कि आगे चलकर 75 दिन का और एक प्रकाशन प्रकट किया गया है (12:11,12)।

सन का वस्त्र पहने हुए नदी के पानी पर खड़े पुरुष से सवाल करने वाले नदी किनारे खड़े पुरुष को उत्तर देते हुए दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर सदा जीवित रहने वाले परमेश्वर की शपथ खाकर कहा, अब समय, समयों और आधा समय अर्थात् साढ़े तीन वर्ष लग जायेगा। विरुद्ध मसीह उस 3½ साल की अवधि में पवित्र जनता को खूब तकलीफ देगा। परमेश्वर के लोगों के बल घट जाने के बाद यह भविष्यवाणी की बातें पूरी होगी। इसका मतलब यह है कि अन्तिम समय में विरुद्ध मसीह द्वारा सतावट का समय 7 साल के भारी क्लेश का अन्तिम साढ़े तीन वर्ष का समय रहेगा। इस समय विरुद्ध मसीह यहूदियों को इतना सतायेगा और दुःख देगा कि उनका बल ही घट जायेगा। उनकी पूरी शक्ति ही खत्म हो जायेगी।

ये बातें दानिय्येल सुन रहा था परन्तु उसके समझ में आयी नहीं। जब कोई चीज समझ में नहीं आती तो कितनी परेशानी होती है और दुःख होता है, यह अनुभव जरूर दानिय्येल को भी हुआ होगा। दानिय्येल एक साधारण मनुष्य था जैसा मैं और आप होते हैं। जो कुछ दर्शन में उसने देखा, उन सबको समझने का अवसर मिलता तो वह बहुत ही सन्तुष्टि के साथ दुनियां से चला जाता। परन्तु अधूरी जानकारी एवं असन्तुष्टि के साथ उसे इस संसार से कूच कर जाना पड़ा। उससे कहा गया, “हे दानिय्येल चला जा; क्योंकि ये बातें अन्त समय के लिय बन्द है और इन पर मुहर दी हुई है”। यह एक सवाल के उत्तर में दानिय्येल को दिया गया। उत्तर है, चला जा। दानिय्येल के दिल में क्या बीती होगी, उसका अन्दाज़ लगाना काफी मुश्किल सा लग रहा है।

यह भी दानिय्येल से कहा गया कि, “बहुत लोग तो अपने-अपने को निर्मल और उजले करेंगे, और स्वच्छ हो जायेंगे; परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा; परन्तु जो बुद्धिमान है वे ही समझेंगे”। यह दानिय्येल के लिये एक

आश्वासन दिया गया । अन्तिम दिनों में कई लोग जो बुद्धिमान होंगे, इन भविष्यवाणियों के कारण अपने आपको पवित्र करेंगे । वे भविष्यवाणी के इन वचनों के कारण अपने को शुद्ध करेंगे क्योंकि उन्हें मालूम हो जायेगा कि पवित्र लोगों की आशा का समय और आशा की प्राप्ति का समय बिलकुल निकट है । आज यहूदी अपने स्वदेश आकर अपने राष्ट्र को स्थापित कर चुके हैं । उनके छुटकारे का समय इन वचनों के आधार पर निकट आ रहा है । प्रभु यीशु मसीह आकर अपने अविनाशी एवं सदा ठहरने वाला राज्य स्थापित करने वाला है । लेकिन इस घटना से पहले यीशु मसीह अपनी कलीसियां को लेने के लिये बादलों पर आयेगा और अपनी कलीसियां को ले जायेगा । सो ये सारी जानकारीयां बुद्धिमानों के लिये प्रेरणादायक बातें हैं ताकि वे अपने आपको पवित्र और उजले करें । बुद्धिमान कौन हैं ? बुद्धिमान वे लोग हैं जो कि जीवित परमेश्वर की खोज करने एवं उसके वचन के अनुसार चलते हैं (भजन.14:2; 53:2) । यहां केवल बुद्धि के विकास वाले ज्ञान की चर्चा नहीं परन्तु ऐसे ज्ञान की चर्चा की गयी है जिससे पवित्रता बढ़े ।

लेकिन एक और विभाग के लोगों के बारे में भी यहां कहा गया है वे हैं दुष्ट लोग । दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे । दुष्ट लोग परमेश्वर के वचन की इन सुन्दर बातों को नहीं समझने वाले हैं । आज संसार के किसी भी राष्ट्र में देखिये ये दोनों प्रकार के लोगों को देख सकते हैं । दुष्ट लोग लापरवाही में अपना जीवन बिताते हैं । उनको परमेश्वर का वचन, परमेश्वर का नाम यीशु मसीह का नाम और काम आदि के बारे में पता नहीं क्योंकि वे इन बातों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं । लेकिन इस प्रकार के लोगों के लिये कोई आशा बाकी नहीं रहेगी ।

प्रिय पाठक आप दुष्टों में तो नहीं हैं ? यदि ऐसा है तो प्रभु के वचन का पालन कर बुद्धिमान हो जाएं । तब जब प्रभु यीशु मसीह आयेगा, आप भी उसके साथ बादलों पर उठा लिये जायेंगे । अन्यथा आप भी उन छोड़ दिये जाने वालों के संग यहीं रह जायेंगे । आपको भी फिर भारी क्लेश में से होकर जाना पड़ेगा । बहुत भारी नुकसान उठाना पड़ेगा । अनन्तकाल के नरक में जाना पड़ेगा । मृत्यु के पश्चात् दो ही स्थान हैं । एक स्वर्ग और दूसरा नरक । स्वर्ग का मार्ग एकमात्र है और वह प्रभु यीशु मसीह है । सो आप प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानकर उसके लिये जीवन समर्पित करें । तब

अनेक अन्य पाप किये होंगे परन्तु मूर्तिपूजा रूपी घृणित पाप कभी नहीं किया।

उनके स्वेदश लौट आने के पश्चात् परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र प्रभु यीशु मसीह को संसार में भेजा। उन लोगों ने यीशु मसीह को ग्रहण करने से इंकार किया। यीशु मसीह को केवल इंकार ही नहीं किये पर उसको क्रूस की मृत्यु जैसे कठोर एवं दर्दनाक मृत्यु से मार डाले। उसके बाद परमेश्वर पिता, पुत्र प्रभु यीशु मसीह और पवित्र आत्मा को भी इंकार किये। सो वे त्रियेक परमेश्वर को इंकार किये। पुराने नियम में शामुएल के समय में वे पिता परमेश्वर को इंकार किये (1शामु.8:7)। नया नियम के प्रारंभ में यीशु मसीह को इंकार किये (मत्ती-21: 23; यूहन्ना-1:11)। आगे चलकर कलीसिया की स्थापना के पश्चात् पवित्र आत्मा का भी इनकार कर दिया गया (प्रेरित-7:51)। इस कारण A.D. 70 में वे देश से निष्कासित किये गये। उनको परमेश्वर ने आज के दिन तक भारी नींद में डाल रखा है और ऐसी आंखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुने (रोमि-11:8)।

उसके अलावा उनका सब कुछ नष्ट हो गया। B.C. 606 में उनके राजकीय शासन की पदवी नष्ट हो गयी। A.D. 70 में पवित्र मन्दिर के राजकीय पद एवं आराधना नष्ट हो गये। रोमी सेनापति तीतूस के द्वारा यरूशलेम मन्दिर नष्ट किया गया। 10 लाख यहूदी मारे गये। 97 हजार लोगों को बन्दी बनाकर रोम ले गये। अन्त में A.D. 135 में रोम के हंड्रियान बादशाह के समय में यहूदी फलस्तीन देश से पूरी तौर से निकाल दिये गये। इस प्रकार बहुत बड़ा नुकसान उनको हुआ है। ये सब नियमित रूप में उन्हें वापस देना है। यह कार्य तभी संभव होगा जब वे मसीहा को ग्रहण करने के द्वारा परमेश्वर के पास लौट आयेंगे। यह कार्य अर्मगिदोन की लड़ाई के पश्चात् ही संभव होगा। क्योंकि उस समय वे मसीहा को पहचानेंगे। उसकी सहायता को जानेंगे। उस समय उनके अन्धापन को दूर किया जायेगा। वे सही रूप में मसीहा को देख पायेंगे। इससे पहले यह कार्य हो, एक पुनरुत्थान हो रहा है (प्र.वा-20:4-6)।

यह पुनरुत्थान उन पवित्र लोगों के हैं जो भारी क्लेश की अवधि में यीशु मसीह के नाम की खातिर प्राण त्याग दिये और शहीद हुए थे। उन लोगों ने विरुद्ध मसीह की बात न मानी परन्तु प्राण देना पसन्द किया। उनमें से कुछ लोग उम्र के कारण या बीमारियों के कारण एवं प्रकृति के प्रकोप के कारण साधारण मृत्यु से मरे होंगे। वे सब एक हजार साल के राज्य में प्रवेश होने के लिये मृतकोत्थान पाकर जीवन में वापस आ रहे हैं। इस पुनरुत्थान को पहला पुनरुत्थान कहा गया

है। इसका कारण यह है कि पापियों का पुनरुत्थान इसके बाद होने वाला है जो न्याय के लिये होगा। इस पुनरुत्थान को दूसरा पुनरुत्थान कहा गया है। इस पहले पुनरुत्थान के पश्चात् यीशु मसीह परमेश्वर पिता की ओर से संसार में अपना राज्य स्थापित करेगा। यीशु मसीह स्वयं सिंहासन पर विराजमान होकर इस पृथ्वी पर शासन करेंगे। सो इतनी तैयारी करने के लिये 1335 दिन अर्थात् 45 दिन और अतिरिक्त लगेंगे। इस प्रकार 75 दिन बाद परमेश्वर का राज्य पूरी तौर से संसार में आ जायेगा।

उस समय प्रभु यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर यहूदियों से व्यवहार करेगा। यहूदी यीशु मसीह को पहचानेंगे। वे उसको उनके मसीहा के रूप में समझेंगे। यह भी उनको समझ में आयेगा कि यही वह मसीहा है जिसको उनके बाप-दादों ने सताया और क्रूस पर टांग दिया। जब वे खूब पछतायेंगे और छाती पीट पीटकर उसके लिये रोयेंगे जैसा कोई अपने एकलौते के लिये रोते बिलखते हैं (जकर्याह. 12:10-14; प्र.वा-1:7)। वे मसीहा को देखकर और पहचानकर उसके लिये विलाप करेंगे। वे इसलिये विलाप करते हैं क्योंकि उनके बाप-दादों ने उसे बेधा था। मसीहा को देखकर वे पूछेंगे कि तेरी छाती में ये घांव कैसे हुए तब वह कहेगा, ये वे ही हैं जो मेरे प्रेमियों के घर में मुझे लगे हैं (जकर्याह.13:6)। यह सुन वे और रोयेंगे। एक बहुत बड़ा विलाप यरुशलेम में होगा।

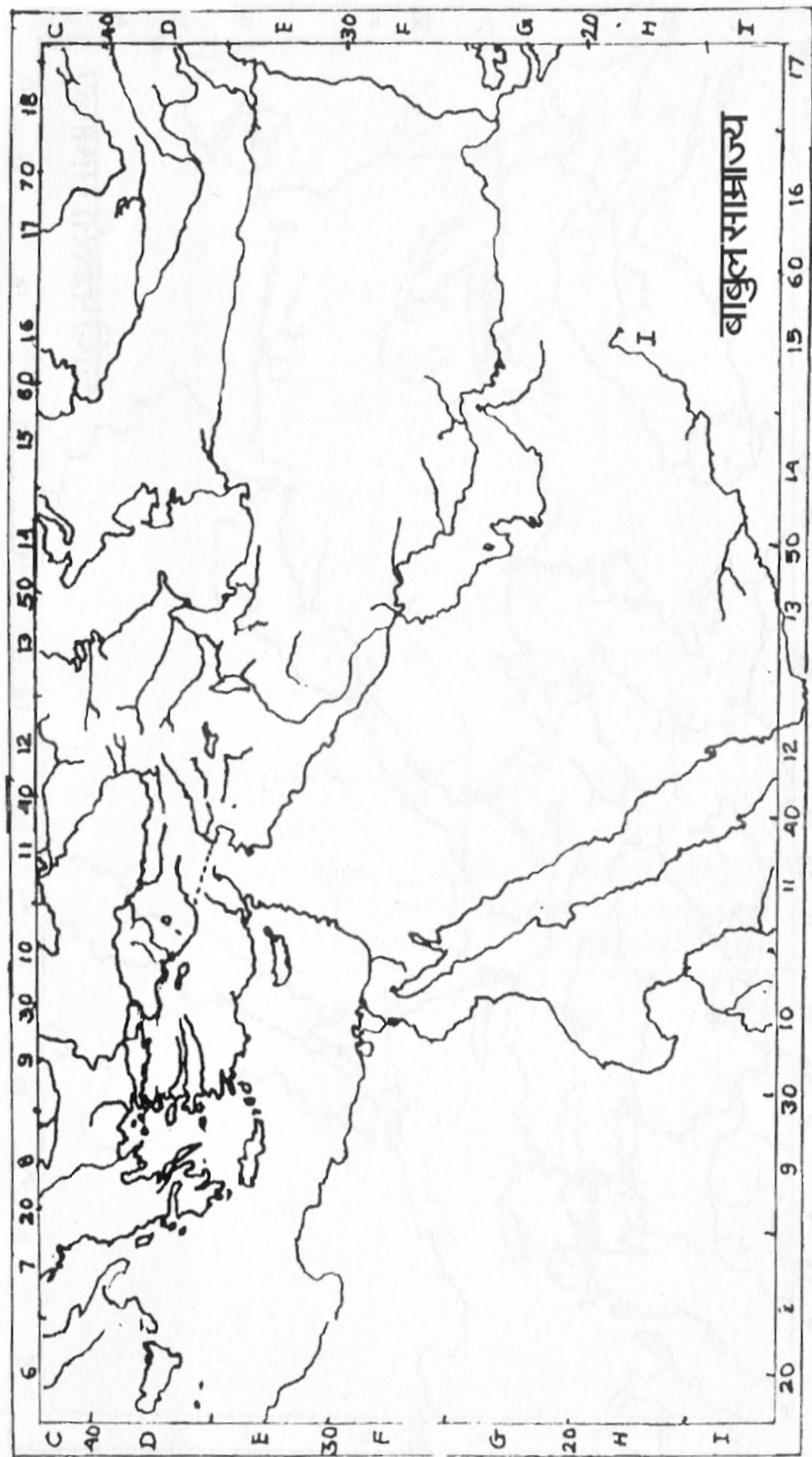
जिस प्रकार कई वर्षों के पश्चात् याकूब व अन्य पुत्र यूसुफ के सामने रोए थे और यूसुफ ने उन्हें क्षमा किया और फिर से ग्रहण किया और उनके लिये एक देश निवास के लिये दिया, ठीक इसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह उन विलाप करने वाले यहूदियों को क्षमा करेगा और उन्हें परमेश्वर के राज्य में स्वीकार करेगा और प्रवेश प्रदान करेगा। वे परमेश्वर के राज्य के भागी हो जायेंगे। पिता परमेश्वर को, पुत्र प्रभु यीशु मसीह को और पवित्र आत्मा को अर्थात् त्रियेक परमेश्वर को इंकार करने से जो कुछ भी उनको नुकसान हुआ है, सो सब कुछ उन्हें वापस प्रदान किया जायेगा। उन्हें राजकीय पदवी वापस मिलेगी जो B.C. 606 में नष्ट हुई थी। क्योंकि राजा यीशु आकर राज्य स्थापित करने पर है। उन्हें मन्दिर और राजकीय पद वापस मिलेगा जो A.D. 70 में नष्ट हुआ था क्योंकि यीशु मसीह स्वयं उनके लिये याजक होंगे। उनका स्वदेश उन्हें वापस मिल जायेगा जो A.D. 135 में रोमी बादशाह हंड्रियान के समय में खो दिए थे। इस प्रकार सब खोई हुई आशीषें उन्हें प्राप्त होंगी जिसके बारे में लिखा है, "क्या ही धन्य है वह, जो धीरज धरकर तेरह सौ पैंतीस दिन के अन्त तक भी पहुँचे" (12:12)। यह धन्य अवस्था क्या है? यह वह धन्य अवस्था है जो 1335 दिन के बाद यीशु मसीह द्वारा राज्य स्थापित करने पर और यहूदियों को वापस स्वीकार करने पर उन्हें प्राप्त होने

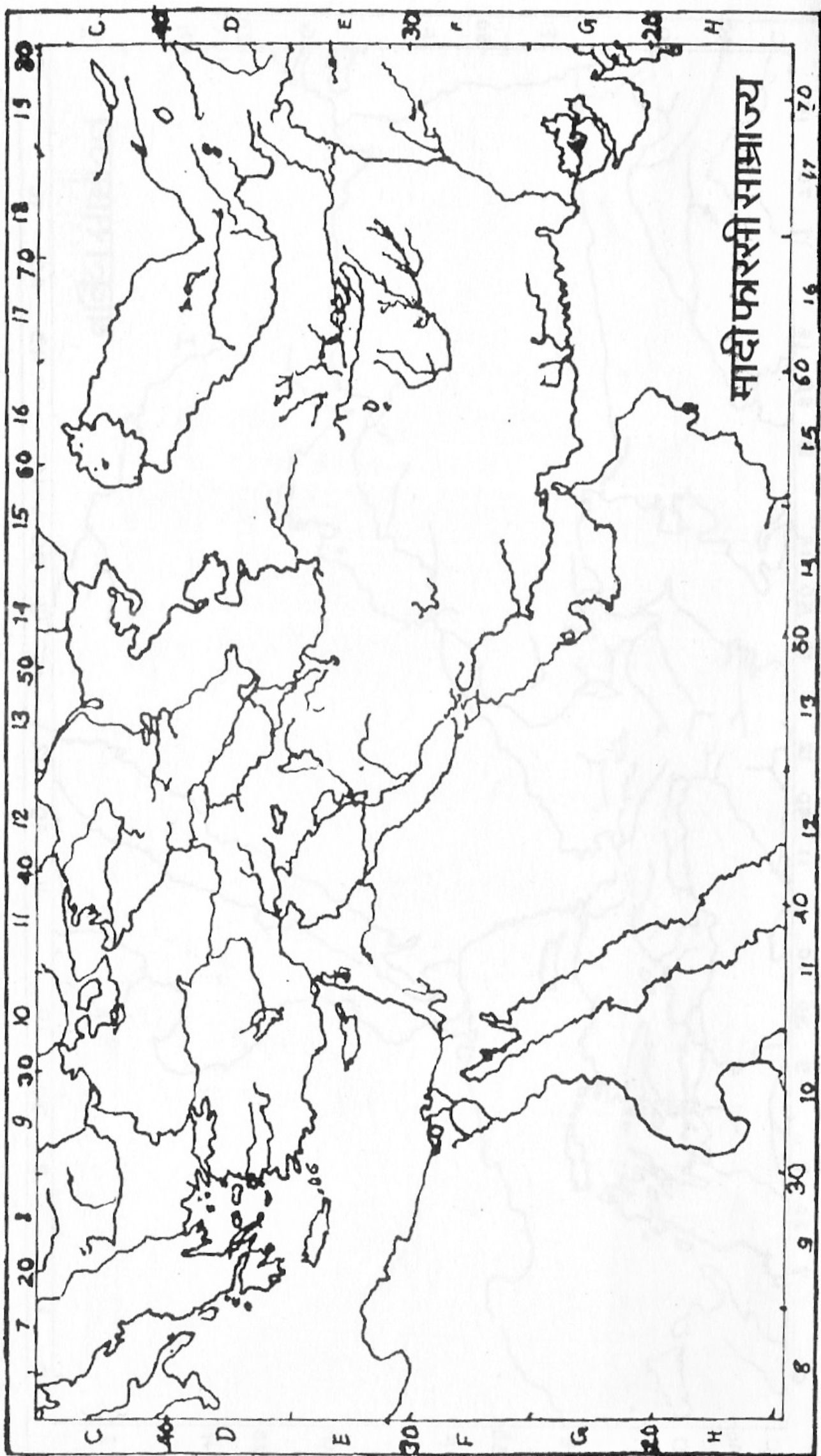
वाला है। उस समय उनको सब कुछ मिलेगा जो उन्हें नष्ट हुआ था और वे धन्य हो जायेंगे।

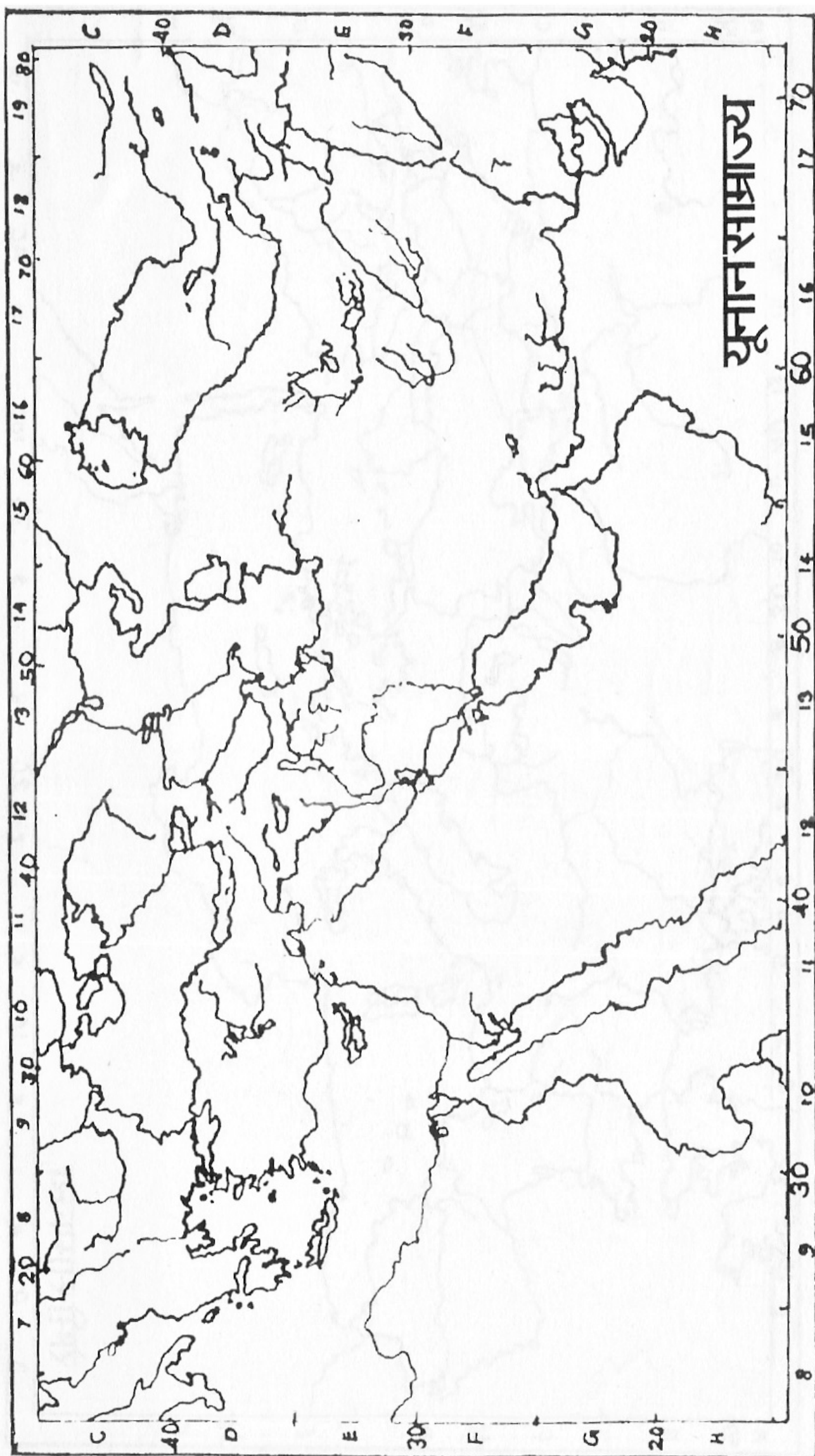
पद-13:- “अब तू जाकर अन्त तक ठहरा रह; और तू विश्राम करता रहेगा; और उन दिनों के अन्त में तू अपने निज भाग पर खड़ा होगा”।

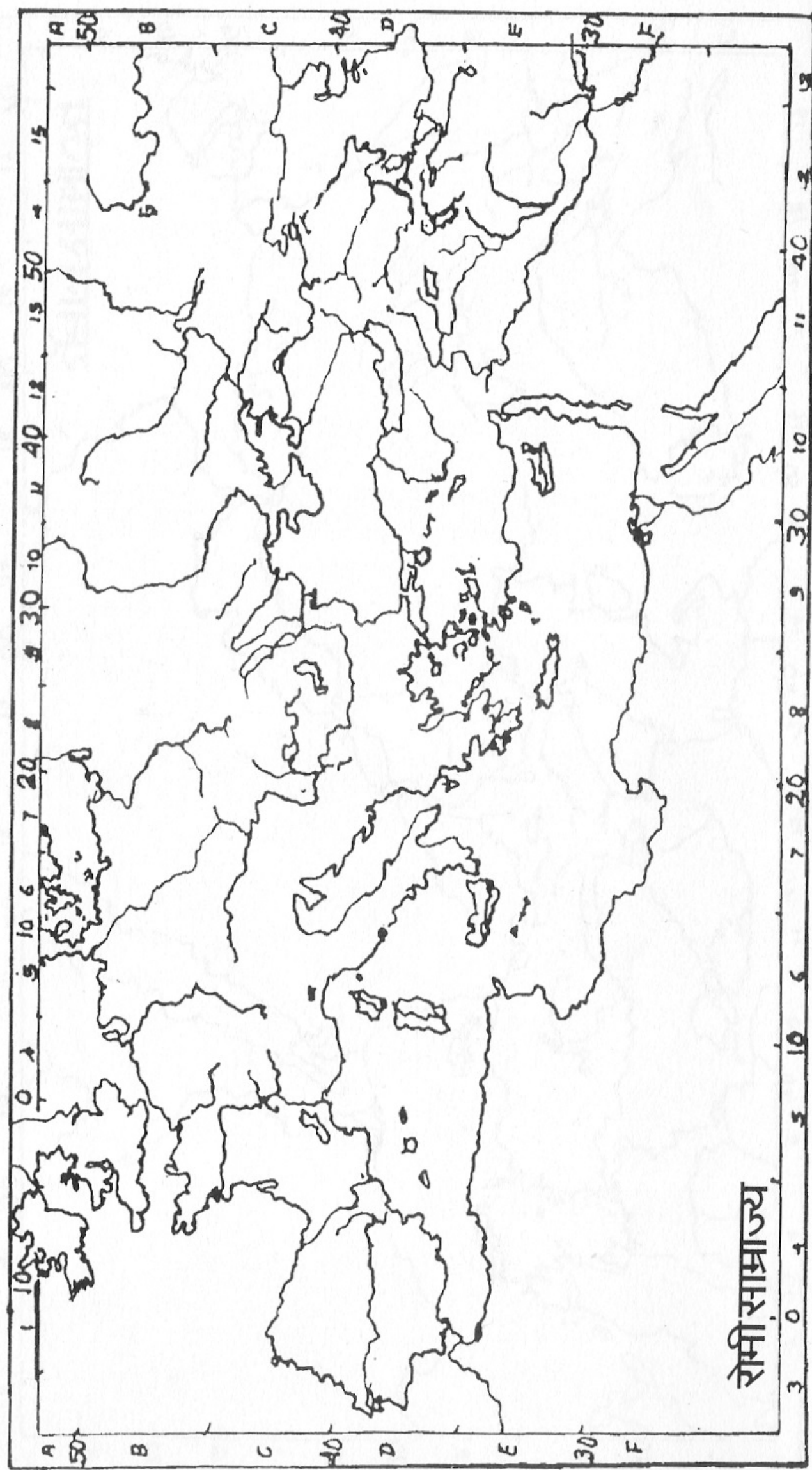
यह वचन प्रभु की ओर से दानिय्येल के लिये एक सान्त्वना एवं आश्वासन का वचन है। दानिय्येल ने परमेश्वर से भविष्य संबंधी सभी बातों का दर्शन प्राप्त किया और उसे स्पष्ट शब्दों में भी दिया पर उसने उन बातों को बराबर समझा नहीं। उसने समझने का बहुत प्रयास एवं प्रार्थना की, पर वे बातें अन्तिम दिनों में पूरा होना था इस कारण पूर्ण रूप में उसको समझाया नहीं गया। उससे कहा गया कि तू जाकर अन्त तक ठहरा रह; और विश्राम करता रह। उन तमाम भविष्यवाणियों की पूर्ति होने पर अर्थात् एक हजार साल के राज्य एवं अनन्तकालीन जीवन के आशीष के समय में दानिय्येल उसके लिये ठहराए गये निज भाग पर या पद पर वह खड़ा होगा। यह भविष्य संबंधी आशा को प्रदान करने वाला वचन है।

दानिय्येल को ही नहीं बल्कि जितने प्रभु के लिये जीवन बिताते हैं उन सबके लिये भविष्य में एक जीवित आशा है। उन सबको उनके कार्यों के अनुसार प्रभु प्रतिफल भी प्रदान करेगा। इसलिये भले हम किसी भी हालात में रहें, हम प्रभु के लिये स्थिर रहें। जो लोग इस पुस्तक को पढ़ते हैं, और अभी तक अपने जीवन के भविष्य को सुनिश्चित नहीं किया है, तो आज आप अपने जीवन को सुसज्जित करें। यीशु मसीह शीघ्र आने वाला है। वह मजदूरी और प्रतिफल लेकर आ रहा है। उसके आगमन के लिये आप भी तैयार हो जाइये। आपका भी स्थान एक हजार साल के राज्य में एवं अनन्तकाल में सुनिश्चित हो जाए। प्रभु आप को आशीष दें।









रोमी साम्राज्य

Our Publications

1. STUDY OF REVELATION VOL - I.
2. STUDY OF REVELATION VOL - II.
3. SONGS OF PRAISE (HINDI & ENGLISH)
4. विश्वास की पुकार (द्विमासिक हिन्दी पत्रिका)
5. प्रकाशितवाक्य का अध्ययन (दो भागों में)

Forth Coming Publications

- 1- कलीसिया और उसका भविष्य
- 2- फलवन्त जीवन
- 3- परमेश्वर का न्याय-एक अध्ययन
- 4- नया नियम एक सर्वेक्षण
- 5- Vishwasa Vili Malayalam magazine
(Proposed)



पास्टर पी.ए. चाको सन् 1968 से उत्तर भारत में सेवारत है। आपने मध्यप्रदेश के अनेक शहरों में कलीसिया की स्थापना की। बाइबल अध्ययन के क्षेत्र में भविष्यवाणी के विषय में उन की विशेष रूचि रही है।

रेव्ह. पी. ए. चाको

आप एक प्रख्यात सुसमाचार प्रचारक, कुशल शिक्षक, रेडियो प्रवक्ता एवं एक अग्रणी लेखक हैं। आपके द्वारा प्रकाशित वाक्य हिन्दी में तैयार हैं, जो एक भारतीय लेखक द्वारा लिखित प्रथम पुस्तक है। अब आपके द्वारा लिखित “दानियेल का अध्ययन” नाम की यह पुस्तक भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे गौरव और आनन्द की अनुभूति हो रही है। यह भी एक भारतीय द्वारा लिखित प्रथम पुस्तक का स्थान प्राप्त किया है।

अब मैं निश्चित जानता हूँ कि यह पुस्तक बाइबल के प्रेमी प्रभु के सेवक, शिक्षक एवं विश्वासी भाई बहनों के लिये एक अमूल्य संपत्ति साबित होगी। अब प्रस्तुत है पास्टर चाको द्वारा लिखित पुस्तक “दानियेल का अध्ययन”।

प्रकाशक

बिन्नीस पी. चाको

Write to us for requesting the copy of Book

URL: www.faithministriesindia.webs.com

Email: faithministriesindia@gmail.com